संक्षिप्त
अष्टाङ्ग सङ्ग्रहः

(शारीर, निदान, चिकित्सा, कल्प तथा उत्तरस्थान)

SCANNED

प्राक्कथन

अथ, विराट विश्व पुरूष प्रदत्त सम्यक् दृष्टि से आयुर्वेद का अध्ययन कर अतिगुरू बोधिसत्व के आशीष से इस ग्रन्थ का लेखन संभव हो सका। अष्टाङ्ग सङ्ग्रह काय चिकित्सा प्रधान ग्रन्थ है–

नित्योपयोगेऽदुर्बोधं सर्वाङ्ग व्यापि भावतः ।
संगृहीतं विशेषेण यत्र काय चिकित्सितम् ।। (सू.१/२१)

नित्य उपयोग दुर्बोध तथा सभी (८) अंगों में व्याप्त होने से इस ग्रन्थ में विशेषतः काय-चिकित्सा का ही संग्रह किया गया है– [पुनर्वसु के षट् शिष्यों की संहिताएं, धन्वन्तरि शाखा के ग्रन्थों में वर्णित काय, सुभूति गौतम, निमि, पाराशर आदि के द्वारा उपदिष्ट काय, बौद्ध आचार्यों के काय से संबंधित योग व विद्याएं (मायूरी, महामायूरी, अपराजिता); सभी का संकलन है।]

इस ग्रन्थ में काय प्राधान्य के साथ-साथ शल्य-शालाक्य, ग्रह आदि अष्ट अंगों पर भी उनके विद्वान महर्षियों के विचारों का पर्याप्त निश्चयात्मक संकलन है।

इस प्रकार इस तन्त्र को अपने में सम्पूर्ण कहा जा सकता है। सभी ऋषि प्रणीत तन्त्रों के अध्ययन में आयु का अधिक भाग व्यय हो जाता है, कई बातों का बार-बार अध्ययन करना पड़ता है, तथा कई विषयों में मतवैभिन्नता प्रतीत होने से निश्चयात्मक ज्ञान नहीं हो पाता है। अस्तु–

सर्वतन्त्राण्यतः प्रायः संहत्याष्टाङ्ग सङ्ग्रहः ।
अस्थान विस्तराक्षेप पुनरूक्तादि वर्जितः ।। (सू.१/१८)
हेतु लिङ्गौषध स्कन्ध त्रय मात्र निबन्धनः ।
विनिगूढार्थ तत्वानां प्रदेशानां प्रकाशकः ।। (सू.१/१९)
स्वान्यतन्त्र विरोधानां भूयिष्ठं विनिवर्तकः ।
युगानुरूप सन्दर्भो विभागेन करिष्यते ।। (सू.१/२०)

प्रायः सभी तन्त्रों से सार लेकर अष्टाङ्ग सङ्ग्रह बनाया गया है। इस ग्रन्थ में अस्थान, अतिविस्तार, अति संक्षेप तथा पुनरूक्त दोष नहीं हैं। स्कन्ध त्रय (१) हेतु- (निदान,रोगोत्पत्ति कारण) (२) लिङ्ग- (पूर्वरूप, रूप) (३) औषध- (रोग चिकित्सा) में निबंधित इस ग्रन्थ में विनिगूढ तत्वार्थ वाले स्थलों तथा उनके अर्थों को स्पष्ट किया गया है। स्व/अन्य तन्त्र की विरोधी बातों का स्पष्टीकरण है।

आयुर्वेदोदधेः पारमपारस्य प्रयाति कः ।
विश्व व्याध्योषधि ज्ञान सारस्त्वेष समुच्चितः ।। (उ.५०/३५)

अपार आयुर्वेद समुद्र के पार कौन जा सकता है, संसार के रोग और औषध ज्ञान का जो सार है, वह यह संग्रह है।

सिंधु देश (कश्मीर के समीप) में उत्पन्न वैद्य श्रेष्ठ वाग्भट के पौत्र तथा सिंहगुप्त के पुत्र वाग्भट (उ.५०/१३२) ने लगभग ५वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में अष्टाङ्ग संङ्ग्रह की रचना की थी।

महर्षि वाग्भट ने उस युग के अनुरूप, अनादि आयुर्वेद का संकलन कर, इस ग्रन्थ का स्वरूप प्रदान किया था। वर्तमान में तब से अब तक बहुत बड़ा कालखण्ड व्यतीत हो चुका है, और अब पुन: इस बात की महती आवश्यकता थी, कि इस अति उपयोगी ग्रन्थ को ऐसा नवीन स्वरूप प्रदान किया जाये, जो आज की आकांक्षाओं की पूर्ति कर सके।

'संक्षिप्त अष्टाङ्ग सङ्ग्रह' के रूप में मैंने ऐसा ही प्रयास किया है। इसकी प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं–

१. युगानुरूप स्वरूप
२. Operative procedures तथा अन्य जटिल स्थलों का सम्यक् explanation, चित्र आदि की सहायता से।
३. पशु अवयवों के योग यथा संभव नहीं हैं।
४. उपलब्धता के अनुसार योगों का वर्णन। केवल उन्हीं योगों का वर्णन है जिन्हें आसानी से तैय्यार किया जा सकता है, और उनका Presentation इस प्रकार से है कि एक दृष्टि डालते ही रोगी के लिये सम्यक् योग का चयन किया जा सकता है।
५. इसकी भाषा Computerised जैसी है। और इन् गुणों से इस कृति का Clinical importance बहुत बढ़ जाता है।
६. आयुर्वेदोक्त परिमाणों को Gm/Kg में Convert कर लिखा गया है, जिससे वर्तमान छात्रों को समझना काफी आसान हो जाता है।

संक्षेप में इस ग्रन्थ लेखन का उद्देश्य वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आयुर्वेद का Practical application तथा आयुर्वेद छात्रों को मूलग्रन्थ समझने व कंठस्थ रखने में सहायता प्रदान करना है।

न मात्रामात्रमप्यत्र किंचिदागमवर्जितम्।
तेऽर्थाः स ग्रन्थबन्धश्च सङ्क्षेपाय क्रमोऽन्यथा।। (सू.१/२२)

इस ग्रन्थ में मात्रा मात्र भी शास्त्र विरूद्ध नहीं है। आगम के ही अर्थ को संक्षिप्त करने हेतु अन्य क्रम में ग्रन्थ को निबद्ध किया गया है।

इस कृति के लेखन में अपने पूज्य गुरूजी प्रो० श्री शिवकुमार मिश्र Ph.D.- पूर्व विभागाध्यक्ष काय चिकित्सा, जामनगर आयुर्वेद युनिवर्सिटी गुजरात, पूर्व प्रधानाचार्य स्नातकोत्तर आयुर्वेद महाविद्यालय, पीलीभीत उ०प्र० का शुभार्शीवाद, अपनी पूज्या माँ श्रीमती चन्द्रकला शुक्ला का स्नेह, आदरणीय प्रकाशक– चौखम्भा ओरियण्टालिया,

वाराणसी की सतत् सत्प्रेरणा तथा सहधर्मिणी प्रिया श्रीमती अर्चना शुक्ला व सुत द्वय सुकृत व सुश्रुत (मीशान) का अतिशय सहयोग रहा है।

मैं आप सभी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। विद्वजनों से अनुरोध है कि वह इस ग्रन्थ के संदर्भ में अपने बहुमूल्य सुझावों से मुझे अवगत करायें, जिससे अगले संस्करण को अधिक ऊर्जावान बनाया जा सके।

(श्रावण कृष्ण पंचमी–२०५९ वि०)
२९/७/२००२ (सोमवार)

विनयावनत

[redacted]

स्थानानुसार अध्यायाऽनुक्रमणिका

विषय	नाम	पेज न.
शारीर स्थान		
१.	पुत्र कामीय	१
२.	गर्भावक्रान्ति	७
३.	गर्भोपचारणीय	१३
४.	गर्भ व्यापद	१७
५.	अंग विभाग	२४
६.	सिरा विभाग	३६
७.	मर्म विभाग	४२
८.	प्रकृति भेदीय	४८
९.	विकृताङ्ग विज्ञानीय	५५
१०.	विकृतेहाविज्ञानीय	५७
११.	विकृत व्याधि विज्ञानीय	५८
१२.	दूतादि विज्ञानीय	६१
निदान स्थान		
१.	सर्वरोग निदान	६४
२.	ज्वर निदान	६७
३.	रक्तपित्त कास निदान	७२
४.	श्वास हिध्मा निदान	७४
५.	राजयक्ष्मादि निदान	७६
६.	मदात्ययादि निदान	७९
७.	अर्शो निदान	८१
८.	अतिसार-ग्रहणी निदान	८३
९.	मूत्राघात निदान	८४
१०.	प्रमेह निदान	८७
११.	विद्रधि वृद्धि गुल्म निदान	९०
१२.	उदर निदान	९३
१३.	पाण्डु रोग-कामला-शोफ-विसर्प निदान	९५
१४.	कुष्ठ-कृमि निदान	९८
१५.	वात व्याधि निदान	१०२
१६.	वात शोणित निदान	१०५

विषय	नाम	पेज न.
चिकित्सा स्थान		
१.	ज्वर चिकित्सित	१०८
२.	जीर्ण ज्वर चिकित्सा	११२
३.	रक्त पित्त ”	११७
४.	कास ”	११९
५.	क्षत क्षय कास ”	१२३
६.	श्वास हिध्मा ”	१२७
७.	राजयक्ष्म ”	१२९
८.	छर्दि हृद्रोग-तृष्णा ”	१३३
९.	मदात्यय ”	१३८
१०.	अर्श ”	१४२
११.	अतीसार ”	१४८
१२.	ग्रहणी दोष ”	१५३
१३.	मूत्राघात ”	१५७
१४.	प्रमेह ”	१६०
१५.	विद्रधि-वृद्धि ”	१६३
१६.	गुल्म ”	१६६
१७.	उदर ”	१७०
१८.	पाण्डु रोग ”	१७५
१९.	श्वयथु ”	१७८
२०.	विसर्प ”	१८०
२१.	कुष्ठ ”	१८२
२२.	श्वित्र कृमि ”	१८७
२३.	वात व्याधि ”	१८९
२४.	वात शोणित ”	१९४
कल्प स्थान		
१.	वमन कल्प	१९९
२.	विरेचन कल्प	२०१
३.	वमन विरेचन व्यापत्सिद्धि	२०५
४.	वस्ति कल्प	२१०
५.	सिद्ध वस्ति कल्प	२१२

विषय	नाम	पेज न.
६.	वस्ति व्यापद् सिद्धि	२१५
७.	स्नेहादि व्यापत्सिद्धि	२१८
८.	भेषज कल्प	२२२
उत्तर स्थान		
१.	बालोपचरणीय	२२८
२.	बालामय प्रतिषेध	२३४
३.	बालग्रह विज्ञानीय	२४२
४.	बालग्रह प्रतिषेध	२४३
५.	स्नपनाध्याय	२४४
६.	प्रत्येक ग्रह प्रतिषेध	२४५
७.	भूत विज्ञानीय	२४७
८.	भूत प्रतिषेध	२४९
९.	उन्माद प्रतिषेध	२५०
१०.	अपस्मार प्रतिषेध	२५२
११.	वर्त्मरोग विज्ञानीय	२५४
१२.	वर्त्मरोग प्रतिषेध	२५८
१३.	सन्धि सितासित रोग वि०	२६१
१४.	सितासित रोग प्रतिषेध	२६४
१५.	दृष्टि रोग विज्ञानीय	२६८
१६.	तिमिर प्रतिषेध	२७१
१७.	लिङ्गनाश प्रतिषेध	२७४
१८.	सर्वगाक्षि रोग विज्ञानीय	२७९
१९.	अभिष्यन्द प्रतिषेध	२८१
२०.	अक्षिपाक पिल्ल प्रतिषेध	२८४
२१.	कर्णरोग विज्ञानीय	२८६
२२.	कर्णरोग प्रतिषेध	२८८
२३.	नासा रोग विज्ञानीय	२९३
२४.	नासा रोग प्रतिषेध	२९५
२५.	मुखरोग विज्ञानीय	२९८
२६.	मुख रोग प्रतिषेध	३०३
२७.	शिरोरोग विज्ञानीय	३०९

विषय	नाम	पेज न.
२८.	शिरोरोग प्रतिषेध	३१०
२९.	व्रण विभक्ति परिज्ञानीय	३१५
३०.	व्रण प्रतिषेध	३१७
३१.	सद्योव्रण प्रतिषेध	३२०
३२.	भङ्ग प्रतिषेध	३२३
३३.	भगन्दर प्रतिषेध	३२७
३४.	ग्रन्थ्यर्बुदश्लीपदापची नाड़ी विज्ञानीय	३३०
३५.	ग्रन्थ्यादि प्रतिषेध	३३२
३६.	क्षुद्ररोग विज्ञानीय	३३५
३७.	क्षुद्र रोग प्रतिषेध	३३७
३८.	गुह्य रोग विज्ञानीय	३३९
३९.	गुह्यरोग प्रतिषेध	३४२
४०.	विष प्रतिषेध	३४७
४१.	सर्प विष विज्ञानीय	३५३
४२.	सर्प विष प्रतिषेध	३५७
४३.	कीट विष प्रतिषेध	३६०
४४.	लूता प्रतिषेध	३६२
४५.	प्रत्येक लूता प्रतिषेध	३६५
४६.	मूषिकालर्क प्रतिषेध	३६५
४७.	विषोपद्रव प्रतिषेध	३६८
४८.	विषोपयोगीय	३७०
४९.	रसायन विधि	३७२
५०.	बाजीकरण विधि	३८६
•	**चित्र सूची**	
	नाभिचक्र धमनी	३८
	पाद व हस्त	५४
	गुद	८१
	कुष्ठ (ऋब्यजिह्व)	९९
	कर्ण व्यध स्थिति	२३२
•	ग्रन्थ में प्रयुक्तमान	३९२

शारीर स्थानम्

१. पुत्रकामीय

	विवाह	संभोग
♀	१२ वर्ष	१६ वर्ष
♂	२१ वर्ष	२५ वर्ष

कन्या– अतुल्यगोत्र, समान स्तर, असञ्चारि रोगकुलप्रसूता, अनिन्द्य, मृदु, स्वस्थ प्रकृति, रूपशील लक्षण सम्पन्न। देव, सरित, पर्वत, वृक्ष, पक्षी, नक्षत्र, प्रेष्य नाम वाली न हो।

गर्भ विनाश/अल्पायु/दुर्बल/विकलेन्द्रिय में हेतु– (१) स्त्री व पुरुष १६ व २५ वर्ष में प्राप्त वीर्य (सम्पूर्ण) होते हैं इससे कम आयु होना। (२) ऋतु की प्रथम तीन रात्रियों में स्थापित गर्भ। (३) आहार-विहार के कारण दूषित शुक्र व आर्तव।

शुक्र– दर्शनकाल– १६-७० वर्ष।

उत्पत्ति– आहार रस– परिणमन → मज्जा $\xrightarrow[\text{मज्जाग्नि}]{}$ शुक्र (सार)

स्थान– सर्वाङ्गव्यापी हो शुक्रधराकलाश्रित।

विशेष– मज्जा, मुष्क, स्तन।

योग्य गुण– सौम्य, स्निग्ध, गुरू, शुक्ल, मधुगन्धि, मधुर, पिच्छिल, बहु, बहल (घन); घृत/तैल/क्षौद्र वत वर्णा।

आर्तव– जो रक्त स्त्रियों में प्रतिमास गर्भाशय में आकर ३ दिन प्रवर्त होता है।

दर्शनकाल– १२-५० वर्ष।

गुण– **"शशरूधिरलाक्षारसोपमं धौतं च विरज्यमानं"** ।।२०।। शशक रक्त वर्ण/लाक्षा के पानी (रस) वत; धोने से वस्त्र साफ हो जाये।

दूषित आर्तव जन्य विकार–

१. असृग्दर, प्रदर, रक्तयोनि– ऋतुकाल में अथवा बिना ऋतु काल अतिमात्रा में प्रवर्त। चि०– रक्तपित्त वत।

२. अनार्तव– वातकफ → मार्ग आवृत्त → अप्रवृत्ति। चि०– पित्तल।

३. आर्तवगुल्म– वातल सेवी → आर्तव (रूका) ± शुक्र → गुल्म लक्षण– गर्भवत। चि०– गुल्मवत ।

४. मिथ्यागर्भ (False Preg.)–

इच्छित सौम्य बृंहण आहार-विहार → आर्तव स्तंभन
↓
गर्भ प्रतीति ← उपद्रव रहित उदर वृद्धि ← गर्भ में अधिष्ठान
↳ यदृच्छा / विपरीत आहार विहार → रक्त प्रवृत्त

शुक्रार्तव पोषण– मैथुन से पूर्व स्त्री व पुरुष का विधिवत स्नेहन व संशोधन कर आस्थापन अनुवासन दे।

पुरुष– घी+दूध+मधुरादि गण संस्कृत आहार (शालि चावल)

स्त्री– तैल; पित्तल (आनूप) मांस।

रेत (शुक्र) व आर्तव दोष	दूषित शुक्र व आर्तव के लक्षण	चिकित्सा	
		दुष्ट शुक्र	आर्तव दोष
१. वातदुष्ट	तनु, रूक्ष, फेनिल अरूण, अल्प, विच्छिन्न (फटा-२) दर्द के साथ अधिक समय (चिर) में निकलना	• सुक्त, सैन्धव, फलाम्ल से सिद्ध; यवक्षार का प्रतिवाप (प्रक्षेप) किया घी पीना। • बिल्व-विदारीक्वाथ सिद्ध दूध से आस्थापन।	• भार्ङ्गी मुलेठी, देवदारू सिद्ध घृतपान। • मुलेठी प्रश्नपर्णी कल्क+दूध+घी का पान। • प्रियंगु+तिल कल्क-योनि धारण। • सरल-मुद्गपर्णी कषाय प्रक्षालन।
२. पित्त	किञ्चित पीत, अपिच्छिल, नीला, दाह के साथ निकले	त्रिवृत चूर्ण+घृत →विरेचन। विदारी गंभारी सिद्ध दुग्ध से आस्थापन। मुलेठी, मुद्गपर्णी सिद्ध तैल से अनुवासन व उत्तर बस्ति।	महुआ पुष्प, गम्भारी फल का क्वाथ+शर्करा का पान। मुलेठी सौंफ, द्राक्षा कल्क+घी → पान। नीम कषाय-योनि प्रक्षालन।

रेत (शुक्र) व आर्तव दोष	दूषित शुक्र व आर्तव के लक्षण	चिकित्सा	
		दुष्ट शुक्र	आर्तव दोष
३. कफ	मज्जा मिला, प्रभूत (अतिमात्रा), बिबद्ध, पानी में थोड़ा डूबना।	वमन- मदनफलकषाय विरेचन-दंतीमूल+वाय-विडंग चूर्ण+तैल आस्थापन-अमलतास +मैनफल कषाय। अनुवासन व उत्तर-बस्ति-मुलेठी+पिप्पली सिद्ध तैल से	मदनफल-कषाय से वमन, कल्क योनि-धारण योनि प्रक्षालन-बकरा/भेड़ का मूत्र/लोध्र, तेंदू कषाय। कुटज, कुटकी अश्वगंधा क्वाथ पान।
४. कुणप (शव) गंधी	सरक्त, अतिमात्रा (रक्तदोष से गंध)	धाय पुष्प, खदिर, अर्जुन, अनार से सिद्ध /असनादि गण सिद्ध घी।	चन्दन (श्वेत) क्वाथ पान। त्रिफला कल्क व क्वाथ से योनि धारण, प्रक्षालन।
५. ग्रन्थिभूत	वातकफजन्य	पाषाणभेद/पलाश भस्म सिद्ध घृतपान।	पाठा, गोक्षुर, कुटज क्वाथ पान।
६. पूतिपूय-निभ	दुर्गंधित पूय जैसा पित्त व कफदोष	परूषकादि+न्यग्रोधादि गण से सिद्ध घृत का पान।	कुणपवत।
७. क्षीण	वात-पित्तजन्य	सू०अ०१९	
८. मूत्रगन्धि	सन्निपातेन	हींग उशीर चित्रक से सिद्ध घृत में ऐला व दाल-चीनी चूर्ण का प्रक्षेप देकर पान।	
९. पुरीष गन्धि	,,		

साध्यासाध्यता–

शुक्र कृच्छसाध्य: कुणप, ग्रन्थि, पूय, क्षीण

कुणप, ग्रन्थि, पूय: आर्तव असाध्य

मूत्र, पुरीष: शुक्र व आर्तव असाध्य

आर्तव/पुष्प दर्शन– १ मास का उपचित रक्त धमनियों द्वारा (जो गर्भाशय में लाया जाता है) वायु प्रेरित हो योनिमुख से (३ दिन) निकलता है। ईषत्कृष्ण, विगन्ध।

नियम– ब्रह्मचर्य, स्नानाद्यलङ्कार रहित, दर्भ संस्तर शायिनी, पत्ते का दोना, मृत्पात्र, करतल पर शरीर कर्शनार्थ जौ से बने व्यञ्जन+दुग्ध आहार– १×३ दिन।

निषेध– तीक्ष्ण, उष्ण, अम्ल, लवण।

→ चौथे दिन स्नान अलंकार कर पति दर्शन। पुष्प दर्शन (प्रथम दिवस) से सातवीं रात्रि में दर्शन से अधिक गुणी सन्तान।

ऋतु (Release of Ovum)– 'ऋतुस्तु दृष्टार्तवो द्वादशरात्रं'। १२ रात्रि तक।
अन्यमत– १६ रात्रि; १ मास (Up to next Mens.); अदृष्टार्तव।

→ युग्म रात्रि (८, १०, १२) में आर्तव (बल) में अल्पता तथा अयुग्म (५, ७, ९) में वृद्धि होती है।

ऋतुमती लक्षण–

क्षाम प्रसन्नवदनां स्फुरच्छ्रोणि पयोधराम्।
स्रस्ताक्षि कुक्षिं पुंस्कामां विद्यादृतुमतीं स्त्रियम्।।४१।।

कृशदेह, प्रसन्नमुख, श्रोणि व स्तनों में स्फुरण, आँख व कुक्षि में शिथिलता, पुरुष का कामना।

ऋतु बीत जाने पर पद्म की भांति योनि संकुचित हो जाती है, जिससे शुक्र अन्तः प्रविष्ट नहीं हो पाता।

मैथुन के अयोग्य स्त्री-पुरुष– १. अतिभोजन २. भूखे ३. प्यास ४. भय ५. मन न हो ६. शोक ७. क्रोध ८. अतिमेदुर ९. अन्य (साथी) की इच्छा १०. अव्यवाय कामा।

मैथुन दोष– अयोग्य अवस्था → अगर्भ, विकृत गर्भ।

- पुरुष नीचे हो → सन्तान में विपरीत लिंगी चेष्टाएं।
- न्युब्ज (झुकी स्त्री) → वातकोप → योनि पीडन।
- दक्षिण पार्श्व स्त्री– कफ $\xrightarrow{\text{पीडित}}$ गर्भाशय कफ से बंद
- वाम पार्श्व – पित्त → रक्त व शुक्र में विदाह।
- एकादशी, त्रयोदशी → नपुंसक सन्तान।

गर्भ लिङ्ग निर्धारण– रजोदर्शन के बाद स्नानोपरांत स्त्री जिस (पुरुष) को देखती/चिन्तन करती है, वैसी ही सन्तान होती है ।।४६।।

सहवास दिन–

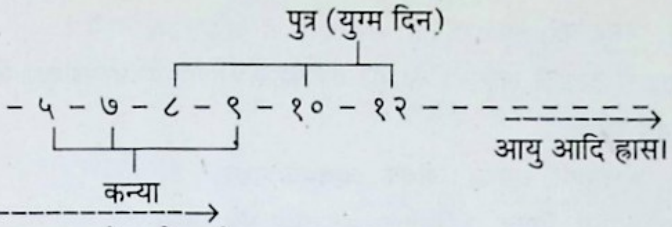

उत्तरोत्तर आयु आरोग्य ऐश्वर्य
बल वर्ण इन्द्रिय सम्पद।

- गणना रजोदर्शन के प्रथम दिन से करे।
- युग्म रात्रि में स्त्री में आर्तव अल्पता (पुत्रकर) तथा अयुग्म में वृद्धि (कन्या कारक) होती है।

विपरीत लिङ्गी लक्षण संतान– आहार वश यदि अयुग्म रात्रि में पुरुष में शुक्राधिक्य/युग्म में शुक्राल्पता हो → दुर्बल, हीनाङ्ग, स्त्र्याकृति पुत्र/पुरुषाकृति कन्या।

पुत्र विधान–

(i) पुत्रेष्टि यज्ञ– उपाध्याय द्वारा। (शूद्रा– मन्त्र वर्जित)

(ii) १ माह तक शुक्रार्तव पोषण।

(iii) रात्रि के शुभ मुहूर्त में पुरुष दक्षिण पैर से तथा स्त्री वाम पैर से शय्या पर (पुरुष के दक्षिण पार्श्व में) आरोहण।

(iv) मन्त्र पाठ–

> **आहिरसि आयुरसि सर्वतः प्रतिष्ठाऽसि धाता**
> **त्वा दधातु विधाता त्वा दधातु ब्रह्मवर्चसा भवेति ।।५५।।**
> **ब्रह्मा बृहस्पति-र्विष्णुः सोमः सूर्यस्तथाऽश्विनौ ।**
> **भगोऽथ मित्रावरूणौ वीरं दधातु में सुत ।।५६।।**

(v) संभोग

(vi) शीतोदकेन सहसा पीरषिञ्चन।

(vii) पुंसवन

पुंसवन काल– लब्धगर्भा में गर्भ के व्यक्तीभाव से पूर्व पुष्य नक्षत्र में। १२ दिन तक युग्म दिनों में अथवा प्रतिदिन।

विधि–

- लक्ष्मणा, वटशुंग, सहदेवा, विश्वदेवा में से एक को दूध में अभिसिक्त कर रस के ३-४ बूंद पिचु से दायें नासापुट में स्वयं डाले (पुत्र हेतु)। कन्या हेतु वाम नासापुट में। थूके नहीं।

- पुण्य नक्षत्र में उखाड़ी श्वेत कण्टकारी की मूल पीसकर रस नस्य ।
- कमलपत्र, कुमुद पत्र, लक्ष्मणामूल, बरगद के ८ अंकुरों का नस्य ।
- पुण्य नक्षत्र में उखाड़ी लक्ष्मणा के मूल का कल्क (गूलर वतमात्रा) दूध से पिये - पुत्रकर, गर्भ स्थैर्य।
- अपामार्ग, शंखपुष्पी, सहचर, जीवक, ऋषभक नस्य।
- शालिधान्य- पिष्ट, पिण्ड, अग्निपाक → वाष्प सूंघे, नस्य।

(viii) प्रजास्थापक (१०) औषध सिद्ध घी, दूध पान (दूर्वा, ब्राह्मी, आदि) दक्षिण बाहु में धारण तथा जीवनीय गण औषध प्रयोग।

(ix) सौम्य उपचार (९ माह तक)।

→ पुन: ऋतुमती होने पर सहवास करे।

गर्भ वर्ण निर्धारण– ४ कारक

	वर्ण	शुक्र का वर्ण	गर्भिणी आहार विहार	महाभूत संयोग	देश-कुलानुवृत्ति
१.	गौर	शुक्लता/घृत-मण्डाभ	क्षीरादि मधुर उपयोग, जलक्रीडा।	तेज+जल, आकाश।	
२.	कृष्ण	तैलाभ	तिल आदि विदाही अन्न सेवन।	तेज+पृथ्वी, वायु।	
३.	श्याम	मधु की आभा	मिश्रित।	सर्वधातुसाम्य	

विशिष्ट सत्व हेतु– (१) मातृ-पितृ सत्व। (२) गर्भिणी का बार-बार मन से श्रुति (गीता आदि)। (३) गर्भ का पूर्वजन्म में कर्म व अभ्यास।

आर्तव दर्शन काल वृद्धिकर भाव– घृत-दुग्ध नित्य सेवी, मुदित (प्रसन्न); कफ प्रकृति।

- शुद्ध गर्भाशय क्षेत्र में बीज (Ovum) तथा शुक्र बीज (Sperm) के संयोग से गर्भ बनता है। ६८॥
- पुंसवन व्यक्त पूर्वावस्था में दैव अनुकूल होने पर सिद्ध होता है।
- समागम में स्त्रियां भी पुरुषवत शुक्र स्राव करती है, गर्भ में इसका उपयोग न होने से इसका महत्व नहीं है।६२॥

२. गर्भावक्रान्ति शारीर

Fertilization & Entrance of Soul–

- रजोपरान्त (After Mens) → शोधन < गर्भाशय (Uterus); मार्ग (Vaginal Canal & Fallopian Tubes)

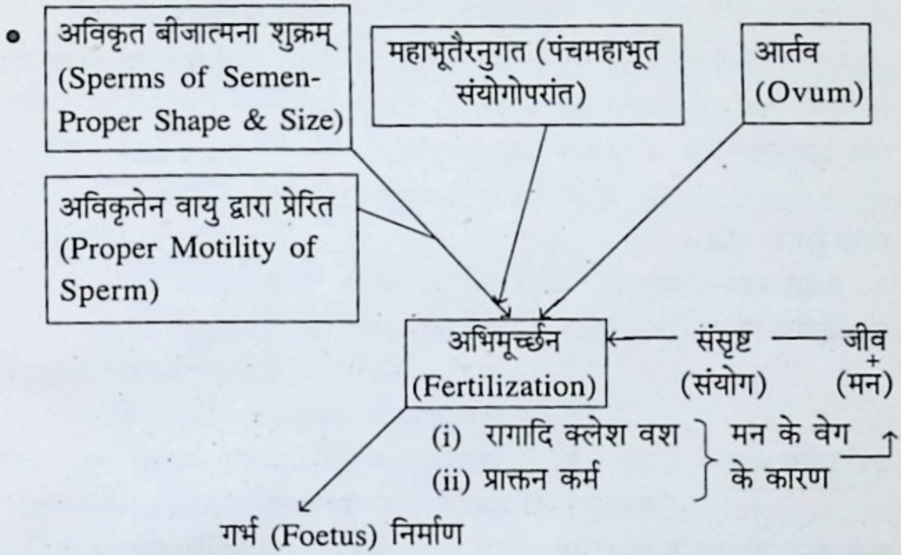

- → स्वभाव वश
- कारण → कार्य।

- **लिङ्ग–** शुक्रबाहुल्य → पुमान् ; आर्तव बाहुल्य → स्त्री; साम्य → नपुंसक।
- **एकाधिक संतान–** वायु → शुक्रार्तव – भिन्न-खण्ड; विभागानुसार संख्या।
- वात विकृति → (i) वियोनि (ii) विकृत आकृति।

सद्योग्रहीत गर्भा नारी लिङ्ग–

- **योनि–** बीजग्रहण, तृप्ति, गरिमा, स्फुरण, शुक्रार्तव बाहर न निकले।
- प्रहर्ष, हृल्लास, तन्द्रा, अङ्गसाद, प्रसेक, हृदय व्यथा, ग्लानि, प्यास।

व्यक्तगर्भा– कुक्षि गौरव; क्षाम नेत्र, स्वर; अक्षिरोम संलुलन; निद्रा, जृम्भा, मूर्च्छा, छर्दि, अरूचि; पादशोफ, अम्ल रस की इच्छा; आहार विहार में अकारण इच्छा-द्वेष।

रजोवाही स्रोतस →|↓|

गर्भ से अवरूद्ध →

(I) अध: प्रतिहत होने से परम्परं (ऊपर-ऊपर) उपचय → अपरा या जरायु निर्माण।

(II) रक्त स्थित → रोमराजी प्रादुर्भाव

(III) जरायु बनने के बाद शेष रक्त → ऊर्ध्वगामी

→ पीन कपोल पयोधर (कपोल व स्तन भारी)

→ कृष्णौष्ठ चूचुकत्व (Blackish Lips & Nipples)

↓ स्तन

कफ द्वारा रंजन →
- स्तन्य (प्रसूता में)।
- आहार रस से आप्यायन (वृद्धि)।

मासानुसार वृद्धि–

१. **प्रथम मास–** कलल

२. **द्वितीय मास–** लिङ्गानुसार – घन – पुरुष
पेशी – स्त्री
अर्बुदाकार – नपुंसक

३. **तृतीय मास–** ५ प्रकार/स्थानों पर प्ररोह– २ टांग, २ बाहु, शिर।

"सर्वाङ्गावयवेन्द्रियाणि युगपत्सम्भवन्ति"।।१३।।

सभी अंग, अवयव व इन्द्रियाँ एक साथ उत्पन्न होते हैं, जन्म के बाद दंत आदि क्रम से स्पष्ट होते हैं यह प्रकृति है। (अन्य-विकृति– यथा गर्भ में दांत होना– कफ विकार)

→ • मन, गुण, भाव (लिंगानुसार)– गर्भाशय, अधोगुरुत्व, असंहनन, शैथिल्य, मार्दव, बीज (Ovary)– स्त्रीकर।

इनके विपरीत– अण्डकोश आदि– पुरुषकर। सङ्कीर्णभाव नपुंसककर।

चेतना प्रव्यक्त– गर्भ के Heart का स्पन्दन, पञ्चेन्द्रियार्थ अभिलाष।

दौहृद– गर्भ हृदय मातृज (मां से उत्पन्न भाव) होता है। गर्भ हृदय रस लाने वाली धमनियों द्वारा माँ के हृदय से सम्बद्ध होता है। इससे दोनों में समान इच्छा उत्पन्न होती है। दो हृदय होने से अब गर्भिणी को दौहृदिनी कहा जाता है।

- अन्य आचार्य– दौहृदकाल– ३ पक्ष– ५वें माह के प्रारम्भ तक।

दौहृद (इच्छा)–
- पूर्ण → वीर्यवान, चिरायु
- अपूर्ण → वातप्रकोप → गर्भनाश/विरूपता।

४. **चतुर्थ मास–** अङ्ग-प्रत्यङ्ग विभाग प्रव्यक्त, गर्भ स्थिर।

५. **पंचम मास–** मन प्रतिबुद्धतर (अधिक विकास), मांस, रक्त उपचय (पुष्टि)।

६. **षष्ठम मास–** केश, रोम, नख, अस्थि, स्नायु आदि अभिव्यक्त; बल वर्ण उपचय।

७. **सप्तम मास–** सर्वाङ्ग सम्पूर्णता।

८. **अष्टम मास–**

ओज
माँ ⇌ गर्भ
मुहुर्मुहुः

ओज जिसमें होता है वह मुदित तथा दूसरा म्लान होता है।

इस माह में गर्भ का निष्क्रमण होने से (योनि पथ गमन में परिवर्तन → ओज वियोग) गर्भ की मृत्यु तथा जननी में ग्लानि (ओज के एक देश से हानि) होती है। (अन्य आचार्यों के अनुसार मृत्यु कारण – नैर्ऋत भाग ।)

सामान्य प्रसव काल– नवम् मास प्रारम्भ– १२ मास (पूर्ण) तक। १२ के ऊपर विकारी।

गर्भ स्थिति (Position)–

"…. पृष्ठाभिमुखो ललाटे कृताञ्जलिः संकुचिताङ्गो गर्भ कोष्ठे …"।।३१।।

मां के पीठ की ओर मुख किये, दोनों हथेलियां (जोड़े) माथे पर, संकुचित अंगों से गर्भ गर्भाशय में रहता है।

♂ – दक्षिण पार्श्व; ♀ – वाम पार्श्व; नपुंसक– मध्य।

गर्भ वृत्ति– परतन्त्र– मां के सोने जगने के साथ सोना जगना।

गर्भस्थ रोता नहीं– (i) जरायु से मुख आच्छादित, (ii) कण्ठ में कफ-वेष्टन (iii) वायु मार्ग निरोध ।।६५।।

गर्भ पोषण–

१. **उपस्वेद–** "केदार इव कुल्यया"

अंग प्रत्यंग व्यक्तीभव काल (तृतीय मास) में व्यक्त नाभि नाड़ी अपरा से प्रतिबद्ध हो मातृहृदय से संबंधित हो जाती है।

मातृहृदय
आहार रस– प्रसाद बाहुल्य
↓ धमनी
अपरा ——→ नाभि → पक्वाशय ——→ पाक → धातुपुष्टि
(नाड़ी) (कायाग्नि)

(जन्म के बाद यह आहार रस पयोभूत (स्तन्य) हो जाता है।)

२. **उपस्नेह–** गर्भाशय का स्नेह (गर्भ के) रोमकूपों द्वारा प्रविष्ट (जैसे नये घट में भरा जल ऊपर आ जाता है) हो, गर्भ का पोषण करता है।

गर्भ में साक्षात् अन्नपान प्रविष्ट न होने से स्थूल मल नहीं बनते।

गर्भ लिङ्ग विनिश्चय–

(A) पुत्र– दायाँ पैर, हाथ पहले चलाये। दायीं बाहु में अधिक बल। दक्षिण स्तन में प्रथम स्तन्य। दायीं ओर उन्नत कुक्षि। गर्भ गोलाकार। ऊर्ध्व रोमराजि। पुल्लिंगी– स्वप्रदर्शन/पदार्थों की इच्छा। प्रसन्न मुख वर्ण। तीक्ष्ण क्षुधा।

(B) कन्या– पुत्र से विपरीत; बायी कुक्षि में लम्बा गर्भ; अध: रोमराजि।

(C) नपुंसक– मिश्रित लक्षण।

→ प्रश्न के उत्तर में नारी जिस लिङ्ग के बाह्य द्रव्य को छुये, वैसा ही लिङ्ग प्रभावी होता है।

विकार–

(A) वात → उन्मार्ग गामी → गर्भ के रसवह स्रोत शोष– (i) वातरोगी (ii) हीनाङ्ग (iii) कई वर्षों तक उदर में रहना।

(B) कर्म वैचित्र्य जन्य– ८ षण्ड योनि

१.	द्विरेता	मैथुन में दोनों का एक ही साथ चरमोद्रेक/निष्पन्न। दोनों के समबली बीज सम अंश में मिलन → बीज का एक भाग दूषित → द्वि प्रकृति (♀ + ♂)।	
२.	वातेन्द्रिय	संभोग में स्त्री पुरुष के शुक्र उत्सृष्ट से पहले ही कृतार्थ हो जाये। स्त्री हर्ष → वात कोप → गर्भ का शुक्रबीज विकृत → पुंसत्ववह स्रोत नाश।	मैथुन में वात निकलना।
३.	संस्कारवाही	शुक्रबीज को वात ——→ पुंसत्ववह स्रोतावरोध हानि नहीं या कम हानि	संस्कार (बाजीकरण आदि) से मैथुन में सक्षम। संस्कार– बाजीकर (उत्तर) बस्ति, आहार, हर्ष, शुक्र-बल, स्रोत आप्यायन।
४.	आसेक्य	जब अल्प बीज व बल वाला/वाली द्वेष/अन्यकामी वश हो, दूसरे को संतुष्ट न कर सके → आसेक्य।	[शुक्र खाकर (स्व/पर) ध्वज उत्तेजित]
५.	वक्रध्वज	स्त्री पुरुष दोनों अल्प बल व बीज वाले।	ध्वज स्तम्भ (सीधा खड़ा) नहीं होता।

६.	सौगन्धिक	पूतियोनि स्त्री के गर्भिणी होने से।	योनि/ध्वज गंध से बल आना।
७.	ईर्ष्यारति	दोनों (परस्पर) ईर्ष्या व मन्द हर्ष से मैथुनरत/क्षरित हों।	दूसरे को मैथुनी भूत देख-कर प्रवृत्त होना।
८.	वायु पिण्डक /वात षण्ड	वात, अग्नि → गर्भ का वृषण नष्ट	

(C) Chromosomal Disorders of Ovum– मातृज अवयव विकृतिजन्य → दोष → शोणित (Ovum) व गर्भाशय प्रदूषित

दोष प्रकोप → मातृज अवयव के बीज/बीजांश → तद अवयव विकृति।

–३–

१. बन्ध्या– गर्भाशय अण्ड आदि बनाने वाला मातृ शोणित अवयव के सम्पूर्ण दूषण से बन्ध्योत्पत्ति।

२. पूतिप्रजा– बीजांश दुष्टि से। इसकी संताने पैदा होते ही मर जाती हैं।

३. वार्ता– (स्त्री व्यापद)– स्त्री में अधोगुरुत्व आदि उत्पन्न करने वाला शोणित अवयव (A Part of 'X' Chromosome- Gene)/बीजांश का एक देश से दूषण → वार्ता उत्पत्ति।

''स्त्र्याकृति प्रायामस्त्रियं वार्ता''।

(D) Chromosomal Disorders of Sperm– पितृज अवयव विकृतिजन्य–

१. पूतिप्रज– Sperm बनाने वाला (शुक्राख्य बीज) बीजावयव (A Part of Chromosome 'X'/'Y') का एक देश से दूषण होने से।

२. बन्ध्य/तृणपुत्रिक (तृणपूली)– शुक्राशय, शुक्राणु आदि बनाने वाले बीजावयव का सम्पूर्ण दूषण।

यस्य ह्यङ्गावयवस्य बीजे बीजांशे वा उत्पत्ति र्भवति तस्य
तस्याङ्गावयवस्य विकृतिरूप जायते। नोपजायतेऽनुपतापात ।।५३।।

जिस अङ्गावयव के बीज या बीजांश में विकृति होगी उससे उत्पन्न उसी अङ्गावयव में विकृति उत्पन्न होगी। बीज विकृति न होने पर अङ्गावयव विकार नहीं होगा।

→ मातृज पितृज भावों की ही भांति सात्म्यज, रसज, सत्वज भावों की विकृतियाँ होती हैं।

(E) स्त्री आहारजन्य विकृतियाँ– निरंतर एक ही प्रकार के आहार के सेवन से प्रकुपित दोष → सर्वशरीर गति → गर्भाशय में स्थित → गर्भ विकार।

वातकर	V↑; जड़, बधिर, मूक, मिम्मिण (Adenoids), भारी स्वर; कुब्ज, वामन, हीनाधिक अंग आदि।
पित्तल	P↑; खलित, पलित, श्मश्रुहीन, त्वक्, नख, केश पिंगलता।
श्लेष्मल	K↑; कुष्ठ, किलास, सदन्तत्व
त्रिवर्ग	मिश्रित
मधुर रस	प्रमेह, मूक, स्थूल
अम्ल	रक्तपित्त, त्वचा/नेत्र रोग
लवण	शीघ्र वली पलित खलित
कटु	अल्प शुक्र, अनपत्य
तिक्त	शोष, अबल
कषाय	श्याम; आनाह, उदावर्त
मद्य	तृष्णालु, अल्प स्मृति, चंचल
गोधामांस	अश्मरी, शनैर्मेह
सुअर मांस	लाल नेत्र, खर्राटे, कठोर रोम
मछली	देर में पलक झपके/स्तब्धाक्ष (न झपके)।

विहार–

चित्त शयन (उत्तान) – नाभिनाड़ी द्वारा कण्ठ अनुवेष्टन।
रात्रि भ्रमण – उन्माद
कलहशील – अपस्मार
मैथुनरत – स्त्रैण
शोक – भीरू, अल्पायु
चोरी – द्रोही, अकर्मण्य, आयास (थकान)
निद्रालु – निद्रालु, मूर्ख, अल्पाग्नि

उपरोक्त आहार विहार दोष पिता में शुक्र दोष कर हैं।

(F) महाभूत (तेज) संयोग जन्य विकृतियाँ–

तेज, दृष्टि भाग में न पहुँचे – जन्मान्ध
तेज + वातदोष → दृष्टि भाग – विकृत, रूक्ष, लाल नेत्र
तेज + पित्त → दृष्टि भाग – पिङ्गल आंख
तेज + कफ → दृष्टि भाग – शुक्लाक्ष
तेज + रक्त → दृष्टिभाग – रक्ताक्ष

(G) गर्भोपघात कर भाव– गुरू उष्ण तीक्ष्ण, रूक्ष अन्नपान, दारूण चेष्टा।

व्यवाय, व्यायाम, कर्शन, अभिघात, उत्कट आसन, विक्षोभक सवारी, शोक, भय, त्रास, आश्चर्य, अप्रिय देखना या सुनना।

गर्भिणी की चिकित्सा परिचर्या– मृदु, मधुर, शीत, औषध, आहार विहार। वमन विरेचन रक्तमोक्षण निषेध या मृदुरूप।

८वें मास प्रारंभ से प्रसव काल तक आस्थापन/अनुवासन्।

→ श्रेष्ठ संतान की कामना वाले माता (विशेषत:) व पिता अपने को श्रेष्ठ बनायें। ६२॥

''पूर्णमिव तैलपात्रम संक्षोभयद्गर्भिणीमुपाचरेदिति''।।६२।।

तैल पूर्ण पात्र के समान गर्भिणी की संक्षोभ से रक्षा करे।

गर्भ समान योग क्षेमा हि गर्भिणी भवति ।।५८।।

गर्भिणी का योग और क्षेम गर्भ के समान होता है। प्रिय व हित से गर्भोपघात से रक्षा करे।

तीक्ष्णै रपि क्रियायोगैः स्त्रियं यत्नेन पालयेत ।।६३।।

आत्ययिक (Emergency) व्याधि में गर्भ की चिन्ता छोड़कर स्त्री को बचाने के लिये तीक्ष्ण भी (आवश्यक) क्रियाएं करे।

स्त्री हि मूलमपत्यानां स्त्री हि रक्षति रक्षिता ।
सर्वाश्रमाणां प्रथमं गृहस्थत्वमनिन्दितम् ।।६४।।

स्त्री अपत्य का मूल है, रक्षित स्त्री रक्षा करती है। सभी आश्रमों में 'गृहस्थ' मुख्य व श्रेष्ठ है।

३. गर्भोपचरणीय

सुखप्रसवार्थ मासानुसार परिचर्या–

१. प्रथम मास– दोनों समय मात्रा में औषध सिद्ध दूध।

प्रथम १२ दिन– दूध + घी + स्वर्ण/रजत पात्र में शालिपर्णी, पलाश शृत।

अनुपान– शीतल जल।

आहार– मधुर, शीतल, द्रव, सात्म्य।

निषेध– अभ्यंग, उद्वर्तन, मैथुन। ५ माह बाद उद्वर्तन कर सकती।

२. द्वितीय मास– मधुरौषध सिद्ध दूध।

३. तृतीय मास– मधुर औषध सिद्ध दूध + घी + मधु।

४. चतुर्थ मास– मधुर औषध सिद्ध दूध + नवनीत (१ अक्ष/तोला)

५. पञ्चम मास– क्षीर सर्पि– दूध से निकाला घृत का पान

६. षष्ठ मास– क्षीरसर्पि– मधुर औषध से सिद्ध करके (द्राक्षा, महुआ)।

७. सप्तम मास– क्षीरसर्पि– मधुर औषध से सिद्ध करके (द्राक्षा, महुआ)।

किक्किस– ७वें मास में उत्पत्ति।

दोष $\xrightarrow{\text{गर्भ पीडन}}$ प्रकोप → हृद प्रदेश में विदग्ध → कण्डू → किक्किस (शरीर में खुजली → त्वचा फटना → विरूप)।

– भगवान आत्रेय।

चिकित्सा–

- कण्डूयनं वर्जयेत्।
- प्रतिदिन
- मधुरौषध सिद्ध नवनीत झड़बेरी के क्वाथ के साथ।
  मात्रा– पाणितल/कर्ष/१ तोला।
- लेप– चन्दन + कमलनाल कल्क– स्तन उदर पर मले।
- शिरीष, धाय पुष्प, सरसों, मुलेहठी चूर्ण– सूखा छिड़के।
- नीम + बेर + तुलसी पत्र + मञ्जीठ पानी में पीसकर लेप।
- तैलाभ्यञ्ग– कनेर + करञ्ज पत्र कल्क सिद्ध तैल।
  स्नान– मालती (चमेली) पत्र और मुलेठी सिद्ध जल से।
  आहार– मधुर, अल्पमात्रा, अल्प स्नेह व लवण; अनुपान में कम जल प्रयोग।

८. अष्टम मास– घृत युक्त क्षीर यवागू पान -- आत्रेय।

खण्डकाप्य (भद्रकाप्य – चरक सं०) अनुसार पैङ्गल्य बांधा।

बस्ति कर्म– न्युब्ज स्थिति Knee Elbow Position में।

आस्थापन– बेर पत्र क्वाथ + तिलकल्क, दूध, दधि, मस्तु, तैल, सैंधव, मदनफल, घी, मधु।

अनुवासन– पुराण विड् शोधन, वातानुलोमन– सुख प्रसव। मुलेठी आदि मधुर औषध से सिद्ध तैल से।

इसके बाद प्रसव काल तक–

- स्निग्ध यवागू– चरक।
- स्निग्ध यवागू तथा जांगल मांसरस– धन्वन्तरि।

९. नवम मास–

अनुवासन तैल पिचु → योनि प्रीणन → गर्भमार्ग व आशय का स्नेहन।

परिचर्या से लाभ–

- कुक्षि कटि पार्श्व पृष्ठ मृदु।
- वात अनुलोमन
- मूत्र पुरीष प्रकृतिस्थ
- जरायु प्राकृत मार्ग में
- श्रेष्ठ, पुत्र (संतान) सुख काल में सुखपूर्वक प्रसूत।

गर्भिणी के प्रतिदिन स्नानार्थ जल–

- सर्वगन्धोदक
- बिल्व, कपास, अग्निमंथ, जटामांसी, एरण्ड पत्र क्वाथ ठंडा कर।

सूतिकागार– नवें माह से पहले निर्माण। सभी ऋतुओं में सुखकर, वास्तु विद्या प्रशस्त, द्वार- उत्तर/पूर्व। अग्नि व सर्वोपकरण युक्त।

प्रवेश– (नवम मास प्रारम्भ में ही) शुभ नक्षत्र में गाय, ब्राह्मण, वृद्ध को प्रणाम व प्रदक्षिणा कर अनुभवी स्त्रियों के साथ प्रवेश करे। प्रसव काल की प्रतीक्षा करे। उचित आहार विहार द्वारा वायु, मल-मूत्र, अनुलोमन। स्वल्प विट्मूत्र बिबन्ध में भी फलवर्ति दे।

(A) आसन्न प्रसवा–

I. क्लम, ग्लानि, आँखें बंधन मुक्त लगना, निष्ठीवन, मूत्र-पुरीष बार-बार (बाहुल्य) त्याग।

II. शिथिल कुक्षि, अधोगुरूत्व, अन्न अनभिलाष।

III. उदर, हृदय, कटि, बस्ति, वङ्क्षण में वेदना।

IV. योनि में तोद, भेद, स्फुरण, स्राव।

V. आवी (Labour Pains) प्रादुर्भाव।

VI. गर्भोदक (Omniotic Fluid) प्रवाह।

(B) गर्भ प्रसव–

- घृतयुक्त उष्ण पतली यवागू पिलाये।
- Hard Bed पर (मृदुभूमि पर बबूल छाल में पका चमड़ा बिछाकर) उत्तान लिटाये, घुटने ऊपर मोड़े।
- कुष्ठ, लांगली (कलिहारी), वच, चव्य, चित्रक, करंज चूर्ण मुहर्मुह; संुघाये।
- थोड़े-२ अन्तराल से भोजपत्र/शीशम पत्र/राल से योनि धूपन।
- पार्श्व, पृष्ठ, कटि, सक्थि पर सुखोष्ण तैल मर्दन।

गर्भ (शिर) नीचे आने के लक्षण–

- शिर बस्ति में अवग्रहण
- आवी अन्तराल कम।

गर्भ परिवर्तित न होने पर– (योनि में गर्भ सङ्ग)–

- कृष्ण सर्प केंचुल/मदनफल से धूपन।
- हिरण्य पुष्पी मूल हाथ पैर में बांधे।
- सुवर्चला (कलिहारी), विशल्या धारण (कण्ठ, हाथ)।

परिवृत्त गर्भा (शिर बस्ति में अवग्रहीत/योनि से दिखे)–

- पलंग पर लिटाये।
- प्रसूति विशेषज्ञा स्त्री के पैरों की ओर जाकर/बैठकर मधुरौषध सिद्ध तैल/(बला तैल) से योनि का अनुलोमत: (Inwards→ outer orifice in vaginal canal) अभ्यंग करे। दोनों स्फिक् को पैरों से दबाते हुये योनि का पुन: पुन: प्रसारण करे। धीरे-धीरे प्रवाहण करने को कहे (आवी आने पर)।

अकाल प्रवाहण–वेदना न आने पर प्रवाहण जन्य रोग–

गर्भ में श्वास, कास, शोष, कुब्जता।

बाये कान में च्यवन मंत्रों (अ.सं.शा. ३/२६-२९) का पाठ।

प्रवाहण–

I. शनैःशनैः

II. साधारण शक्ति– गर्भ नीचे प्रवृत्त होने पर

III. अधिक जोर– योनिमुख प्रतिपत्ति से प्रसव हो जाने तक।

(C) अपरा पतन (Placenta Out)– सामान्य स्वतः।

न होने पर चि०–

(१) नाभि प्रदेश को दक्षिण हाथ में पकड़कर दबाये (पीडन) तथा बायें हाथ से पीठ पकड़कर झिंझोड़े।

(२) पार्ष्ण्य (दोनों एड़ियो) से श्रोणि कुट्टन (दबाये)। स्फिक् सम्यकत: पकड़कर पीडन करें।

(३) कण्ठ तालु में अंगुली/नाल से स्पर्श → वमन प्रवृत्ति→ गर्भाशय संकोच।

- शालि मूल सिद्ध घी से योनि लेप
- कटु अलाबु, निम्बपत्र, सर्प निर्मोक, भूर्जपत्र, गुग्गुलु धूपन।
- गुड़ + सोंठ कल्प– योनि लेपन, भक्षण।
- लांगली (कलिहारी) मूल कल्क हाथ व उदर पर लगाये।
- महावृक्ष (Euphorbia Nivulia– एक स्नुही जाति) क्षीर से मूर्धा का सिंचन।
- मुलेठी, पिप्ली क्वाथ + कुष्ठ, तालीश चूर्ण– पिलाये।
- सोया, कुष्ठ, मैनफल, हींग से सिद्ध तैल–
  - पिचु योनिधारण।
  - गुदा में अनुवासन।

Extraction– नख कटवाये, हाथ को घी से चिकना कर (या Gloves पहने) नाभिनाल के साथ-साथ हाथ अंदर ले जाकर अपरा आहरण करे।

प्रसव उपद्रव–

(A) प्रसव कालीन– (i) गर्भ अनापरिवर्तन (ii) अपरा स्वत: न निकले

(B) प्रसवोत्तर– मक्कल, योनिभ्रंश।

मक्कल– प्रजाता के वस्ति मूर्धा उदर में शूल होना।

- यवक्षार चूर्ण घी/सुखोष्ण जल से पिये।
- त्रिकटु त्रिजातक धनिका (धनिया) चूर्ण, पुराण गुड़ मिलाकर खाये।

योनि भ्रंश– योनि का अपने स्थान से खिसकना (Prolapse of Vagina/Cervix/ Uterus)

चि०–

- शोणित (किसी का भी) लगाकर योनि को स्वस्थान निवेश करे।
- अशोक छाल, रोहिणी, खस, देवदारू कल्क से पके तैल से स्वेदन, योनि पूरण।

→ जन्म होते ही अन्य स्त्री बालोपचार (उत्तर स्थान) करे।

सूतिका– प्रसवोपरान्त १$^{1}/_{2}$ माह तक।

कृच्छसाध्य/असाध्य (परिचर्या न होने पर) होने में हेतु–

१. गर्भ वृद्धि से कृश
२. शिथिल सर्व शरीर धातु
३. प्रवाहण वेदना
४. क्लेद, रक्त निस्रुत
५. विशेष शून्य (खालीपन) शरीर।

परिचर्या– उबालकर ठंडा किया जल-पान।

१. अभ्यङ्ग– बला तैल

२. स्नान– प्रातः सायं वातघ्न द्रव्य क्वाथयुक्त उष्णोदकेन (आहार पूर्व)।

३. स्नेह पान– भूख लगने पर, सर्वप्रथम, दिन भर में पचने वाली मात्रा। सात्म्यानुसार–

- स्नेह + पिप्पली, पिप्पली मूल, चव्य, चित्रक, सोंठ; या
- स्नेह + अजवायन, कृष्ण जीरक, चव्य, चित्रक, सोंठ, काली मरिच, पिप्पली, सैंधव।

स्नेह पान के समय उदर पर घी + तैल अभ्यंग कर वस्त्र से आवेष्टित करे→ वात प्रकोप नहीं।

४. यवागू– स्नेह जीर्ण हो जाने पर स्नेह मिश्रण वाली औषधियाँ अथवा ह्रस्वपंचमूल मिलाकर दूध में बनी यवागू (पतली) प्रातः सायं पिलाये। ३/५/७ दिन तक।

५. यूष– जौ, बेर, कुलत्थी यूष/लघु आहार।

६. मांसरस– १२ दिन बाद– जांगल

जीवनीय, ब्रंहणीय, मधुर गण, वातहर द्रव्यों से सिद्ध अभ्यंग उद्वर्तन, परिषेक आदि तथा हृद्य अन्नपान दे। ४५ दिन तक क्रमशः आहार विहार नियम विमुक्त करे।

४. गर्भ व्यापद

गर्भहानि– (A) **३ माह (९० दिन) तक–** असञ्जातसार (गर्भ में सार न) होने से गर्भ प्रायः नहीं रूकता।

अवस्थाएं– I. वेदना (वस्ति, पार्श्व, श्रोणि, योनिमुख)
II. आर्तव/शोणित दर्शन
III. गर्भस्राव

कारण– असम्यक् आहार-विहार।

चिकित्सा– स्निग्ध–शीत।

१. मृदु शीत बिस्तर पर लिटाकर सिरहाना नीचे व पॉयत ऊँचे रखे।
२. शीत प्रदेह परिषेक आदि।
   - सहस्त्र धौत घृत पेडू पर लगाये
   - मुलेठी + घी का शीत पिचु योनि समीप रखे
   - परिषेक– गो दुग्ध, मधुकाम्बु, न्यग्रोधादि कषाय।
   - न्यग्रोधादि स्वरस पान इनके शुंग सिद्ध दूध से निकले घी का पिचु रखे।
३. अतिरक्तस्राव में न्यग्रोधादि (बरगद, पीपल, गूलर, आम आदि) शुंग सिद्ध घी– १ तोला खाये।
४. न्यग्रोधादि पत्र, त्वक कल्क मधु से।
५. शशक, एण, हरिण रूधिर + मधु – पान
६. जीवनीय द्रव्य सिद्ध दूध + शालि।
   सिंघाड़ा, मृणाल, गम्भारी, फालसा, द्राक्षा, अनन्तमूल, कमलबीज, कदम्ब बीज क्वाथ + मधु + चावल।
७. शीतवीर्य जांगल रस + रक्त शालि।
८. संशोधन के अतिरिक्त रक्त पित्त चि०।

प्रथमावस्था – केवल वेदना होने पर– अदृष्ट शोणित।

१. मुलेठी, देवदारू, मंजिष्ठा, शतावरी, विदार्यादि गण,/गोक्षुर स्वरस से सिद्ध दूध पान।
२. पलाण्डु स्वरस सिद्ध घी + मधु।

आमान्वित शोणित दर्शन–
- विरूद्धोपक्रम
- रूक्ष-शीत चि०

१. उपवास
२. दुरालभा, अमृता, उशीर, पर्पटक, मुलेठी, चन्दन, अतिविषा, बला, कट्वङ्ग, धान्यक क्वाथ पान।
३. सांवा, शालि, साठी से बनी पेया मुद्ग यूष से।

→ आम समाप्त हो जाने पर पुनः स्निग्ध-शीत चि०।

आमगर्भ (असञ्जातसार) पतनोपरांत चि०– (९० दिन तक)

''आमगर्भशेषेण हि पुनः पुनः शूल मनुषज्येत ।

I. मद्य से वेदना शमन कर तीक्ष्ण उपायों से शेष गर्भांश निकाले।
II. जितने मास का (यथा ३ मास) गर्भ स्त्रवित हुआ हो उतने दिन (पर ३ दिन तक) तक– स्नेह लवण रहित; तिल, कोदौ, से बनी यवागू दे।

III. दोष धातु क्लेद शुद्ध करने के लिये बल्य, प्रीणन आहार दे।
IV. शुद्धि उपरान्त मधुर, वातघ्न, दीपन, पाचन, जीवनीय, बृंहणीय, आहार, स्नेह, बस्ति दे।

(B) ४थे माह से (९१वें दिन से)–

वर्ज्य आहार विहार सेवन → योनि स्राव/शोणित दर्शन → धातु क्षय → → V↑ $\xrightarrow{+P, K}$ रसवहानाड़ी (माता → गर्भ) → नाड़ी पीडन (संकुचन) → रसों का असम्यक् वहन

→ गर्भ यथावत स्थिति (वृद्धि नहीं)– उपविशति → उपविष्टक
→ उपशुष्यति (सूखना) → उपशुष्क

} ↓ गर्भिणी V↑ P↑ K↑

उपविष्टक– कदाचित् अत्यल्प आर्तव परिस्रावं। गर्भ-सतत; स्फुरण +; परिमाण वृद्धि नहीं; कुक्षि वृद्धि– नहीं।

उपशुष्क/नागोदर– प्रतिमास/प्रतिदिन नात्यल्प (अति अल्प नहीं) आर्तव परिस्राव। कभी देर में (किञ्चित्) स्पन्दन, परिहीय (Decreasing) माण गर्भ। कुक्षि वृद्धि भी परिहीय।

ये दोनों जब आहार तेज से धीर-धीरे आप्यायित (Growth) हो जाते हैं। तब कई वर्षों बाद प्रसूत होते हैं।

उपविष्टक, उपशुष्क जन्य गर्भिणी दोष–

१. वात प्रकोप– सशब्द, फेन, विच्छिन्न मल; मूत्र उपरोध। कटि पृष्ठ हृदय वेदना; अनिद्रा; प्रतिश्याय; शुष्क कास; कुक्षि में वायु भ्रमण; त्वक्– विवर्ण, पुरुष, स्फुटन। शरीर में लगातार क़मजोरी बढ़ना।

२. पित्त प्रकोप– नेत्र मूत्र नख– गोमूत्राभ (पीत-रक्त), अम्लक, वमन, मूर्च्छा। काली, दुर्बल, नित्यशूला।

३. कफ प्रकोप– मधुरास्य; श्वेतहस्तपादनेत्रता, कास, श्वास।

चिकित्सा– जीवनीय बृंहणीय मधुर औषध सिद्ध घी, दूध, आमगर्भ (अण्डा) रस– गर्भ वृद्धिकर। आहार लेकर वाहन आदि पर बैठकर क्षोभण करें (To Increase Blood Circulation)।

वात– I. बस्ति– सैन्धव + दूध
II. स्नान, शालि ओदन,
III. विदार्यादि सिद्ध घृत से अनुवासन।

पित्त–
- दुग्धापान– मुलेठी, विदारी रस से सिद्ध
- मुर्गी, तीतर, कपिञ्जल मांसरस

- बकरी का घी, दूध + जीवनीयगण + यवागू
- क्षीरविदारी, काकोली (दोनों), सुनिषण्णक कल्क सिद्ध दूध में पका घृत प्रातः दुग्धानुपान से।
- इसी घृत में आमगर्भ रस भूनकर खाये।
- जलचर मांस।

कफ– • आनूप मांस सुरा के साथ ३/५/७ रात्रि तक।
- बेर, तिल, मूंग, माष, लवण, बिल्वपत्र चूर्ण, घी, सममात्रा में मिलाकर बिल्वमात्र (२ तोला), उबले ठण्डे अजादुग्ध से प्रतिदिन प्रातः लें।

अन्तिम चि०– यदि उपरोक्त चि० से गर्भ में वृद्धि न हो तो तीक्ष्ण विरेचन या अपरापतन विधि से गर्भपात करे।

(C) अन्य–

(१) लीन गर्भ–

वात → स्रोतोपसृष्ट → प्रसुप्त – न स्पन्दते।

चि०– पूर्वोक्त; मुहुर्मुहुः हर्षण; अभ्यंग– उदर, वङ्क्षण, उरू, कटि, पार्श्व, पृष्ठ, तैल से। घृतबहुल माष। मूली यूष + रक्तशालि ओदन। मछली, मुर्गी, तीतर मांस + घृत।

(२) गर्भिणी उदावर्त– गर्भ व गर्भिणी मारक।

(अपान वायु नीचे जाने के बजाय उदर में भ्रमण करे → बिबंध)

चि०– • वातनाशक, स्निग्ध अन्नपान।
- ८वें माह में मुलेठी सिद्ध तैल से अनुवासन।

शोधन– अजवायन, कुश, मुलेठी, द्राक्षा आदि को समभाग जल व दूध में पकाकर चिरौंजी, विभीतकमज्जा, तिल, नमक मिलाकर सुखोष्ण निरूह, → विगत बिबन्ध। स्नान; पथ्य; सायं मुलेठी सिद्ध तैल से अनुवासन।

(३) गर्भपात–

(I) मैथुन आदि/व्याधि/पूर्वजन्म (मां व गर्भ) कर्म → दोष संचय → बन्धन मोचन।

(II) मुक्त बन्धनगर्भ → गर्भशय्या अतिक्रमण → यकृत प्लीहा आंत्र के दबाव से नीचे स्रंस (खिसकना) → कोष्ठ सङ्क्षोभ →

अपान वायु मूढ → शूल (कुक्षि, वस्ति, पार्श्व, उदर, योनि) आनाह, विण्मूत्रसङ्ग।
→ गर्भ च्यवन– तरुण शोणित भावित।

(४) मृतगर्भा–

- विवृद्ध गर्भ → मृत → Toxaemia → श्वासकृच्छ्र।
- उदर– स्तब्ध, स्तिमित, शीत, अश्मगर्भवत।
- शूल अधिक उत्पन्न परन्तु (आवी नहीं) गर्भस्पन्दन नहीं।

- योनि स्राव नहीं।
- अरति, अन्यथा चेष्टाएं, भ्रम, रूदन, अनिद्रा।

(५) मूढ़गर्भ– (प्रसव काले) विगुण वायु से पीड़ित व मोहित → अपत्यपथ में प्राकृत मार्ग छोड़कर असंख्य गतियों से आने वाला गर्भ।

- **गतियाँ (संक्षिप्ततः)–** त्रिविध
  - (i) ऊर्ध्व (शिर ऊपर)
  - (ii) तिर्यक
  - (iii) न्युब्ज (माथा/चिबुक नीचे, नितम्ब ऊपर)

  } पुनः ८ संस्थान।
- **सङ्ग–** त्रिविध– (i) शिर (ii) अंस (कन्धे) (iii) जघन।

असाध्य/वर्जनीय– सभी मूढ गर्भों (८) के लिये–

विपरीतेन्द्रियार्थ, आक्षेप (Convulsions), योनिभ्रंश, संवरण, मक्कल, श्वास (Rapid Respiration), भ्रम, अभिपत्र, शीतगात्र, पूत्युद्गार (Smell Like Pus)।

मृतगर्भशल्य → श्वासरुद्ध → मारक।

मूढगर्भ चिकित्सा– १. अपरापातनवत २. अथर्ववेद के मंत्र ३. शल्याहरण, शस्त्रकर्म।

शस्त्रकर्म–

- जीवित गर्भ पर न करे। अंगों का विषम विक्षेप → सङ्ग (सूतिका)।
- सभी से कष्टतम शस्त्रकर्म–
- योनि, यकृत, प्लीहा, आंत्र, गर्भाशय मध्ये उनको बिना स्पर्श किये एक हाथ द्वारा कर्म–

(i) उत्कर्षण – नीचे गये को ऊपर उठाना
(ii) अपकर्षण – ऊपर गये को नीचे खींचना
(iii) व्यावर्तन – घुमाना (तिरछे गर्भ को घुमाकर शिर लाना)
(iv) उत्कर्तन
(v) छेदन
(vi) भेदन
(vii) पीड़न
(viii) ऋजुकरण

मूढगर्भ (तथा अश्मरी, उदर) में क्रिया न करने पर मृत्यु निश्चित है। राजाज्ञा लेकर कर्म में प्रवृत्त हो।

पूर्वकर्म– उत्तान लिटाकर, सक्थियां मोड़कर, वस्त्र रखकर कटि प्रदेश उन्नमित करे (उठाये)। शाल्मली पिच्छा/घृत से हाथ व योनि चिकना करे। वेदना हर सुरा पान।

प्रधानकर्म– अष्टसंस्थानानुसार– प्रथम ६ हस्तेनार्हं; ७, ८, शस्त्र।

१.	दोनों पैरों (सक्थि) से आगत	अनुलोमतः निकाले।
२.	१ टांग आई हो (प्रपन्न)	दूसरी टांग को फैलाकर प्रथमावस्थावत निकाले।
३.	स्फिग्देशागत	नितम्बों के आने (Breech Presentation) पर इन्हें ऊपर धकेल (प्रतिपीड्य-उत्क्षिप्य) कर टांगों को प्रसार/फैलाकर (१) वत निकाले।
४.	तिर्यक् आगत (अर्गल वत)	तिरछे अड़ जाने पर नितम्ब प्रदेश को ऊपर कर, शिरोभाग को नीचे सीधा कर निकाले।
५.	पार्श्ववृत्त शिरसो	शिर एक पार्श्व से आने पर अंस (कंधों) को दबाकर ऊर्ध्व उत्क्षिप्त (ऊपर फेंकना) कर शिर सीधा अपत्य में लाकर निकाले।
६.	बाहुद्वय प्रपन्न	अंसो (कंधों) को ऊपर (ऊर्ध्व) उत्पीड्य कर शिर नीचे कर निकाले।

शस्त्रावचारणीय–

७. भुग्नमध्य (मध्य भाग मोड़कर) हाथ पैर व शिर के द्वारा योनि में प्रतिपादित हो (आये/फंसे)।

८. बिना मुड़े (सीधा) १ पैर योनि में व दूसरा गुदा में फंसा दे।

शस्त्रकर्म–

(१) मण्डलाग्र या अंगुलिशस्त्र से (शिर) विदारण कर गर्भशङ्कु कपाल में फंसाकर चिबुक, तालु, उरू, कक्षा का आहरण करे।
शिर भिन्न (Craniotomy) न हो पाने पर अक्षिकूट, गण्ड में गर्भशङ्कु फंसाये।

(२) अंस संसक्त (फंसे) होने पर– अंस देश से बाहु छेदन कर निकाले।

(३) आध्मान वत् वात पूर्ण उदर होने पर– अवदारण (पेट फाड़ना) कर आंत्र निकालकर शिथिलभूत गर्भ निकाले।

(४) जघनसक्त होने पर– जघन कपाल दारण (जांघें काट कर निकाले)।

गर्भ का जो भी अंग फंस रहा हो उस खण्ड का छेदन कर निकाले। यत्नपूर्वक नारी की रक्षा करे ॥४२॥

पश्चात कर्म–

(i) अपरा पातन

(ii) गरम जल से शरीर साफ कर, तैल से देह अभ्यंग,

(iii) स्नेह पिचु योनि धारण

(iv) दोषास्यन्द– ३ दिन– दोष (रक्त, आम आदि) स्रवणार्थ, वेदनाशमनार्थ–
- अजवायन, अतिविषा, रास्ना, हिंगु, एला, पञ्चकोल, चूर्ण घी से पान।
- कुटकी, अतिविषा, पाठा, सागौन छाल, हींग, तेजबल चूर्ण, घी से।

(v) पश्चात ७ दिन स्नेह पान रोज प्रात: व सायं आसव/अरिष्ट (दशमूल) पान।

(vi) शिरीष, अर्जुन क्वाथ पिचु से योनि प्रक्षालन।

(vii) वातघ्न (दशमूल) सिद्ध दूध पान– १० दिन।

(viii) लघु पथ्य अल्प भोजन, रस– १० दिन।
बला तैल आदि स्नेहों का नित्य प्रयोग।
४ माह तक पथ्यानुसार रहते हुए फिर क्रमशः सुखोपभोग करे।

बस्ति द्वारे विपन्नाया: कुक्षि: प्रस्पन्दते यदि ।
जन्मकाले ततः शीघ्रं पाटयित्वोद्धरेच्छिशुम् ।।५२।।

विपन्न (मृत) स्त्री की बस्तिद्वार से, कुक्षि में स्पन्दन होने पर शीघ्र पाटन (Scissarian) कर शिशु निकाले।

मासानुसार गर्भस्राव चि०–

माह	चि०
१.	मुलेठी, देवदारू .....।
२.	कृष्णातिल, मञ्जीठ, शतावरी .....।
३.	पयस्या, उत्पल, सारिवा ....।
४.	अनन्ता, सारिवा, रास्ना, भार्गी, मुलेठी ....।
५.	बृहतीद्वय, काश्मरी (गंभारी), क्षीरिशुङ्ग व त्वक् घृत से (बरगद, गूलर, पीपल, पिलखन)।
६.	सहजन, गोक्षुर, गिलोय (मधुपर्णिका), बला ......।
७.	सिंघाड़ा (शृंगाटक), कमलनाल, द्राक्षा, कसेरू, मुलेठी, सिता।
	Bleeding due to Injury etc. before the time of delivery→
८.	कपित्थ, बिल्व, इक्षु मूल ....।
९.	मुलेठी, सारिवा, अनन्ता ......।
१०.	पयस्या अथवा मुलेठी सोंठ देवदारू– से सिद्ध दुग्ध पान।

बला तैल– भगवान धन्वन्तरि निर्दिष्ट ।।५१।।

प्रमुख घटक– बलामूल, दूध, जौ, बेर, कुलत्थी, दशमूल, तिल आदि।

उपयोग– सूतिका, कृश, वेदनाहर, बल्य, अस्थिभंग, संधिच्युत, बंध्या।

पक्षाघात, आक्षेप, अर्दित, गुल्म, हिक्का, श्वासकास वातरोग। आन्त्रवृद्धि– नित्य ६ माह तक प्रयोग।

- पान, नस्य, अभ्यंग, बस्ति।

५. अङ्ग विभाग

अङ्ग– सकलमपि शरीरमङ्ग मित्युच्यते ।३।

षडङ्ग– शिर, अन्तराधि, बाहु-२, सक्थि-२।

प्रत्यङ्ग– नेत्र, नाभि आदि।

निर्माण– महागुणमयी महाभूत चेतना अधिष्ठत्व से। समानता, विभेदता में कारण - भूत सन्निवेश विभेदता। "भूतात्मकं देहमाहुः" ॥२२॥

महाभूत	महागुण	लिङ्ग	अवस्थान	गुण	भाव
आकाश	सत्व	अप्रतिघात	श्रोत	शब्द (१)	श्रोत, शब्द, स्रोत विविक्तता
वायु	रज	चलत्व	त्वक्	१, स्पर्श (२)	स्पर्शन (त्वचा), स्पर्श, श्वास, परिस्पन्दन, लाघव।
अग्नि	सत्व + रज	उष्ण	नेत्र	१, २, रूप (३)	दर्शन (नेत्र), रूप, पित्त, ऊष्मा, पक्ति (पाक), सन्ताप मेघा, वर्ण, भा, तेज, शौर्य।
जल	सत्व + तम	द्रवत्व	जिह्वा	१, २, ३, रस (४)	रसन, रस, स्वेद, क्लेद वसा, रक्त, शुक्र, मूत्रादि, द्रव समूह, शैथिल्य, स्नेह।
पृथ्वी	तम भूयिष्ठ	काठिन्य	नासा	१, २, ३, ४, गंध (५)	घ्राण गन्ध, केश, नख, अस्थि आदि मूर्त (Hard) समूह, धैर्य, गौरव।

भाव-८–

१. मातृज– मृदु; त्वक्, रक्त, मांस, मेद, मज्जा, नाभि, हृदय, आमाशय, गर्भाशय, यकृत्प्लीहा, क्लोम (Lungs), आंत्र, गुदा।

२. पितृज– स्थिर; केश, नख, अस्थि, शुक्र, सिरा, स्नायु आदि।

३. आत्मज– योनि (मनुष्य, मृग आदि) उत्पत्ति; मन, चेतन, इन्द्रिय, प्राणापानौ धारण, आकृति, स्वर वर्ण विशेष। काम क्रोध लोभ भय हर्ष, धर्माधर्मशीलता, स्मृति, बुद्धि, इच्छा, प्रयत्न, अहङ्कार, सुख, दुःख, आयु, आत्मज्ञान।

४. सात्म्यज– आयु, आरोग्य, अनालस्य, अलोलुप, इन्द्रिय प्रसाद, स्वर, वर्ण, बीज ओज सम्पत् , प्रशस्तता, प्रहर्षता, मेधाबल।

५. रसज– देह सम्भव (बनना), वृत्ति, वृद्धि, तृप्ति, अलौल्य, पुष्टि उत्साह।

६. सत्वज– शौच, आस्तिकत्व, कृतज्ञता, दक्षता, व्यवसाय, शौर्य, गम्भीरता, बुद्धि, मेधा, स्मृति; शुक्ल, धर्मरूचि, भक्ति, अनभिष्वङ्ग, तमोगुण विपर्यय।

७. राजस– दुरूपचारता, अनार्यत्व, शौर्य, मात्सर्य, अतिभाषी, अहंकार, लोलुप दम्भ, मान, क्रोध, हर्ष, काम।

८. तामस– अज्ञान, विषाद, प्रमाद, निद्रा, आलस्य, भूख, तृष्णा, शोक, मात्सर्य विप्रतिपत्ति (विरोध, झगड़ा); पराभिसन्धान (फूट डालना); सत्व गुण वैपरीत्य।

"सत्वं मन:"। सत्व ही मन है– २ विकार– रज, तम।

देह प्रविभाग– (अ) मूर्तिमान स्थिर भाव (त्वक्, कला आदि) / (ब) द्रव, दोष आदि।

(अ) मूर्तिमान स्थिर भाव-३०–

त्वचा (च०-६, सु०-७)		अस्थि संघात	१४
कला	७	सीमन्त	१८
दोष, धातु, मल	सू० १९	अस्थियां	३६०
		अस्थिसन्धियाँ	२१०
		स्नायु	९००
ज्ञानेन्द्रियां	५	पेशी	५००
कर्मेन्द्रियां	५	सिरा, धमनी	२९००९५६
अतीन्द्रिय	१		
आशय	७	स्रोतस्	∞
प्राणायतन	१०	सीवन	७
कण्डरा	१६	महामर्म	७
जाल	१६	केश, श्मश्रु, लोम	२९००९५६
कूर्च	६		
रज्जु	४		
सीवनी	७		
बन्धन गुण	४		
मांस रज्जु	४		

(१) त्वचा– • रक्त --पच्यमान--→ षट् त्वक्

• त्वक् प्रसाद ⇌ रक्त प्रसाद

प्रथम – उदकधरा

द्वितीय – असृक्धरा

तृतीय – सिध्म किलास अधिष्ठान

चतुर्थ - सर्व कुष्ठ अधिष्ठान
पञ्चम - अलजी विद्रधि अधिष्ठान
षष्ठी - प्राणधरा - छिन्न → तम: प्रवेश।
- इसका आश्रय लेकर अरूंषिका उत्पत्ति।
अरूंषिका - पर्व पर कृष्ण रक्त स्थूल मूला–दुश्चिकित्स्य।

अन्य आचार्यानुसार– ७

	नाम	यव प्रमाण	
१.	भासिनी	१/१८	वर्ण अवभासन, पंचमहाभूत छाया प्रकाशक।
२.	लोहिनी	१/१६	
३.	श्वेता	१/१२	(१ यव = १/३ अंगुल – सु०नि० २/६)
४.	ताम्रा	१/८	
५.	वेदिनी	१/५	
६.	रोहिणी	१	
७.	मांसधरा	२	

कला– "धात्वाशयान्तर मर्यादा"।

निर्माण– धातुव आशय के मध्य में स्थित क्लेद $\xrightarrow[\text{विपक्व}]{\text{स्व ऊष्मा}}$ कला

स्वरूप– स्नायु श्लेष्म जरायुच्छन्न, धातुसार, रसशेष अल्पत्व। यथा वृक्ष में सार व त्वक् के मध्य स्थित तनु जरायु (झिल्ली)।

	कला	स्थान	
I.	मांस धरा	मांस आवरण	सिरा स्नायु धमनी स्रोतस् का प्रतान (जाल) वत प्रसार।
II.	रक्तधरा	मांस के अभ्यन्तर। सिरा, प्लीहा, यकृत का आवरण विशेषत:।	इनके अन्दर रक्त भरा होता है। क्षत से रक्त प्रवर्त।
III.	मेदो धरा	उदर, अस्थि	१. अस्थियों के अंदर अणुओं में यह मेद (स) रक्त बन जाता है। २. मेद ≡ मस्तुलुङ्ग – शिर कपाल से आच्छन्न मस्तिष्क में। ३. मेद ≡ मज्जा – स्थूलास्थि

	कला	स्थान	
IV.	श्लेष्मधरा	सर्वसन्धियां	श्लेष्मधरा के श्लेष्म से सर्वसंधियों का आश्लेषण → दृढ़
V.	पुरीषधरा	आंत्र आमाशय व पक्वा-शय में आश्रित	कोष्ठ के अंदर उन्दुकस्थ मल, विभाग (शोषणीय, उत्सर्जनीय)।
VI.	पित्तधरा	पक्वामाशय मध्यस्था (पक्वाशय व आमाशय के मध्य ≡ Duodenum) ग्रहणी– अन्न के ग्रहण करने से। ग्रहणी का बल अग्निरूपी पित्त है।	अन्तराग्नि अधिष्ठान। कार्य– आमाशय से पक्वाशय की ओर उन्मुख अन्न को बलात् धारण कर पित्त के तेज से शोषण, पाचन, पक्व का विमोचन (आगे बढ़ाना)। अग्नि व पित्तधरा का योगक्षेम समान है।
VII.	शुक्रधरा	मूत्रमार्ग आश्रित	दक्षिण पार्श्व में बस्तिद्वार से २ अंगुल नीचे, सर्वशरीर व्यापी शुक्र का प्रवर्तन।

इन्द्रियाँ–

ज्ञानेन्द्रियाँ–५– श्रोत्र स्पर्शन दर्शन रसन घ्राण।

विषय– शब्द स्पर्श रूप रस गंध

अधिष्ठान– कर्ण त्वक् अक्षि जिह्वा नासा

कर्मेन्द्रियाँ–५– वाणी गुदा उपस्थ पाणि पाद

कर्म– वचन उत्सर्ग हर्ष आदान गमन

अभयेन्द्रिय–१– मन– ज्ञान व कर्म दोनों में प्रवृत्त।

अतीन्द्रिय– सर्वार्थैरन्वयात; इसी के योग से इन्द्रियाँ अर्थों में प्रवृत्त होती है।

इन्द्रियोत्पत्ति– कफ व रक्तवाही स्रोतों व महाभूतों (स्व अग्नि पाक) के प्रसाद भाग से उत्पत्ति।

नेत्र– (A) मण्डल–५–

१. श्वेतमण्डल (Sclera)– कफ प्रसादोत्पन्न; पितृज

२. कृष्णमण्डल (Cornea)– रक्त से उत्पन्न; मातृज

३. दृष्टिमण्डल (Pupil)– रक्त व कफोत्पन्न; मातृ-पितृज (उभय)।

४. पक्ष्म मण्डल (Lashes)

५. वर्त्म मण्डल (Lid-Upper & Lower)

(B) सन्धियाँ–६–

मण्डल मध्ये–४; अपाङ्ग (Temporal Canthus); कनीनिक (Nasal Canthus)।

(C) पटल–६–

१. वर्त्म-२ (Upper & Lower Eye Lids)

२. बाह्य पटल– अग्नि जल प्रधान्य
(Cornea & Aqueous Humour)

३. तृतीय– मांसाश्रित

४. चतुर्थ– मेदाश्रित

५. अस्थि आश्रित

६. दृष्टि पटल (Retina)

(२ से ६ तक) बहलता = दृष्टि/५

(D) बंधन गुण–४– सिरा, कण्डरा, मेद, कफात्मक।

श्लेष्मा– परम् सर्वसन्धि बन्धन।

नेत्र कार्य विधि– नेत्राश्रित तेज + बाह्य तेज → रूपज्ञान
(योग)
अतियोग → इन्द्रिय हानि।

नेत्राश्रित तेज वीर्योत्कर्ष वश जल में रहते हुये भी क्षीण नहीं होता (यथा विद्युत मेघे)।

जिह्वा– मांस रक्त कफ प्रसाद → जिह्वा।

वृषण– मांस रक्त कफ मेद प्रसाद → वृषण।

आशय–

पुरुष–७– रक्त, कफ, आमाशय, पित्ताशय, पक्वाशय, वात, मूत्र।

स्त्री–८– गर्भाशय (पित्ताशय व पक्वाशय के मध्य)।

आशय प्रतिबद्ध कोष्ठाङ्ग– हृदय, यकृत, प्लीहा, फुफ्फुस, उन्दुक, वृक्क, आंत्र आदि।

समान वायु
(१) रक्त – पाचन → देहोष्मा
- अच्छ (स्वच्छ) → यकृत, प्लीहा
- फेन (झाग) → फुफ्फुस
- किट्ट → उन्दुक

(२) रक्त मेद – प्रसाद → वृक्कौ

(३) रक्त मांस – प्रसाद → आंत्र – (पुरूष– ३½, स्त्री– ३ व्याम)

(४) रक्त + वायु → कालीय (Adam's Apple)

(५) कफ रक्त – प्रसाद → हृदय

हृदय– पद्मकोश संकाश, सुषिर, अधोमुख। यह विशेषत: चेतना का स्थान है। सभी भाव चेतना पर ही निर्भर (संबद्ध) होते हैं। हृदय के वाम पार्श्व में प्लीहा, फुफ्फुस तथा दक्षिण पार्श्व में यकृत, क्लोम होते हैं।

प्राणायतन–१०

१. मूर्धा	४. हृदय	७. गुदा	महामर्म (७)
२. जिह्वा बंधन	५. नाभि		
३. कण्ठ	६. बस्ति		

८. शुक्र ९. ओज १०. रक्त।

कण्डरा–

हाथ/पैर– २×४ = ८
ग्रीवा = ४
पृष्ठ = ४
= १६

जालक– मांस सिरा स्नायु अस्थिज।
गुल्फ/मणिबन्ध– ४×४ = १६

कूर्च– षट् कूर्चा हस्त पाद ग्रीवा मेण्ढ्रेषु ॥६३॥
२ + २ + १ + १ = ६

मांसरज्जू– ४, पृष्ठ वंश (Vertebral Column) के दोनों ओर पेशी निबन्धनार्थ।
└ बाह्य-२, अभ्यन्तर-२।

सीवन– ७ (शस्त्र से बचाये)
शिर-५; जिह्वा-१, मेहन-१।

अस्थिसङ्घात–

गुल्फ, जानु, वंक्षण, मणिबन्ध, कूर्पर, कक्षा १×६×२ = १२
(Ankle Joint) (Knee) (Ing) (Wrist) (Elbow) (Axilla)
त्रिक (Sacrum)– १
शिर (Skull)– १
१४

सीमन्त– गुल्फ .... कक्षा – १२
त्रिक – १
शिर – ५
१८

अस्थियाँ– शाखा – १४० – (३५×४)
अन्तराधि – १२०
मूर्ध – १००
३६०

एक सीक्थ की अस्थियां–

नख		५
अंगुली	३×५ =	१५
पाद शलाका		५
शलाका बन्ध		१
कूर्च, गुल्फ, जंघा	२×३ =	६
पार्ष्णि, जानु, उरू	१×३ =	३
		३५

अन्तराधि अस्थियाँ–

पर्शुका (Ribs)	१२×२ =	२४
स्थालका (Costal Cartilages)	१२×२ =	२४
अर्बुद (Head Neck & Tubercle of Ribs)	१२×२ =	२४
पृष्ठ		३०
उर		८
भग त्रिक Pubic Bone	१×२ =	२
नितम्ब Hip Bone	१×२ =	२
अक्षक, अंस, अंसफलक	१×३×२ =	६
		१२०

मूर्धास्थियाँ–

गण्ड, कर्ण, शङ्ख	१×३×२ =	६
जत्रु, तालु	१ + १ =	२
ग्रीवा		१३
कण्ठनाड़ी		४
हनुबंधन		२
दंत		३२
दंत उलूखल		३२
नासा		३
शिर		६
		१००

अस्थि प्रकार–५

नाम आकृति अनुसार	
कपाल	जानु नितम्ब अंस गण्ड तालु शङ्ख वंक्षण, शिर के मध्य की अस्थियाँ।
रूचक	दशन (Teeth)
तरूण	घ्राण कर्ण ग्रीवा अक्षिकोश
वलय	पाणि पाद पार्श्व पृष्ठ
नलक	शेष सभी अस्थियाँ

अस्थियों में सिरा स्नायु द्वारा मांस निबद्ध होता है।

अस्थि संधियाँ– शाखा – ६८, अन्तराधि – ५९, ऊर्ध्व – ८३ } कुल– २१०

शाखा– (१७×४)

अंगुलि	३×४	=	१२
अंगुष्ठ		=	२
गुल्फ, जानु, वंक्षण	१+१+१	=	३
			१७

मध्य भाग–

कटि कपाल (Pelvic Bone)	–	३
पृष्ठ वंश (Vertebral Column)	–	२४
पार्श्व (पृष्ठ वंश के दोनों ओर)	–	२४
उर (Sternum)	–	८
		५९

ऊर्ध्व–

ग्रीवा			८
कण्ठ नाड़ी			३
कण्ठनाड़ी से हृदय यकृत क्लोम नाड़ियों की निबद्धता (संधि)			१८
दंतमूल			३२
काकल, नासा, मूर्ध	१+१+१	=	३
गण्ड, कर्ण, शङ्ख, वर्त्म, नेत्र, हनुसंधि	२×६	=	१२
भ्रू के ऊपर			२
शिर: कपाल			५
			८३

अष्टविध संधि–

	संधि	स्थान		संधि	स्थान
१.	कोर	अङ्गुलि, गुल्फ, जानु, मणिबन्ध, कूर्पर (Elbow)	५.	तुन्नसेवनी	शिर कपाल, कटिकपाल
			६.	वायसतुण्ड	हनु
२.	उलूखल	कक्षा, वंक्षण, दंतमूल	७.	मण्डल	कण्ठ, नेत्र, हृदय, यकृत, क्लोम नाड़ी
३.	सामुद्र	अंसपीठ, गुद भग, नितम्ब			
४.	प्रतर	ग्रीवा, पृष्ठवंश	८.	शङ्खावर्त	श्रोत्र, शृंगाटक

संधियाँ स्नायुपेशी सिरा आश्रित हो २००० होती हैं।

स्नायु–

शाखा	–	६०० (१५०×४)
अन्तराधि	–	२३०
ऊर्ध्व	–	७०
		९००

शाखा–

अंगुलि	६×५ =	३०
पादतल, कूर्च, गुल्फ	१०+१०+१० =	३०
जंघा (Leg)		३०
जानु (Knee)		१०
उरू (Tnigh)		४०
वंक्षण		१०
		१५०

अन्तराधि–

कटि	४०
मुष्क (Scrotum), मेण्ढ्र, बस्ति, अंत्र	२०
पृष्ठ	८०
पार्श्व	६०
उरू (वक्ष)	१८
अक्षक (Axilla)	४
अंस (कन्धे)	८
	२३०

ऊर्ध्व–

मन्या, अवटु (Thyroid Region), नेत्र,	
ओष्ठ, तालु	२+२+२+२+२ = १०
ग्रीवा	३०
जत्रु (Clavicle Region)	३
हनु	४
जिह्वा	५
दन्तमांस (Gums- Upper & Lower)	१२
मूर्ध	६
	७०

परिभाषा–

"स्नावबन्धनैर्हि सन्धिषु सुबद्धा" .... ॥८४॥

स्नायु के बंधन (Ligaments) से सन्धियाँ सुबद्ध रहती हैं।

पेशी– पुरुष– ५००; स्त्री– ५२०।

शाखा	४००	(१००×४)
अन्तराधि	६०	
ऊर्ध्व	४०	
	५००	

शाखा–

अंगुलि	३×५ = १५
प्रपद, पादतल, गुल्फ	१०+१०+१० = ३०
पाद के ऊपर (कूर्च सन्निविष्ट)	१०
जंघा	२०
जानु	५
उरू	२०
	१००

अन्तराधि–

मेढ्र, सीवनी	१+१ = २
वृषण	२
स्फिक्	१०
गुद (वलि)	३

बस्तिशिर		२
उदर		४
नाभि		१
हृदय, आमाशय	१+१ =	२
यकृत प्लीहा उण्डुक		६
पृष्ठ (ऊर्ध्व संनिविष्ट)		५
पार्श्व (दीर्घ)		१०
वक्ष		१०
अंस, अक्षक के ऊपर		३
		६०

ऊर्ध्व–

ग्रीवा		१०
गण्ड		८
हनु		८
गल काकल जिह्वा मूर्ध	१+१+१+१ =	४
तालु, ललाट	२+२ =	४
नासा, ओष्ठ, कर्ण	२+२+२ =	६
		४०

स्त्रियों में अधिक–

स्तन – १० (यौवने परिवृद्धि) – (५+५)

योनि – १०

(A) अभ्यन्तर आश्रित – २

(B) मुखाश्रिते वृत्ते – २

(C) गर्भमार्गाश्रया: (यस्यां गर्भस्तिष्ठति) – ३

(D) (गर्भशय्यां) शुक्रार्तव प्रवेशिनी – ३

(A) (i) Ant & Post Wall of Vagina

– Prof. Prem Vati Tiwari

(ii) (a) Inner Circular
(b) Outer Longitudinal } Muscle Layer

– Dr. Ghānekara

(iii) Broad Ligaments – (2)

– Pt. Gangadhar Joshi

(B) (i) Sphinctor Vagini Muscle – Bulbo Cavernous Circular
– Dr. Ghānekara
– Prof. (Km.) P.V. Tiwari

(ii) Labia Majora & Minora
– Pt. Gangadhar Joshi

(C) (i) Fundus, Corpus, Isthmus of Uterus.
– Prof. P.V. Tiwari

(ii) (a) Perimetrium
(b) Myometrium
(c) Endometrium } of Uterus
– Dr. Ghānekar

(iii) (a) Cardinal Ligament
(b) Uterosacral Ligament
(c) Pubocervical Fascia
– Pt. Gangadhar Joshi

(D) (i) Cervix-1
Fallopian Tubes-2
– Prof. P.V. Tiwari

(ii) Layers of Fallopain Tubes–
(a) Inner Longitudinal Cilliated Epithelium
(b) Middle – Muscular Tissue (Long & Circular)
(c) Outer Layer of Peritoneum Formed by Broad Ligaments.
– Dr. Ghānekara

योनि (व गर्भाशय) स्वरूप– शङ्ख नाभि की आकृति वाली योनि में ३ आवर्त होते हैं। तृतीय आवर्त में पित्ताशय व पक्वाशय के मध्य रोहित मत्स्य मुखाकार गर्भ शय्या होती है।

पेशी < स्वरूप – तनु बहल स्थूल अणु पृथु (चपटी), वृत्त, ह्रस्व, दीर्घ स्थिर मृदु श्लक्ष्ण कर्कश।
कर्म – सन्धि अस्थि सिरा स्नायु प्रच्छादन।

Word Pesi in Āyurveda has been used to denote fascia, muscle, tendon etc. – Prof. P.V. Tewari

पेशी का कर्म प्रच्छादन, मृदु अंग धारण व संरचनात्मक है; तथा स्नायु संधि की अस्थियों को सुबद्ध करने वाले बंधन हैं।

केश श्मश्रु लोम– सिरा धमनी के सूक्ष्म मुखों द्वारा पोषण।

कार्य– १. स्वेद अभिवहन।
२. अभ्यंग लेप आदि– त्वचा में विपाक – वीर्य —केश आदि→ अर्न्तनयन
३. स्पर्श ग्रहण।

(ब) अमूर्त भाव–

द्रव– जल शरीर में बाह्य त्वचा का पोषण करता है।

लसिका– त्वचा के अंदर व्रण में
स्वेद– जल –ऊष्मा→ रोमकूपों से गिरना } उदक स्वरूप।

रस धातु के प्रसाद भाग से रज व स्तन्य निर्माण।

सम धातु परिमाण–

आहार सार/रस	९	मेद	२
रक्त	८	मज्जा	१
मल	७	शुक्र	१/२
कफ	६	मस्तिष्क	१/२
पित्त	५	ओज	१/२
मूत्र	४	रज (♀)	४
वसा	३	स्तन्य (♀)	२ अञ्जलि (स्व)।

धान्वन्तरीय पुन: कहते हैं कि– शरीर में दोष धातु मल नित्य चलायमान होते हैं अत: उपरोक्त परिमाण का सम अवस्था में अनुमान किया जाता है।

- शरीर अवयव परमाणु भेद से असंख्य होते हैं।
- **तेषां संयोग विभागे परमाणुनां कर्म प्रेरितो वायुः कारणम् ।।१०२।।**

परमाणुओं के संयोग (जीवन) विभाग (ह्रास) में (दैव व पौरूष) कर्म प्रेरित **वात** कारण है।

६. सिरा विभाग

सिरा व धमनी विशेष प्रकार के स्रोत हैं ।।४८।।

मूल सिरा– १०

- हृदय से प्रतिबद्ध
- कार्य– सभी अङ्ग-प्रत्यङ्ग में ओज ले जाना
- इनकी शाखा-प्रशाखाओं से कुल ७०० सिराएं।

भाग	कुल	अवेध्य
शाखा	४००(१००×४)	१६(४×४)
अन्तराधि	३६	२२
ऊर्ध्व	६४	५०

स्थान	कुल	अवेध्य	विवरण
• शाखा	४००	१६	एक में ४; जालधरा-१, आभ्यन्तर-३ (ऊर्वी-२; लोहिताक्ष-१)
• श्रोणि– (गुद मेण्ढ्राश्रित)	३२	८	वंक्षण (२+२), कटीकतरूण-४।
• पार्श्व	१६	२	ऊर्ध्वग पार्श्वसन्धि (१+१)
• पृष्ठ	२४	४	पृष्ठवंश के दोनों ओर की ऊर्ध्वगामी (२+२)
• उदर	२४	४	मेढ्र के ऊपर रोमराजी के दोनों ओर (२+२)
• वक्ष	४०	१४	हृदय-२; स्तन मूल (२+२) स्तन रोहित-४, अपस्तम्भ (Both Sides)-2, अपालाप (Both Sides)-2।
• ग्रीवा	२४	१६	मर्म– ८+४ (मातृका ८+नीला-२, मन्या-२); कृकाटिका-२, विधुरा-२।
• हनु	१६	२	सन्धि संबंधी
• जिह्वा	१६	४	अधो रस वेदिनी-२, वाक् प्रवर्तिनी-२
• नासा	२४	३	गंध वेदिनी-२, तालुनी-१
• नेत्र	५६	६	उन्मेष-२, 'निमेष-२, अपाङ्ग-२।
• नासा, नेत्र से ललाट में जाने वाली	६०	७	केशान्त अनुगत-४, आवर्त-२, स्थपनी-१।
• कर्ण	१६	४	शब्दवाहिनी-२ ,, शङ्खसन्धिगत-२।
मूर्ध	१२	८	उत्क्षेप-२, सीमन्त (१×५), अधिपति-१।

उपरोक्त अवेध्य (९८) के अतिरिक्त क्षुद्रिका, कुटिला, संकीर्ण, ग्रथित (at valve) तथा सन्धिस्थ सिराओं पर शस्त्र कर्म न करे।

दोष वहन अनुसार विभाग–

(१) वात रक्तवाही-१७५– श्याव अरूण, प्रस्पन्दि, सूक्ष्म, क्षण पूर्णरिक्ता

(२) पित्तरक्तवाही-१७५– नील पीत काली, उष्णस्पर्श, शीघ्र स्रावी।

(३) कफ रक्त वाही-१७५– गौर, स्निग्ध, स्थिर, शीत, कण्डूमती।

- संसर्ग/सन्निपात रक्तवाही– मिश्र लक्षण।

(४) शुद्ध रक्तवाही १७५– सम, गूढ़, स्निग्ध, रोहिणी वर्ण-लाल।

धमनी–

- केदार इव कुल्या न्यास से शरीर का उपस्नेहन।
- संख्या– मूलतः २४;
- नाभि चक्र धमनियों से अरा वत आवृत।

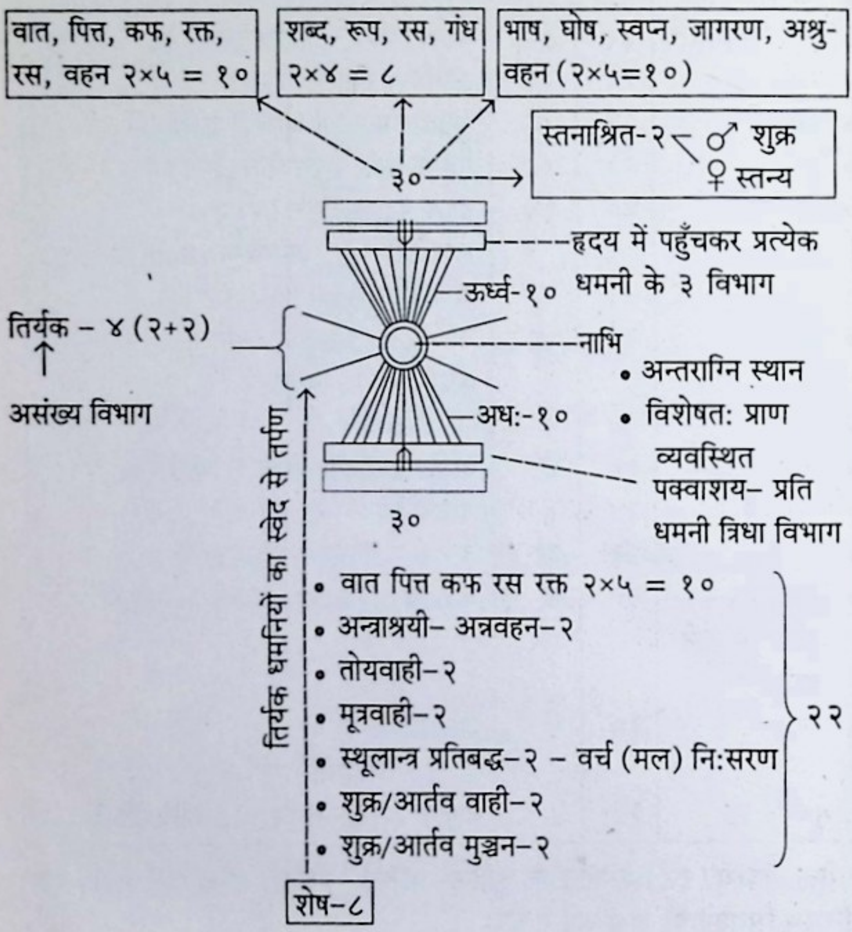

स्रोत

पुरुष–९ → कर्ण, नेत्र, नासापुट (२×३)
मुख, पायु, मूत्रपथ।

स्त्री–९+३ → स्तन–२
रक्त पथ (आर्तव)–१

अन्तः स्रोत–१३
(जीवितायतन)
प्राण, उदक, अन्न, धातु
मल आयतन

	स्रोतस्	मूल	दूष्यहेतु	दूषित लक्षण	चिकित्सा
१.	प्राणवह	हृदय, महास्रोत	धातुक्षय, रौक्ष्य, पिपासा, क्षुत, व्यायाम, वेग धारण	उच्छवास– अल्प, जल्दी-२, शब्द व कष्टयुक्त	श्वासवत
२.	उदकवह	तालु, क्लोम	आम, भय, अति-पान, उष्ण शुष्क अन्न, तृट् निग्रह	अतितृष्णा, मुख-शोष, कर्णक्ष्वेड़, तमोदर्शन।	तृष्णोक्त औषध
३.	अन्नवह	आमाशय, वामपार्श्व	मात्राशितीय अ०		
४.	रसवाही	हृदय, १० धमनी	दोषादिविज्ञानीय अ० (४–१३)		
५.	रक्तवाही	यकृत, प्लीहा			
६.	मांसवह	स्नायु, त्वक्			
७.	मेदोवह	वृक्क-२, मांस			
८.	अस्थिवह	जघन, मेद			
९.	मज्जावह	पर्व, अस्थियाँ			
१०.	शुक्रवह	स्तन-२ मुष्क-२, मज्जा			
११.	मूत्रवह	बस्ति, वंक्षण-२			
१२.	मलवह	पक्वाशय स्थूलान्त्र			
१३.	स्वेदवह	मेद, रोमकूप			

स्रोतस् स्वरूप–

स्वधातु समवर्णानि वृत्त स्थूलान्यणूनि च।
स्रोतांसि दीर्घाण्याकृत्या प्रतान सदृशानि च।।७३।।

वर्ण– स्वधातु वत; वृत्त, स्थूल, अणु (सूक्ष्म) (मुख वाले)।

आकृति– दीर्घ (लम्बे) प्रतान सदृश।

Minute long tubules, circular in transverse section. बिस (कमलनाल) जैसे सूक्ष्म, दूर तक प्रसृत होने वाले द्वारों (Pores) से देह में रस उपचित होता है।

दृष्टि हेतु– दोष गुणों के समान तथा धातु गुणों के विपरीत गुण वाला आहार-विहार।

दुष्टि लक्षण–

अति प्रवृत्तिः सङ्गो वा सिराणां ग्रन्थयोऽपि वा ।
विमार्गतो वा गमनं स्रोतसां दुष्टि लक्षणम् ।।७५।।

१. अति प्रवृत्ति
२. अवरोध
३. सिरा में ग्रन्थि
४. धातु का विमार्ग गमन

दृश्य अदृश्य धातु अवकाश– संवृत्त असंव्रत स्थान आशय, स्रोत, सिरा, धमनी, रसवाहिनी, नाड़ी, पन्थ, अयन, मार्ग, शरीर छिद्र, क्षय निकेत ॥ अन्य आचार्य मत ॥

प्रकोप ↓

धातु प्रकोप– स्वस्थान/स्वमार्ग स्थित
↓
स्रोत प्रकोप → धातु प्रकोप (सर्वशरीर)

दुष्ट दोष (V, P, K)
↑
अग्नि दुष्ट

- आयु आरोग्य बल उपचय वर्ण ओज का निमित्त।
- रंजक आदि (पित्ताग्नि ≡ दोषाग्नि), भूताग्नि, धात्वग्नि अग्नि से प्रतिबद्ध।
- पाचक पित्त ≡ अग्नि (पाचकाग्नि) ॥५५॥

(अन्य आचार्य– दोष धातु मल संयोग जनित ऊष्मा, अग्नि कर्म कारक)

- अन्न ———→ कोष्ठ

(A) आमाशय– प्राणवायु
(i) द्रव → संघात
(ii) स्नेह → मृदु
(iii) समान वायु से संधुक्षित अग्नि → पाचन

(B) दोषोत्पत्ति–
(i) आमाशय :– मधुर– झाग → कफ
(ii) आमाशय से च्यवन के समय (ग्रहणी में) :–
विदग्ध– अम्लीभूत → पित्त
(iii) पक्वाशय :– कटु → अनिल

(C) भूताग्नि पाक–

विकिलत्र आहार में ५ महाभूताग्नियाँ अपने-२ अंशों का पाचन करती हैं। पक्व भाग से देहाश्रित भूत का स्वविकार (भाव/रचना) तथा भूत गुण का आप्यायन होता है।

{ सार → रस ; किट्ट → मल } स्रोतो में अविच्छिन्न आपूरण → स्रोतों से विभागानुसार उस-२ धातु का पोषण [निरन्तर]। }

(D) धात्वाग्नि पाक से धातु व मल पोषण–

आहार रस $\xrightarrow{\text{व्यान}}$ स्रोत $\xrightarrow[\text{पच्यमान}]{\text{७ धात्वाग्नि}}$ स्वात्मभाव को प्राप्त हो रक्तादि धातु संज्ञक

- देह बल ऊर्जा वृद्धि
- धातु व मल पुष्टि

किट्ट < अच्छ – मूत्र ; घन – शकृत

	सार	किट्ट
रस	रक्त	कफ, लसिका
रक्त	मांस, कण्डरा, सिरा	पित्त
मांस	मेद, त्वचा, वसा	कर्ण, अक्षि, नासा, मुख, रोमकूप, प्रजनन अंगों के मल।
मेद	अस्थि, स्नायु, सन्धि	स्वेद
अस्थि	मज्जा	केश, लोम, नख
मज्जा	शुक्र	अक्षि विट्, त्वचास्नेह
शुक्र	ओज (अन्य आचार्य– गर्भ)	

"देहेऽन्नमया एव सर्वे भावा:" ।।६८।।

शरीर के सभी भाव अन्नमय हैं। अन्नरस से सभी भावों की उत्पत्ति एक साथ होती है। धातु स्रोतों में अन्नरस पहुँचते समय असंवृत्त समीपस्थ स्रोतों में प्रथम (शीघ्र) व मात्रा में अधिक पहुँचता है।

संवृत तथा दूरस्थ धातु स्रोतों में थोड़ी देर से पहुँचता है। परन्तु सभी स्रोतों में जाने का कार्य एक साथ ही होता है, केवल समय भेद होता है। धातुएं अपने स्वरूप को नष्ट कर अगली धातु में परिवर्तित नहीं होती, अन्नरस से ही सभी की पुष्टि होती है।

शुक्र धातु पोषण– अन्नरस के क्रमश: परिपाक से सद्य:।

{अन्यमत– १ अहोरात्रि; ६ दिन; १ मास }

- वृष्य औषधि प्रभाव सद्य: शुक्र कर है।

अग्नि भेद– बलानुसार-४

सम	सम दोष स्वस्थाने।	सम्यक् आहार का सम्यक् पाचन।
विषम	दोषों (मुख्यत: वात) का विमार्गी	कभी पचाये, कभी नहीं।
तीक्ष्ण	पित्त से अभिमूर्छित।	अतिमात्रा का भी शीघ्र पाचन।
मंद	कफ पीड़ित।	सम्यक् आहार भी देर से पचे।

- तीक्ष्णाग्नि ↑→ अत्यग्नि (→ भस्मक)
- मंदाग्नि ↓→ आमदोष; उदर गौरव, आध्मान, बिबंध, आटोप आन्त्रकूजन, मुखशोष।

धातुमल–

कफः पित्तं मलः खेषु प्रस्वेदो नखरोम च ।
स्नेहोऽक्षित्वग्विशामोजो धातूनां क्रमशो मलाः ।।७९।।

कफ; पित्त; रिक्तस्थानमल; स्वेद; नख, रोम; अक्षि, त्वक स्नेह; ओज ये धातुओं के क्रमश: मल हैं।

७. मर्म विभाग

निरूक्ति– "मरण कारित्वान्मर्म" ॥२६॥ मृत्यु का कारण होने से मर्म ।

मर्म व्यध → अतिरक्तस्राव → वात वैकृत → मृत्यु ॥३२॥

परिभाषा– मांस सिरा स्नायु अस्थि सन्धि का सन्निपात/संयोगस्थल। इनके पीडन से विशेषत: प्राण बाधा होती है। बाहुल्य के आधार पर नामकरण।

सामान्य लक्षण– पीड़न से विभिन्न वेदनाओं की उत्पत्ति व स्पन्दन/कम्पन।

संख्या– १०७

विभाग– शाखा–४४; अन्तराधि–२६; ऊर्ध्व–३७।

शाखा (११×४)	१.	तल हृदय	मध्य अंगुलि की सीध में पादतल में	विद्ध → रूजा → मरण
	२.	क्षिप्र	अंगूठा व अंगुली के मध्य	आक्षेप → मृत्यु
	३.	कूर्च	क्षिप्र से २ अंगुल ऊपर	विद्ध → पैर घूमना,कंपन
	४.	कूर्च शिर	गुल्फ सन्धि के नीचे	विद्ध → रूजा, शोफ
	५.	गुल्फ	पाद जङ्घयो: सन्धाने Junction of Feet&Leg	विद्ध → सीक्थ स्तब्ध, जाड्य, क्लैव्य।
	{	मणिबन्ध	In Wrist	}
	६.	इन्द्रबस्ति	पार्ष्णि (Ankle) से १२ अंगुल ऊपर जङ्घा (Leg) मध्ये।	विद्ध →शोणितक्षय → मृत्यु

	७.	जानु	जङ्घा (Leg) व उरू (Thigh) का संधान (Junction)	खञ्जता
	{	कूर्पर	In Elbow	व्यध → कुणिता}
	८.	आणि	जानु से ३ अंगुल ऊपर उभयत: (Bilateral)	शोफ, स्तब्ध
	९.	ऊर्वी	ऊरू (Thigh) मध्ये	रक्त क्षय → सक्थिशोष
	१०.	लोहित	ऊर्वी से ऊपर, वंक्षण संधि के नीचे ऊरू (Thigh) के मूल में	रक्तक्षय → पक्षाघात
	११.	विटप	वङ्क्षण वृषण मध्ये	षाण्ड्य, अल्पशुक्रता
	{	कक्षाधार	कक्षाक्ष मध्ये	कुणित्व }
अन्त राधि	१.	गुद	स्थूलान्त्र प्रतिबद्ध	सद्यः मृत्यु
	२.	बस्ति	• अल्प मांस रक्त। • कटि के अभ्यन्तर, धनुर्वक्र, एक द्वार, अधोमुख • अश्मरी व्रण–उभयतोविद्ध	 सद्यः मृत्यु मृत्यु
	३.	नाभि	पक्वामाशय मध्ये	सद्यः मृत्यु
	४.	हृदय	वक्षकोष्ठ (Thoracic Cavity) में स्तनों के मध्य। • सत्व रजतम अधिष्ठान • आमाशय द्वार	सद्यः मृत्यु
	५.	स्तनमूल (२)	स्तन के २ अंगुल नीचे दोनों ओर।	कफ पूर्ण कोष्ठ में विद्ध से मृत्यु।
	६.	स्तनरोहित (२)	चूचुक से २ अंगुल ऊपर	शोणित पूर्ण कोष्ठस्य मरणम् ।
	७.	अपस्तम्भ (२)	उर के दोनों ओर वातवह नाड़ी	शोणित पूर्ण कोष्ठ, कास श्वास → मृत्यु।
	८.	अपालाप (२)	अंसकूट के नीचे, पार्श्वों के उपरि भाग में।	पूय रक्त → मृत्यु
	९.	कटीक-तरूण(२)	पृष्ठ वंश के दोनों ओर प्रति-श्रोणि कर्ण में।	रक्तक्षय → पाण्डु → मृत्यु

	१०.	कुकुन्दर (२)	पार्श्वयोर्जघन बहिर्भागे पृष्ठवंश मुभयतः (Iliac Crest)	अधः काय में स्पर्श व चेष्टा नाश।
	११.	नितम्ब (२)	श्रोणि कर्ण के ऊपर पक्वाशय को आच्छादित करते हुये पार्श्वान्तर प्रतिबद्ध	अधःकाय में शोफ, दौर्बल्य → मृत्यु।
	१२.	पार्श्वसन्धि (२)	पृष्ठ (Lumber Region)	शोणित पूर्ण कोष्ठ → मृत्यु
	१३.	बृहती (२)	पृष्ठवंश के दोनों ओर स्तनमूल की सीध में।	रक्तस्राव → मृत्यु
	१४.	अंसफलक (२) (Scapula)	पृष्ठ वंशमुभयतो बाहुमूल सम्बद्धे।	बाहु में सुन्नता व शोष।
	१५.	अंस (२)	ग्रीवा बाहु शिरोमध्ये अंसपीठ स्कन्ध बन्धन	बाहु स्तब्ध।
ऊर्ध्व (३७)	१. २.	नीला-२ मन्या-२ }	कण्ठनाड़ी (Trachea) के दोनों ओर की धमनियाँ	मूक, स्वर विकृति, रस अग्राहिता।
	३.	मातृका (४×२)	ग्रीवा के दोनों ओर सिरायें	मृत्यु
	४.	कृकाटिका (२)	दोनों पार्श्वों में सिर व ग्रीवा के संधि स्थान पर।	सिर हिलना
	५.	विधुर (२)	कर्ण पृष्ठ के नीचे उसी से संसृत।	बाधिर्य
	६.	फण-२	घ्राण मार्ग के दोनों ओर अन्दर की ओर श्रोत्रमार्ग से प्रतिबद्ध।	गन्ध ज्ञान न होना।
	७.	अपांग-२	Below Eye Brow Tail Laterally to Eye (Temporal)	अन्धता
	८.	शंख-२	भ्रू पुच्छान्त के ऊपर, कर्ण के ऊपरी रेखा की सीध में ललाट में।	सद्यः मृत्यु
	९.	आवर्त-२	भ्रू के ऊपर निम्न स्थल में	अन्धता, दृष्टि उपघात

	१०.	उत्क्षेप-२	शङ्ख के ऊपर केशांत में	शल्य लगे रहने/पक कर गिरने से जीवन है परन्तु निकालने से मृत्यु।
	११.	स्थपनी	भ्रुवोर्मध्ये	उत्क्षेपवत।
	१२.	सीमन्त-५		उन्माद, भ्रम, मृत्यु।
	१३.	श्रृंगाटक (४)	जिह्वा, घ्राण, अक्षि, श्रोत्र तर्पणी सिराओं का सन्निपात (Junction) तालु में। इन ४ रों के मुख।	सद्यः मृत्यु
	१४.	अधिपति	मस्तिष्क के अन्दर ऊर्ध्वग सिरा सन्धियों का सन्निपात-रोमावर्त।	सद्यः मृत्यु।

मर्म विद्ध के लक्षण–

देह प्रसुप्तिर्गुरूता संमोहः शीतकामिता।
(सुन्नता) (गौरव) (मूर्च्छा) (शीत की इच्छा)
स्वेदो मूर्च्छा वमिः श्वासो मर्म विद्धस्य लक्षणम् ।।२७।।

अन्य आचार्य–

- पाणिपादच्छेद → सिरा सङ्कोच → अल्प रक्तस्राव → जीवन।
- मर्म व्यध → अतिरक्तस्राव → वायु विकृत → मृत्यु।
- अतः मर्म अभिहत के अङ्ग को सन्धि देश से छेदन कर दे।

मर्मोपघात में मृत्यु सूचक लिङ्ग– विक्षिप्त, भृश (शिथिल), सीदन् (रिक्तता), शून्यता, भ्रम, वेपथु (कंपन), कृच्छ ऊर्ध्व श्वास, स्रस्तगात (शरीर शिथिल), हृदय में दाह, एक स्थान पर नहीं रुकता।

मर्म में चोट न हो तथा अतिरक्तस्राव न हो तो शत शर वेधन से भी मृत्यु नहीं होती ।४०।

मर्म भेद											
संरचनानुसार– ५ भेद				आघात परिणामानुसार				मर्म परिमाप अनुसार			
	मर्म		विवरण		मर्म		विवरण		परिमाप	मर्म	
१.	मांस	११	तलहृदय (४), इन्द्रबस्ति (४), गुदा, स्तनरोहित (२)।	१.	सद्यः प्राणहर • आग्नेय • ७ दिन तक प्राणांत	१९	गुदा, बस्ति, नाभि, हृदय (४×१), मातृका (८), शंख (२), शृंगाटक (४) अधिपति (१)।	१.	१अङ्गुल	उर्वी, कूर्चशिर (४-४) विपट, कक्षाधर (२-२)	१२
२.	सिरा	४१	ऊर्वी, लोहिताक्ष (२×४) नाभि, हृदय (२×१) स्तनमूल, अपस्तम्भ, अपालाप, पार्श्वसंधि, बृहती, नीला, मन्या, फण, अपांग (९×२), मातृका (८), शृंगाटक (४), स्थपनी।	२.	कालान्तर प्राणहर • सौम्य आग्नेय • लगभग १५ दिन बाद मृत्यु	३३	तल हृदय, क्षिप्र, इन्द्रबस्ति (३×४), वक्षमर्म (८ = स्तनमूल, स्तनरोहित, अपस्तम्भ, अपालाप ४×२) कटीकतरूण, नितम्ब, पार्श्वसन्धि, बृहती (४×२) सीमन्त (५)। [क्षिप्र कदाचित् सद्यः]	२.	२ अङ्गुल	गुल्फ, मणिबन्ध, स्तनमूल (२-२)	६
३.	स्नायु	२७	क्षिप्र, कूर्च, कूर्चशिर, आणि (४×४); विटप, कक्षाधर, अंस, विधुर, उत्क्षेप (५×२), बस्ति।					३.	३ अङ्गुल	जानु, कूर्पर (२-२)	४
४.	अस्थि	८	कटीकतरूण, नितम्ब, अंसफलक, शंख (४×२)।					४.	पाणितल संमित (४ अङ्गुल)	गुद, बस्ति, नाभि, हृदय (१-१); कूर्च, शृंगाटक ४-४); नीला, मन्या (२-२); मातृका (८) सीमन्त (५)	२९
५.	सन्धि	२०	गुल्फ, मणिबन्ध, जानु, कूर्पर, कुकुन्दर, कृकाटिका, आवर्त (७×२), सीमन्त (५), अधिपति (१)।					५.	अङ्गुलदल प्रमाण (१/२ अंगुल)	शेष	५६

मर्म भेद											
संरचनानुसार– ५ भेद				आघात परिणामानुसार				मर्म परिमाप अनुसार			
	मर्म		विवरण		मर्म		विवरण		परिमाप	मर्म	
				३.	विशल्यघ्न	३	उत्क्षेप (२), स्थपनी (१) **वायव्य–** शल्य जब तक फंसा रहता है तब तक वायु अवस्थित रहने से जीवन।				
				४.	वैकल्यकर • सोम • कदाचित् मारक	४४	कूर्च, आणि, ऊर्वी, लोहिताक्ष (४×४); जानु, कूर्पर, विटप, कक्षाधर, कुकुन्दर, अंस, अंसफलक, नीला मन्या, कृकाटिका, विधुर फण, अपांग, आवर्त (१४×२)। • सोमोहि स्थैर्यशैत्याभ्यां प्राणान्धारयति।				
				५.	रूजाकर, • अग्नि, वायु, सोम, गुण बहुल	८	कूर्चशिर (४), गुल्फ मणिबन्ध (२×२)। अग्नि, वायु → रूजा सोम → प्राणऽवलम्बन				

अन्यमत से परिमाण–

क्षिप्र (४)– ब्रीहि
स्तनरोहित (२)
उत्क्षेप (२) } – कलाय (मटर)
शेष– तिल प्रमाण।

अन्यमत– (A)

- पञ्च समवाय – सद्यः प्राणहर।
  (मांस, स्नायु, सिरा, सन्धि, अस्थि)
- ४ का समवाय – कालान्तर
- ३ का ,, – विशल्यघ्न
  २ का ,, – वैकल्यकर
  १ का ,, – रूजाकर

(B) स्वभाव ही परिणाम कारक है।

अतिहतानां तु मर्मणां यथास्वं पूर्वं पूर्वं च कर्म ईषदन्ते वा हताना मुत्तरमेव ।।३२।।

मर्म के अतिहत होने से वह अपने पूर्व वर्ती मर्म (रूजाकर → वैकल्यकर; वैकल्य → विशल्यहन आदि) का कार्य करते हैं। तथा अल्प हत से उत्तरोत्तर मर्म जैसा कार्य (सद्यः प्राणहर → कालान्तर) करते हैं।

मर्म अभिहत में प्रत्याख्येय कहकर अन्तिम श्वास तक चि० करे।

८. प्रकृति भेदीय

प्रकृति–७– सभी प्राकृत दोष सन्निहित होते हुये भी उल्वणतानुसार–

- (देह) दोषानुसार– पृथक् दोष-३– V,P,K; संसर्ग-३; साम्य-१।
- (मानस)– सत्व, रज, तम; संसर्ग-३; साम्य-१।
- (जाति आदि नियत)– जाति कुल देश काल वयो बल प्रत्यात्मसंश्रया ॥२२॥
  [प्रत्यात्मसंश्रया– प्रत्येक आत्मा में संश्रित]

प्रकृति निर्माण–

(i) गर्भाशय में आये शुक्र व आर्तव
(ii) माता के आहार-विहार। } में जिन दोषों (/भावों) का आधिक्य रहता है, उसी अनुसार प्रकृति निर्माण होता है, प्रकृति जीवन पर्यन्त के लिये बनती है। इसके गुणों से शरीर उपस्कृत होता है।

प्रकृति निर्माणक दोषों के हानि न करने में हेतु–

(i) तन्मयतया (ii) शुक्र आर्तव से देह निर्मित होना
(iii) भावी (दैव) (iv) प्राकृत होना।

निषेचन के समय दोष प्राकृतावस्था में ही रहते हैं यदि वह वैकारिक हुये तो– (i) गर्भ नहीं बनता/ (ii) निषेचन के बाद नष्ट/ (iii) विकृत होना।

द्विविध दोष– अन्य आचार्य

प्राकृत	वैकृत
• सप्त विधि से प्रकृति हेतु। • शरीर जन्म। • शरीर धारणाद्धातु संज्ञा:। • (वैकृत का आधार)। • (क्षय, वृद्धि नहीं होता)।	• निषेचनोपरांत गर्भ से अभिनि:सृत आहार रस से उत्पन्न। • प्राकृत अवस्था में शरीर रोहण। • कालादि वश से स्वप्रमाण से वृद्धि/क्षय/ योग → देह अनुग्रहण/दूषण।

ओज —
- पर– अष्ट बिन्दु– हृदयस्थ; अपर का आधार।
- अपर– प्रासृतिक– १/२ अञ्जलि– रसात्मक; क्षय/वृद्धि।

प्रकृति निर्धारण–

प्रकृति निर्धारक सारणी

नाम .... आयु .... लिङ्ग .... दिनांक............

पिता का नाम .... निवास .... देश– जां०/आ०/सा०

क्रम	परीक्ष्य	विषय	वात	पित्त	कफ
१.	शा	सामान्य–			
	री	शरीर			
	रि	वर्ण			
	क	केश			
	ल	रोम			
	क्ष	त्वक्			
	ण	पाणिपाद-			
		तल			
		नख			
		शिर			
		ललाट			
		चक्षु			
		आकृति			
		ओष्ठ			
		तालु			

क्रम	परीक्ष्य	विषय	वात	पित्त	कफ
		जिह्वा			
		दाँत			
		स्वर			
		आहारेच्छा			
		शीत-उष्ण			
		पाचन			
		(भूख-प्यास)			
		उत्सर्ग			
		संधिबंध			
		मांस			
२.	मा	बुद्धि			
	न	धैर्य			
	सि	स्मृति			
	क	क्षमा			
	ल	लज्जा			
	क्ष	निद्रा			
	ण	स्वप्न			
३.	सं	भय			
	वे	प्रीति			
	गा	विरक्ति			
	त्म	क्रोध			
	क	कलह			
		ईर्ष्या			
४.		संकल्प			
		स्वभाव			
		चेष्टा			
		रूचि			
		चरित्र			
५.	सा	वैर			
	मा	मैत्री			
	जि	ऐश्वर्य			
	क	धन			
	ता				

क्रम	परीक्ष्य	विषय	वात	पित्त	कफ
६.	श क्ति	ओज शारीरिक पुंसत्व– • संतान • कामेच्छा • शुक्र आयु बल			
कुल लक्षण			संख्या	....	....

परिणाम– प्रकृति ....

अनुबन्ध ....।

निर्धारिक छात्र का नाम ....।

वात प्रकृति– तनु, रूक्ष, स्तब्ध; अल्पाङ्ग; दन्त, नख, रोम, नेत्र, स्वर; शीतद्वेषी, छोटी व कठोर पिण्डली, सशब्दसन्धिगामी; शीघ्र आरम्भ, क्षोभ, ग्रहण, विस्मरण; अस्थिर धृति, मति, गति, दृष्टि, स्वभाव, सौहार्द।

गुण– चोर, अनार्य, मात्सर्य (झूठ), अजितेन्द्रिय; गान्धर्व, गान, इतिहास, विलास, कलह, मृगया (भ्रमणशील)।

आहारेच्छा– स्निग्ध उष्ण मधुर अम्ल लवण की इच्छा व यही लाभप्रद।

अल्प वित्त, बल, जीवन, निद्रा; क्षाम वाणी; शरीर पर धमनियाँ दिखती हैं। दुर्भग (ऐश्वर्यहीन), बहुभुक् (आहार), बहुभाषी; नास्तिक, स्फुटित-केश, हाथ पैर; सोने पर नेत्र व मुख कुछ खुला।

स्वप्न–

शुष्करूक्ष विषमासु सरित्सु व्योम्नि शैलशिखरेषु च याति ।।११।।

सूखी ऊँची-नीची नदियों, आकाश या पर्वत चोटियों पर जाना।

पित्त प्रकृति– गात्र– उष्ण, गौर; नख, नेत्र, जिह्वा, ओष्ठ, पाणिपादतल– ताम्र; केश, रोम– करभ कपिल (ऊँटवत भूरे), विरल, मृदु; शीघ्र-वली, खलित, पलित, पिप्लु, व्यङ्ग, क्षुत, पिपासा। शिथिल सन्धि बन्ध मांस। पूतिगन्धि (स्वेद में दुर्गन्ध) । मध्य– बल, आयु; अल्प– शुक्र, व्यवाय, अपत्य। मेधावी, बली, शूर, अभिमानी, धर्मद्वेषी, सुचरित्र, शुचि, आश्रित वत्सल, शत्रुओं की भी रक्षा करने वाला, वैभवयुक्त; उष्णद्वेषी, माला व आलेपन की इच्छा; दुर्भग। स्वादु, तिक्त, कषाय, शीत अभिलाषी।

स्वप्न–

सुप्तः पश्येत्कर्णिकारान् पलाशान्
दिग्दाहोल्का विद्युदर्कानलांश्च ।।१४।।

खिले अमलतास, पलाश, दिशाओं का जलना, उल्का, विद्युत, सूर्य, अग्नि देखना।

कफ प्रकृति– वर्ण-दूर्वा, इन्दीवर (नीला कमल), शरकाण्ड वत। सम सुविभक्त स्निग्ध स्थिर सुकुमार श्लिष्ट मांस सन्धि बन्ध; उरू व गात्र भरा-भरा; विशाल-ललाट, उरू, बाहु। नेत्र काले व श्वेत भाग स्पष्ट; प्रसन्न, आयत (चौड़ी), विशाल पक्ष्म। घोष– सिंह, मृदंग, घन वत। क्षुत् पिपासा उष्ण सहिष्णु। लोमरहित। बाहुल्य– ओज, बल, शुक्र, कामेच्छा, अपत्य; आयु, वित्त। अल्प– वाक्, क्रोध, आहार; न रोने वाला। सत्यवादी, मेधा, दीर्घदर्शी, श्रद्धालु, गम्भीर, क्षमावान, धैर्य; आर्य, निद्रालु, दीर्घसूत्री, कृतज्ञ, लज्जा, गुरूभक्त, दृढ़ मित्रता; दृढ़ प्रच्छन्न बैर; माल्यानुलेपन प्रिय।

आहार– कटु तिक्त कषाय उष्ण रूक्ष।

स्वप्न–

स्वप्नेसपद्मान्स विहङ्ग मालांस्तोयाशयान् पश्यति तोयदांश्च ।।१७।।

कमल व पक्षियों से युक्त जलाशय व बादल देखना।

वात पित्त व कफज ये ३ प्रकृति – नित्यातुर – प्रकृति के दोष अनुपशयित होने से। द्वन्दप्रकृति वाले भी विशेषत: ऐसे ही होते हैं, क्षुत्पिपासावत गुण मिश्र विकारी होने से इन्हें निरोगी कहते हैं। सम प्रकृति प्रशस्त।

अनूक– शारीरिक, मानसिक जात्यादि प्रकृतियों के तर-तम भेद से तथा पुन: इनके संयोगों (शारीरिक को सत्वादि का आश्रय तथा सत्वादि को कार्य हेतु शारीरिक का आश्रय आवश्यक है) से इन प्रकृतियों के असंख्य भेद बन जाते हैं। इन प्रकृतियों के रूप स्वर चरित्र का अनुकरण करने से जो भेद प्रत्यक्ष होते हैं उन्हें 'अनूक' कहा जाता है। इनका आवेश अनन्तर जन्म अभ्यास वासना से उत्पन्न होता है। इस प्रकार से पुरुष देव, मानुष, तिर्यक्, प्रेत, नारकीय आदि विशेष आनूक (मन) वाला होता है।

वय–

वय-३
- बाल (K↑) (०-१६)
  - स्तन्य
  - आहार
  - उभय
- मध्य (P↑) (१६-६०)
  - यौवन (१६-३०)
  - सम्पूर्ण (३०-४०) (गुणों का पूर्ण होना)
  - अपरिहानि (४०-६०) (गुण यथावत बने रहना)
- वृद्ध (V↑) (६०-०) (धातु क्षय)

अन्य आचार्य–

बाल्ये वृद्धिं प्रभामेधात्वक् शुक्राक्षि श्रुतीन्द्रियम् ।
दशकेषु क्रमाद्यान्ति मनः सर्वेन्द्रियाणि च ।।२५।।

वय विभाग	भाव हानि
प्रथम १० वर्ष	बाल्य
II १०	वृद्धि
III १०	प्रभा
IV १०	मेधा
V १०	त्वक्
VI १०	शुक्र
VII १०	अक्षि (दृष्टि)
VIII १०	श्रोतेन्द्रिय
IX १०	मन (की क्रियाएं)
X १०	सर्वेन्द्रिय

इस काल में आयु १०० वर्ष है। प्रत्येक काल में मनुष्य की आयु प्रति १०० वर्ष पर १ वर्ष कम होती जाती है।

बल– त्रिविध

(i) सहज– देह व मन का प्राकृत बल

(ii) कालकृत– (a) ऋतु विभाग (b) वयकृत

(iii) युक्तिकृत– (a) आहार-विहार (b) ऊर्जस्कर योग

बल वृद्धिकर भाव– १०

(१) बली पुरुषों के देश में जन्म

(२) जिस काल में उत्पन्न पुरुष बली होते हैं उसमें जन्म

(३) काल का सुखकर योग

(४) व (५) बीज क्षेत्र गुण

(६) आहार सत्व सम्पत्

(७) स्वभाव

(८) यौवन (९) व्यायाम (१०) हर्ष।

सार– ८

- बलमान ज्ञानार्थ।

  त्वक्, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र, सत्वसार।

  → उत्तरोत्तर श्रेष्ठ →

प्रमाण– ८४ अंगुल = लं० = चौ०।

सम शरीर–

तदायामविस्तारसमंसममुच्यते ।।३०।।

पाद अंगुष्ठ व पड़ोस की अंगुली	– २ अंगुल
शेष ३ अंगुलियाँ	– क्रमशः १/५ कम
प्रपद ≡ पादतल = पार्ष्णि लं०	– ४ अंगुल
प्रपद विस्तार (चौ०)	– ६
पादतल	– ५
पार्ष्णि (एड़ी)	– ४
पाद (पैर)	– १४×१४
गुल्फ, जंघा गोलाई	– १४
पैर (पाद Foot) ऊँ०	– ४
जंघा (Leg), उरू (Thigh) लं०	– १८
उरू (परिधि)	– ३०
मुष्क	– ल० ६×प०८
मेण्ढ्र	– लं० ६ × प० ५
कटि	– चौ० १६ × प० ५०
बस्ति शिर	– लं० १०
उदर	– लं० १२
पार्श्व	– विस्तार १० × आयाम १२
त्रिक	– उत्सेध १२
पृष्ठ	– उत्सेध १८
स्तनान्तर	– १२
स्तन पर्यन्त (परिधि)	– २
उर	– चौ० २४ × ऊँ० १२
हृदय	– २
स्कन्ध = कक्षा	– ८
अंस	– ६
प्रबाहु	– १६
प्रपाणि	– १५
पाणि	– १२
मध्यमा	– ५
तर्जनी, अनामिका	– ४½
कनिष्ठिका, अंगुष्ठ	– ३½

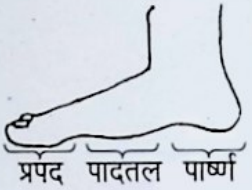

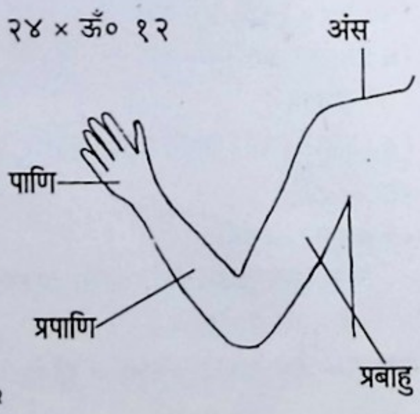

शिरोधरा (ग्रीवा)	– ४×२२
आनन (Face)	– उत्सेध १२ × परिणाह २४
आस्य (Mouth)	– ५
चिबुक, ओष्ठ, नासा, दृष्ट्यन्तर, कर्ण, ललाट	– ४
नासापुट (Nostril)	– १/३ अंगुल
नेत्र	– आयत (चौ०)-२ × विस्तार– अङ्गुष्ठोदर (अंगुष्ठ मध्यवत); शुक्ल भाग का १/३ कृष्ण भाग।
दृष्टि	– कृष्ण भाग का १/९, मसूर दल मात्रा।
शिर	– उत्सेध ६ × परिणाह ३२ अंगुल।

अष्टनिंदितीय–

ह्रस्वदीर्घगौर कृष्णरोमारोमस्थूलकृशं चेति ।।३१।।

इष्ट शरीर (वांक्षित)–

तालु, ओष्ठ, नख, नेत्रान्त	– रक्त वर्ण;
जिह्वा, हस्त, पादतल	– ताम्र वर्ण;
दृष्टि, केश	– कृष्ण वर्ण;
जिह्वा	– तनु;
स्फिक्	– वृत्त;
नाभि	– दक्षिणावर्त;
भ्रू	– दूर-दूर;
नख व पैर	– कच्छपपृष्ठवत उठे;
केश	– पृथक् मूल वाले।

आयुवृद्धि कर गुण– ८

दानशीलदया सत्य ब्रह्मचर्यकृतज्ञताः ।
रसायनानि मैत्री च पुण्यार्युवृद्धिकृद् गुणः ।।३६।।

१. दान, २. शील, ३. दया, ४. सत्य, ५. ब्रह्मचर्य, ६. कृतज्ञ, ७. रसायनसेवी, ८. सत्पुरुष मैत्री।

९. विकृताङ्गविज्ञानीय

रोगी अथवा पुरुष में (आत्मा की) देहान्तर अभिलाषा से सर्व शरीर व्यापी दोष (जैसे गरजते बादल वर्षा का सूचक हैं) औषधातीत (औषध कार्य न करे) हो, आयुक्षय सूचक अकस्मात् स्वभाव विपर्यास उत्पन्न करते हैं, इन्हें समासतः 'रिष्ट' कहते हैं।

वर्ण–

- **प्राकृत–** गौर (पद्मगौर आदि भेद), अगौर, श्याम, अश्याम, कृष्णोऽकृष्ण।
- **वैकृत–** नील श्याम, ताम्र, हारिद्र, शुक्ल आदि।

प्राकृत व वैकृत वर्ण एक साथ होना– रिष्ट।

छाया	प्रभा
पंचमहाभूत जन्य वर्ण पर प्रभावी पास से दिखना भेद– ५ (१) आकाशीय– निर्मल, खड्ग (तलवार) वत नीली आभा; स्नेह, प्रभायुक्त। (२) वायवीय– भस्मवत श्याव, निष्प्रभ, अरूण, स्वेद मल गन्धि; विनाश/ क्लेश कर। (३) तैजस– अग्नि, विद्युत, तप्त स्वर्णाभ; दृष्टि सुखकर। (४) अम्भस– वैदूर्य, इन्द्रनील वत निर्मल, घन, सुस्निग्ध। (५) पार्थिवी– रूचिराभ, श्वेत-श्याम, स्थिर, स्निग्ध, घन। (वायु के अतिरिक्त शेष ४ सुखकर)	आग्नेय (तेजस्) वर्ण का प्रकाशन दूर से दिखना भेद– ७ रक्त, पीत, पाण्डुर, श्वेत, काली, श्याव, हरित। इनमें– शुभ– स्निग्ध, विकाशी, निर्मल। अशुभ– शुभ से विपरीत।

- कुमारिका की प्रतिच्छाया (Pupil in Mirror) न दिखना।
- धूप/दर्पण में विकृत छाया दिखना।
- नयन– अति प्रविष्ट/निर्गत/विस्तृत/संक्षिप्त (Dilate/Constrict Pupil), भ्रू विनत; विभ्रान्त/हीन दर्शन; नकुलाभ, कपोताभ; अलक्तक, नील आदि विकृत वर्ण; चंचल, स्तब्ध, प्रस्रुत; अति उन्मेष/निमेष, लुलित पक्ष्मिणी (हर समय पक्ष्म झपकते रहें)।
- नासा– अति विवृत/संवृत, कुटिल, स्फुटित, पिटिका, शुष्क।
- ओष्ठ– पक्व जम्बू नील।
- दंत– अतिरूक्ष, ताम्र, श्याम, पुष्पित, मलिन, सहसा गिरना।

- जिह्वा– कुटिल, स्तब्ध, सुप्त, अवलिप्त, गुरू, श्याव, शोथ, शुष्क, विसर्पिणी, कण्टकयुक्त।
- गण्ड, ललाट, हनु बन्धन स्थानच्युत, स्रस्त।
- शिश्न अंदर घुसे, वृषण ज्यादा लटके या उल्टा।
- स्वर– निर्बल, आवाज न निकले, उरः शूल; उच्छवास ह्रस्व या दीर्घ, गंधयुक्त।
- देह में विरसता।
- हरित सिराएं होना, अम्ल इच्छा होने पर पित्त से मृत्यु।

६ माह का अरिष्ट–

- ललाट, बस्तिशीर्ष में अचानक सिरा लेखा (रेखा) या बाल चन्द्रमा वत रेखा दिखना।
- स्नान का पानी पद्म पत्रवत शरीर पर न रुके।
- स्नानोपरांत चन्दन लेप उर पर सूख जाये शेष शरीर पर आर्द्र रहे।
- उर उष्ण, जठर शीत, भिन्न (पतला) मल, तृष्णा।

१ माह का अरिष्ट–

- गाय के गोबर की आभा वाला चूर्ण मूर्धा व मुख पर प्रतीत होना।
- मूत्र, पुरीष, थूक, शुक्र पानी में डूब जाये।
- बहुवर्ण ष्ठीवन।

सद्यः अरिष्ट–

- दुर्बल स्वर, बल वर्ण हानि, अकस्मात रोग वृद्धि।
- अपस्वर भाष (मृत्यु सूचक शब्द कहना) ।
- **ऊर्ध्वश्वासं गतोष्माणं शूलोपहत वङ्क्षणम् ।**
  शर्म चानधिगच्छन्तं बुद्धिमान परिवर्जयेत ।।२८।।
  ऊर्ध्वश्वास, शरीर ठंडा पड़ना, वंक्षण शूल, बेचैनी।

१०. विकृतेहाविज्ञानीय

ईहा = चेष्टा

मुमुर्ष–

- दृष्टि विपयर्य– अमूर्त ⇌ मूर्त
  घन ⇌ आकाश
  शुक्ल ⇌ कृष्ण
- शब्द विपर्यये– मेघ गर्जन, वीणा आदि स्वर होने पर न सुने या न होने पर सुने।
- गन्ध, रस, स्पर्श, विपर्यय
- बिना तप/योग के अतीन्द्रिय विषय कहना।

समवर्ति–

- जिह्वा श्याव, मुख में दुर्गन्ध, बाई आँख धँसी, सिर में जूँ मर जायें।
- अल्प भोजी, कफ पीड़ित, दीर्घ श्वास की चेष्टा।
- दीर्घ उच्छ्वास, ह्रस्व नि:श्वास कष्ट के साथ।
- शिर का कृच्छ विक्षिपण (Neck Rigidity) ।
- बार-बार मोहयुक्त होना, चित्त लेटा, इधर-२ आसन, दीवाल आदि (न होने पर भी) पकड़ने की चेष्टा।
- काली/पीली/लाल छाया दिखना।

ग्रीवा, ललाट, हृद (प्रदेश) स्विन्न (स्वेद), शीत; तथा अन्य भाग उष्ण हो– सद्य: मृत्यु।

६ माह– प्रकृति दूषित हो स्वभाव त्याग।

६ गुण– भक्ति, शील, स्मृति, त्याग, बुद्धि, बल एक साथ अकारण नष्ट।

१ माह– मत्त वत गति, वाक, कम्प, मोह।

६ दिन– • केश खींचने की वेदना न होना।
• कण्ठ रोग के बिना भी आहार नीचे न जाय।

[कभी-कभी तप दान आदि प्रभाव से अवश्यम्भावी मृत्यु भी हट जाती है ऐसी स्थिति में प्राय: काली आदि छाया गिरकर शरीर से हटती/दूर जाती प्रतीत होती है।]

पूछने पर भी भावी मृत्यु किसी से न कहे तथा चि० न करे।

कृष्णात्रेय के अनुसार–

रिष्ट-२ भेद–
(i) स्थिर – अवश्य मृत्यु
(ii) अस्थिर – दोष बाहुल्य जन्य-निवारणीय।

आचार्य चरक–	रिष्ट उत्पन्न होने पर मृत्यु अवश्यंभावी।	समाधान कृष्णात्रेय द्वारा।
आचार्य सुश्रुत–	रिष्ट होने पर भी कभी-कभी ब्राह्मण, दान, तप, रसायन आदि से मृत्यु निवारण।	

११. विकृत व्याधिविज्ञानीय

सभी ऐसे रोग जो सभी हेतु, प्राग्रूप, रूपों, के साथ अतिमात्रा में हों।

- झागदार रक्त मुख से निकले + कुक्षि, उर में शूल।
- आमाशयोत्थ परिकर्तिका + अतितृष्णा, पतला पुरीष (दस्त) ।
- पक्वाशयोत्थ परिकर्तिका + अतितृष्णा + गुदग्रह (मलावरोध) ।
- आम पक्वाशयान्तर वात (अपान) → विचेतन, कण्ठ घुर्घुर।

- तृष्णा + हिक्का + रक्तातिसार
- तृष्णा + आध्मान + अतिसार

ज्वर–

- बली (हेतु, वेग), गम्भीर [धातु (अस्थि आदि) गत], दैर्घरात्रिक + प्रलाप, भ्रम, श्वास, क्षीण, शोथ, मन्दाग्नि रोगी में।

रक्तपित्त–

- गहरा लाल, कृष्ण, इन्द्र धनुष प्रभ।
- रोम कूपों से अतिमात्रा में स्राव
- कपड़े में लगा पानी से साफ हो जाय (शुद्ध रक्त आना)
- दुर्गन्ध, अतिवेग, अतिमात्रा।
- + पाण्डु, ज्वर, वमन, कास, शोफ, अतिसार।

कास, श्वास– + ज्वर, वमन, तृष्णा, अतिसार, शोथ।

यक्ष्मा– पार्श्वरूक्, आनाह, रक्तछर्दि (Haematemesis) अंसताप।

वमन– वेग, मूत्र शकृतगंध, चन्द्रिका; रक्त, मल, पूय मिश्रित; + कास, श्वास; अनुषङ्गिणी (किसी अन्य रोग के साथ अधिक समय से)।

तृष्णा– अन्य रोग से कृशित में तृष्णा + जिह्वा बाहर + विचेतन।

मदात्यय– अति शीत पीड़ित, क्षीण, तैल प्रभा मुख पर।

अर्श– हाथ पैर नाभि गुद मुष्क मुख में शोफ + हृद् , पार्श्व, अंग रूजा + वमन, गुदपाक, ज्वर।

अतिसार– यकृत्पिण्ड मांस धावन, मेचक, क्षीराभ; अति रक्त, असित (काला), पूति; बिना पुरीष के धातु स्राव, अतिपुरीष राजि, चन्द्रिका; शीर्ण पायु वलि, मुक्तनाल, पर्वास्थिशूल, स्रस्तपायु + १. तृषा, २. कास, ३. ज्वर, ४. छर्दि, ५. दाह, ६. आनाह, ७. प्रवाहिका।

अश्मरी– + वृषणशोथ, बद्धमूत्र (Retention of Urine) रूजा।

प्रमेह– + तृट् , दाह, पिटका, मांस कोथ, अतिसार।

प्रमेह पिटिका– मर्म स्थान (हृदय, पृष्ठ, स्तन, अंस, गुद, शिर), पर्व (हाथ-पैर) गत।

सर्वंच मांससङ्कोथदाहतृष्णामद ज्वरैः ।
विसर्प मर्म संरोध हिहमा श्वास भ्रम क्लमैः ।।

गुल्म– पृथु, परिणाह, घन, कूर्म वत उन्नत, सिराओं से भरा, + ज्वर, छर्दि, हिध्मा, आध्मान, रूजा; कास, श्वास, अतिसार, शोफ, पीनस, हल्लास।

उदर रोग–

- मलमूत्रावरोध (संग्रह), श्वास, शोफ, हिध्मा, ज्वर, भ्रम। मूर्च्छा, छर्दि, अतिसार।

- अक्षि शोथ, कुटिल उपस्थ, त्वचा आर्द्र।
- विरेचन से आनाह हटाने पर भी पुनः-पुनः होना।

पाण्डु– श्वयथु, पीत– अक्षि, नख, दर्शन।

शोफ–

- ♂ – पैर तरफ से प्रसार
♀ – मुख से नीचे की ओर प्रसार } + उपद्रव– तन्द्रा, दाह, अरूचि, छर्दि, मूर्च्छा, आध्मान, अतिसार।
♂+♀ – कुक्षि व गुह्य स्थान से प्रसार।
- शोथ + वमन, ज्वर, श्वास, अतिसार
- ज्वर, अतिसार ⇌ शोफ
- पादशोफ में पिण्डक (Calf Muscles) परिस्रस्त, टांगे शिथिल।

१ माह–

- आनन, हस्त पाद विशेष शुष्य (सूखे/कृश)।
- बिना देह शोफ के आनन, हाथ पैर में शोफ।

कुष्ठ– विशीर्य अङ्ग, जन्तु + तृष्णा, अतिसार।

वातरक्त– मोह, मूर्च्छा, मद, अनिद्रा, ज्वर, शिरोग्रह, श्वास, विस्फोट, अरूचि, संकोच।

मुमुर्षु–

सहसा ज्वर सन्तापस्तृष्णा मूर्च्छा बलक्षयः ।।४२।।
विश्लेषणं च सन्धीनां मुमूर्षोरूपजायते ।

- प्रातः (सूर्योदयकाल) स्वेद आना।
- प्रवाल आभा की मसूरिका शरीर में उत्पन्न होकर नष्ट हो जाना।
- विस्फोट (४ रिष्ट) – (i) मसूर विदल आकार
(ii) विद्रुम (मूंग) सन्निभ
(iii) अन्तर्वक्रा
(iv) किणाभ।

व्रण–

- त्वक् आश्रयी विघृष्ट (रगड़) का अकस्मात् प्रसारण।
- अन्तर्दाह, उष्णिमारहित व्रण।
- वातज में शूल, पित्तज में दाह व कफज में पूय न होना।
- विभिन्न गन्ध, वर्ण, चूर्ण दर्शन, चिन्ह दर्शन।

भगन्दर–

विण्मूत्र मारूत वहं कृमिणं च भगन्दरम् ।।५१।।

अन्य– • **हृष्टलोमा सान्द्रमूत्रः शुष्क कासी ज्वरी च यः ।।५४।।**

- **ऊर्ध्व श्वासं गतोष्माणं शूलोपहत वङ्क्षणम् ।।५५।।**
  शर्म चानधिगच्छन्तं बुद्धिमान्परिवर्जयेत् ।
- **शिरोरोगारूचिश्वासमोह विड्भेद तृड्भ्रमैः ।**
  घ्नन्ति सर्वामयाः क्षीण स्वर धातु बलानलम् ।।३४।।

सर्वरोग शिरःशूल, अरूचि, श्वास, मूर्च्छा (Coma), अतिसार, तृषा, भ्रम होने पर क्षीण स्वर, धातु, बल, अग्नि वाले को मार देते हैं।

जिस रोगी के लिये वैद्य प्रयास करने पर भी उचित औषध न बना सके, उसका जीवन दुर्लभ है।

१२. दूतादिविज्ञानीय

दूष विषयक– (१) **जाति–** रोगी से उत्तम वर्ण – निंद्य (२) **वेश–** लाल माला, लेप, वस्त्र; पाषण्डी। (३) **भाषा–** अमंगल (४) **चेष्टा–** भीरू, हांफना, रोना; तैल, सड़ाफल लिये। (५) **देश–** विकार तुल्य गुण देश व (६) **काल में आया दूत–** अप्रशस्त।

वैद्य विषयक–

(१) सङ्ग (दूत से वार्तालाप/मिलने के समय की स्थिति)– वैद्य सोया, नग्न, दक्षिणमुख, आदि।

(२) सङ्कल्प

(३) प्रस्थान }
(४) प्रयाण } विवरण नीचे।

(५) प्रवेश (मंगल सूचक वस्तुएं घर से निकलना), असत्कार।

रोगी विषयक–

(१) ग्रहचार– वक्र, अनुवक्र, गर्हित स्थाने। जन्मराशि में राहु केतु शनि।

(२) अपूर्व सम्भव (रोगी वैद्य संयोग समय शुभाशुभ उत्पत्ति)

(३) स्वप्न दर्शन

प्रस्थान, गमन, प्रवेश मंगल-१०८– दधि, मधु श्वेत पुष्प, पीपल, दूर्वा, कन्या, दर्पण, राजा, बिल्व, मछली, घोड़ी, हंस, बैल, कमल, श्वेत सर्षप, स्वस्तिक, हाथी, मेघ, जल भरा घड़ा, अत्रि (चन्द्रमा), इन्द्र (सूर्य), गाय-बछड़ा, पुत्रिणी, धन्वन्तरि, जलयुक्त शिवलिङ्ग, कृष्ण, विष्णु (चित्र), अग्नि, कौस्तुभ, मोती, बहती नदियां, स्वर्ण, दीपक, अरून्धती, आकाशगंगा; उमा, लक्ष्मी, सरस्वती, ॐकार, अपत्य (स्व पुत्र) आदि।

- पुन्नाम पक्षी वाम, शुभ }
  कोयल, छिपकली, घोड़ी दायें } प्रवेश के समय इनका विपरीत होना शुभ है।
  मोर, भालू, हाथी, बकरी, कपि दायें }

- कुत्ता व शृगाल दायें से बायें जाना शुभ।
- मृग व पक्षी का बायें से दायें जाना शुभ।
- नेवला हर तरफ शुभ है।
- खरगोश सर्प, अज, सुअर का बोलना शुभ (दर्शन, रूदन-अशुभ)
- रीछ व बन्दर का रूदन, दर्शन शुभ (बोलना अशुभ)
- गिरगिट, मुर्गी, बिल्ली, उल्लू सर्वथा अनिष्ट।

स्वप्न– स्वयं/अन्य द्वारा देखे।

भेद– ७

१. दृष्ट, २. श्रुत, ३. अनुभूत, ४. प्रार्थित, ५. सङ्कल्पित – निष्फल।

६. भाविक– स्व प्रकृति अनुसार (बिना देखा, सुना आदि स्वप्न देखना जो जगने पर भी प्रभाव रखे)।

७. दोषज–

मनोवहानां पूर्णत्वात्स्रोतसां प्रबलैर्मलैः ।
दृश्यन्ते दारूणाः स्वप्ना विनाशाभिमुखात्मभिः ।।२०।।

प्रबल दोषों से मनोवाही स्रोत पूरण → दारूण स्वप्न दर्शन – रिष्ट।

निष्फल स्वप्न– १ से ५ तक।

- स्व प्रकृति अनुसार,
- दिवा दृष्ट।
- अतिह्रस्व/अतिदीर्घ।
- विस्मृत
- असुप्तावस्था में देखा।

फल–

पूर्व रात्रि	– अल्प, देर से फल।
गोसर्ग (प्रातः)	– महत् , सद्यः।
लाल आकाश, स्त्री	– रक्तपित्त से मृत्यु।
गधा, ऊँट, भैंसा, सुअर की सवारी→ दक्षिण	– यक्ष्मा से मृत्यु।
हृदय में कांटो वाली लता	– गुल्म से मृत्यु।
शिर में कांटो वाली लता	– शिरो रोग/शिर छेदन से मृत्यु।
नग्नावस्था में हवन, छाती पर कमल	– कुष्ठ से मृत्यु।
मस्त	– अपस्मार से मृत्यु।
पूड़ी आदि खाकर वमन	– अवश्य मृत्यु।

नाचती स्त्री द्वारा दक्षिण ले जाया जाना, मछली निगल रही हो, पानी में डूब रहा हो, विवाह, पर्वत या मकान से गिरना, पराजित होना, वमन, विरेचन; नग्न/कषाय धारी मनुष्य (दण्ड, पाश युक्त); काली श्वेत रूपा स्त्री – अरिष्ट।

अशुभ के बाद शुभ स्वप्न देखने का फल शुभ।

शुभ स्वप्न– देव, द्विज, गो, वृषभ, सुहृद, साधु, प्रज्वलित अग्नि, स्वच्छ जलाशय, कन्या, श्वेत वस्त्र में गौर कुमार, श्वेत फल, पुष्प प्राप्ति, पर्वत, महल, फल वृक्ष, शेर, नर, अश्व पर चढ़े; नदी आदि तैर कर पार करे; पूर्व, उत्तर जाना, अगम्यगमन, बाधा से निकलना, अभिनन्दन, रोना, गिरकर उठना; शत्रु का पराजय। प्रसन्न श्वेत वस्त्र पुष्पधारी ब्राह्मण देव आदि का दर्शन।

स्वप्नोत्तर कर्म– शुभाशुभ स्वप्न दर्शनोपरांत प्रातः स्नान कर श्वेत पीली सरसों से सावित्री (गायत्री) का हवन करे।

'शारीर स्थान' की निरूक्ति–

इत्यत्र जन्ममरणं यतः सम्यगुदाहृतम् ।
शरीरस्य ततः स्थानं शारीर मिदमुच्यते ।।३३।।

सम्यकतः जन्म से मृत्यु तक शरीर की विवेचना होने से 'शारीर' कहा जाता है।

निदान स्थानम्

१. सर्वरोग निदान

कृत (सत) युग में राग द्वेष आदि द्वन्दों से रहित दीर्घायु, निरूज सुर सदृश पुरुष हुये। उनके पुण्य बल से पृथ्वी आदि महाभूत सर्वगुण युक्त तथा औषधियों व सस्य अचिन्त्य रस वीर्य वाले थे। पुरुष इनका समय पर मात्रा में प्रयोग करते थे।

कृतयुग के भ्रंश होते समय युगस्वभाव से क्रमशः पृथ्वी आदि, तथा शरीर गुण (औषधि आदि) कम हुए तथा **धर्म अतिक्रम** से ज्वर आदि रोग प्रादुर्भूत हुए ≡ सामान्य सम्भव/हेतु।

ज्वर उत्पत्ति– रूद्राणी प्रेरित, भगवान पशुपति के क्रोध से उनके शिर से → किंकर रूप- वीरभद्र → ज्वर उत्पन्न करने वाला।

- सर्व रोगों में प्रथम
- तमोरूप
- जन्म व मृत्यु के समय
- महामोह– पूर्वजन्म विस्मारक
- विविध अपथ्य– ऊष्मा– संताप।

पाकल	–	गज	ज्योर्ति	–	ओषधि
अभिताप	–	वाजि	चूर्णक	–	धान्य
अलर्क	–	कुक्कुर	नीलिका	–	जल
इन्द्रमद	–	जलज	ऊषः	–	भूमि
ज्वर	–	मनुष्य।			

सर्व रोग ज्वर पूर्वक होने से 'ज्वर' कहे जाते हैं।

ज्वर सहज (साथ उत्पन्न)– अरोचक, अङ्गमर्द, शिरोव्यथा, भ्रम, क्लम, ग्लानि, तृष्णा, सन्ताप आदि।

दक्षयज्ञ विध्वंस के समय–

- ज्वर → संताप → रक्तपित्त
- क्रोध, भय → भागना, कूदना, तैरना, देह विक्षोभ → गुल्म, विद्रधि, वृद्धि, जठर रोग।
- हवि प्राशन → प्रमेह, कुष्ठ, अर्श, शोफ, अतिसार आदि।

- भय, त्रास, शोक, अशुचि संस्पर्श → उन्माद, अपस्मार, ग्रहादि।
- नक्षत्र राज चन्द्रमा के रोहिणी से अतिसङ्ग (तथा प्रजापति की शेष कन्याओं से संभोग न करने से प्रजापति के क्रोध से) → राजयक्ष्मा; कास, श्वास के साथ; ज्वर अनुबन्ध।

रोग– 'रूजतीतिरोगः' – रूज करने से रोग।

पर्याय– ज्वर, तम, विकार, आतङ्क, पाप्मा, गद, व्याधि, आबाध, दुःख, आमय, यक्ष्मा, रोग।

उपलब्धि/ज्ञान– १. निदान २. पूर्वरूप ३. रूप ४. उपशय ५. संप्राप्ति।

१. **निदान–** अहित आहार विहार → दोष प्रकोप
   पर्याय– हेतु, निमित्त, आयतन, कारक, कर्ता, कारण प्रत्यय, समुत्थान, मूल, योनि।
२. **पूर्वरूप–** भावी व्याधि विशेष का ज्ञान; दोषविशेष ज्ञान नहीं–
   व्याधि अल्पत्व व अव्यक्त रूप होने से।
३. **रूप– व्यक्त रूप–** लक्षण स्पष्ट होना
   पर्याय– लिङ्ग, आकृति, लक्षण, चिन्ह, संस्थान, व्यञ्जन।
४. **उपशय–** हेतु विपरीत, व्याधि विपरीत, उभय विपरीत; हेतु, व्याधि, उभय विपरीतार्थकारी औषध, आहार, विहार, देश, काल का सुखकर उपयोग उपशय है, इसे व्याधि सात्म्य कहते हैं।
   अनुपशय– उपशय से विपरीत।
५. **संप्राप्ति–** इस प्रकार दोष दूषित होकर इस प्रकार रोग उत्पन्न हुआ, यह सम्प्राप्ति है।
   पर्याय– जाति, आगति, निवृत्ति, निष्पत्ति।

भेद–

१. संख्या– अष्ट ज्वर, त्रिविध रक्तपित्त, पञ्च कास इति।
२. विकल्प– समवेतानां दोषाणामंशांश कल्पना।
३. प्राधान्य– अनुबन्ध्य-अनुबन्ध या तर-तम भेद से रोग ज्ञान।
४. बल– हेतु आदि के द्वारा दोषों के बल विशेष का ज्ञान।
५. काल– दोषों का ऋतु, अहोरात्र, आहार, नियत समय पर प्रकोप।

वात प्रकोपक– तिक्त, कटु, कषाय, रूक्ष, लघु, शीत, विष्टम्भि। विरूढक, कलाय, चना, तरबूज, जामुन; हीन, शुष्क, प्रमित आहार; प्यास में भोजन या भूख में पानी पीना; रक्तक्षय, वमनादि अतियोग, वेगधारण, रात्रिजागरण, तेज वायु, मैथुन, व्यायाम, बली से युद्ध, विषम उल्लंघन, अध्व, अध्ययन, तैरना, चोट, भय, शोक; ग्रीष्म, वर्षा; अपराह्न, अपर रात्रि, आहार परिणाम के अन्त में।

पित्त प्रकोपक– कटु, अम्ल, लवण, क्षार, उष्ण, तीक्ष्ण, विदाही; मद्य, मूत्र, मस्तु, दधि, धान्यम्ल, शुक्त, तैल, कुलत्थ, माष, निष्पाव, तिल, आम्र, इमली, भिलावा मज्जा, मरिच; धूप, अग्नि, धूल, धूम, क्रोध, ईर्ष्या, अजीर्ण, मैथुन; वर्षा, शरद् , दिन व रात्रि का मध्य, आहार विदाह काल।

कफ प्रकोपक– मधुर, अम्ल, लवण, स्निग्ध, गुरू, शीत, पिच्छिल, अभिष्यन्दि; नवान्न, पिष्ट, पृथुक् (चूरा), पूड़ी, कच्चा दूध, इक्षुरस, फाणित, गुड़, आनूप, केला, खजूर, भव्य (कमरख), नारियल, निशाम्बुपान, अत्यम्बुपान, खाने के बाद दिन में सोना, कार्य (३) न करना, ओस, हर्ष, संशोधन अयोग; शिशिर, बसन्त, पूर्वाह्न, प्रदोष (रात्रि प्रथम प्रहर), खाने के तुरंत बाद।

द्विदोष– मिलित कारण।

सन्निपात प्रकोपक– सभी कारणों का मिश्रण तथा अनशन। अति भोजन, अध्यशन, समशन, विषमाशन, विरूद्धाशन, संकीर्णाशन, दूषित जल, मद्य, मन्दक दधि, यवसुरा, आममूलक, सरसो, शुष्क शाक, कृश शुष्क मांस, बड़हल, मिट्टी खाना, अन्न परिवर्तन; विकृत ऋतु, असात्म्य गंध, विष, दुर्दिन (वर्षा, हेमंत के अतिरिक्त मेघ), ग्रह पीड़ा, ग्रहावेश, सामने की वात, पर्वत की तराई; रसायन, पंचकर्म के मिथ्यायोग, पापकर्म, पूर्वकर्म, परिणाम, विषम प्रसव, प्रसूति मिथ्याचार।

प्रतिरोगमिति क्रुद्धा रोगाधिष्ठानगामिनीः ।
रसायनीः प्रपद्याशु दोषा देहे विकुर्वते ।।२०।।

प्रत्येक रोग में कुपित दोष → रोग अधिष्ठान में जाने वाली रस वाहिनी → देह विकार।

गर्भाधान, जन्म, मृत्युकाल, प्रत्वर (पंचम) व विपत्कर (तृतीय) नक्षत्र में उत्पन्न रोग → क्लेश/मृत्यु ॥२१॥

महर्षि 'हारित' के अनुसार–

नक्षत्र (जिसमें ज्वर उत्पन्न हुआ है।)	**फल**
अश्विनी	६ रात बाद शान्त
भरणी	५ दिन ,,
कृतिका	७/२१ दिन
रोहिणी	८ या ११ दिन
मृग	६ या ९ रात्रि में शान्त।
आर्द्रा	५ दिन में मृत्यु या ३ पक्ष (४५ दिन) में जीवन संशय।
पुनर्वसु	१३ दिन

नक्षत्र (जिसमें ज्वर उत्पन्न हुआ है।)	फल
पुष्य, आश्लेषा	२७ दिन या २ सप्ताह या बाद में मृत्यु।
मघा	१२ दिन तक जीवित रहने पर अवश्य स्वस्थ।
पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फा०	८वें दिन मृत्यु।
हस्ति	९/२१ वें दिन शान्त।
चित्रा	७/८ वें दिन ,,
स्वाती	२७/१०/४५ दिन में शान्त।
विशाखा	२२ वें दिन मृत्यु।
मैत्र (अनुराधा)	९वें दिन शान्त न होने पर बाद में मृत्यु।
ज्येष्ठा	५/१२ वें दिन मृत्यु न होने पर बाद में स्वस्थ।
मूल	१०/२१ दिन बाद स्वस्थ
पूर्वाषाढ़ा	९ वें दिन शान्ति
उत्तराषाढ़ा	१/८/९ माह में शान्ति
ज्येष्ठा-धनिष्ठा	१२/७/२१ दिन } में मृत्यु।
शतभिषक्	१२/ ,, } में मृत्यु।
पूर्वाभाद्रपदा	६/१२ ,, } में मृत्यु।
उत्तराभाद्रपदा	१४ दिन बाद शान्ति
रेवती	४/८ वीं रात्रि में स्वस्थ।

२. ज्वर निदान

भेद– ८ (कारण/हेतु अनुसार) – V, P, K, द्वन्दज-३, S, आगन्तुज।

सम्प्राप्ति–

- प्रकोपक कारण → दोष प्रकोप → आमाशय प्रविष्ट
  (दोष + ऊष्मा → आम का अनुगमन) → रस व स्वेदवाही स्रोत अवरूद्ध।
- जैसे उष्ण जल से अग्नि बुझ जाती है वैसे ही द्रव पित्त से अग्नि नाश, (तथा पित्त की ऊष्णिमा में वृद्धि) ।
- सर्वदोष → सर्वस्वस्थानाग्नि नाश/बाहर निकालना → सर्वशरीर सर्पण (अग्नि ऊष्मा से और अधिक उष्ण होकर) ।
- अन्त: स्रोत मुख अवरूद्ध होने से → स्तम्भ (दोष) व बर्हिस्वेद नाश → सर्वशरीर उष्णता वृद्धि व सर्वेन्द्रिय उपताप → ज्वर।

पूर्व रूप– मुख वैरस्य, अन्न अनाभिलाष, गुरूगात्रत्व; अम्ल, लवण, कटु आहारेच्छा, मधुर द्वेष, अङ्गमर्द, विनाम (घुटने मोड़कर लेटना), रोमहर्ष; शीतवायु छाया धूप में इच्छा-द्वेष आदि।

रूप–

१. वात ज्वर– वेग वैषम्य, अस्थिर वेदना, पाद सुप्त, पिण्डिकोद्वेष्टन, सन्धि विश्लेष, कटिग्रह, अस्थि विशेषत: पार्श्व में छेदनवत पीड़ा, जृम्भा, सिर दर्द, मुख वैरस्य/कषाय, मल अप्रवृत्ति, रूक्ष अरूण-त्वक्, आस्य, अक्षि, नख, मूत्र; पुरीष; प्रसेक, अरोचक, अविपाक, अनिद्रा; कण्ठ ओष्ठ शोष, तृट् ; शुष्क छर्दि, कास; रोम व दन्त हर्ष; वेपथु, छींक न आना, भ्रम, प्रलाप, धूप की इच्छा, विनाम (शरीर मोड़ना) आदि।

२. पित्त ज्वर– अङ्गों में एक साथ व्याप्त, कटुवक्रता, नासास्यपाक, शीतेच्छा, भ्रम, मूर्च्छा, प्रलाप, अरति, अतिसार, पित्त वमन, थूक में रक्त/खट्टापन (अम्लता), रक्त कोठ (बर्र दंश वत चकत्ते), त्वक् आदि - पीत हरित; स्वेद व नि:श्वास में दुर्गन्ध, अति तृष्णा।

३. कफ ज्वर– अरूचि, जाड्य, अल्पवेग, प्रसेक, मुखमाधुर्य, श्वास पीनस, मिचली, छर्दि, कास; त्वक् आदि श्वेत, तन्द्रा, अङ्गों में शीत पिटिका, उदर्द।

४. वात-पित्त ज्वर– शिरोर्ति, मूर्च्छा, वमन, दाह, कण्ठास्य शोष अरति, पर्व भेद, ठीक नींद न आना, तृट् , भ्रम, रोमहर्ष, जृम्भा, अतिवाक् ।

५. कफ-वात ज्वर– कम संताप, अरूचि, पर्व व सिर में दर्द, पीनस, श्वास, कास, बिबंध, शीत, जाड्य, तिमिर, भ्रम, तन्द्रा।

६. कफ पित्त ज्वर– शीत, स्तम्भ, स्वेद, दाह, तृष्णा, कास, श्लेष्म-पित्त प्रवृत्ति, मोह, तन्द्रा; मुख में लिप्तता व तिक्त।

७. सन्निपात– सर्वलक्षण; मुहुर्मुहु: दाह-शीत इच्छा; दिन में महानिद्रा, रात्रि में जागरण/सदा निद्रा/सदा अनिद्रा; स्वेद बार-बार बहुत/बिल्कुल न आना, पिण्डली, पार्श्व, मूर्ध, पर्व, अस्थि रूक्, भ्रम; कर्ण में वेदना व स्वर, कण्ठ शूकैरिवावृत:; जिह्वा-परिदग्ध, खर; रक्तपित्त कफष्ठीवन; शिर हिलाना, अतितृट् ; श्याव रक्त मण्डल; हृद्व्यथा, मल अवरोध/अल्प/अतिप्रवृत्ति; मुख में स्निग्धता, स्वरसाद, प्रलाप, तन्द्रा, कण्ठकूजन।

- पर्याय– अभिन्यास, हतौजस।
- वात → कफ अवरूद्ध → पित्त का शरीर के अंदर पीडन

↓ व्यवायि, सूक्ष्मत्व

बाह्य मार्ग

(नेत्रों में पीलापन)

(Viral Hepatitis)

- असाध्यता– **दोषे बिबद्धे (संग) नष्टेऽग्नौ सर्वसम्पूर्ण लक्षण:।**
- सामान्यत:– कृच्छसाध्य, वैकल्यकर।
- पित्त-त्वक्गत } I दाह }
वात कफ– कोष्ठ स्थित } II शीत } कृच्छसाध्य– तन्द्रा, स्वेद, वमि, क्लम।

- वात कफ– त्वक् स्थित } I शीत
  पित्त– कोष्ठ } II दाह } पित्ताधिक्य → कफ शुष्क → शीतशान्त
  अम्लक, मूर्च्छा, मद, तृष्णा ↩

दोषज ज्वर स्व समयों में उत्पन्न या वृद्धि करते हैं, इनमें निदानोक्त अनुपशय से विपरीत उपशय होता है ॥१८-१९॥

८. आगन्तुज ज्वर– ४ भेद–

(१) अभिघात– वात ↑→ रक्तदूषण → ज्वर।

(२) अभिषङ्ग– ७ भेद

I.	ग्रहावेश जन्य	– कदाचित हंसना, रोना	S↑
II.	औषधगंध जन्य	– मूर्च्छा, शिरोरूक, शोथ, छींक	S↑
III.	विष जन्य	– मूर्च्छा, अतिसार, अस्य श्याव, दाह, हृदरोग	S↑
IV.	क्रोध जन्य	– कम्प, शिरोरूक्,	P↑
V.	भय जन्य	– प्रलाप	V↑
VI.	शोक जन्य	– प्रलाप	V↑
VII.	काम जन्य	– भ्रम, अरूचि, दाह; निद्रा, घी, धृति क्षय	V↑

(३) अभिशाप– सन्निपात वत लक्षण – असह्य

(४) अभिचार– ,, ,,

मंत्र → I. चित्त संताप
II. देह ताप
III. विस्फोट, तृट, भ्रम, दाह, मूर्च्छा प्रतिदिन ज्वर वर्धन।

अन्य ज्वर भेद–

(A) द्विविध–

शारीरोमानसः सौम्यस्तीक्ष्णोऽन्तर्बहिराश्रयः ।
प्राकृतो वैकृतः साध्योऽसाध्यः सामो निरामकः ।।४४।।

शारीर	–	मानस	प्राकृत	–	वैकृत
सौम्य	–	तीक्ष्ण	साध्य	–	असाध्य
अन्तः	–	बर्हिराश्रय	साम	–	निराम

(B) पञ्चविध– दोषकाल बलाबलनुसार– विषम – सन्तत, सतत, अन्येद्युष्क, तृतीयक, चतुर्थक।

- चतुर्थक विपर्यय ज्वर।

(C) धातुगत– ७

रस, ... शुक्र।

(D) विविध–
- प्रलेपक
- वात बलासक
- हारिद्रक
- रात्रिक ज्वर।

(A)

(१) पूर्व शरीरे शारीरे तापो मनसि मानसे ।।४५।।

(i) शारीर ज्वर– प्रथम देह ताप

(ii) मानस ज्वर– प्रथम मन: संताप

(२) (i) वायु + कफ → शीत ≡ सौम्य ज्वर
(योगवाही)

(ii) वात + पित्त → दाह ≡ तीक्ष्ण ज्वर
वात + K&P → मिश्र

(३) (i) अन्त: आश्रित ≡ अन्तर्वेग–
अन्त:क्षोभ, मलग्रह; दु:साध्य।

(ii) बर्हिवेग– सुसाध्य।

(४) (i) प्राकृत– वर्षाशरद्वसन्तेषु वाताद्यै: प्राकृत: क्रमात् ।।४७।।
वर्षा– V, शरद–P, बसन्त– K ज्वर
दु:साध्य (वर्षा– V) ; सुखसाध्य (शरद–P, बसन्त– K)

(ii) वैकृत ज्वर– प्राकृत से अन्य। दु:साध्य।
- प्राकृत वातिक तथा वैकृत की दु:साध्यता–
'एकमार्ग क्रियारम्भ व्यतिवृत्तेर्महात्ययात् ।।४८।।'
चि० विपरीतता तथा महान हेतु होने से।

(५) (i) साध्य– बलवत्स्वल्प दोषेषु ज्वर: साध्योऽनुपद्रव: ।।५१।।
बली में स्वल्पदोष वाला अनुपद्रवी ज्वर।

(ii) असाध्य– पूर्वोक्त।

(६) (i) साम– तीक्ष्ण ज्वर उपद्रव, अग्लानि, बहुमूत्रता, दोष अप्रवृत्ति, मल जीर्ण न होना, भूख न लगना।
पच्यमानावस्था लक्षण– अधिक वेग, तृष्णा, प्रलाप, श्वसन, भ्रम, मल-प्रवृत्ति, उत्क्लेश (वमन)।

(ii) निराम–
- आम विपर्यय।
- लंघन से ७ दिन बाद।

(B) विषम ज्वर-५– 'प्रायशः सन्निपातेन भूयसा व्यपदिश्यते' ।।५५।।
प्राय: सन्निपातज; दोषोत्कर्षानुसार कहे जाना।

समान दूष्य से बढ़कर, धातु तथा मूत्र शक्रतवाही स्रोतों में व्याप्त (दोष) मल सर्वशरीर को सन्तापित करते हैं। बली, गुरू, स्तब्ध तथा विशेषत: रसाश्रित होते हैं।

- ज्वर की ऊष्मा धातु मलों को शीघ्र नष्ट करती है, शुद्ध होने पर V-7, P-10, K-12 दिन में स्वस्थ तथा अशुद्ध में इसी दिन क्रम में मृत्यु। – अग्निवेश
- त्रिदोष मर्यादा– V-14, P-18, K-22 दिन – स्वस्थ या मृत्यु। जब कुछ धातु शुद्ध व कुछ धातु अशुद्ध रहें तो दीर्घकाल का ज्वर। – हारीत

विषमो विषमारम्भ क्रियाकालानुषङ्गवान् ।।६५।।

आरम्भ, चिकित्सा व काल विषम होने तथा निरन्तर बने रहने से विषम ज्वर।

विच्छिन्न संताप–

- यथोत्तर मन्द गति व शक्ति वाला दोष; काल, सदृश रसादि धातु, बल प्राप्त कर ज्वर उत्पन्न करता है।
- दोष क्षीण होकर ज्वर सूक्ष्म हो जाता है तथा दोष रसादि में लीन हो जाता है। (अति लीन व मंद होने से ५वें दिन नहीं होता।)

सन्तत– रस– रसवाही स्रोतों के निकट, इन स्रोतों के मुख विवृत होने से दोष शीघ्र सर्व शरीर व्यापी ↓

सन्तत → सतत।

सतत– रक्त (Twice in 24 Hrs)

अन्येद्युष्क– मांसवाही नाड़ी/स्रोत (Once in 24 Hrs)

तृतीयक– मेदोवह नाड़ी (Alternate Day)

– P.V शिर
– K.P त्रिक } ग्रह
– V.K पृष्ठ

चतुर्थक– मेद, मज्जा, अस्थि में कोई एक आश्रय–

(i) कफज– जंघा से व (ii) वातिक– शिर से प्रथम प्रभाव।

चतुर्थक– दुश्चिकित्स्य– गंभीर धातु चारी, सन्निपातज, तीनों दोषों की सम वृद्धि।

(C) धातुगत ज्वर– त्रिदोषज।

	ज्वर	**लक्षण**
कृच्छ साध्य-ता ↓	रसगत	उत्क्लेश, गौरव, अङ्गभङ्ग, जृम्भा, अरूचि, वमि।
	रक्त	रक्तनिष्ठीवन, तृष्णा; पिटिका– लाल उष्ण; दाह, राग, भ्रम, मद, प्रलाप।
	मांस	तृट् , सृष्टवर्च (Loose Motion), अन्तर्दाह, भ्रम, तम, दौर्गन्ध्य, गात्रविक्षेप।

	ज्वर	लक्षण
कृच्छ साध्य-ता ↓	मेद अस्थि	स्वेद, अतितृष्णा, वमन, असह्य दुर्गन्ध, प्रलाप। अस्थि भेदन, ऊर्ध्व/अधः दोष प्रवृत्ति, श्वास, अङ्गाक्षेप, कूजन (कराहना)।
असाध्य	मज्जा शुक्र	अन्तर्दाह, बहि; शीत, श्वास, हिक्का। तमदर्शन, मर्मच्छेदन, स्तब्धमेढ्र (Like Priaprism), शुक्र प्रवृत्ति → मृत्यु।

(D) • **प्रलेपक ज्वर–** कफ, गुरू, गात्र आलिम्प, मंद, शीत।

- **वात बलासक–** नित्य मंद ज्वर, रूक्ष शीत, स्तब्धांग, श्लेष्मभूयिष्ठ, कृच्छसाध्य।
- **हारिद्रक–** हरिद्राभेकवर्णाभस्तद्वर्णं यः प्रमेहति ॥८९॥
  वर्ण तथा मूत्र– हल्दी/मेढक वत। मृत्युकर।
- **रात्रिक ज्वर–** K‡V‡P–; तीक्ष्ण या मंद, रात्रि में।
- **नियतवात ज्वर–** रात्रि के पूर्व भाग में नित्य। क्षीण बल (सूर्य से) व शुष्क (व्यायाम से) देह में।
- दूषित K व P → आमाशयस्थ
  शरीर का आधा भाग शीत, आधा ऊष्ण।
- दुष्ट P → काय
  K → अन्त भाग (Appendages) } देह उष्ण, हाथ पैर शीत।

ज्वर मोक्ष समय के लक्षण– श्वास, स्वेद, वमन, शरीर उष्ण/शीत, पतला मल शब्द के साथ त्याग।

ज्वर मुक्त– लाघव, गतताप, मुखपाक, अस्वेद, छींक, मूर्धा में कण्डू, मन प्राकृत, अन्न इच्छा।

३. रक्तपित्त कास निदान

रक्तपित्त–

निदान– उष्ण, तीक्ष्ण, कटु, अम्ल, लवण, अतिविदाही, पित्तल आहार विहार।

सम्प्राप्ति– कुपित द्रव पित्त + रक्त → रक्तपित्त।

निरूक्ति– पित्त के रक्त का विकार होने से, रक्त से संसर्ग, रक्त से दूषित होने, रक्त की गन्ध व वर्ण का अनुसरण करने से।

उत्पत्ति स्थान– रक्त स्थान – प्लीहा, यकृत।

पूर्वरूप– शिरोगुरूत्व, अरूचि, शीतेच्छा, धूमक, अम्लक, (वैभत्स्य) छर्दि, कास, श्वास, भ्रम, क्लम, लोहलोहित मत्स्याम गन्धास्यत्व, नयनादि में रक्त हारिद्र हरित वर्णता; स्वप्न-नील, लोहित पीत रूप।

भेद व लक्षण–

ऊर्ध्व नासाक्षिकर्णास्यैर्मेण्ढ्रयोनिगुदैरधः ।।९।।
कुपितं रोमकूपैश्च समस्तैस्तत्प्रवर्तते ।

भेद	प्रवर्तन	साध्यता	अनुबंधी	विवरण
ऊर्ध्वग	७, नासा, आँख, कान, मुख	साध्य (बहुऔषध)	K	विरेचन– "पित्तस्य विरेको हि वरौषधम् ।" पित्त व कफ का निर्हरण। तिक्त व मधुर कषाय।
अधोग	३, मेण्ढ्र, योनि, गुदा	याव्य (अल्प औषध)	V	चि०– वमन, मधुर कषाय। (P व V के लिये वमन श्रेष्ठ नहीं)
उभयग (सर्वग)	ऊर्ध्व-अध: समस्त रोम-कूप	असाध्य	K.V	चि०– सर्वदोष शामक। प्रतिलोमी संशोधन न होने, अत्यल्प औषधियाँ होने, तथा कोई सम्पूर्ण संशमन न होने से असाध्य।

रक्तपित्त में दोषों का आना सिरा रक्त के लक्षणों से जाने।

कास–

पूर्वरूप– कण्ठ कण्डू, शूक पूर्णाभ कण्ठ, हृदय अस्वस्थ, अरोचक।

निदान– कषाय, अस्वच्छ, कटु, अम्ल, लवण, उष्ण, रूक्ष, शीत, गुरू, स्निग्ध, उत्क्लेद्य, उत्क्लेद्य, पर्युषित, वेग अवरोध/अकाल प्रवृत्ति, रात्रि जागरण, दिवाशयन, साहसिक कार्य आदि धातु क्षय, मार्ग आवरक कारण।

सम्प्राप्ति– कुपित अपान → प्रतिहत (ऊर्ध्वगामी) →

→ रस स्थान (उर) ← उदान वायु से पीडन
↓
उर व कण्ठ में अवरूद्ध
↓
कण्ठ व मूर्ध स्थित सिरा पूरण
↓
विवृत मुख से भिन्नकांस्योपम ध्वनि के साथ निकलना।

भेद व लक्षण–

	कास	लक्षण/रूप
१.	वात	शुष्क कास, अतिवेग, शब्द, दर्द; अंगहर्ष; **शुष्क कफ** (कठिनता से निकल जाने पर कुछ आराम मिलता है) ।
२.	पित्त	पीताक्षि, मुख तिक्त, ज्वर, धूमक, अम्लक, **कफ-पीला** वमन में पित्त व रक्त।
३.	कफ	उर में अल्प रूक्, शिर हृदय स्तिमित, गुरू, गले का कफ से उपलेप (भरा); **पीनस**; वमन; **घन, स्निग्ध, श्वेत**, श्लेष्म प्रवर्तन।
४.	क्षत	• बलाधिक कार्य → V↑ + P → उर: क्षत → कास। • कफ– रक्त मिश्रित पीला, (कृष्ण), शुष्क, ग्रथित, कुथित (सड़ने की गंध), बहु मात्रा। • ष्ठीवन के समय– कण्ठ रूक्, उर में भेदन, सूचीवत शूल। • ज्वर, श्वास, तृष्णा; पारावत इव कूजन; पार्श्वशूल। देह दुर्बल/क्षीण → सरक्तमूत्र, पृष्ठ कटिग्रह।
५.	क्षय	• राजयक्ष्मा संक्रमण → वात कोप → कास • कफ– दुर्गंधित पूय वत, पीला, विस्र (सड़ी गंध), हरा, लाल। • अकस्मात शीत/उष्ण इच्छा, बलनाश, बह्वाशी (अधिक खाने वाला) → राजयक्ष्मा के सर्वरूप।
	• द्विदोष • सन्निपात	लक्षण मिश्र। वृद्ध में याप्य।

साध्या साध्यता– V, P, K– साध्य; द्वन्दज– याप्य।

क्षत व क्षय– नूतन में साध्य, क्षीण पुरुष में मारक, बली में याप्य।

उपद्रव– कास उपेक्षा → श्वास, क्षय, वमन, स्वरसाद।

४. श्वास हिध्मा निदान

श्वास–

निदान– कास वृद्धि से, कासोक्त हेतु; आमातिसार, वमन, विष, पाण्डु (Anaemia), ज्वर, रज, धूम, वायु, मर्माभिघात, अति हिम अम्बु।

भेद– ५

क्षुद्रक, तमक, छिन्न, महान, ऊर्ध्वश्वास।

सामान्य सम्प्राप्ति– कफोपरूद्ध वायु → उर स्थित दूषित
↓
आमाशयोत्पन्न श्वास ← प्राण, उदक, अन्नवह स्रोत दूषण

पूर्वरूप– हृत्पार्श्वशूल, प्राणवायु विलोम, आनाह, शङ्खभेद।

रूप–

१. **क्षुद्र श्वास–** आयास (परिश्रम), अतिभोजन से प्रेरित, स्वयं शांत।

२. **तमक श्वास–**
- वात → प्रतिलोम → सिरा गमन → कफ के साथ परिगृह्य → शिर, ग्रीवा, उर, पार्श्व पीडन → घुर्घुरक, कास मोह, पीनस, तृषा → प्राणोपतापी तीव्र श्वास रोग।
- कफ निकल जाने पर कुछ शान्ति।
- श्वास कृच्छ, बैठकर श्वास लेने में आराम।
- बार-२ श्वास वेग आना, उष्णेच्छा, वेपथु।

वर्धक भाव– मेघाम्बु शीत प्राग्वात (खुली सामने से), कफ वर्धक कारण।
प्रतमक– तमक + ज्वर व मूर्च्छा। शीत उपचार से शान्त।

३. **छिन्न श्वास–** विच्छिन्न (रूक-२ कर) श्वास। मर्म छेदन वत रूजा, स्वेद, मूर्च्छा, अधोदृष्टि, एक आँख लाल, शुष्कास्य, प्रलाप।

४. **महाश्वास–** महत दीन नाद युक्त श्वास; नासाशब्द; क्रोधी बैल (मत्तर्षभ) वत; विभ्रान्त नेत्र, मुख; वक्ष का श्वास के साथ क्षिपण; बद्ध मूत्र वर्च; विशीर्ण वाक्; कर्ण शङ्ख शिर में अतिरूक्। थोड़ी-२ देर बाद मूर्च्छा।

५. **ऊर्ध्व श्वास–** Long Expiration, Short Inspiration. श्लेष्मावृत मुख स्रोत, प्रकुपित दीर्घ ऊर्ध्व श्वास, निरूद्ध अध: श्वास; दृष्टि ऊपर, भ्रान्त; निरूद्ध वाक्।

साध्यासाध्यता–

क्षुद्र – स्वत: संशमन
तमक – बली में नूतन– साध्य
– याप्य।
शेष ३ – अव्यक्तावस्था में साध्य, व्यक्त → प्राणहर।

हिक्का– हेतु, पूर्वरूप, उत्पत्ति स्थान श्वासवत।

भेद– ५

भक्तोद्भवा क्षुद्रा यमला महती गम्भीरा।

१. **भक्तोद्भवा/अन्नजा–** रूक्ष, तीक्ष्ण, खर, असात्म्य भोजन शीघ्र, अयुक्तिपूर्वक सेवन से → वायु पीडन → क्षवथु अनुगामी हिक्का। सात्म्य अन्नपान से शमन।

२. **क्षुद्रा–** आयास → V↑ → जत्रुमूलोत्पन्न हिक्का। आयास से वृद्धि, भोजन से मृदु।

३. **यमला–** आहार पाकारंभकाल में दो (यमल) वेग एक साथ; चिरेण (देर में आवृत्ति), आहार परिणमन (वाचन) समय वृद्धि। हिक्का के वेग में शिर, ग्रीवा हिले; आध्मान, अतितृष्णा, प्रलाप, वमन, अतिसार, जृम्भा।

पर्याय– वेगिनी, परिणामवती।

४. **महती–** महान मूल, शब्द, वेग व बल।
अन्न मार्ग अवरूद्ध, पृष्ठ नमन; स्तम्भ – देह, वाक्; नेत्र बंद व अश्रु, विचेतन।

५. **गम्भीरा–** पक्वाशय/नाभि से उत्पन्न।
लक्षण– महती वत + जृम्भा, अङ्ग प्रसारण।

साध्यासाध्यता– १ व २ – साध्य
३ – सम्पूर्ण लक्षण युक्त– असाध्य
४ व ५ – असाध्य।

हिध्मा-श्वास– शीघ्र मृत्युकर (किसी भी गम्भीर रोगी में)।

५. राजयक्ष्मादि निदान

पर्याय– ४– राजयक्ष्मा– I द्विज व नक्षत्रराज चन्द्रमा;
- क्षय – देह औषध क्षय कर
- शोष – रसादि शोषण
- रोगराट – राजा – आगे, पीछे अन्य रोग।

कारण– ४
१. साहस २. वेगावरोध ३. शुक्र ओज स्नेह क्षय ४. अन्नपान विधित्याग

सम्प्राप्ति–
उपरोक्त कारण → V↑ → P व K कुपित → सर्व शरीर सन्धियों में आविष्ट → सिरा पीडन → स्रोत मुख अवरूद्ध/अतिविवृत →
ऊर्ध्व → स्वगद
अधः → ,,
तिर्यक → ,,

पूर्वरूप– प्रतिश्याय, छींक (क्षव), लालास्राव, मुख माधुर्य, अग्निमान्द्य, घृणावृद्धि, हृल्लास, छर्दि, अरूचि, बलक्षय, स्त्री, मद्य, मांस में रूचि।

स्वप्न– अग्नि, पर्वतों पर अग्नि, वृक्ष-जलते/गिरते, गिरगिट, सर्प, बन्दर, कुत्ता, पक्षी, बाल, अस्थि, राख ढेर; शून्य ग्राम/देश।

लक्षण– ११
(१) **ऊर्ध्व स्थित दोष (Pulm T.B.)–** पीनस, श्वास, कास, रूक्– अंस, मूर्ध, स्वर; अरूचि–७।

(२) कोष्ठगत दोष– (Int. T.B.)– अतिसार/मलशोष, वमन।

(३) तिर्यक्स्थ दोष– पार्श्व रूक्।

- सन्धिगामी दोष– ज्वर।

उपद्रव– कण्ठोध्वंस (गला बैठना), उर रूक्, जृम्भा, अङ्गमर्द, निष्ठीवन, अग्निसाद, आस्यपूति (Foul Smell) ।

वात-६– शिर पार्श्व शूल; अंस अङ्ग मर्द, कण्ठोध्वंस, स्वर भ्रंश।

पित्त– दाह-पाद अंस पाणि; अतिसार, रक्तवमन, मुख गन्ध, ज्वर, मद।

कफ– अरोचक, छर्दि, कास; गौरव-मूर्धा, अङ्ग; प्रसेक, पीनस, श्वास, स्वरसाद, अल्पाग्नि।

क्षय रोगी का मल बल होता है–

पाक-२ – (१) कोष्ठ में जठराग्नि द्वारा
(२) धात्वाग्नि पाक– स्रोत

- जठराग्नि मंद
- कफ़ोल्वण दोषों से स्रोत मुख अवरूद्ध
- धातु ऊष्मा मंद

} स्वस्थान (आमाशय) में रस विदग्ध
↓
रसज उपद्रव

- रस अपर्याप्त मात्रा में रक्त तक पहुँचता है, इसकी कुछ विदग्धता मंद रक्ताग्नि से भी शुद्ध हो जाती है। परन्तु इस रस से मांस आदि धातुओं का पोषण नहीं हो पाता। अपर्याप्तता के कारण रक्त क्षय भी होता है। धात्वाग्नियों की अपेक्षा जठराग्नि कुछ ठीक होने से अन्न अग्नि द्वारा कोष्ठ में पचता है और अधिकत: मल बनता है, यही इसका बल का आश्रय है।

साध्यासाध्यता– व्याधि व औषध बल सहन कर सकने वाला सम्पूर्ण लक्षण युक्त भी साध्य अन्यथा स्वल्प लिङ्गी भी असाध्य।

स्वर भेद– ६ प्रकार

वात	साध्य	स्वर कृश, रूक्ष, चल, शूक पूर्णाभ कण्ठ । चि०– स्नेहन, उष्ण
पित्त	साध्य	तालु गल दाह, शोष, उक्तावसूयनम् (आवाज रूकना)।
कफज	साध्य	कण्ठ कफ से लिप्त, स्वर-मंद, खुरखुराहट ।
सन्निपात	असाध्य	मिलित लक्षण
क्षय	साध्य	धूमायन
मेदज	असाध्य	कफज लक्षण, अक्षर अस्पष्ट ।

अरोचक– ५

जिह्वा व हृदय आश्रित दोष → अरोचक

१. वातज – कषाय मुख स्वाद।
२. पित्तज – तिक्त मुख स्वाद।
३. कफज – मधुर मुख स्वाद।
४. सन्निपातज – विरस।
५. मनः संताप जन्य – शोक क्रोध आदि के दोषानुसार रस।

छर्दि– दूषित उदान → दोषों को ऊर्ध्व → मुख से निकालना।

सा० पूर्वरूप– उत्क्लेश, आस्य लावण्य, प्रसेक, अरूचि।

भेद व लक्षण– ५

१. **वातज–** वमन में कषाय; झाग; उद्गार, वमित द्रव्य-कृष्ण अच्छ।
२. **पित्तज–** क्षारोदक निभ, धूवांवत, हरा-पीला, सरक्त; अम्ल, कटु उष्ण। तृष्णा, मूर्च्छा, दाह, ताप।
३. **कफज–** मधुर, लवण, अतिमात्रा, स्निग्ध, घन, शीत, श्लेष्म तन्तु का जाल; तन्द्रा, मुख शोथ, रोमहर्ष।
४. **सन्निपातज–** सर्व लिङ्ग व मल; तथा रिष्टोक्त– असाध्य।
५. **द्विष्टार्थयोगजा–** पूति, अमेध्य, अशुचि, द्विष्ट दर्शन, श्रवण आदि → चित्त संताप → हृदय उत्क्लिष्ट → छर्दि।
   - कृमिजन्य– शूल, वेपथु, हल्लास, कृमिज हृदय रोग के लक्षण।
   - कृमिजन्य, तृष्णाजन्य, आमदौहृदजन्य (Earlypreg.) की दोषानुसार विवेचन।

हृद्रोग– निदान गुल्मवत।

भेद– ५

१. **वातज–** (Ischaemic Heart Disease etc.)–
   हृद् प्रदेश में शूल, तोद, स्फुटन, भेदन; शून्यता, द्रव (Palpitation), भय, शब्दा-सहिष्णु, वेपथु, वेष्टन, श्वासरोध (Difficult Respi.), अल्प निद्रा (High B.P.)
२. **पित्तज–** अम्लक, अम्लपित्त वमन, धूमक, पीतता, ज्वर; तृष्णा, भ्रम, मूर्च्छा, दाह
३. **कफज–** हृदय स्तब्ध, अश्मगर्भवत भारी। कास, अग्निसाद, निष्ठीवन, निद्रा आलस्य, अरूचि, ज्वर।
४. **सन्निपातज–** मिश्र
५. **कृमिज–** श्यावनेत्रता, तमः प्रवेश, हल्लास, शोष, कण्डू, कफ बहना (मुख से) हृदय आरी से चीरने जैसा। शीघ्र चि० (Emergency) /(मृत्यु)।

तृष्णा-- वात पित्त प्रकोप → सौम्य धातु शोषण
↓
जिह्वामूल, गल, क्लोम, तालु की तोयवह सिरा शोष
↓
तृष्णा

सा० लक्षण– मुखशोष, जलातृप्ति (पानी पीने पर भी प्यास शांत न होना), अन्न द्वेष, स्वरक्षय, जिह्वा निष्क्रमण, प्रलाप तृट्ग्रहोक्त रोग।

भेद– ६

१. **वातज–** शङ्ख तोद, भ्रम (Vertigo), गन्धाज्ञान, आस्य वैरस्य, श्रवण, निद्रा, बल नाश, शीताम्बु पान से वृद्धि।

२. **पित्तज–** मूर्च्छा, मुख तिक्त, गला शुष्क, दाह।
   - उष्णक्लान्त– सहसा शीत जल पान → ऊष्मा कोष्ठगत → P↑
   - अतिमद्यपान → P↑

३. **कफज–**
   - तोयवाही स्रोतों में कुपित कफ से वायु अवरूद्ध → कुपित कफ शोष
   - कण्ठ-शूक पूर्ण, माधुर्य, वमन, अविपाक।
   - स्निग्ध, गुरू, अम्ल, लवण आहार जन्य तृष्णा।

४. **रस क्षयज–** सू० १९

५. **उपसर्गज–** शोष, मेह, ज्वर व अन्य उपसर्गी (Infectious) रोगों से उत्पन्न तीव्र तृष्णा।

६. मदात्ययादि निदान

मद्यगुण– १०

तीक्ष्णोष्ण रूक्ष सूक्ष्माम्ल व्यवाय्याशुकरं लघु ।
विकाषी विशदं मद्य मोजसोऽस्माद्विपर्ययः ।।३।।

ओज से विपरीत–

१. तीक्ष्ण	४. सूक्ष्म	७. आशुकर	१०. विशद।
२. उष्ण	५. अम्ल	८. लघु	
३. रूक्ष	६. व्यवायी	९. विकाशी	

(विष– रस-अनिर्दिश्य, शेष ९ गुण मद्यवत)

यही गुण विष में उत्कर्ष वृत्ति से होने से मृत्युकर होते हैं।

मद अवस्थाएं– ३

१. **प्रथम–** मद्य गुण से → ओज गुण विक्षोभ → विकृत चेत

२. **द्वितीय–** प्रमाद में स्थित मूढ का दुर्विकल्पों को सुखकर समझना।

३. **तृतीय–**

I. • द्वितीय–तृतीय संधि– मन रज व तम से आक्रान्त हो → निरङ्कुश [व्याल (गज) वत], जड़।
   • दुर्गति का परम मार्ग।

II. तृतीयावस्था– शव वत निश्चेष्ट।

मद्य संश्रित विकार– मोह, भय, शोक, क्रोध, मृत्यु, उन्माद, मद, मूर्च्छा, अपस्मार, अपतानक।

मद अधिक न होना– बली, युवा, भोजनोपरांत, महाशना (अतिभोजी), स्निग्ध, सत्व, नित्यसेवी, मद्यपी वंशोत्पन्न, मेद-कफाधिक; मन्दवात पित्त; दृढ़ाग्नि।

मद अति प्रभावी– क्रोध, अजीर्ण, अति; अम्ल, रूक्ष मद्य।

मदात्यय–

सर्वेऽपि सर्वैजायन्ते व्यपदेशस्तु भूयसा।

१. वातज– अनिद्रा, श्वास, मूर्ध रूक्, कम्प।

२. पित्तज– दाह, ज्वर, मोह, अतिसार, तृट्, भ्रम।

३. कफज– छर्दि, हृल्लास, निद्रा, उदर्द, अङ्गगौरव।

४. सन्निपातज– सर्वलिङ्ग।

ध्वंसक व विक्षय– (बहुत समय से) मद्य पान छोड़े हुए व्यक्ति के सहसा अनुचित मद्य पीने से। विशेषतः दुर्बल में।

ध्वंसक– श्लेष्म निष्ठीवन, कण्ठशोष, अतिनिद्रा, शब्दासहत्व तन्द्रा।

विक्षय– अङ्ग व शिर में रूक्, संमोह, कास, वमि, ज्वर।

मद मूर्च्छा सन्यास–

सा० सम्प्राति–

रज, मोह
अहित आहार सेवी } → दोष प्रकोप → रस रक्त चेतनावह स्रोतावरोध

↓

मद, मूर्च्छा, सन्यास

— बलक्रम →

मद– ७– V, P, K, S, रक्त, मद्य, विषजन्य।

मूर्च्छा-४– (Faint)–

१.	वातज	आकाश लाल नील कृष्ण दर्शन	तमः प्रवेश	शीघ्र जागृत, भ्रम।
२.	पित्तज	,, रक्त पीत ,,		सस्वेद जागृत।
३.	कफज	मेघ सङ्काश आकाश		देर में सप्रसेक जागृत।
४.	सन्निपातज	• मिश्र • अपस्मार वत शीघ्र निश्चेष्ट हो गिरना।		

सन्यास (Coma)–

बली दोष → प्राणायतन (Heart) संश्रित → वाक् देह मन की चेष्टा आक्षिप्त → सन्यास (मृतोपम) —अचिकित्स्य→ मृत्यु

युक्ति पूर्वक मद्यपान– बल, काल, देश, सात्म्य, प्रकृति, सहाय(क), रोग, वय के अनुरूप।

७. अर्श निदान

गुद– स्थूलान्त्र प्रतिबद्धोऽर्धपञ्चाङ्गुलोगुदः।
स्थूलान्त्र से लगा ४ १/२ अंगुल भाग।
३ पेशियां ≡ वलि – प्रत्येक १ १/२ अङ्गुल
I. प्रवाहणी II. विसर्जनी III. संवरणी

अर्श– अरि वत हिंसा/पीड़ा करने से।

पायु मेण्ढ्रादि संश्रया मांसकीलाः।

अधिष्ठान– (सभी अर्शों का) मेद मांस त्वक्।

भेद–

- I. सहज (Congenital) – मातृ पितृ अपचार / दैव
  - • सन्निपातज, सभी कुलज रोग– असाध्य।
- II. जन्मोत्तर– ६ प्रकार
  - V, P, K, द्वन्दज-३, S, R।
- शुष्क– वात-कफ प्रधान
- आर्द्र– रक्त-पित्त प्रधान

गुदौष्ठ-१½ यव या १/२ अंगुल

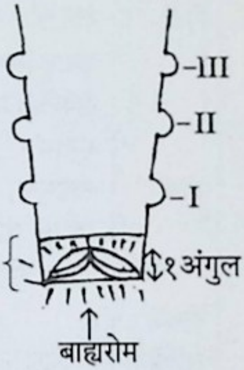

निदान– दोष प्रकोपक कारण, उत्कट विषम कठिन आसन, सवारी, अतिमैथुन, गुदक्षत, शीत संस्पर्श, निरन्तर अतिप्रवाहण, मलावरोध (वेग); गर्भदबाब, विषम प्रसव, गर्भस्राव आदि।

सम्प्राप्ति– अपान कोप + अधः भाग में कुपित दोष → वलि → वलि में अभिषण्ण (दूषित रक्त आना व एकत्र) → अर्श।

मांसांकुर → अधोमार्ग अवरूद्ध → अपान ऊर्ध्व – शेष ४ वात का दूषण तथा पित्त व कफ कोप → अग्निमांद्य

पूर्वरूप– कृच्छपाक, अन्त्रकूजन, उद्गार, अम्लक, अश्मगर्भाभ, आटोप; कृच्छ्युक्त सशब्द वात प्रवृत्ति, गुदपरिकर्त, सक्थिसदन, अक्षिशोथ, ग्रहणी शंका।

सा० लक्षण– कृश, प्रचुर मल; नाभि वंक्षण परिकर्तिका; गुद, शिर, पर्व, अस्थि शूल; अल्प शुक्र, अशन; शरीर पर सिराएं फैली, क्रोध। श्वास; शोथ- अक्षिकूट, पाणि, पाद, वदन। बीच-बीच में हृदय कुक्षि पार्श्व पृष्ठ बस्ति त्रिक ग्रह से पीड़ित।

विशेष लक्षण–

अर्श	अंकुर स्वरूप	अन्य लक्षण
वात	शुष्क, म्लान, कठिन, रूक्ष, श्याव अरूण; तीक्ष्ण स्फुटित मुख विषम मध्य; कदम्ब पुष्प, खजूर फल का आकार, वक्र।	कटि पार्श्व में वेदना, शूल, उदावर्त। → गुल्म अष्ठीला प्लीहा उदर रोग; त्वक् आदि में कृष्णिमा।
पित्त	रक्त पीत कृष्ण, अग्र-नीला, स्पर्शा-सह्य, विस्रगंधी, तनु रक्त स्रावी; यकृत्प्रकाश, तोते की जिह्वा, जोंक मुखवत, मध्य यव वत (मोटा)।	दाह, पाक, ज्वर; पतला पीला मल; त्वक् आदि पीत।
कफ	महामूल, पिच्छिल, स्पर्श क्षम, (Non Tender); करीर कटहल बीज, गोस्तनाकार कफ वसायुक्त।	अतिसार, नाभि परिकर्तिका, हल्लास आम विकार, नपुंसकता; कण्डू, त्वक् आदि श्वेत।
द्वन्दज सन्निपात	} मिश्र	
रक्तज	वट प्ररोह (अंकुर), विद्रुम (प्रवाल) काकणन्तिका (लाल रत्ती) वर्ण;	पित्तज लक्षण; मल दबाव से दुष्ट उष्ण रक्तस्राव। रक्तक्षय उपद्रव।

अर्श उपद्रव–

उदावर्त– (वाताभिभूत कोष्ठ में)–

चना आदि रूक्ष, संग्राही → अपान कोप –< अधोवह स्रोतावरोध / मल शुष्क } –

→ वात मल मूत्र अवरोध – वेदना, आध्मान, परिकर्तिका।

→ अपान ऊर्ध्व – वमन, ज्वर, मूत्राघात, तिमिर, श्वास, शिरःशूल, मानस रोग, गुल्म आदि वातज।

साध्यासाध्यता–

असाध्य– सहज, त्रिदोषज, आभ्यन्तर वलि में एक दोषज भी।

- अग्निबल आदि होने पर याप्य।

कृच्छ्रसाध्य– द्वन्दज, द्वितीय वलि आश्रित, १ वर्ष पुराना।

सुखसाध्य– बाह्यवलि, एकदोषोल्वण, नूतन।

नाभि अर्श– गण्डूपदास्यरूपाणि पिच्छिलानि मृदूनि च ॥३०॥

चर्मकील–

- व्यान + कफ → बहिः त्वक् में अर्श (Cuticular Horns)
- कीलवत स्थिर, खर।
- V- तोद, प्रारूष्य; P- कृष्ण/रक्त वर्ण; K- स्निग्ध, ग्रथित,

८. अतिसार ग्रहणी रोग निदान

अतिसार–

अतिसरणाद् अतिसार .... ।१९।

अन्न जीर्ण होने पर साम/निराम मल का अतिसरण ≡ अधिक त्याग, स्वभावतः आशुकारी।

कारण व सम्प्राप्ति– अत्यम्बुपान, असात्म्य आहार, विरूढ़ धान्य, रूक्ष, अतिमात्रा, अर्श, कृमि, वेगावरोध → वातकोप → जलीय धातु स्रंस, अग्निनाश → कोष्ठ (स्थूलान्त्र) स्थित पुरीष द्रव रूप → अतिसार।

पूर्वरूप– तोद– हृद, गुद, कोष्ठ; गात्रसाद, मलग्रह, आध्मान, अविपाक।

भेद व लक्षण– ६ – V, P, K, S, भय, शोक।

१. **वात–** चिकने पानी जैसा, कम-कम, शब्द व शूल से, झाग दग्ध गुड़ाभास, परिकर्तिका, गुद शिथिल।
२. **पित्त–** पीत असित हारिद्र दूर्वा प्रभ; सरक्त; अतिदुर्गन्ध, गुददाह।
३. **कफज–** घन, पिच्छिल, तन्तु, श्वेत; आम + कफ; सप्रवाहिका, मल त्याग कर लेने पर भी अकृत महसूस होना।
४. **सन्निपातज–** सर्व।
५. **भयज–**
   चित्त क्षोभ– V↑ $\xrightarrow{P}$ मल द्रवित
   - **लक्षण–** वात पित्त सम; उष्ण, द्रव, प्लव मल।
६. **शोकज–** भयवत।
   पुनः भेद– (A) १. साम (B) १. सास्र (सरक्त)
   २. निराम २. अस्र (बिना रक्त)

१. साम/आमातिसार– पानी में डूबना (गौरव), दुर्गन्ध, आटोप, प्रसेक।

२. निराम– (पानी में नहीं डूबना) कफ के कारण डूब भी जाता है, शेष विपरीत ल०।

ग्रहणी–
- मल– आम + अन्न।
- मल कभी बंधा कभी पतला।

पूर्वरूप– अग्नि मांद्य, चिर पाक, अम्ल विपाक, प्रसेक, वक्र वैरस्य, तृट्, क्लम, छर्दि, कर्णक्ष्वेड़, अंत्रकूजन।

भेद व लक्षण– ४– V, P, K, S

१. **वात–** बार-बार विसूचिका, परिकर्तिका, जीर्ण काल/उपरान्त आध्मान, भोजन करने पर ठीक; देर से दुख के साथ द्रव/शुष्क आम सशब्द सफेन, बार-बार, पायु रूक् के साथ मल त्याग; श्वास कास।

२. **पित्त–** देह व मल पीताभ नीलिमायुक्त। अम्ल उद्गार, हृत्कण्ठदाह, तृषा।

३. **कफ–** अन्न का दुख पूर्वक पाक, स्तमित, स्त्री में अहर्ष।

भिन्नाम श्लेष्म संसृष्ट गुरू वर्चः प्रवर्तनम् ।।३०।।

(पतला, आम + कफ युक्त भारी मल)

४. **सन्निपातज–** सर्व

ग्रहणी दोष से ही विषमाग्नि (३-तीक्ष्ण, मंद, विषम) होती है।

अष्ट महारोग–

वातव्याध्यश्मरीकुष्ठमेहोदर भगन्दराः ।
अर्शांसि ग्रहणीत्यष्टौ महारोगाः सुदुस्तराः ।।३२।।

९. मूत्राघात निदान

बस्ति– (Kidney → U. Blader), मर्म, मूत्र रोग अधिष्ठान। अधोमुख (Bladder), मूत्रवहा २ नाड़ियां, ऊर्ध्व पार्श्वों में (R + & Lt. Ureters) ≡ मूत्रवह स्रोत।

सूक्ष्म मुख सहस्र निस्यन्देन [Uriniferous Tubules(= Nephron + Collecting Tubule) ≡ 1 million in each Kidney]

- कार्यात्मक इकाई – अविरत मूत्र निस्यंदन (Glomerular Filtration - Continuous) – जिस प्रकार नव घट पानी में रखने से सूक्ष्म स्रोतों से भर जाता है। (≡ 6-10 drops/mt by each ureter in U. Bladder)
- इन्हीं सूक्ष्म मुख स्रोतों से वातादि दोषों का बस्ति में प्रवेश → मूत्राघात, प्रमेह विकार उत्पन्न। (Longitudinal Section of a Kidney appears like 'GHAT')

मूत्र रोग <
- मूत्र अवसादज – मूत्राघात
- मूत्र अतिप्रवृत्ति – प्रमेह

मूत्राघात– २० प्रकार

- मूत्र कृच्छ-४– V, P, K, S
- अश्मरी-४– V, P, K, शुक्र

९. वात बस्ति	↑ वात ↑	१३. मूत्रजठर	↓ प्रधान ↓
१०. अष्ठीला		१४. मूत्रोत्संग	
११. कुण्डलिका		१५. मूत्र ग्रन्थि	
१२. मूत्रातीत		१६. मूत्र शुक्र	
		१७. विड्विघात	

१८. उष्णवात } V.P↑
१९. मूत्रक्षय } V.P↑
२०. मूत्रावसाद– K.P↑

	मूत्रकृच्छ	
१.	वात कृच्छ्र	मुहुर्मुहं अल्प कृच्छमूत्र त्याग, बस्ति मेण्ढ्र वंक्षण में तीव्र शूल के साथ।
२.	पित्त कृच्छ्र	दाह, वेदना; पीला, कृष्ण, लाल (सरक्त) मूत्र।
३.	कफ कृच्छ्र	पिच्छिल मूत्र, गौरव, शोफ (बस्ति, मेण्ढ्र)।
४.	सन्निपातज	सर्व, कष्टसाध्य।
	अश्मरी	सभी का आश्रय– श्लेष्म। वायु → बस्ति मुख आवृत └ + P/K/ शुक्र → शोषण/शुष्क → अश्मरी **पूर्वरूप–** ज्वर, बस्ति आध्मान, मूत्रकृच्छ, बस्तगन्धि मूत्र। **सा० लक्षण–** अश्मरी मूत्रमार्ग के सामने (Above Urethra) आने पर मूत्र धारा में अवरोध, हट जाने पर स्वच्छ मूत्र; अश्मरी विक्षोभ से सरक्त मूत्र; दौड़ने, कूदने पर वेदनाएं।
५.	वातज	श्याव, परूष, विषम, कदम्ब पुष्पवत कंटकयुक्त। मलमूत्र त्याग के समय अति वेदना।
६.	पित्तज	लाल-पीली आभा, कृष्ण, भल्लातकास्थि वत। दाह।
७.	कफज	श्वेत, महती, कुक्कुटाण्डप्रतिम/मधुवर्णा। भेदन, तोद, गुरू, शीत बस्ति। V.P.K. प्राय: बालकों में, सुखपूर्वक निर्हरण।
८.	शुक्राश्मरी	मैथुन विघात → शुक्र विमार्गी + वायु → वृषण में रूद्ध ↓ शुक्रमार्ग आवृत ← शुक्राश्मरी ← (शुक्र) शुष्क └→ मूत्रकृच्छ, बस्ति वेदना, वृषण शोथ; उत्पन्न शुक्र बाहर नहीं निकल पाता।
	शर्करा	अश्मरी —वात→ टूटना → सिकता वत निकलना

९.	वात बस्ति	मूत्र वेगावरोध → वात ↑ → बस्तिमुख अवरूद्ध (I) वेदना, कण्डू। ↓ अति प्रकोप ↓ बस्ति स्थानच्युत (II) → गर्भवत उठी, बूँद-२ मूत्र। I. कृच्छसाध्य II. अतिकृच्छसाध्य।
१०	वाताष्ठीला	वात → ग्रन्थि – बस्ति व मल मार्ग के मध्यावकाश में (घन, उन्नत, रूज, स्थिर, अष्ठीलाभ) ↓ मल मूत्र सङ्ग, आध्मान।
११.	वात कुण्ड-लिका	बस्ति में वात कुण्डलीभूत (गोल चक्कर लगाना) → मूत्र विक्षोभ, शूल।
१२.	मूत्रातीत	अधिक समय तक मूत्र रोके रखने से → मूत्रत्याग के समय मूत्र न आना/कठिनता से कम आना।
१३.	मूत्र जठर	मूत्रावरोध → अपान ↑ → उदर अभिपूरण, मलावरोध, नाभि के नीचे तीव्र वेदना, आध्मान।
१४.	मूत्रोत्संग	मारूत अनाक्षिप्त (वायु मूत्र पूरा न निकाल सके)/छिद्र वैगुण्य → बस्ति/मूत्र नली/मणि में अल्पमूत्र संग। गुरू मेण्ढ्र; दर्द/बिना दर्द धीरे-२ स्रवण।
१५.	मूत्र ग्रन्थि	बस्ति द्वारेऽल्पो वृत्तः शीघ्रसम्भवोऽश्मरी तुल्य।
१६.	मूत्रशुक्र	मूत्रवेग उपस्थित होने पर भी मैथुन → V ↑ → शुक्रच्युत मूत्रत्याग के समय पहले या बाद में शुक्र आना, रंगभस्म घुले पानी जैसा।
१७.	विड्विघात	वायु से Compressed मल → मूत्र स्रोत। मलयुक्त व मल गंधी मूत्र।
१८.	उष्णवात	अतिअध्व/आतप/उष्ण भोजन → P ↑ $\xrightarrow{V}$ उष्णवात। बस्ति, मेढ्र, गुद, दाह; हरित, हारिद्र रक्त, सरक्त मूत्र कठिनता से आना।
१९.	मूत्रक्षय	V + P → बस्ति $\xrightarrow[\text{शूल, दाह}]{}$ मूत्र का क्षय। • Less Quantity
२०.	मूत्रावसाद	P $\xrightarrow{V}$ बस्ति में मूत्र को आक्रान्त → सदाह, सरक्त, पीत। K $\xrightarrow{V}$ बस्ति में मूत्र को आक्रान्त → श्वेत, घट्ट, कठिनता से। P + K $\xrightarrow{V}$ बस्ति में मूत्र को आक्रान्त → शुष्क शंख चूर्ण/गोरोचन चूर्ण वर्ण/सर्ववर्ण वत मूत्र।

१०. प्रमेह निदान

हेतु– श्लेष्म, मेद, मूत्र जनन आहार विहार।

सम्प्राप्ति–

K•↑ → मेद• → क्लेद आदि (मांस, शुक्र, रस)•
↓
R• ← P↑ ← श्लेष्म कम
↓
V•↑ ← P क्षय
↳ रस आदि (वसा, लसिका, मज्जा, ओज) शरीर की सारभूत धातुओं को बस्ति में लाकर मूत्र से निर्हरण।

[•–दूषण; ↑–प्रकोप]

अधिष्ठान होने से सर्व प्रथम कफ प्रकोप।

कफज प्रमेह– (१०) – V, P, मेद, क्लेद, मांस, शुक्र, रस
+
बस्तिगत K → कफज प्रमेह

पित्तज प्रमेह– (६) – उपरोक्त V........ रस + K + R
+ P
↳ पित्तज प्रमेह

वातज प्रमेह– (४) – पित्तजोक्त (V.......R), वसा, लसिका, मज्जा, ओज
+
V→ वातज प्रमेह

[दोष–३– V, P, K, ।
दूष्य–१०– मेद, रक्त, शुक्र, जल, वसा, लसिका, मज्जा, रस, ओज, मांस।]

- (प्रमेह में दोष व दूष्य समान होते हैं) परन्तु संयोग में उत्कर्ष/अपकर्षानुसार विशेष वर्ण, रस, स्पर्श, गन्ध व प्रमेह भेद (२०) होते हैं ।९।
- धातु संपर्क (रस आदि) से सभी प्रमेहों में मूत्र आविल (गंदला) व अतिमात्रा में होता है ।८।

साध्यासाध्यता–

कफज – साध्य
पित्तज – याप्य – मिश्र दोष – विरूद्ध चि० (K&P); मेदोगत दोष। (मेद अति-दुष्ट न हो तो साध्य)।
वातज – असाध्य – क्षीण धातु; महात्ययिक (मज्जा आदि महान धातु में स्थित); विरूद्धोपक्रम।

पूर्वरूप– नखों की अतिवृद्धि, केशों में जटिलीभाव, आस्य माधुर्य, तालु कण्ठशोष, पिपासा, शीतेच्छा, अङ्गों में स्नेह, स्वेद, सुप्तता (झनझनाहट); तन्द्रा, पाणि पाद दाह, मूत्र व शरीर में विस्रगंध, शुक्लमूत्र।

भेद व लक्षण– २०

A.	**कफज**	
१.	उदकमेह	शीत, श्वेत, गन्धरहित, जल वत।
२.	इक्षु मेह	अतिमधुर, थोड़ा पिच्छिल
३.	सान्द्र	रात भर रखने से घन (सान्द्र– Concentrated)
४.	सुरा	रखने पर ऊपर स्वच्छ, नीचे घन
५.	पिष्ट	हृष्टरोमा, पिष्टवत सान्द्र
६.	शुक्र	शुक्र वत/मिश्र
७.	सिकता	सरूज, ससिकता
८.	शीत	मधुर, अतिशीत
९.	शनैर्मेह	मन्दं शनैः शनैः।
१०.	लाला	पिच्छिल, तन्तुबद्धमिव, लार वत।
B.	**पित्तज**	
१.	क्षारमेह	क्षार जैसा– वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श।
२.	काल मेह	उष्ण, मषी (Black Ink) जैसा।
३.	नील	सफेन, अच्छ, अम्ल, चाषपत्र (पंख) नील।
४.	हारिद्र	कटु, सदाह, हल्दीयुक्त जलवत।
५.	माञ्जिष्ठ	आम गंधी, मञ्जीठ मिले पानी जैसा।
६.	शोणितमेह	विस्र, उष्ण, लवण, शोणिताभ।
C.	**वातज**	
१.	वसा मेह	वसा मिश्र
२.	मज्जा	मज्जा युक्त
३.	हस्ति	लसिका युक्त, मधुर, मंद वेग मत्त हाथी इव।
४.	मधुमेह	ओज → रूक्ष → + वात (स्निग्ध, मधुर) ↑ (कषाय) (i) धातु क्षय → वात प्रकोप } → आहार प्रसाद (ii) दोषों से मार्ग अवरूद्ध → वात ↑ } भाग (Glucose) ↓ V बस्ति

		(ii) में मुहुर्मुहु वृद्धि-क्षय लिङ्ग- कृच्छसाध्य (Hypo & Hyperglycaemia) मूत्र- कषाय, मधुर। देह (रस=रक्त)- मधुर (Blood Sugar Level Increased) सभी प्रमेह- उपेक्षा- धातुक्षय → मधुमेह।

प्रमेह उपद्रव–

कफज– प्रतिश्याय, प्रसेक, छर्दि, निद्रा आदि।

पित्तज– वृषण अवदरण, तोद, अम्लिका, अतिसार, ज्वर, दाह, पाण्डु।

वातज– हृद्ग्रह, अनिद्रा, बद्धपुरीष, शोष, श्वास आदि।

प्रमेह पिटिका– १०

प्रमेही में मेद क्लेद आदि अभिष्यन्न → दोष → धातु दूषण → प्रमेह वृद्धि + प्रमेह पिटिका।

पिटिका स्थान– मांसल, अवकाश, सन्धि मर्म।

प्रमेही में दोष नीचे की ओर जाने से प्राय: अध: काय में। (बिना प्रमेह के मेद दूषण से भी उत्पत्ति ॥२४॥)

	पिटिका	**लक्षण**	**साध्यासाध्य**
१.	शराविका	श्याव, क्लेद, वेदना, निम्नमध्य उन्नत ओष्ठ	दु:साध्य, कफ मेदोत्पन्न, अति-बल, मूलव्याधि से एकरूप, वृद्धि।
२.	कच्छपिका	महामूला, अवगाढ़, तोद, श्लक्ष्ण, कच्छप पृष्ठनिभ	
३.	जालिनी	महाशया, अतितोद, सूक्ष्मछिद्रा, मांस सिरा जाल	
४.	पुत्रिणी	एक बड़ी पिटिका चारों ओर से छोटी पिटिकाएं	
५.	विदारिका	कठिन, विदारी कन्द वत वृत्त।	
६.	सर्षपिका	शीघ्रपाकी, अतिवेदना, सरसों वत पिटिकाएं	सुखसाध्य, पित्तोल्वण; अल्प कफ, मेद।
७.	मसूरिका	मसूराकार प्रमाणा	
८.	अलजी	त्वक् दाह, स्फोटों से घिरी, विसर्पी, ज्वर।	
९.	विनता	नीली, गम्भीर, रूक्, क्लेद; पीठ/उदर में।	
१०.	विद्रधि	अग्र अध्याय।	

पिटिकाएं तब तक नहीं प्रतीत होतीं, जब तक ये वास्तु (व्रण वस्तु- त्वक्, रक्त, मांस, मेद आदि) परिग्रह (आक्रान्त) नहीं कर लेती (इसीलिए पूर्वरूप नहीं होते।) ।

प्रमेह व रक्तपित्त में विभेद– प्रमेह के पूर्वरूपों के बिना हारिद्र/रक्तवर्ण मूत्र प्रमेह नहीं वरन् रक्तपित्त होता है।

मधुर, पिच्छिल, मधुवत मूत्र <
- सम्पूरणात् – संतर्पण जन्य – कफज?
- धातु क्षीणात् – वात प्रकोपजन्य?

- पूर्वरूपों के साथ क्रम से K → P → V – असाध्य।
- पित्तज– याप्य परन्तु मेद अतिदुष्ट न होने पर साध्य।

११. विद्रधि वृद्धि गुल्म निदान

विद्रधि–

- रक्त दुष्टि से उत्पन्न शोथ।
- आश्रय– त्वक्, मांस, मेद, अस्थि, स्नायु, रक्त, कण्डरा।
- महामूल, अतिवेदना, वृत्त/आयत।

भेद–

बाह्य / अन्तः > विद्रधि – ६ – V, P, K, S, R, क्षतज।

हेतु– पयुर्षित, अत्युष्ण, रूक्ष, शुष्क, विदाही आहार, आदि।

बाह्य विद्रधि– दारूण, ग्रथित, उन्नत।

अन्तर्विद्रधि– अतिदारूण, गम्भीर, गुल्मवतघन, शीघ्रघाती। फटने पर स्राव मुख से निकलने पर असाध्य।

स्थान– १०

नाभि, बस्ति, यकृत, प्लीहा, क्लोम, हृदय, कुक्षि, वंक्षण (२), वृक्क (२), अपान देश।

लक्षण- (बाह्य व आभ्यन्तर के)–

१. **वातज–** तीव्ररूक्, श्याव-अरूण, देर में उत्पन्न देर में पांक, शब्द।

२. **पित्तज–** रक्त ताम्र असित (काली); ज्वर, शीघ्र उत्थान व पाक।

३. **कफज–** पाण्डु; कण्डू, शीत, उत्क्लेश, चिरोत्थान विदाह।

४. **सन्निपातज–** सर्व

५. **रक्तविद्रधि–** पुरूष - बाह्य; स्त्री- अन्तर्विद्रधि।

कृष्णस्फोटावृतः श्याव स्तीव्रदाहरूजा ज्वरः ।
पित्तलिङ्गोऽसृजा बाह्यः स्त्रीणामेव तथाऽन्तरः ।।१२।।

६. क्षत विद्रधि–

V↑ → व्रण ऊष्मा विक्षेप → R↑.P↑

पित्तज व रक्तज के लक्षण।

उपद्रव (अधिष्ठान भेद से)–

नाभि	–	हिक्का
बस्ति	–	मूत्र कृच्छ पूति
यकृत	–	श्वासावरोध
प्लीहा	–	उच्छ्वास (Exp) अवरोध
क्लोम	–	तृट्, गलग्रह
हृदय	–	सर्वाङ्गग्रह (निश्चेष्ट), मूर्च्छा, तमक श्वास कास, हृद्पीड़ा।
कुक्षि-पार्श्वान्तर	–	कुक्षि आटोप
वंक्षण	–	सक्थि ग्रह
वृक्क	–	कटि पृष्ठ पार्श्व पीड़ा
गुदा	–	वायु अवरोध।

नाभि के ऊपर की विद्रधि पककर मुख से दोष प्रस्रण।

नाभि के नीचे की विद्रधि पककर गुदा से दोष प्रस्रण।

नाभि की विद्रधि पककर उभयमार्ग दोष प्रस्रण।

असाध्यता–
- सन्निपातज।
- हृदय, नाभि, बस्ति की फूटने पर (अंदर/बाहर)।
- अन्त:स्राव मुख से निकलने पर।

स्तन विद्रधि–
- कन्या में नहीं– नाड़ी मुख सूक्ष्म होने से।
- प्रसूता, गर्भिणी– घन शोथ, बाह्य वि० लक्षण।

वृद्धि–

रूद्ध गति वात → कोप ┐
वंक्षण → मुष्क → फलकोश वाही
धमनी पीडन → कोश वृद्धि (Scrotal Enlargement)
(शोफ, शूल)

भेद-७ – V, P, K, R, मेद; मूत्र, आंत्र वृद्धि।
(मूत्र, आंत्र — वातज)

१. **वातज–** वातपूर्ण दृति (मशक) वत स्पर्श, रूक्ष, रूक्।

२. **पित्तज–** पक्व उदुम्बर (गूलर) आभा, दाह, ऊष्मा, पाक।

३. **कफज–** शीत, गुरू स्निग्ध, कण्डू, कठिन (Hard), अल्परूक्।
४. **रक्तज–** कृष्ण स्फोटावृत, पित्तज लक्षण।
५. **मेदज–** मृदु, ताल फलोपम (ताल मखाना), कफज लक्षण।
६. **मूत्रजन्य वृद्धि (Hydrococle)–** मूत्र धारण शील में, जल पूर्ण दृति वत, मृदु, चलने पर हिलना, दर्द, मूत्रकृच्छ, फलकोश के नीचे वलय (Ring of veins below Scrotum)
७. **आन्त्रवृद्धि (Ing. Hernia)–** वात प्रकोपक आहार, ठंडे जल में अवगाहन, वेग धारण, भार, अध्व, विषम अङ्ग प्रवर्तन → वात क्षोभ → क्षुन्द्रान्त्र अवयव, स्वाभाविक स्थान से नीचे वंक्षण सन्धि में लाकर (up to Scrotum) ग्रन्थि वत शोथ → मुष्क वृद्धि
   - हाथ से दबाने पर सशब्द ऊपर जाना, छोड़ने पर पुनः सआध्मान नीचे आना।

असाध्यत्व– आंत्रवृद्धि → उपेक्षा → निष्चेष्ट → आध्मान, वेदना, स्तम्भ, वातज ल०, रूक्ष; कृष्ण, अरूण, सिरा तन्तु जाल।

गुल्म-८ – V, P, K, द्विदोषज-३, S, आर्तवजन्य (स्त्री)
- वात ग्रन्थिभूत (अमूर्त → मूर्त)

पर्याय-शूल– शूल भेदन वत वेदना, कृच्छ उच्छ्वास।

हेतु– कृश का वातल आहार, भूखे में शीत जल, भोजनोपरांत मैथुन, कूदना, आदि।

सम्प्राप्ति–
- वात प्रधान दोष पृथक्-२/द्वन्दज/सन्निपातज/रक्त प्रकोप के साथ → महास्रोत (G.I.T.) → ऊर्ध्व अधोग मार्ग → I. शूल, II. गुल्म।
- अतिकर्शन (धातुक्षय)
K व P द्वारा V का मार्गावरोध } → V आश्रय (रूकना) → ऊर्ध्व
↓ रौक्ष्य
स्पर्शोपलभ्य (गुल्म) ← स्वतंत्र/परतंत्रतः ← स्व/P/K स्थाने ← कठोर

गुल्म स्थान-५ – बस्ति, नाभि, दोनों पार्श्व, हृदय।

पूर्वरूप– अग्निमान्द्य, उद्गार, मलबन्ध, आन्त्रकूजन, अधिक खा लेने पर दर्द (तृप्ति में अक्षम), आध्मान, सम्यक् पाचन न होना।

१. वात– प्रायः बस्ति आश्रित; सूची भेदन वत पीड़ा, प्लीहा वृद्धि, शिरःशूल, उदावर्त, उच्छ्वासावरोध, वायु के स्वाभाविक प्रकोप समय में वृद्धि; स्थान, आकार, उत्पत्ति, नाश अनिश्चित।
२. पित्त– दाह, ज्वर, ऊष्म, स्पर्शासहत्व; प्रायः नाभि।
३. कफज– प्रायः हृदय व पार्श्व स्थित; स्थिर, कठिन, अल्प रूक्, गम्भीर, शीत ज्वर, कास आदि।

४-६. द्विदोषज } – मिश्र
७. सन्निपातज .... असाध्य।
८. रक्तगुल्म– ऋतुमती, सद्य: प्रसूता, योनि रोग $\xrightarrow[\text{आहार विहार}]{\text{वातल}}$ → V↑ → योनि मुख में प्रविष्ट → आर्तव अवरूद्ध → पिण्डी भूत हो कुक्षि में वृद्धि। → वात-पित्तज गुल्म लक्षण।

- गर्भावस्था में गर्भ व आशय दोनों बढ़ते हैं जबकि रक्त गुल्म में केवल आर्तव पिण्ड (गुल्म) ही बढ़ता है। दर्द के साथ देर में स्पन्दन। (गर्भ अपने अंग हिलाता है इसमें ऐसा नहीं होता)।

लक्षण– I. शूल II. निश्चेष्ट III. दाह IV. अतिसार।
गर्भाशय में निरंतर शूल; योनि से दुर्गंधित स्राव।

गुल्म	विद्रधि
स्वदोष अधिष्ठान से सभी गुल्म होने से चिरपाक/अपाकी	दूषित रक्त प्राधान्य शीघ्रपाकी।

परिभाषा–

- आनाह– आटोप (नाभि के अध: भाग में वात की मंद गति); अतिरूज, ऊर्ध्व, अधो मार्ग अवरोध से उत्पन्न उदर का अति आध्मान।
- अष्ठीला– घन, अश्मवत, ऊर्ध्व स्थित उन्नत ग्रन्थि + आध्मान लक्षंण।
- प्रत्यष्ठीला– अष्ठीला वत तिर्यक् स्थित।
- तूनी– पक्वाशय $\xrightarrow[\text{तीव्ररूज}]{\text{वायु}}$ गुदा, उपस्थ।
- प्रतूनी– तूनी विपर्यय।

१२. उदर निदान

निदान व सम्प्राप्ति–
मन्दाग्नि, अजीर्ण, मलिन अन्न → मल सञ्चय → जलवाही स्रोतों के ऊर्ध्व व अध: मार्ग अवरूद्ध → प्राण अग्नि अपान दूषण → त्वक् मांस सन्धि में दोष आश्रित (अधिष्ठान) → कुक्षि आध्मान → उदर रोग

भेद-८ – V, P, K, S, प्लीहाजन्य, बद्धोदर, क्षतोदर, उदकोदर।

पूर्वरूप– क्षुधानाश, बलह्रास; अल्प चेष्टा में श्वास, किञ्चित् पाद शोथ, उदर में राजि उत्पन्न, वलि नाश।

सा० लक्षण– तन्द्रा, सदन, मलसङ्ग, अल्पाग्नि, दाह, शोथ, आध्मान, अन्त में (अचिकित्स्य) जल उत्पन्न।

अचिकित्स्य → दोष पक्व, स्वस्थानच्युत → सन्धि स्रोत

बाह्य स्रोतों का स्वेद --मुख का द्रवण--→ तिर्यक् प्रवृत्त → उदर में जल लाना

(I)↓

(II) अतिकुक्षिवृद्धि ← उदक जन्म ← पिच्छा उत्पन्न

वि० लक्षण–

१. **वातोदर–** पतली काली सिराएं, आध्मान, तोद, मलावरोध; आहत → वातदृति वत् शब्द (Purcussion) ।

२. **पित्तोदर–** ज्वर, मुख-कटु; त्वक्-पीत; उदर पर हरी पीली ताम्र सिराएं; अतिसार, उष्ण।

३. **कफोदर–** संज्ञानाश, श्वास कास, शुक्लगात, उदर स्तिमित, श्वेत राजि, कठिन, शीत।

४. **सन्निपातोदर–**

हेतु– त्रिदोष कोपक्र, स्त्रीदत्त रज मल; गर, दूषीविष → रक्त + त्रिदोष → कोष्ठाश्रित – शोफ, मूर्च्छा, भ्रम + सर्व लक्षण। शीघ्र पाक, दारूण; मेघ व शीत वात से वृद्धि।

५. **प्लीहोदर–**
- अति भोजनोपरांत देह संक्षोभ
- रसादि से विवृद्ध रक्त

} प्लीहावृद्धि

अष्ठीला (लुहार जिस पर रख कर लोहा कूटता है) वत, कठिन, कूर्म पृष्ठवत उन्नत, क्रमशः उदर में बढ़ना → उदर रोग।

पाण्डु, वमन, मूर्च्छा, श्वास, मुख वैरस्य, आध्मान, ज्वर रूक्, नीली-पीली रेखाएं।

भेद- ३–

- वातज– उदावर्त रूक आनाह
- पित्तज– मूर्च्छा, तृट्, दाह, ज्वर
- कफज– गौरव, अरूचि, काठिन्य।

यकृतोदर– प्लीहोदरवत, दक्षिण पार्श्व में।

६. **बद्धोदर–** केशयुक्त अन्न, अर्श, उदावर्त, आंत्र उपलेपी अन्न → बद्धगुद → अपान ↑ → मल, P, K रूद्ध।

लक्षण– मूढवात, मल अवरोध, नीली, लाल सिराएं, नाभि के ऊपर प्रायः गोपुच्छाकृति, दाह, ज्वर, तृट्, वमन; शिर, हृद, नाभि, गुद रूक्।

७. **छिद्रोदर–** सशल्य, अतिअशन → आंत्र भेद (Perforation) या पच्य →
शवगन्धी पिच्छिल पीला-लाल द्रव
→ गुदा से आना
→ जठर (Abd. Cavity) में आना
शीघ्र जलात्मक ← उदर नाभि के नीचे बढ़ना ←

ल०– बढ़े दोष रूप; श्वास तृट् भ्रम।
(चरक– छिद्रोदर; सुश्रुत– परिस्रावी उदर)

८. **दकोदर–**
मन्दाग्नि, अतिकृश में सहसा आम जल पीने से →
जल + K + V → जलवह स्रोत रूद्ध
↓
उदर आश्रित → इसी जल को उदक स्थान (क्लोम) से बढ़ाना
↓
उदर रोग।

- तृट्, गुदस्राव, पीड़ा, कास, श्वास, अरूचि।
- नाना वर्ण सिराएं; तोय पूर्ण दृति-स्पर्श, शब्द, क्षोभ, कंप;
- उदर - महत् , स्निग्ध, स्थिर, आवृतनाभि (Everted Umbilicus) ।

सा० लक्षणोक्त (I)– उदर वृत्त, चोट करने पर शब्द न होना (On Purcussion), मृदु, राजि नष्ट, नाभि दबाने पर फैलना; अधिक जल बढ़ने पर सिराएं अन्तर्ध्यान।

कृच्छ साध्यता– V, P, K, प्लीहा, S, दकोदर
→ → → →

- बद्ध व छिद्रोदर १ पक्ष बाद मृत्यकर।
- उदक उत्पन्न न होने, रोग नया होने पर यत्नसाध्य।

१३. पाण्डु रोग कामला शोफ विसर्प निदान

पाण्डु रोग–

निदान– पित्त प्रकोपक

सम्प्राप्ति– पित्त प्रधान कुपित मल $\xrightarrow{V}$ हृदय पित्त विक्षिप्त
↓
सकल वपु व्याप्त P. ← १० धमनी
↓
त्वक् रक्त मांस दूषण → त्वचा व मांस के अन्तराल में आश्रित
↓
पाण्डु, हारिद्र, हरित वर्ण
(इनमें पाण्डु की प्रधानता होने से– पाण्डु)

लक्षण–

पाण्डु < धातु शैथिल्य
पाण्डु < ओज गुण क्षय → रक्त, मेद अल्प।

अग्निमांद्य, ज्वर, श्वास, कर्णक्ष्वेड़, अक्षिकूट शोथ, शिशिर द्वेषी, शीर्णरोमा।

पूर्वरूप– हृद्स्पन्दन (Palpitation), त्वक् रूक्ष, अरूचि, पीत मूत्र, स्वेदाभाव, अग्निमांद्य, साद।

भेद-५ – V, P, K, S, मृतिका भक्षण जन्य।

१. **वातज–** सिरा नख मल मूत्र नेत्र- कृष्ण रूक्ष **अरूण**, देह शोफ मुख विरस, मल-शुष्क।

२. **पित्तज–** सिरा आदि हरित **पीताभ**, ज्वर, मुख कटु, वर्च भेद (Loose Motion), अम्लोदगार, दाह।

३. **कफज–** सिरा आदि **श्वेत**, मुख लवण, कास, वमन।

४. **सन्निपातज–** मिश्र – अतिकष्टसाध्य।

५. **मृतिका भक्षण जन्य–**

कषाय मिट्टी खाने से वायु ↑
ऊसर मिट्टी खाने से पित्त ↑ } → रस आदि दूषण → पाण्डु
मधुर मिट्टी खाने से कफ ↑

आहार —(मृद् रौक्ष्य)→ रूक्ष (अन्न) → स्रोतावरोध → पाण्डु

- नाभि, पैर, मुख, जननेन्द्रिय पर शोथ,
- पुरीष - कृमियुक्त, भिन्न (Loose), रक्त व कफयुक्त।

कामला– जो पाण्डु रोगी पित्तल (आहार) सेवन करता है, उसके कोष्ठ (G.I.T.), शाखा (धातुएं, त्वक्) में आश्रित पित्त, रक्त और मांस को दग्धकर 'कामला' उत्पन्न करता है ॥१७॥

पाण्डु रोग के बिना भी पित्त प्रधान में यह हो जाता है।

लक्षण– नेत्र मूत्र त्वक्, नख, वक्र, शकृत – हारिद्र; दाह, विपाक, तृष्णा, भेक वत आभा (Frog), दुर्बलेन्द्रिय।

कुम्भ कामला– कामला + शोफाधिक्य

हलीमक/अलस/लोढर– पाण्डु + V, P → हरित श्याव पीतत्व, भ्रम, तृष्णा, स्त्री अहर्ष, मृदुज्वर।

उपद्रव– शोफ प्रधान।

शोफ– त्रिदोषज।

दूषित P, K $\xrightarrow{\text{दुष्ट V}}$ बाह्य सिरा → रूद्धगति → त्वक् मांस संश्रय → उठा घन शोफ (उत्सेधं संहतं शोफं)

भेद-९ – V, P, K, द्वन्दज-३, S, अभिघातज, विषजन्य।

- २ – निज, आगन्तुज
- २ – सर्वांगशोथ, एकांगशोथ
- ३ – पृथु, उन्नत, ग्रथित

हेतु– सामान्य– सर्व रोग निदानोक्त

विशेष– ज्वर, पंचकर्म आदि से क्षीण पुरूष का/स्वस्थ का अतिमात्रा में – गुरू अम्ल स्निग्ध शीत लवण क्षार तीक्ष्ण उष्ण शाक, जल, मिट्टी, ग्राम्य मांस आदि सेवन।

रोगों की विरूद्ध चिकित्सा होने पर– दोष
- वक्षस्थित – ऊपर शोथ
- बस्तिस्थित – नीचे शोथ
- मध्यस्थित – मध्य शोथ

पूर्वरूप– दवथु (दाह), सिरायाम (Dilatation of veins), अंग गौरव।

लक्षण–

वातज– तोद, संज्ञानाश, तनु, दबाने पर शीघ्र उठना, स्निग्ध, उष्ण, रात्रि में घटना दिन में बढ़ना; त्वक् सर्षप लिप्त जैसी।

पित्तज– रोम-ताम्र, शोथ प्रथम मध्य में फिर चारों ओर फैलना, मृदु, तनु, ज्वर, दाह, मलभेद, शीतेच्छा, स्पर्शासहत्व।

कफज– कण्डू, पाण्डु, कठोर, शीत, श्लक्ष्ण, स्थिर, दबाने पर काफी देर में उठना, रात्रि में बढ़ना, उष्ण स्पर्शेच्छा।

द्वन्दज
सन्निपातज } मिश्र

अभिघातज– शस्त्र, हिमवात, भिलावा, कौंच, समुद्रीवात से। अतिउष्ण, लोहिताभास, पित्तलक्षण।

विषजन्य– सविष प्राणी परिसर्पण, मूत्र, काटना, दंत, नख, मल, मूत्र, गंदा वस्त्र; विषवृक्ष वात स्पर्श, गर योग अवचूर्णन → शोथ।

मृदु, चल, अवलम्बी, शीघ्र दाह, रूजा।

साध्यता– नूतन, अनुपद्रवी।

विसर्प–

अधिष्ठान-३ → अन्त: स्थित → अन्त: विसर्प

प्रकुपित दोष —विदाही अन्नादि→ अतिप्रकोप < बहि: स्थित → बहि: विसर्प

उभय स्थित → उभय विसर्प

अन्तः विसर्प– मर्म उपताप, संमोह, अतितृष्णा, विषम वेग प्रवर्तन, शीघ्र अग्नि बल नाश।

बाह्य विसर्प– विपरीत।

भेद-८ – V, P, K, द्वन्दज, S, अभिघात।

१. **वातज–** वात ज्वर सम व्यथा, निस्तोद, आयास, स्फुरण।

२. **पित्तज–** द्रुत सर्पण, अति लोहित, पित्त ज्वरवत।

३. **कफज–** कण्डू, स्निग्ध, कफज्वरवत।

सर्व विसर्प —अचिकित्स्य→ स्फोट-पकना, फूटना।

४. **अग्नि विसर्प (V-P)–** ज्वर, वमन, मूर्च्छा, अतिसार, तृट्, भ्रम, अस्थि भेद; विसर्प स्थान काला/नीला/लाल → स्फोट (अग्निदग्धवत); संज्ञानाश, निद्रा नष्ट, श्वास हिक्का।

५. **ग्रन्थि विसर्प (K-V)–**

कफ रूद्ध वात → कफ भेदन → रक्त दूषण → त्वक्, सिरा, स्नायु, मांस में सूक्ष्म, वृत्त, खर, रक्त ग्रन्थि माला। तीव्र रूक्, ज्वर, अतिसार, वमन, मोह।

६. **कर्दम विसर्प (K-P)–** आम मिश्रित मल, स्रोतोपलेप, आमाशय का एक देश से ग्रहण, नातिरूक्; पीली लाल पाण्डु पिडिकाएं, मेचकाभ (मोर ग्रीवा रंग), छूने पर फटना; पङ्कवत शीर्ण मांस, स्नायु, सिरा स्पष्ट; शवगन्धि।

७. **सन्निपातज–** सर्व

८. **अभिघातज–** क्षत → V↑ —P + R→ विसर्प

कुलत्थी वत स्फोट, स्थान-काला-लाल; शोफ, ज्वर, पीड़ा।

साध्य-३ – प्रथक् दोष; उपद्रव रहित, द्वन्दज।

असाध्य– अभिघात, सन्निपातज। स्नायु सिरा मांस शीर्ण, क्लिन्न, शवगंधी।

१४. कुष्ठ कृमि निदान

निदान– मिथ्या आहार (विरूद्ध), विहार; साधु निन्दा, वध, इह/पूर्व जन्मकृत पाप कर्म → दोष प्रेरण।

सम्प्राप्ति–

दूषित मल → तिर्यग्सिरा → त्वक्, लसिका, रक्त, मांस (दूषित, शिथिल)

अन्तः प्रसार ↙ ↘ बाह्य प्रसार

↓ अन्तः प्रसार → सर्व धातु क्लिन्न → सूक्ष्म दारूण कृमि उत्पन्न (↑ स्वेद, कोथ)

↓ बाह्य प्रसार → त्वक् वैवर्ण्य ...... कुष्ठ → (उपेक्षा से कालान्तर में) → कृष्णाति वपुः (देह कुत्सित) → स्वेद, कोथ

↓ क्रमशः लोम, त्वक् स्नायु धमनी तरूणास्थि भक्षण

[चरकोक्त दूष्य क्रम– त्वक् मांस शोणित लसिका]

भेद– सभी त्रिदोषज होते हुए भी व्यपदेशानुसार-७-सप्तधा–

१. वातोल्वण	कपाल
२. पित्तोल्वण	औदुम्बर
३. कफोल्वण	मण्डल, विचर्ची
४. V-P	ऋक्ष
५. V-K	चर्म, एक, किटिभ, सिध्म, अलस, विपादिका
६. K-P	द्रदु, शतारूषी, पुण्डरीक, विस्फोट, पामा, चर्मदल
७. सर्वसाम्य (V.P.K.)	काकण

महाकुष्ठ-७ – कपाल, औदुम्बर, मण्डल, दद्रु, काकण, पुण्डरीक, ऋष्यजिह्व।

पूर्वरूप– त्वक् अतिश्लक्ष्ण/खर; अति/अस्वेद; सुन्नता, कोठ, तोद; व्रण– शीघ्रोत्पन्न, अतिरूक्, चिर, रूक्ष; रक्त में कृष्णता।

लक्षण–

१. **कपाल कुष्ठ–** कृष्ण अरूण कपालाभ, रूक्ष, सुप्त, किनारे असम, तोद, रोमयुक्त (हर्षित); अल्पकण्डू, शीघ्रसर्पि।
२. **औदुम्बर–** पक्व उदुम्बर वत ताम्र– त्वक्, रोम; श्वेत सिराएं, शीघ्र अवदरण, कृमि।
३. **मण्डल–** श्वेत/लाल मण्डल, किनारे पीले; परस्पर मिले, अतिकण्डू, स्राव, कृमि।
४. **विचर्चिका–** 'सकण्डू पिटिका श्यावा लसीकाढ्या विचर्चिका'।
५. **ऋष्यजिह्व–** उन्नत, तोद, दाह, क्लेद, बहुकृमि।

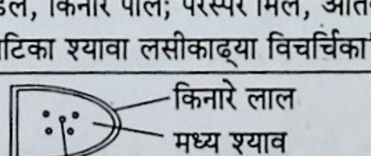

ऋष्य जिह्वाकार।

६. **चर्मकुष्ठ–** हस्ति चर्म वत, खर स्पर्श।

७. **एककुष्ठ–** महान आश्रय, अस्वेद, मत्स्य शकिल सन्निभ। (Psoriasis)

८. **किटिभ–** रूक्ष किण (किनकी/रवा), खर स्पर्श, कण्डू, काला।

९. **सिध्म–** बहि: रूक्ष; अन्त: स्निग्ध; रगड़ने से रज गिरना, श्लक्ष्ण स्पर्श, श्वेत ताम्र, दौग्धिकपुष्प (लौकी)वत, प्राय: ऊर्ध्व काय में।

१०. **अलसक–** रक्त, कण्डू, गण्ड (Mass) ।

११. **विपादिका–** पाणि पाद दारण, तीव्र अर्ति, मन्द कण्डू, लालिमा युक्त पिटिकायुक्त।

१२. **दद्रु (Ring Worm)–**

दीर्घ प्रताना दूर्वावदतसीकुसुमच्छविः ।
उत्सन्न मण्डला दद्रूः कण्डूमत्यनुषङ्गिणी ।।२६।।

१३. **शतारू–**

प्राय: पूर्व जन्म कर्म से। स्थूल मूल, दाह-पीड़ा लाल कृष्ण वर्ण, बहुत से व्रण, क्लेद, जन्तुयुक्त।

१४. **पुण्डरीक–** किनारे लाल, मध्य पाण्डु; उन्नत, पद्मपत्र वत सूक्ष्म लाल रेखाएं; अति व घट्ट लसिका, रक्त युक्त, शीघ्र भेदन।

१५. **विस्फोट–** श्वेत अरूण तनुत्वक् स्फोट युक्त।

१६. **पामा (Scabies)–** कण्डू, क्लेद, रूजा युक्त, सूक्ष्म, श्याव अरूण पिटिकाएं; प्राय: स्फिक् पाणि कूर्पर।

१७. **चर्मदल–** सस्फोट, अस्पर्शसह, कण्डू, तोद, दाहवत, रक्त फटने वाला।

१८. **काकण–** तीव्र दाह रूक्; I. लाल, II. कृष्ण, III. अनेक वर्ण। सम्पूर्ण कुष्ठ लक्षण युक्त।

धातुगत कुष्ठ लक्षण–

त्वक् (रस)– तोद, वैवर्ण्य, रूक्षता।

रक्त– उपरोक्त; अति/अस्वेद, स्वाप, श्वयथु।

मांस– do- ; पाणि पादाश्रित स्फोट, सन्धियों में क्लेद।

मेद– do- ; कौण्य (हाथ टेढ़ा), गतिक्षय, अंग फटना।

अस्थि-मज्जा– do- ; नासाभङ्ग, नेत्रराग, स्वरक्षय, क्षत में कृमि।

शुक्र– उपरोक्त सभी; पत्नी व संतान में संक्रमण।

साध्यासाध्य–

असाध्य– सन्निपातज; रिष्टोक्त; अस्थि मज्जा शुक्राश्रित।

याप्य– मेदोगत।

कृच्छसाध्य– रक्त, मांसगत, पित्तद्वन्दज (V-P, P-K) ।

सुख साध्य– त्वक् स्थित, एक दोषज; कफ वाताधिक्य।

श्वित्र– पर्याय– किलास, अरूण।
हेतु– कुष्ठवत। त्रिदोषज।
आश्रय– ३ धातु (रक्त, मांस, मेद)

		आश्रय	वर्ण	लक्षण
वातज	वृद्धि ↓	रक्त	अरूण	रूक्ष
पित्तज		मांस	ताम्र	कमल पत्राभ, दाह, रोमनाश
कफज		मेद	श्वेत	कण्डू, घन, गुरू

साध्यासाध्य– नया, साध्य।

असाध्य– रोम श्वेत, घन, परस्पर मिला, अग्नि दग्ध; गुह्य, पाणितल, ओष्ठ नये होने पर भी त्याज्य।

स्पर्श, एक आहार, शय्या आदि सेवन से नेत्र, त्वक्, आदि सञ्चारी रोग सभी में होते हैं ।।४४।।

कृमि– कुल संख्या (नामानुसार)– २०

२ भेद–
- (A) बाह्य– १. बर्हिमल-स्वेद आदि-२ – (i) यूका (जूँ)
  (ii) लिक्षा (लीख)
  प्रमाण, वर्ण, रूप-तिलवत।
- (B) आभ्यन्तर–
  - २. कफज-७ – आमाशयोत्पन्न; श्वेत, ताम्र; धान्यांकुरवत।
    अन्त्रादा उदरावेष्टा हृदयादा महाकुहाः ।।५१।।
    कुरवो दर्भ कुसुमाः सुगन्धास्ते च कुर्वते ।
    निदान– मधुर, नव अन्न।
    ल०– हल्लास, अरूचि, मूर्च्छा, वमन, ज्वर, आनाह, कृशता, छींक, पीनस।
  - ३. रक्तज-६– रक्तवाहि सिरोत्पन्न।
    केशाद, लोभ विध्वंसा, लोमद्वीपा, उदुम्बर, सौरस, मातर।
    सूक्ष्म, वृत्त, ताम्रवर्णा।
    कार्य– कुष्ठवत।
  - ४. पुरीषज-५– पक्वाशयोत्पन्न, अधोसर्पण,
    - पृथु, वृत्त, तनु, स्थूलाः श्याव पीत सितासिताः ।
    - ककेरूक, मकेरूक, सौसुराद, सलून, लेलिह।

कर्म– मलभेद, शूल, पाण्डु, अग्निमांद्य, गुदकण्डू।
हेतु– मलवर्धक आहार (यव, माष), पर्णशाक (पालक...) उलक (चना आदि पौधे सहित भूनकर खाना)।

१५. वात व्याधि निदान

वात– पर्याय– स विश्वकर्मा विश्वात्मा विश्वरूपः प्रजापतिः।
स्रष्टा धाता विभुर्विष्णुः संहर्ता मृत्युरन्तकः।।४।।

कर्म– प्राकृत व वैकृत– दोषादि विज्ञानीय अ०।

भेद– दोषभेदीय अ०।

वैकृत कर्म/विकार– ∞; ८०

सामान्य सम्प्राप्ति–

धातुक्षय कर आहार विहार अति सेवन → V कोप

↓ रिक्त स्रोतों में गति व पूरण

↓ अन्य दोष पूर्ण स्रोत → वात का दोष से आवरण

↓ वात बली

आमाशय	तृट्, वमन, श्वास, कास, विसूचिका, नाभि से ऊपर के रोग।
श्रोत्रादि	इन्द्रिय नाश
त्वक्	स्फुटन, रूक्ष
रक्त	तीव्र रूज, स्वाप, ताप, राग, अरूंषिका, कार्श्य, भ्रम
मांस मेद	तोद युक्त कर्कश ग्रन्थि, मुष्टिदण्डहतोपम।
अस्थि	सक्थि सन्धि अस्थि में तीव्र शूल
मज्जा	अस्थि सौषिर्य, अनिद्रा, स्तब्ध रूज।
शुक्र	शीघ्र उत्सर्ग/सङ्ग/विकृत-शुक्र/गर्भ।
सिरा	सिरा ध्मान/रिक्तता
स्नायु	गृध्रसी, आयाम, कुब्ज
सन्धि	वातपूर्ण दृति स्पर्श, शोफ; प्रसारण आकुंचन में वेदना।
सर्वांग	तोद, स्फुरण, संज्ञानाश, संधि संकोच, कम्प।

- **आक्षेपक–**

कुद्ध वात → सर्व धमनियां → मुहुर्मुहुः अङ्ग आक्षेपण।

- **अपतन्त्रक/अपतानक–**

अधः प्रतिहत (रूका) वात → ऊर्ध्व → हृद आश्रित नाड़ी में प्रवेश
↓
हृद, शिर, शंख भागों का पीडन
↓
गात्र धनुषवत मुड़ना ← सभी ओर से देह का संकोच

कृच्छ उच्छ्वास, नेत्र स्तब्ध, कपोत इव कूजन, निःसंज्ञ → हृदय के वायु से मुक्त होने पर कुछ समय के लिये स्वस्थ, थोड़ी देर बाद पुनः आक्रान्त।

दुश्चिकित्स्य– गर्भपात, रक्तातिस्राव, अभिघात जन्य।

- **अन्तरायाम–** शरीर धनुषवत अन्दर को मुड़ना।
वात ↑→ मन्या स्तम्भ → अन्दर की ओर की धमनियां → सर्वदेह → जत्रु आयाम → अन्तरायाम।
ल०– दांत कटकटाना, कफ वमन, वाक् हनु पृष्ठ शिरोग्रह।
- **बाह्यायाम–** धनुः कम्प, वेगिन। धनुषवत बाहर को झुकना।
- **व्रणायाम (Tetanus)–**
दोष $\xrightarrow{V}$ मर्माश्रित व्रण → सर्वशरीर प्रसार।
अतितृट् (Dehydration) व पाण्डु गात्र (Anaemia) होने पर असाध्य।
- **हनुस्रंस–**
जिह्वा अतिलेखन, शुष्क भक्षण, अभिघात → हनुमूलस्थ वात कोप → स्रंस → मुख खुला/बंद। (Dislocation of Mandible)
- **जिह्वास्तम्भ–**
V ↑→ वाक्वाही सिरा → जिह्वास्तम्भ
अन्न, पान, बोलने में असमर्थ।
- **अर्दित या एकायाम–** शिर पर भार उठाना, कठोर वस्तु चबाना आदि → V कोप → ऊर्ध्व स्थित → आधा चेहरा वक्र, शिर कम्प, वाक् ग्रह, मुख से थूक पार्श्व से बहना, एक आंख बन्द, जत्रु के ऊपर तीव्र वेदना; आधा शरीर (Hemiplegia) या शरीर के अधोभाग में तीव्र वेदना।

सिराग्रह–

वायु → रक्त आश्रित → शिर की सिराएं वेदनायुक्त, कृष्ण, रूक्ष – असाध्य।

पक्षवध– (सु०– पक्षवध; चरक– एकांगरोग)

वायु → अर्द्ध शरीर → सिरा, स्नायु शुष्क; सन्धि बंध ढीले → एक पक्ष (पार्श्व) निष्क्रिय, विचेतन।

- **सर्वाङ्ग रोग–** वायु → पूर्ण शरीर निष्क्रिय।

साध्यासाध्य– शुद्ध वात – अतिकृच्छ; संसृष्ट दोष– कृच्छ; क्षत से उत्पन्न – असाध्य पक्षवध।

दण्डक– असाध्य

आम बद्धमार्ग + कफान्वित वात → अंग दण्डवत जड़; चेष्टाएं नष्ट।

अपबाहुक (Frozen Shoulder)–

अंसमूल (Junction of Neck & Shoulder) में स्थित वात → सिरा संकोच → अपबाहुक – बाहुप्रस्पन्दन नष्ट।

विश्वाची (Cervical Spondylitis)–

तलं प्रत्यङ्गुलीनां या कण्डरा बाहु पृष्ठतः ।।४६।।
बाहु चेष्टापहरणी विश्वाची नाम सा स्मृता।

पङ्गु–

कटि आश्रित वात – सक्थि कण्डरा आक्षेप →
१ पैर में – खन्ज; दोनों पैर– पङ्गु।

कलाय खञ्ज– मुक्त सन्धि बन्ध → कम्पते गमनारम्भे, खञ्ज पक्षी वत चलना।

उरू स्तम्भ– (आढ्यवात – अन्य आचार्य)

- शीत उष्ण.द्रव आदि आम प्रकोपक → आम सञ्चय
- आम $\xrightarrow[\text{कफ + मेद}]{\text{वात}}$ उरू
  (पित्त तिरस्कृत)
- स्तिमित कफ → उर्वास्थि पूरण
- आम → उरू – निश्चल, जड़, शीत, गुरू, अचेतन।
  पैर शिथिल, कठिनता से उठना, सुप्ति। वमन, अरूचि, ज्वर।

क्रोष्टुक शीर्ष– वात रक्तज शोथ → घुटने में, गीदड़ सिर **जैसा**, वेदना।

वातकण्टक– पैर विषम स्थल पर पड़ना → V ↑→ गुल्फाश्रित → रूक्।

गृध्रसी (Sciatica)–

पार्ष्णि प्रत्युङ्गुलीनां या कण्डरा मारूतार्दिता ।।५६।।
सक्थ्युत्क्षेपं निगृह्णाति गृध्रसीं तां प्रचक्षते ।

खल्ली– विश्वाची व गृध्रसी + तीव्र पीड़ा।

पादहर्ष– K + V → पाद हर्ष, प्रसुप्त (झनझनाहट)।

पाद दाह– P - R + V → पाद दाह– पैरों में दाह (चलते समय विशेष)।

१६. वात शोणित निदान

वातरक्त– आढ्यरोग, खुड, वातबलास।

- विदाही, विरूद्धान्न, अचङ्क्रमण, अभिघात आदि → रक्त दुष्टि
- वातल, शीतल आहार विहार → वात वृद्धि → क्रुद्ध → विमार्ग

  I. दुष्ट रक्त से क्रुद्ध वायु अवरूद्ध
  II. कुपित वायु से रक्त का और दूषण } → आढ्य रोग

- सवारी आदि पर पैर लटकने से सर्वप्रथम पाद आक्रान्त।

  पाद मूल या कभी-२ हाथ में स्थित हो फिर चूहे के विष वत सर्वशरीर धावन।

पूर्वरूप– कुष्ठवत, बाहु व टांगों में कण्डू, स्फुरण, तोद, गौरव; सुप्तता बार-२।

भेद <
उत्तान, गम्भीर-(२)।
V, R, P, K, द्वन्दज (३), S। -(८)।

- **I अवस्था–** उत्तान – त्वक् मांसाश्रित – कण्डू आदि, त्वचा ताम्र, श्याव, लोहित; आयाम, अतिदाह, ओष।
- **II अवस्था–** गम्भीर– सर्वधातुग (सन्धि, अस्थि, मज्जा, छेदन)– (i) अतिरूक्, (ii) शोथ – ग्रथित, पाकी, खंज/पंगु।

दोषाधिक्य	**लक्षण**
वात	धमनी अङ्गुलि सन्धि सङ्कोच, शीत अहितकर; रूक्।
रक्त	तोद, ताम्र शोफ, कण्डू, क्लेद।
पित्त	राग, पाक, उष्ण, स्पर्शासहत्व, मूर्च्छा।
कफ	स्तैमित्य, गुरू, सुप्ति, शीत, मन्द कण्डू व रूक्।
द्वन्द सर्व	} मिश्रित

साध्य– एक दोषज, नूतन

याप्य– द्विदोषज

असाध्य– त्रिदोषज, स्रावी, अर्बुद (May be Cancerous)।

वात	**निदान**	**रोग**
प्राण (जीवन)	रूक्ष, लंघन, अतिआहार, व्यायाम अभिघात, वेगावरोध आदि	पीनस, अर्दित, तृट्, कास, श्वास आदि।

वात	निदान	रोग
उदान (बल)	छींक, उद्गार, वमन, निद्रा वेग धारण, रोना/हंसना	कण्ठरोध, वमन, गलगण्ड मनोविभ्रम, ऊर्ध्वजत्रुगत।
व्यान	अति गमन, विषम चेष्टा, भय, हर्ष	पुंसत्व नाश, ज्वर, सर्वाङ्गरोग, कुष्ठ, विसर्प आदि।
समान	विषम अजीर्ण शीत दूषित भोजन अकाल शयन जागरण	शूल, गुल्म, ग्रहणी, पक्वाशय, आमाशय के रोग।
अपान	रूक्ष गुरू अन्न, वेगावरोध वेग अति प्रेरण, बहुत बैठना/चलना।	पक्वाशय आश्रित रोग, मूत्र, शुक्र रोग, अर्श, गुद भ्रंश आदि।

वात —
- साम (आमयुक्त) – तन्द्रा, स्तैमित्य, शोफ, मन्दाग्नि, कटु- रूक्ष इच्छा व सात्म्य।
- निराम – आम विपरीत ल०।

वात आवरण– (A) दोष धातु मल अन्न से – १२ } २२
(B) पञ्चधावात का पित्त/कफ से – १० } २२
(C) प्राण आदि पांचों के परस्पर आवरण – २०
(D) उपरोक्त के तर-तम भेदानुसार परस्पर आवरण – ∞

(A)

	वात आवरण	लक्षण
१	पित्त	दाह; कटु उष्ण अम्ल लवण से विदाह, शीतेच्छा।
२	कफ	शीत; कटु हित; लंघन रूक्ष उष्णेच्छा।
३	रक्त	लाल शोथ, मण्डल
४	मांस	कठिन शोथ, पिटिकाएं, हर्ष, चींटी रेंगने जैसा।
५	मेद	आढ्यवात
६	अस्थि	उष्ण स्पर्श व पीड़न की इच्छा, तोद (सुईवत) ।
७	मज्जा	विनमन
८	शुक्र	अति/अवेग; निष्फल (Sperm-Nill) ।
९	अन्न	भोजन करने पर कुक्षि में पीड़ा, जीर्ण होने पर शान्त।
१०	मूत्र	अप्रवृत्ति, आध्मान।
११	मल	परिकर्तिका, बिबन्ध; शुष्क/कृच्छ मल त्याग।
१२	सर्वधातु	श्रोणि वङ्क्षण पृष्ठ रूक्, हृदय पीडन

(B)

आवरण	लक्षण
पित्तावृत प्राण	मूर्च्छा, अन्न का विदग्धावस्था में वमन, दाह।
,, उदान	अन्तर्दाह, भ्रम, बल नाश (उदान – बल संश्रित)
,, व्यान	सर्वदाह, चेष्टानाश, सन्ताप
,, समान	ऊष्मानाश, अतिस्वेद, तृट्।
,, अपान	मल हारिद्र; योनि मेढ्र पायु रूक् व ताप।
कफावृत प्राण	वमन, प्रसेक, श्वास अवरोध (Ins. & Exp.) ।
,, उदान	वाक् स्वर ग्रह, गुरूता।
,, व्यान	पर्व (Small Joints), अस्थि, वाक् ग्रह, लड़खड़ाना
,, समान	अङ्ग अति हिम, अस्वेद, मन्द वह्नि।
,, अपान	मूत्र मल कफ युक्त।

- आवरण १ वर्ष पर्यन्त असाध्य हो जाते हैं।

आवरण उपेक्षा जन्य उपद्रव– विद्रधि, प्लीहा, हृद्रोग, गुल्म, अग्निमांद्य आदि।

(C) $P \rightleftharpoons U$ $P \rightleftharpoons V$ $P \rightleftharpoons S$ $P \rightleftharpoons A$
$U \rightleftharpoons V$ $U \rightleftharpoons S$ $U \rightleftharpoons A$ $V \rightleftharpoons S$
$V \rightleftharpoons A$ $A \rightleftharpoons S$.

[$P \rightleftharpoons U$ - प्राणावृत्त उदान, उदानावृत्त प्राण; V - व्यान, S - समान, A - अपान]

चिकित्सा स्थान

१. ज्वर चिकित्सा

चि० सूत्र–

लङ्घनं स्वेदनं कालो यवाग्वस्तिक्तको रसः ।।२३।।

अवस्थानुसार या क्रमशः लंघन, स्वेदन (शोधन); काल (मर्यादा Natural Duration) ; यवागू आदि तथा तिक्त रस, इन ५ का प्रयोग करें।

१. लङ्घन– • प्रथम कर्म।
• बल रक्षा करे (लंघनं लघु भोजनम्) ।
• मन्द अग्नि प्रज्वलनार्थ। आमक्षय।

लाभ– दोषक्षय; दीप्त अग्नि → बल, ओज उत्पन्न।

वमन– • उत्कृष्ट, उत्क्लिष्ट, कफ बहुल, चल दोष में।
• लङ्घन से पूर्व।

निर्देश– हल्लास, प्रसेक, विसूचिका, खाने के तुरंत बाद ज्वर आया हो; आमयुक्त ज्वर; वमन योग्य।

अनिर्दिष्ट में वमन से– श्वास, अतिसार, मूर्च्छा, हृदरोग, विषम ज्वर उत्पत्ति।

वमन द्रव्य– १. पिप्पली + मदन फल – उष्णोदकेन।
२. पिप्पली + इन्द्रयव/मुलेठी (समभाग) – उष्ण जल से।
३. मधु + लवण – पानी से।

वमनोपरांत उपवास से दोष पाचन व शमन।

पान– प्यास लगने पर।

उष्णाम्बु– वात कफज ज्वर में थोड़ा-२ कफ विलयन → तृष्णा शीघ्र शान्त

अग्नि उदीरण, स्रोतोमार्दव, शोधन; लीन पित्त, वात, स्वेद, शकृत, मूत्र का अनुलोमन; निद्रासाम्य; प्राण अवलम्बन।

निषेध– (अकेला) पैत्तिक ज्वर; P↑ ; दाह, अतिसार, मोह; विष, मद्य; ग्रीष्म; उरःक्षत क्षीण, रक्तपित्त।

उष्णाम्बु निषिद्ध में षडङ्ग पानीय दे–

घन चन्दन शुण्ठ्यम्बु पर्पटोशीर साधितम् ।।१७।।

मुस्ता + चन्दन (रक्त) + सोंठ + नेत्र बाला + पित्तपापड़ा + खस से सिद्ध जल। [सम भाग में मिला ले। चूर्ण से ६४ गुना पानी में क्वाथ करे आधा बचने पर उतार ले।]

सभी लंघनों में उपवास उपयुक्त है शेष पित्त वर्धक होते हैं।

लंघन निषेध– शुद्ध वात ज्वर, क्षयज (T.B.), आगंतुज, जीर्ण (निराम)। इनमें शमन चि० करे।

सम्यक् लंघन– आम लक्षण समाप्त (द्विविधोपक्रम)।

२. स्वेदन–
- वात कफज ज्वर।
- उदर्द, पीनस, श्वास, जंघा पर्व अस्थि शूल।
- स्वेद मूत्र शकृत प्रवर्तन; अग्नि तीक्ष्ण।
- स्नेहोक्त आचार विधि।

३. काल– दोष पक्व (निराम) हो जाने पर पाचन/शमन औषध शेष दोषों हेतु दे। जिस प्रकार आमयुक्त कोष्ठ में दूध भी विष हो जाता है, उसी प्रकार आमावस्था में औषध दुष्प्रभाव करती है।

साम ज्वर + औषध → दोष अतिसंचय --तन्द्रा, स्तैमित्य--→ ज्वर वृद्धि।

औषधि देने का समय–

(अन्य मत– ७ दिन/१० दिन के बाद/लघु अन्न देने के बाद)।

ज्वर मृदु; देह लघु; मल चलित होने पर चिर/अचिर ज्वर में औषधि दे।

४. पेया आदि– ६ दिन तक/ज्वर मृदु होने तक। सम्यक् लंघनोपरांत।

I. प्रथम दिन मण्ड (लाज पेया का)।

[II. द्वितीय दिन– पेया– लाज (खील) को १४ गुने पानी में पकाकर सोंठ, धनिया, पिप्पली, सैंधव ± अनार रस मिलाकर ले। – अग्निदीपक।

III. तृतीय दिन– यवागू

IV. चतुर्थ दिन– विलेपी

V. पंचम दिन– यूष + चावल

VI. षष्ठम दिन– रस + ओदन]

लाभ– लघु → अग्निदीपक
वात, मल, मूत्र दोष अनुलोमन; बल रक्षण।
द्रव, उष्ण → स्वेदल
मृदु → तृट्शमन
आहार वत → प्राणदायक
सर → लाघव
सात्म्य → ज्वरघ्न

निषेध– मद्यजन्य ज्वर, नित्यमद्य सेवी, पित्त स्थान में कफ आने पर, ग्रीष्म में कफ पैत्तिक ज्वर, ऊर्ध्वग रक्तपित्त; वमन, तृट दाहयुक्त।

ज्वर अनुबंध	विशेष पेया	
अतिसार, P↑ –	सोंठ मधु युक्त शीत पेया	(चावल या लाजा)
बस्ति पार्श्व शिर दर्द –	सोंठ, गोक्षुर सिद्ध पेया	
श्वास कास –	लघु पंचमूल सिद्ध पेया	
कफ –	वृहत्पंच मूल सिद्ध पेया	
मलबन्ध –	अल्प जौ यवागू + पिप्पली, आंवला घी में भूनकर	
अस्वेद, अनिद्रा, तृट् –	मिश्री, आंवला, सोंठ सिद्ध पेया	

I. तर्पण– लाज चूर्ण + जल + मिश्री

II. यवागू

III. ओदन + मूंग रस + अल्प सैंधव/दकला वणिक।

रस, यूष आदि भी सोंठ आदि से सिद्ध करे।

५. तिक्त रस (औषधि)– ज्वरानुसार रस प्रयोग–

P – तिक्त

K – कटु

P.K – कषाय – नव ज्वर में निषिद्ध

↳ मल स्तब्ध (न निकलना, न पचना) → तिर्यग/विमार्गी→ विषम ज्वर; वेग वृद्धि T↑; हल्लास, आध्मान।

[ज्वर में P अवश्य होने से तिक्त रस अवश्य प्रयुज्य होगा।]

- प्राय: ७ दिन बाद– आम पक्व हो जाने पर।
- औषध प्रयोग -२– पाचन, शमन।
  -२– क्वाथ – उबालकर।
  कषाय– शाम को औषधि गरम जल में भिगोकर प्रात: पीना।

पाचन योग– सामान्य–

मुस्ता + पर्पटक

शुण्ठी + दुरालभा

पाठा + उशीर + नेत्रबाला

चिरायता, गिलोय, सोंठ, मुस्ता

पाठा, इन्द्रयव, चिरायता, मुस्ता, पर्पटक, अमृता, सोंठ– आमातिसार + ज्वर।

विशेष–

वातज ज्वर–
- दुरालभा अमृता मुस्ता नागर
- पिप्पलीमूल गुडुची शुण्ठी
- लघुपंचमूल

पित्तज ज्वर–
- इन्द्रयव मुस्ता कटुकी } मधु से।
- मुस्ता पर्पटक धमासा चिरायता } मधु से।

कफ ज्वर–
- वत्सकादि गण
- बांसा, मुस्ता, सोंठ धमासा (दुरालभा)

वात-कफज ज्वर– रूक् व बिबन्ध युक्त
- अभया, पिप्पलीमूल, अमलतास, कटुकी, मुस्ता।

सन्तत आदि (विषम ज्वरार्थ) ५ योग–
- इन्द्रयव, पटोलपत्र, कटुकी
- पटोल, शारिवा, मुस्ता, पाठा, कटुकी
- पटोल, नीम, त्रिफला, द्राक्षा, मुस्ता, इन्द्रयव
- चिरायता, अमृता, चन्दन, सोंठ
- आंवला, मुस्ता, अमृता, मधु।

शमन योग–

वातज ज्वर–
- अमृता स्वरस।
- पिप्पली पुनर्नवा द्राक्षा सौंफ गुड़ सारिवा – क्वाथ
- शतावरी व अमृता स्वरस गुड़ से
- अमृता स्वरस + सोंठ, मिश्री, काला जीरा

पित्तज ज्वर–
- पटोलादि; गुडुच्यादि गण क्वाथ
- पर्पटक क्वाथ
- अमृता, आंवला, पर्पटक क्वाथ
- कटुकी द्राक्षा मुलेठी नीम का शीत कषाय
- सशर्करा तिक्ता (पिसी कटुका– Picrorhiza)

कफज ज्वर–
- हल्दी, त्रिकटु, तिक्ता, नागकेशर, इन्द्रजौ क्वाथ– मधु से।
- सोंठ, त्रिफला, मुस्ता, मूर्वा, पाठा क्वाथ– मधु से।

संसर्ग/सन्निपात– मिश्र योग

वात-पित्त–
- गोक्षुर, बला, दर्भ, क्वाथ मिश्री से।
- द्राक्षा, आंवला, चिरायता, अमृता, शठी (कचूर), गुड़।
- मृणाल,चंदन,उशीर,नीलोफर,फालसा का फाण्ट/शीतकषाय + जाती (चमेली) कुसुम + मधु, सिता लाज से।

कफ-वात–
- गिलोय क्वाथ – पिप्पली चूर्ण से।
- व्याघ्री (कटेरी), शुण्ठी, अमृता क्वाथ– पिप्पली चूर्ण से।

कफ-पित्त
- आरग्वधादि गण क्वाथ – मधु से।
- **वृषपुष्पच्छद रसः शर्करा माक्षिकान्वितः ।।९२।।**
  (वृष– वासा Adhatoda Vasica)
  – ज्वर, रक्तपित्त, कामला नाशक।

सन्निपात–
- $V^{+}_{+} K^{+}_{+} P_{+}$ – सोंठ, पुष्कर मूल, अमृता, व्याघ्री का क्वाथ- ज्वर, श्वास, कास पार्श्वशूल नाशक।
- जाती, आंवला, मुस्ता, अनन्ता का शीत कषाय।
- अनन्ता (दुरालभा, धमासा) का कषाय।

मलबन्ध होने पर– कटुका द्राक्षा त्रायन्ती त्रिफला गुड़ का क्वाथ।

औषध जीर्ण होने पर पेया आदि ले (कफज में नहीं क्योंकि 'पेया कफं वर्धयति' ॥१०१॥)।

कफज में पेया के स्थान पर यूष–
- (कुलथी, चना, मटर आदि)
- लघु, अकृत, तिक्त रस युक्त।

पथ्य– लघु, दिन के अन्त में (कफ क्षयित); अल्प मात्रा।
पुराण रक्त शालि, सांठी
भूने जौ – कफज ज्वर
मूंग आदि का यूष – पिप्पली आदि से संस्कृत/अकृत।
करेला, करौंदा, कच्ची मूली, पर्पट, बैंगन, नीम पुष्प परवल फल व पत्र यूष।
जांगल मांस रस – औषध सिद्ध कर
कफ क्षय होने तक; लगभग १० दिन।
अनुपान– पक्व जल।
घृत– लंघित में कषाय पान, पथ्य आदि से १० दिन बीत जाने पर; निरामावस्था में; वात-पित्त प्राधान्य में

२. जीर्ण ज्वर चिकित्सा

देह धात्व बलत्वेन ज्वरो जीर्णोऽनुवर्तते ।।३।।

देह धातुओं के निर्बल हो जाने से ज्वर जीर्ण हो जाता है।

१. **घृत–** संस्कार अनुवर्तन करने से श्रेष्ठ P.V. शामक।
   शीत – पित्त }
   स्निग्ध – वात } शामक

- निदिग्धिकादि घृत
- वासा घृत
- बलादि घृत
- कुलत्थादि घृत
- मंजिष्ठादि घृत।

पथ्य– घी के जीर्ण होने पर मृदु मांस रस + ओदन। मूंग, करेला आदि यूष– कफ पित्तघ्न; जीर्ण ज्वर में वात प्राधान्य होने से लाभप्रद नहीं → शूल उदावर्त, विष्टम्भ कर।

२. **वमन–** दोष आमाशयस्थ होने पर, बली में
सन्तर्पण जन्य ज्वर – पिप्पली + नमक जल।
दाह तृष्णा प्रधान ज्वर – शर्करा, मधु मिला जल से।

३. **विरेचन–**
विष, मद्यजन्य ज्वर व्योषादि मोदक।
- द्राक्षा + आंवला रस; • द्राक्षा + अभया;

आंवले का रस घी में भूनकर।
पिप्पली, त्रिफला + घी, मधु से; त्रिफला द्राक्षा रस से।
अमलतास दूध से/द्राक्षा रस से; त्रिफला दूध से; त्रायमाणा दूध से।
अनुपान– उष्ण जल; मुनक्का स्वरस।
संसर्जन– मण्ड, पेया आदि।
→ यदि उत्क्लिष्ट दोष स्वयं प्रवृत्त हो रहे हो तो उन्हें निकलने दे; अति प्रवृत्त होने पर संग्राही औषध दे।
→ आम ज्वर में शोधन न करे → दोष प्रकोप।
→ ज्वर से क्षीण में वमन, विरेचन न दे इसके दोष दूध या निरूह से निकाले।

दूध–

प्रयोग– जिसे सात्म्य हो, कफ क्षीण, P↑ V↑, दाह, तृट, अतिसार; लंघन से उत्तप्त शरीर में जीवनीय।

संस्कार से ज्वरघ्न– सोंठ, खर्जूर, द्राक्षा, शर्करा, घी के साथ पाक कर मधु मिलाये।
[द्रव्य (१) : + दूध (८) : + जल (४) $\xrightarrow[\Delta]{}$ पक्व दूध (८)]

दुग्ध संस्कार	**उपयोग**
• बिल्वादि पञ्चमूल	कास श्वास युक्त ज्वर
• एरण्ड मूल/कच्चे बिल्व/धारोष्ण।	बद्ध वात मल, रक्त पिच्छा युक्त प्रवाहिका, ज्वर।
• श्वेत पुनर्नवा	ज्वर + शोथ
• शीशम काष्ठ	आशु ज्वर हर।
• सोंठ, बला, कटेरी, गोक्षुर, गुड़	शोफ; मूत्र मल वात बिबंध; ज्वर, कास।

४. **निरूह–** दोष पक्व हो व पक्वाशय गत होने पर।
ज्वर नाश, बल अग्नि वृद्धि; पक्वाशय गत कफ/कफ पित्त का विरेचन।

५. **अनुवासन–** कफ पित्त क्षीण; अग्नि प्रदीप्त, मल बंधा; त्रिक, पृष्ठ, कटिग्रह में।

६. **नस्य–**
विरेचन – शोधन – कफघ्न – शिरौगौरव, जीर्ण ज्वर।
स्नेहन – बृंहण – शून्य शिरसो।
शमन – पित्त शामक – दाह में।

७. **धूम, गण्डूष, कवल–** प्रतिश्याय, मुख वैरस्य, शिर, कंठरोग।
अरूचिहर–
- बिजौरा केशर + घी + सैंधव
- आंवला, द्राक्षा, मिश्री

} कल्क मुख धारण।

८. **अंजन, धूम–** आगंतुज ज्वर

९. **अभ्यङ्ग, लेप, परिषेक–** शीत/उष्ण त्वक् आश्रित ज्वर में।

ज्वर → त्वक् आश्रित < दाह / शीत (कंपकंपी)– विषम ज्वरों में भी।

दाह ज्वर–
- पित्तघ्न चि०।
- सहस्र धौत घृत अभ्यङ्ग
- कपित्थ, मातुलुङ्ग, अम्लवेतस, विदारी, लोध्र, दाडिम, बदरी पल्लवोत्थेन फेनेन (बेर पत्रों को कूटकर उठा झाग) या अरिष्ट (नीम/रीठा) का झाग, में जो मिल जाये उसका शरीर पर लेप।
- मधु मिले जल से वमन।
- मदानातुर युवतियां, शिशु की अव्यक्त वाणी, चांदनी।

शीत ज्वर–
- वात कफ शामक चि०। पित्तकर।
- उष्ण द्रव्यों यथा तगर, अगरू, केशर, रास्ना, गुग्गुलु, एला, तुलसी, सरसों, अमृता, एरण्ड, धनिया, अजवायन, सोया, उड़द आदि से पका तैल से अभ्यंग व क्वाथ से परिषेक, अवगाहन।
- आरग्वधादि वर्ग सिद्ध तैल अभ्यंग, लेप।
- अगरू धूम
- अग्नि/अनाग्नि स्वेद (कंबल)

- त्रिकटु + तक्र; जीरा कल्क + गुड़; अमृता रस + गुड़; व्याघ्र नख (कटेरी) फल रस + मधु से पान।
- स्थूल वनिता आलिङ्गन।

(i) वातानुलोमन चि०– पिप्पली, पिप्पलीमूल, अजवायन, चित्रक से बनी यवागू।

(ii) वात कफ अति प्रवृद्ध - स्व/पित्तस्थानगत– ककड़ी खाकर तक्र पिये तथा अग्नि सेवन तब तक करे जब तक कि स्वेद न आ जाये। स्नान। मध्यम आहार।
पित्त वर्द्धन → वात कफ शमन, स्व स्थान जाना।

ज्वर	**चिकित्सोपक्रम**
कफज	वमन
पित्तज	विरेचन
वातज	बस्ति
संसर्ग/सन्निपात	दोष क्रमानुसार

दोष क्रम– एक दोष को बढ़ाकर या (सन्निपात में जब सभी बढ़े हो तो) एक दोष को घटाकर चि० करे।

समदोष सन्निपात– I. कफ विपरीत औषध से कफ शान्त, II. पित्त, III. वात शमन।

सन्निपातज उपद्रव–

१. निद्रा– सन्यासोक्त चि०

२. कर्णमूले दारूण शोफ (Parotitis)– रक्त मोक्षण, सद्यः घृतपान, कफ-पित्तघ्न प्रलेप, नस्य, कवलग्रह।

शाखागत ज्वर– उपरोक्त चि० से शान्त न होने पर एक-२ कर बाहु सिरा वेधन।

विषम ज्वर– १. दोषानुसार चि०, सिरा व्यध।
२. विशेष चि०
३. दैवव्यपाश्रय चि०

विशेष चि०–

- पटोल कटुकी मुस्ता हरीतकी मुलेठी में से ३/४/५ से बना क्वाथ।
- त्रिफला/हरड़/अमृता + पिप्पली
- भिलावा + गुड़

ज्वर आने वाले दिन–

- प्रातः तैल + लहसुन खाये
- भोजन पूर्व दधि/दूध/तक्र/षटपलघृत (राजयक्ष्मा), कल्याणक घृत (उन्माद), पंचगव्य घृत (अपस्मार), तिक्तक घृत (कुष्ठ), वृष घृत (रक्त पित्त) पान।

अन्य घृत– पंच माहिष, पंच अज, चतुरौष्ट्र।

- स्वेदनोपरान्त यापना बस्ति।

धूम–

- गुग्गुलु, नीमपत्र, वच, कूठ, हरीतकी, सरसों, जौ + घी।
- बिल्ली मल + घी।
- अपराजित धूम– गुग्गुलु, कत्तृण, वच, सर्जरस, नीम, आक, अगरू, देवदारू।

दैवव्य पाश्रय चि०– विषम ज्वरों में प्रायः आगंतुज अनुबंध होने से। धूम, नस्य, अञ्जन, उत्रास आदि।

धातुगत ज्वर चि०–

धातु	चि०
रस	वमन लंघन
रक्त	सेक संशमन आलेप रक्तमोक्षण
मांस	तीक्ष्ण विरेचन
मेद	मेदघ्न
अस्थि	वात शामक, अभ्यंग, स्वेदन, मर्दन

वात पीड़ा के लिये बस्ति कर्म विशेष है।

अभिघातज ज्वर – (तथा केवल वात, विसर्प, विस्फोट जन्य ज्वर)
– घृतपान, शीत लेप, परिषेक, रक्तमोक्षण।

अभिषङ्ग/आगंतुज ज्वर– प्रथम संताप रूप, पश्चात् दोष दूषण।

(i) ग्रह – भूत विद्योक्त, अन्नबलि आदि
(ii) औषध गंध – पित्तशामक
(iii) विष – विष नाशक
(iv) क्रोध – पित्तशामक, काम; भय/शोक
(v) भय – वात शामक } काम/क्रोध
(vi) शोक – वात शामक }
(vii) काम – वात शामक, क्रोध; भय/शोक
(viii) शाप – } दैवव्यपाश्रय
(ix) अथर्वणमन्त्रोत्थ – }

सर्वरोग हर– शुद्ध मन के अनुकूल वचन; ब्राह्मण, महादेव, हरि (विष्णु) पूजा; मन्त्र, मणि, रत्न महौषधि, आर्यावलोकित; पर्णशबरी, अपराजिता, आर्यतारा; तथागतोष्णीष मंत्र जप।

३. रक्तपित्त चिकित्सा

साध्यासाध्यता–

साध्य– ऊर्ध्वग, बली में, अवेग, नव, सुख काले (हेमंत, शिशिर), एक दोषज।

याप्य– अधोग, द्विदोषज, शान्त होकर पुनः-पुनः होना, एक से दूसरे मार्ग में जाना।

असाध्य– अतिप्रवृत्त, मन्दाग्नि, त्रिदोषज, उभयमार्गी।

चिकित्सा– दोष काल अवस्थानुसार लङ्घन/बृंहण, कराकर फिर शोधन/शमन करे।

विरेचन– सन्तर्पणोत्थ, बलिनो, बहुदोषस्य, ऊर्ध्वमार्गा।

वमन– अधोग।

ऊर्ध्वग–
- शमन-तिक्त, कषाय; उपवास
- षडङ्गोदक (बिना सोंठ के)
- I. तर्पण।

अधोग– बृंहण, मधुर रस।
I. पेया।

बली में अशुद्ध रक्त बन्द न करे, शुद्ध रक्त आने पर (निर्बलता भय) बन्द करे।

(i) शोधन (ii) बल रक्षण (पेया आदि) (iii) औषध।

(i) शोधन–

ऊर्ध्वग में विरेचनार्थ–
- त्रिवृत, त्रिफला, आंवला, अमलतास, अभया, इक्षु रस, दूध, द्राक्षा, मधु, मिश्री आदि।
- त्रिफला, त्रिवृत, काली निशोथ, पिप्पली, शर्करा, मधु मिलाकर लड्डू बना ले।
- त्रिवृत + सिता (समभाग) + १/४ पिप्पली।

अधोग में वमनार्थ– मदन फल + शर्बत/मधु/मुलेठी

(ii) बलरक्षण–

ऊर्ध्वग में मंथ–
- द्राक्षादि मंथ।
- मधु, खर्जूर, मुनक्का, फालसा, मिश्री – जल से/लाजा सत्तू + घी से।

अधोग में पेया– शालपर्णी + मूंग;
प्रश्नपर्णी + मसूर

पथ्य/पान– शूक, शिम्बी, शाक, मांस; लघु द्रव्य। (लघु) पञ्चमूल शृत; मधु + जल; फल रस; निःशुण्ठीषडङ्गोदक; पटोल रस + मूंग।

कफ संसृष्ट – यूष, शाक

वात संसृष्ट - (मांस) रस, गूलर क्वाथ
मलावरोध - बथुआ शाक

(iii) औषध–

वासा – परमौषध।

- वासा स्वरस अकेला/+ शर्करा, मधु
- वासा क्वाथ शर्करा मधु युक्त।
- गोमय रस + मधु, घी।
- हरड़ हल्दी जटामांसी/पलाण्डु + मधु घी।
- अर्जुन, कचनार, ढाक, महुआ पुष्प चूर्ण + मधु से।
  इन्हीं पुष्पों के कल्क से पका भैंस का घी मधु से।
- गैरिक, मुलेठी, लोध्र + मधु

ग्रथित रक्त आने पर– कबूतर विट् मधु से चाटे।

अतिरक्त क्षय–
- जांगल रक्त मधु से पान।
- बकरी का यकृत व मांस।

रक्तस्तम्भक–

- खस, गैरिक, पटोलपत्र, दूर्वा, जामुन छाल, अश्वत्थ (पीपल), अश्वगन्धा, गूलर, अर्जुन, सुपारी, कायफल, कमल, पर्पट में जितना मिल सके + चन्दन, शर्करा → फाण्ट/शृतशीत कषाय/चूर्ण + चावल धोवन।
- मिश्री लोध मुलहठी खस चन्दन – जल से।
- पक्व मिट्टी बुझा जल
- मुक्ता, शंख (पिष्टी), गैरिक, वैदूर्य, आंवला जल से।
- इक्षु गण्डिका (टुकड़े) नये घट में रात भर के लिये भिगो दे, आकाश के नीचे; प्रातः जल छानकर मधु और कमल मिला कर पिये।
- ककड़ी मूल कल्क
- करञ्ज बीज
- लोध चन्दन मुलेठी
- मुलेठी

  } मधु मिले तण्डुलोदक से।

- वात प्रधान रक्तपित्त– कफ शमनोपरान्त
  - ५ गुने जल में सिद्ध अजा/गो दुग्ध।
  - लघु पञ्चमूल सिद्ध गो दुग्ध + शर्करा, मधु।
  - मुलेठी + मधु शर्करा।
- **वासाघृत–** समूल .... नाशयेत् ॥६४-६६॥

मूल व पत्रों के साथ वासा कूटकर ८ गुने जल में पकाये, अष्टांश बचने पर इस क्वाथ में घी पकाये, इसी समय वासा पुष्प कल्क डाले। शीतल होने पर मधु के साथ दे।
गुण– रक्त पित्त, पित्तजगुल्म, ज्वर, श्वास, कास, हृद्रोग, कामला, तिमिर, भ्रम, विसर्प, स्वरभंग नाशक।
[इन्दु– घी = क्वाथ; शौनक– घी = क्वाथ/६]

- पलाश वृन्त स्वरस सिद्ध घृत।

पथ्य– लाजा चूर्ण, मुलेठी चूर्ण + गेहूँ का आटा की रोटी घी लगाकर शर्करायुक्त दुग्ध से।

विशेष चि० –

१. **कण्ठ से रक्त प्रवृत्ति–** पिच्छिल, सकफ, ग्रथित– उत्पल नाल क्षार + मधु, घी से।
२. **नासा से शुद्ध रक्त–** कषाय, इक्षुरस, मीठा दूध, शर्बत नस्य अनार पुष्प रस/आम्र गुठली रस/दूर्वा रस नस्य।
३. **मूत्र मार्ग से प्रवृत्त–** उत्तर बस्ति। गोक्षुर, शतावरी, शाल, पृश्नि, मुद्ग, माषपर्णी सिद्ध दुग्ध-वेदना व रक्तस्राव नाशक।
४. **योनि मार्ग प्रवृत्त–** उत्तर बस्ति। प्रदरोक्त औषधि। अतिस्राव में छेदन भेदन (Curettage)
५. **गुदमार्ग से रक्त स्राव–** मोचरस (सिम्बल पिच्छा) से सिद्ध दूध पान।
   वट प्ररोह (जटा), शुंग }
   शुण्ठी, उदीच्य, उत्पल } से सिद्ध दुग्ध।

आस्थापन– मुलेठी, मजीठ, मृणाल, उत्पल, गेरू, आम, चंदन, शंख कल्क + शर्करा, मधु घी से सिद्ध दूध से।

- विदार्यादि गण से सिद्ध दूध से बस्ति।
  शीतल जल से स्नान, पथ्य– दूध + ओदन। मुलेठी + घी।
  अनुवासन – घी/घी + मधु + शर्करा से।
- पित्तज्वर, क्षतक्षीणोक्त औषधियां; शीत प्रलेप अभ्यंग आदि।

४. कास चिकित्सा (I)

कास < दोषज (I)
कास < क्षत, क्षयज (II)

(A) वातज (शुद्ध/केवल) कास–

(i) वातघ्न औषध सिद्ध स्नेह–

- गुडुची (२), कण्टकारी (२) – से घृत (१) सिद्ध करे।

- रास्नाघृत– अजा मांस योग (श्लोक १२-१४)
- विदार्यादि गण क्वाथ, कल्क सिद्ध घृत
- दुरालभा, शृङ्गबेर (सोंठ), शठी, द्राक्षा, सिता चूर्ण– तैल से।
- दुरालभा, पिप्पली, मुस्ता, भार्ङ्गी, कर्कट शृंगी, शठी (कचूर)। तथा
- पिप्पली, सोंठ, भार्ङ्गी – पुराण गुण व तैल से।

(ii) **पान–** सैंधव + पिप्पली – उष्णोदकेन
मिश्री + सोंठ – मस्तु से
पिप्पली चूर्ण – दधि से

मद्य, तैल, दूध, इक्षु रस, गुड़, दधि, मस्तु, अम्लफलाम्बु।

(iii) **स्निग्ध पेया, यूष, मांस रस, लेह–**

- दशमूल सिद्ध, पंचकोल व गुड़ युक्त पेया।
- चावल + तिल (समभाग) – दूध में पेया बनाये + सैंधव।
- मत्स्य, कुक्कुट, वाराह मांस पेया + सैंधव।
  ग्राम्य, आनूप, औदक/
- उड़द, आत्मगुप्ता (केंवाच) यूष + चावल (सांठी)/जौ/गेहूँ।

→ मलावरोध होने पर बस्ति।

(iv) **धूम–** स्नैहिक

अनुबंध/संसर्ग–

कास	अनुबंध	चिकित्सा
V	K	स्निग्ध विरेचन, कफघ्न
V	P	भोजन के तुरन्त बाद घृत/दूध
VK	P	पित्तघ्न
VK	• शुष्क	स्निग्ध
	आर्द्र	रूक्ष

विडङ्ग लेह–

विडङ्गं नागरं रास्ना पिप्पली हिङ्गु सैन्धवम्।।१७।।
भार्ङ्गी क्षारश्च तच्चूर्णं पिबेद्वा घृतमात्रया।
(यवक्षार)

गुण– वात कफज कास, श्वास, हिध्मा, मंदाग्नि नाशक।

पथ्य शाक– वास्तुक (बथुआ), मकोय, चौलाई; कण्टकारी फल व पत्र; सूखी कच्ची मूली।

(B) **पित्तकास–**

(i) **P+K–**

वमन–
- घी से
- मदनफल, गम्भारी महुआ क्वाथ + घी।
- मदनफल, मुलेठी कल्क + विदारी, इक्षु रस से।

(ii) **पित्तज–**

विरेचन–

कफ स्वरूप	विरेचन	संसर्जन (पेयादि)
तनु	मधुरगण + त्रिवृत	शीत, मधुर, स्निग्ध
घन	तिक्त गण + त्रिवृत्त	शीत, तिक्त, रूक्ष

- पिप्पली मुस्ता मुलेठी द्राक्षा मूर्वा सोंठ
- लाजा, अमृताफल (आंवला), द्राक्षा, वंशलोचन, पिप्पली
- कटेरी मूल फल, बरगद बीज, रसौंत
- खर्जूर पिप्पली वंशलोचन गोक्षुर

} घी व मधु से।

- काकड़ाश्रृंगी + घी, मधु, सिता।
- P+K $\xrightarrow{\text{मिश्री आंवला मधु द्राक्षा चंदन कमल}}$ + मुस्ता, मरिच।
- P+V $\xrightarrow{\text{मिश्री आंवला मधु द्राक्षा चंदन कमल}}$ + घी से।
- द्राक्षा (५०) पिप्पली (३०) + शर्करा (१ पल)– मधु से।
- पिप्पली आंवला द्राक्षा लाजा लाक्षा मिश्री चूर्ण कर क्षीर पाक– १/८ भाग मधु से चाटे।
- विदारी, गन्ना, कमलनाल का रस + दूध सिता मधु से।
- काकोली, बृहती (२), मेदा (२), वासा, सोंठ सिद्ध दूध/पेया/यूष।
- भैंस, बकरी, भेड़, गाय दूध + आंवला रस (सम मात्रा) घी से सिद्ध कर पिये।
- क्षीरि वृक्ष अंकुर क्वाथ में दूध व घी (सम) सिद्ध करे।
- मेदा, विदारी, काकोली, कौंच, बला, शर्करा, जीवक, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, दुरालभा–
  - चूर्ण– घी व मधु से।
  - कषाय पान।

पथ्य–

घन कफ–
- मधुर, जांगल, जौ, सांवा, कोद्रव, मूंग, यूष, तिक्त शाक।
- तिक्त लेह– मधु से।

तनु कफ– शालि/साठी + जांगल रस/मूंग आदि यूष।
- अनुपान– शरबत, द्राक्षा स्वरस, इक्षु रस, दुग्ध।

(C) कफ कास–

(I) **स्नेहन–** देवदारू को प्रदीप्त कर (पाताल यन्त्र) तैल निकाले (परिस्रुत)। तैल + त्रिकटु + यवक्षार।

(II) **विरेचन (संसर्गानुसार)–** तीक्ष्ण

K+V – ऊर्ध्व (वमन)

K+P – अध:

K – शिरोविरेचन

(III) **पेयादि–** उष्ण, रूक्ष, कटु

जौ, मूंग, कुलत्थी, कासमर्द, बैंगन, कटेरी, यवक्षार, पिप्पली। धान्व (जांगल), बिलेशय रस।

तैल– तिल, सरसों, नीम।

(IV) **अनुपान–** दशमूलाम्बु, उष्णाम्बु, मद्य, मधुयुक्त जल। पुष्करमूल अमलतास पटोल का रात भर रखा शीत कषाय मधु के साथ तीनों समय तथा भोजन के साथ।

(V) **लेह–**
- पिप्पली, पिप्पलीमूल, सोंठ, बहेड़ा
- देवदारू, हरड़, मुस्ता, पिप्पली, सोंठ
- मोर, मुर्गी पुच्छ चन्द्रिका भस्म + यवक्षार

} मधु से द्रवित कर।

- मरिच/अगुरू/कटेरी, बैंगन/भृंगराज स्वरस/काली तुलसी रस/ कासमर्द/ घोड़े की लीद का रस– मधु से।

पिप्पली कल्क, तैल में भूनकर + शर्करा – कुलत्थी क्वाथ से।

अनुबंध–

(a) K+V–
- पिप्पली सोंठ मुस्ता हरड़ आंवला मिश्री– मधु व तैल से।
- कास श्वास हिक्काहर– विडंग, सैंधव, हींग, कुष्ठ, व्योष (त्रिकटु), मन:शिला– घी व मधु से।
- श्वास कास–

गुड़	२ पल	पिप्पली	१/२ कर्ष
यवक्षार	१/२ कर्ष	दाड़िम	१पल
मरिच	१ कर्ष	का मिश्रण।	

- पीनस श्वास कास–

अनार (दाड़िम)–	२ पल	दाडिमादि चूर्ण।
गुड़	८ पल	
त्रिकटु	३ पल	

- सौवर्चल, अभया, आंवला, पिप्पली, यवक्षार, सोंठ चूर्ण– घी से।
- निर्गुण्डी पत्र स्वरस सिद्ध घृत।
- कण्टकारी घृत– (श्लोक ७८-८३) – कास, श्वास, हिक्का।
- व्याघ्री लेह (श्लोक ८४-८७) – गुल्म, हृद्रोग, अर्श, श्वास, कास।

(b) K+P–
- तमक– पित्त कास चि० अवस्थानुसार प्रयोग।
- तिक्त द्रव्य, रूक्ष कर्म।

[प्रतमक– तमक + ज्वर (व मूर्च्छा) – शीत चि०]

(VI) धूम–
- कर्पासास्थि + अश्वगंधा
- कटु तरोई फल मज्जा + मनःशिला

} धूम।

१. मनः सिला, हरताल, मुलेठी, जटामांसी, मुस्ता, इंगुदी छाल।

२. पुण्डरीक, मुलेठी, गुञ्जा, हरताल, मनःशिला, मरिच, पिप्पली, द्राक्षा, एला, सुरस (तुलसी) मंजरी– वर्ति बनाकर क्षौम बस्त्र में लपेटकर ऊपर से घी लगाकर पिये।

कफ निकल जाने पर गुड़ + दूध (उष्ण) पिये।

५. क्षत क्षय कास चिकित्सा

क्षत–

i. तुरन्त लाक्षा (पलाश, पीपल, आम की लाख) को मधु से लेकर दूध पिये (– सद्यः क्षतघ्न)।

ii. औषध जीर्ण होने पर दूध + शकर + शालि

	रोग स्थिति	उपचार
I	पार्श्व, बस्ति शूल; अल्प पित्त, अग्नि	लाक्षा मदिरा से।
II	अतिसार	लाक्षा + मुस्ता, अतिविषा, पाठा, इन्द्रयव क्वाथ से।
III	दीप्ताग्नि	लाक्षा, घी, मोम, जीवनीय गण, सिता, वंशलोचन, गेहूँ का मैदा (समित) दूध में पकाकर।
IV	सन्धानार्थ	• गन्ने की बाली, बिसग्रन्थि कमल केसर, चंदन से सिद्ध दूध मधु से। • कूष्माण्ड रसायन (श्लो. ६४-६८) आदि।
V	ज्वर दाह	• आम यव चूर्ण क्षीर सिद्ध + घृत • यव सत्तू + शर्करा + मधु – दूध से।
VI	कास	• पिप्पली रसायन।

	रोग स्थिति	उपचार
		• गुड़ क्वाथ + मधु, मरिच। • आमल की चूर्ण क्षीर पक्व घृत युक्त।
VII	कास, पर्व अस्थि शूल	मधूक (महुआ), मधुक (मुलेठी), द्राक्षा, वंश-लोचन, पिप्पली, बला- घी, मधु से।
VIII	रक्त स्राव	मार्गानुसार चि० (रक्तपित्त)
IX	रक्त अति क्षय	बकरी, जांगल रक्त पान।
X	रक्तष्ठीवन	• पुनर्नवा, शर्करा, लाल शालि के कण चूर्ण- द्राक्षारस, दूध घी में सिद्ध कर पान। • महुआ पुष्प, मुलेठी, चौलाई को दूध में सिद्ध कर।
XI	क्षत कास, श्वास, हृद् रोग; वृद्ध, अल्पशुक्र	पिप्पली मुलेठी मिश्री (१-१ तोला); गो दुग्ध, अजा दुग्ध, इक्षुरस (६४-६४ तोला); जौ, गेहूँ, द्राक्षा चूर्ण; आंवला रस (८-८ तोला) मृदु अग्नि पाक → लेह। घी व मधु से।
XII	कास ज्वर	शर्करा, पिप्पली, घी, मधु से मिला/शृत क्षीर।
XIII	वात पित्त से पीड़ित में गात्र भेद। वात → हृद, पार्श्व पीड़ा	वातघ्न द्रव्य सिद्ध घृत व तैल अभ्यंग • जीवनीय द्रव्य सिद्ध घृत पान। • पित्त रक्त के अविरोधी वातघ्न चि०।
XIV	क्षाम, क्षीण, कृश • V-P • K	सर्पिगुड़ + मधु (श्लोक- ४८-५३) • दूध से • मद्य से
XV	रक्त पित्त क्षत क्षयतृट भ्रम दाह	नागबला घृत
XVI	बिना अजीर्ण अतिसार	संग्राही
XVII	उर: क्षत निवृत → K↑ → उर शिर में फटन	धूम्रपान (i) मेदा, महामेदा, बला, अतिबला, मुलेठी कल्क- क्षौम वस्त्र पर लगाकर वर्ति बनाए। जीवनीय घृत पान। (ii) मन: शिला पलाश अजगन्धा वंशलोचन सोंठ से वर्ति बनाए। • इक्षु रस, गुड़/शकर का शर्बत।

विशिष्ट योग--

१. **एलादि बटी–** त्रिजातक (दालचीनी, एला, तेजपत्र)– १/२
पिप्पली २
द्राक्षा, मधूक पुष्प, खर्जूर चूर्ण ४ × ३
शहद से गोलियां बना ले।

गुण– वृष्य, रक्तपित्त, कास, श्वास, अरूचि, वमन, मूर्च्छा, हिक्का, उर: क्षत, क्षय, स्वरभेद, प्लीहा, शोष, आढ्यवात, रक्तनिष्ठीवन, हृद्रोग, पार्श्वरूक, तृट, ज्वर हर।

२. वट, गूलर, पीपल, पिलखन, शाल, प्रियङ्गु, तालमस्तक, जामुन छाल, प्रियाल, पद्माख, अश्वकर्ण – शृतक्षीर से निकला घी + शालि चावल।
उर:क्षत, क्षीण, शुक्र, बल, इन्द्रिय में प्रयोग।

३. मुलेठी व नाग बला के क्वाथ १
घी, दूध १/४ - १/४
पयस्या, पिप्पली, वंशलोचन कल्क १/१६
} सिद्ध घृत – उर:क्षत हर

४. **अमृतप्राश घृत–** बकरी मांस रस का योग।

५. **कूष्माण्डक रसायन–** अश्विनौ निर्मित
छिलका बीज रहित कूष्माण्ड (पेठा)– ४००
↓ स्विन्न
टुकड़े
↓ घृत ६४ में पाक
मधुवर्ण + खाण्ड ४००
↓ ठंडा + प्रक्षेप द्रव्य– • पिप्पली-४ • त्रिजातक २
+ मधु ३२ • सोंठ-४ • धनिया २
(Mixing) • जीरा-८ • मरिच २

६. नागबला मूल/मण्डूकपर्णी/मुलेठी/विश्वौषध (सोंठ) का कल्प रस १ माह तक; १/२ कर्ष से प्रारम्भ, १/२ कर्ष नित्य वृद्धि, ४ कर्ष/तोला पर स्थिर कर दे।

७. नागबला घृत (श्लोक– ७१-७५)– रक्तपित्त, क्षत, क्षय। ६ माह सेवन– रसायनार्थ।

८. **अगस्त्य लेह–** दशमूल, कौंच, शंखपुष्पी, शठी, बला, गजपिप्पली, अपामार्ग, पिप्पली मूल, चित्रक, भृंगराज, पुष्करमूल (प्रत्येक ८ तोला) + जौ (२५६ तोला) + हरड़ १०० + जल १२८० तोला $\xrightarrow[\Delta]{}$ जौ गलने पर कषाय छाने
१०० हरड़ चीर कर गुठली निकाले, (धागे से बांध दे), उबाले, घी में भूने → ↓ ← गुड़ ४०० तोला + घी, तैल, पिप्पली चूर्ण (१६-१६ तोला)
पाक
↓
ठंडा कर मधु १६ तोला मिला ले।

विधि– लेह चाटकर २ हरड़ खा ले।

गुण– पांचों कास, क्षय, श्वास, हिक्का, ज्वर, प्रमेह, गुल्म, ग्रहणी, अर्श, हृद्रोग, अरूचि, पीनस नाशक; धन्य।

९. **वशिष्ठ ऋषि प्रोक्त रसायन–** (८८-९६), अधिक गुणी।

क्षयज कास– सन्निपातज।

चि०– बृंहण, अग्नि दीपन।

१. **मृदु विरेचन–** प्रभूत दोष में।
- आरग्वध कल्क सिद्ध घृत
- त्रिवृत कल्क + द्राक्षारस सिद्ध घृत

२. **स्नेहन–** विदारी/कदम्ब/तालफल सिद्ध घृत दूध।

३. **अनुवासन–** मूत्र कृच्छ, वंक्षण शूल, मेढ्र गुद शोथ। घृत मण्ड + तैल से।

४. **जांगल मांस–**

I. विष्किर
II. विलेशय } उष्ण प्रमाथि → कफ नि:सरण
III. प्रसह ↓ स्रोत शोधन

५. **कास ज्वर अरूचिहर–**
- वासा, कटेरी, गुडुची पत्र मूल फल अङ्कुर – स्वरस कल्क सिद्ध घृत।
- पिप्पली गुड़ सिद्धं वा छाग क्षीर युतं घृतम् ॥१२१॥

श्वास कास हर–
- सेह कंटक भस्म + घी, मधु, शर्करा।
- एरण्ड पत्र क्षार + त्रिकटु, तैल, गुड़
- त्रिकटु चूर्ण + पुराण गुड़ व घी।
- गुटिका–
  - हरड़ सोंठ मुस्ता गुड़ की बनी गोली चूसना।
  - विभीतक मज्जा।

६. **यूष–** कण्टकारी रस में बना मूंग का यूष + हींग, सैंधव + हरा आंवला।
- वातघ्न औषधि क्वाथ सिद्ध दूध।

७. **धूम–** क्षतोक्त,

८. यक्ष्मोक्त स्रोतशोधक चि०।

क्षत क्षय में पथ्य–
- जांगल।
- दुग्ध– गो महिष अश्व हस्ति अज।
- घी व अम्ल फलयुक्त यूष + जौ।

६. श्वास हिध्मा चिकित्सा

श्वास व हिध्मा में हेतु आदि समान होने से चिकित्सा साधन भी समान होते हैं।

कासश्वासक्षयच्छर्दि हिध्माश्चान्यौन्य भेषजैः ।।७६।।

कास श्वास क्षय छर्दि हिध्मा में परस्पर एक दूसरे की औषध प्रयुक्त होती है।

K → संरूद्ध गति → प्राण वायु प्रकोप → श्वास हिध्मा

चिकित्सा– संशोधन, वातघ्न, शमन, बृंहण।

कर्म-२ –

१. वातकर कफ हर कर्म– कफ नष्ट होता है तथा वात बढ़कर अपने स्वाभाविक मार्ग में गति करती है।

२. वातहर कफ कर कर्म– कफ लीन नहीं होता तथा वात का बढ़ा वेग शान्त हो जाता है।

ये दोनों ही कर्म अवस्थानुसार करे, ऐकान्तिकं कार्य हितकर नहीं है। प्राय: वातहर चि० उत्तम है।

"वातकृद्वा कफहरं कफ कृद्वाऽनिलापहम् ।।७४।।
कार्यं नेकान्तिकं ताभ्यां प्रायः श्रेयोऽनिलापहम् ।"

चि० क्रम–

स्नेहन– लवण युक्त तैल } स्रोतों में ग्रथित कफ तनु → कोष्ठ;
स्वेदन– स्निग्ध } स्रोत → मृदु; वात अनुलोमन।

आहार– स्निग्ध अन्न, आनूप रस, दधि की मलाई।

(A) संशोधन–

मृदु वमन – विशेषत: कास, वमन, हृदग्रह, स्वर शैथिल्य में।
– पिप्पली + सैंधव + मधु मिला – वात अविरोधी।
– दुष्ट कफ निर्हरण।

विरेचन – आध्मान, उदावर्त, तमक श्वास में।
- मातुलुंग, अम्लवेतस, हिंगु + विड् लवण + वातानुलोमक अन्न।
- त्रिवृत्त।

धूम– लीन मल हरणार्थ
- गुग्गुलु/मन:शिला/साल निर्यास
- हरिद्रापत्र, एरण्डमूल, लाक्षा, मन:शिला, देवदारू, हरताल, जटा मांसी को पानी से पीसकर वर्ति बनाऐ। घी से स्निग्ध कर पान करे।
- जौ (घी से स्निग्ध) का धूम।

स्वेदन– • उर व कण्ठ का

- अस्वेदनीय में मृदु
- दुग्ध + शर्करा वाष्प से; रोगी को स्नेहित कर।
- स्वेद अध्यायोक्त उत्कारिका, उपनाह

आहार– (अति) संशोधन → वात प्रकोप – वातघ्न, स्निग्ध, रस आदि।

(B) शमन चिकित्सा–

प्रयोग– अनुत्क्लिष्ट कफ, अस्विन्न, दुर्बल।

[इनमें संशोधन → V↑ → मर्म पीड़न → प्राणनाश]

१. कषाय–

दशमूल शठी रास्नाभार्ङ्गी बिल्वर्द्धि पौष्करैः।
(कचूर) (ऋद्धि) (पुष्कर मूल)
कुलीरशृङ्गा चपलातामलक्यमृतौषधैः ।।२६।।
(काकड़ाश्रृंगी) (पिप्पली) (आंवला) (गिलोय) (सोंठ)

इस कषाय के जीर्ण होने पर इन्हीं द्रव्यों से सिद्ध पेया पिये।

आहार–

शालि, साठी, गेहूँ, जौ, मूंग, कुलत्थी।
अर्क अंकुर क्षीर मिला सत्तू-मधु से।
श्लोकोक्त क्वाथ + यव सत्तू
यवक्षार, हींग, घी, त्रिकटु, मातुलुङ्ग।
प्यास लगने पर– दशमूल/देवदारू क्वाथ।

- मिट्टी पात्र में पिप्पली मूल, हरड़, विडंग, चित्रक कल्क का १/२ अंगुल मोटा लेप कर दे। कठोर हो जाने पर १ माह तक के लिये तक्र रख दे।
  यह तक्र– श्वास कास नाशक, अग्निदीपक है।
- भार्ङ्गी + सोंठ – उष्ण जल से।
- यवक्षार + मरिच – उष्ण जल से।

यूष– दशमूल क्वाथ में पकी मूंग का यूष।

दोषानुसार योग–

- पित्त कफज हिक्का श्वास – सप्तपर्ण पत्र/शिरीष पुष्प स्वरस।
- पित्त अनुबंधी हिक्का श्वास – वंश लोचन, पिप्पली, मुलेठी, गुड़ + सोंठ, – उत्कारिका।
- वात-पित्त अनुबंध – शालि खाकर; सुवर्चला रस, त्रिकटु, घी से सिद्ध दूध पिये।
  – अजाक्षीर ४ गुणे जल में सिद्ध कर गुड़ व सोंठ मिलाकर पिये (सममात्रा)।

- कफाधिक्य – अश्वगन्धा चूर्ण मधु से।
  – त्रिफला, पाठा, बृहती फल व मूल (क्षार) मधु से।

अन्य लेह–
- लोह भस्म मधु से द्रवित कर।
- शठी, पुष्कर मूल, आंवला
- पिप्पली, पुष्कर मूल
- कपित्थ स्वरस

  } मधु से।
- आंवला सैंधव पिप्पली – कपित्थ स्वरस से।
- हरड़ विडंग पिप्पली मरिच – घी व मधु से।
- त्रिकटु + यवक्षार – घी, मधु व तैल से।
- आंवला + कैथ स्वरस – पिप्पली व मधु से।

नस्य (व पान)– क्रम → शीत - उष्ण - शीत - उष्ण ....।
- लहसुन/प्याज/शलजम रस
- चन्दन – स्त्री दुग्ध से
- पिप्पली + शर्करा
- मुलेठी + मधु
- घृत अच्छ + सैंधव
- मधुर औषध सिद्ध घृत – स्त्री दुग्ध से
- श्यामा सिद्ध घृत।

घृत–
- पुराण घृत (१) + सैंधव (१/२) पान
- धान्वन्तर घृत (प्रमेहोक्त)
- वृष घृत (रक्तपित्त अधि०)
- दाधिक घृत (गुल्म)
- त्र्यूषणादि घृत (छर्दि)

अन्य– शीताम्बुसेक, सहसा त्रास, विक्षोभ, भय, हर्ष, ईर्ष्या, उच्छ्वास रोध, कफवातघ्न उष्ण वातानुलोमन।

अनुबंधी श्वास हिध्मा– क्षीण क्षत अतिसार रक्तपित्त के साथ।
- मधुर स्निग्ध शीतल चि०।

प्रयोज्य भस्म आदि– मुक्ता, प्रवाल, वैदूर्य, शंख, स्फटिक, ताम्र लौह, रजत।

७. राजयक्ष्म चिकित्सितं

१. **कोष्ठशोधन–** मृदु, सस्नेह, कृश न करे।

बलिनो बहुदोषस्य स्निग्धस्विन्नस्य शोधनम् ।।३।।

- वमन– मदन फल + दूध
- विरेचन– त्रिवृत्त/काली निशोथ/अमलतास– शर्करा, मधु व घी से।

२. **बृंहण-दीपन–** वातघ्न, लघु, वीर्य युक्त, सुपच्य, बल्य शालि, षष्टिक, गोधूम (गेहूँ) जौ, मूंग, (मूली)
मूंग यूष– पिप्पली, सोंठ युक्त।
अजा– दुग्ध, घृत, मांस; कौवा, सर्प, गधा मांस छल से।
अजा रस + पिप्पली, यव, कुलत्थी, सोंठ, दाडिम, आंवला, स्नेह– षट् विकार नाशक [पीनस, श्वास, कास, अंस, शिर शूल, स्वर भेद]।

चन्द्रकान्त– बेर, दाडिम निर्यास, बीज निकालकर पीसी द्राक्षा (मुनक्का) – धान्याम्बु (धनिया के जल) में भिगोकर मल ले। छानकर सौवर्चल, त्रिकटु, तेजपत्र, एला, अजवायन, मधु, कर्पूर, लौंग, केसर मिलाये।
शोषहर, अग्नि रूचिप्रद।

३. **पान–**
- चार पर्णी (मुद्र, माष शाल, पृश्नि), धनिया, सोंठ से सिद्ध जल।
- पित्त प्राधान्य– लघु पंचमूल सिद्ध जल।

४. **घृत–**
- दशमूल क्वाथ, दूध सिद्ध घृत।
- दशमूल सिद्ध दूध से निकला मक्खन– पिप्पली व मधु से।
  – परम् स्वर बोधन, षट् विकार, ज्वर नाशक।
- ५ पंचमूल (बृहत् , लघु, तृण, मध्यम, वल्ली) सिद्ध दुग्धोधृत घृत।
- जीवन्ती, मुलेठी, द्राक्षा, इन्द्रयव, पुष्कर मूल, शठी, पिप्पली, कटेरी, गोक्षुर, बला, नीलोत्पल, तामलकी (भू आंवला), त्रायमाण, दुरालभा – के कल्क से घी को ४ गुने जल में पकाये (घी = जल – इन्दु)।
  – राजयक्ष्माहर।
- अश्वगन्धा के साथ पकाये दूध से निकला घृत– मिश्री मिले दूध से।
- मांस सर्पि – वात पित्तघ्न।

पाराशर घृत (श्लोक ४०-४१); वासाघृत, शतावरी घृत।

५. सर्पिगुड (श्लोक ४८-५२)

६. **लेह–**
खर्जूर पिप्पली द्राक्षा, हरड़ सिंघाड़ा दुरालभा
शतावरी शठी पुष्करमूल तुलसीशर्करा गुड़ } घी व मधु से।
सोंठ चित्रक लाजा पिप्पली आंवला गुड़

७. **चूर्ण–**
- सितोपलादि – मधु व घी से।
  त्वगेला पिप्पली क्षीरी शर्करा द्विगुणाः क्रमात।
  दालचीनी ऐला वंशलोचन

- तिल/उड़द/अश्वगन्धा चूर्ण– मधु व अजाघृत से।

८. **विकार चिकित्सा–**

(i) **स्वरसाद–**

(a) वातज–
- बदरी (बेर) पत्र कल्क घी में भूनकर + सैंधव।
- गुड़ में पका ओदन + घी;/खीर खाकर उष्ण जलपान।
- स्निग्द स्वेद।

(b) पित्तज–
- मधुर रस द्रव्य चूर्ण - मधु व घृत से।
- क्षीरि वृक्ष अंकुर क्वाथ, कल्क सिद्ध घी + मधु।
  अनुपान– पका, ठंडा दूध।
- मुलेठी मिली खीर + घी।
- नस्य–
  - बला, शालपर्णी, विदारी, मुलेठी, सिद्ध घृत लवणयुक्त।
  - कमल, मुलेठी, पिप्पली, बृहती पक्व क्षीर का घी।
- सिरा व्यध– ललाट गत।

(c) कफज– कटु रस द्रव्य गो मूत्र से, रूक्ष भोजन।
- कट्फल आंवला त्रिकटु – तैल व मधु से।
- त्रिकटु यवक्षार चित्रक चव्य भार्ङ्गी हरड़ – मधु से।
  जौ को यमक (तैल + घी) में भून कर, पिप्पली और आंवले के क्वाथ में यवागू बनाकर पिये।
- पिप्पली + सोंठ खाये या तीक्ष्ण वमन ले।

उच्च भाष से विहत स्वर– मधुर द्रव्य पक्व दुग्ध + शर्करा मधु।

(ii) **अरोचक (Anorexia Nervosa)–**

- शुद्धि– बहि; अन्त:, चित्त।
- हृद औषध।
- दन्त पवन (Tooth Brushing)– द्वौकालौ।
- मुख धावन– कषाय।
- प्रायोगिक धूम।

शशाङ्क किरण– तालीश पत्र + मिश्री + कर्पूर → वटी।

(a) वातज– वच के जल से वमन
एला, भार्गी, यवक्षार, हींग – घी से पान।

(b) पित्तज– गुड़ के शर्बत से वमन
शर्करा घी सैंधव मधु चाटे।

(c) कफज– नीम जल से वमन
दीप्यक (अजवायन) आरग्वध क्वाथ मधु से।

(d) सन्निपातज–
मुख धावन– त्रिकटु त्रिफला हल्दी यवक्षार + मधु ।
कवल– आर्द्रदाडिम निर्यास + जीरा + श्वेत शर्करा + मधु, घी।

अरोचकहर वि० योग–

१. एलादि चूर्ण–

- एला १
- दालचीनी २
- नागकेशर ३
- मरिच ४
- पिप्पली ५
- सोंठ ६ भाग
- शर्करा २१ भाग

गुण– कफ प्रसेक, अरूचि, हृदरोग, पार्श्वशूल, कास, श्वास गलरोग।

२. षाडव चूर्ण

३. तालीसादि चूर्ण–

तालीश पत्र १
मरिच २
सोंठ ३
पिप्पली ४
दालचीनी १/२
इलायची १/२
शर्करा ३२

गुण– रूचिकर अग्निदीपक, कास, श्वास, वमन, प्लीहा, हृद पार्श्वशूल; पाण्डु, ज्वर, अतिसार नाशक, मूढ वात अनुलोमन।

(iii) प्रसेक–

- कटु तिक्त द्रव्यों से वमन।
- स्निग्ध, उष्ण उपचार

कफ के अति प्रसेक → V कोप → क्षीण कफ का भी निर्हरण।

(iv) वमन– प्रसेकोक्त

(v) पीनस– प्रसेकोक्त; अभ्यंग, स्नेह, स्वेद।

- स्निग्ध उत्कारिका पिण्ड से शिर पार्श्व गले का स्वेद।

(vi-viii) शिरः, अंस, पार्श्वशूल– दोषानुसार चि०।

लेप/उपनाह– तगर मुलेठी सौंफ कूठ चन्दन। (संसर्ग में) प्रदेह– गुग्गुलु देवदारू चन्दन मुलेठी घृत। नस्य, धूम, भोजनोपरांत स्नेह पान, बस्तिकर्म। अभ्यंग– चंदनादि

तैल, शत धौत घृत। रक्त मोक्षण– दोषानुसार V–शृंग; P–जलौका; K–अलाबु।
परिषेक– मुलेठी जल।

(ix) **अतिसार–** अग्निमान्द्य → पिच्छायुक्त अतिसार।
अतिसार, ग्रहणी चि०।

I. सोंठ + इन्द्रयव – तण्डुलाम्बु से। पान।
II. पाठा नीम अजवायन चूर्ण तक्र से।
III. बेर, कैथ का गुदा व सोंठ से बनी पेया के मण्ड से जामुन व आम की गुठली का चूर्ण दे।

अन्य– अम्लवेतस, अर्जुन, बिजौरा, धातकी, दाडिम, चुक्रिका (चौपतिया), मेंहदी, जुही, दुग्धिका, दधि, तक्र, घृत (अम्ल लवण)।

(x) **कृशता–**

पुरीषं यत्नतो रक्षेच्छुष्यतौ राजयक्ष्मिणः।
सर्वधातुक्षयार्तस्य बलं तस्य हि विड्बलम्॥१०२॥

कृश होते रोगी के मल की रक्षा यत्नपूर्वक करे, क्योंकि सब धातुओं के क्षय होने से इसका मल ही बल होता है।

(x) **ज्वर–** स्वचिकित्सा।
दुःसह–

बह्वामय समूहो हि यक्ष्मात् सोऽतिदुःसहः॥१०३॥

बहुत रोगों का समूह होने से अतिकष्ट से सहने योग्य।

- अजा रसायन
- द्राक्षारिष्ट
- द्रोणि अवगाहन– सरसों (गौर) कल्क जल (सुखोष्ण)।
- बस्ति– क्षीर सर्पि
- दैवव्यपाश्रय– अथर्वोक्त यज्ञ/पूजन।

८. छर्दि हृद्रोग तृष्णा चिकित्सा

छर्दि–
चिकित्सा– दोषदेहानुरोधतः – दोष व देह की आवश्यकतानुसार।
सामान्य–

I. **लंघन– आमाशयोत्क्लेश भवाः प्रायश्छर्द्यो हितं ततः॥२॥**
निषेध– वातज छर्दि।
लंघन, अतिवमन → वात प्रकोप → धातु क्षय।

II. वमन– बलिनो बहुदोषस्य वमतः प्रततं बहु ॥३॥
बली में, बहुत दोष, निरन्तर, अतिमात्रा में वमन होने पर।

III. विरेचन– हृद्य, फल रस, दूध से। क्रमशः मृदु .....।

IV. शमन–
- शोधन के साथ।
- रूक्ष, दुर्बल में।

सात्म्य– परिशुष्क, प्रिय, लघु, अन्न, यूष, रस, काम्बलिक, शाक, लेह, राग षाडव, सूखे मेवे, सुगन्ध। भोजन के तुरन्त बाद सहसा मुख शीताम्बुसेचन।

विशेष–

१. **वातज–**
- घी + सैंधव हल्का गरम कर पिये – कास व हृद् द्रव (Palpitation) होने पर।
- त्रिकटु + सैंधव – घी (ज्यादा) से।
- दूध + पानी – समभाग
- भोजन + सोंठ, दधि, घृत, दाडिम।
- स्नेह विरेचन– कोष्ण (गुनगुना), सलवण। (एरण्ड तैल) ।

२. **पित्तज–**

I. संशोधन–
- विरेचन– द्राक्षा, इक्षु रस + त्रिवृत।
- वमन– पित्त → कफस्थान
  मधुर, तिक्त द्रव्यों से।

II. तर्पण–
लाजा सत्तू + शर्करा + मधु – जल में घोलकर।
मूंग यूष, जांगल रस, शालि, साठी।

III.
- मिट्टी का ढेला अग्नितप्त कर जल में डाले, ठंडा होने पर पानी पिलाये।
- मूंग, खस, पिप्पली, धनिया कूटकर रात भर के लिये पानी में भिगो दे प्रातः पिये।
- द्राक्षा, इक्षु रस, गुडुची शीत कषाय, दूध।
- जामुन, आम पत्र; खस; वट, पीपल अंकुर का क्वाथ/शीत कषाय – मधु से।
  – वमन, ज्वर, अतिसार, मूर्च्छा, तृष्णा नाशक।
- मूंग के पत्तों से क्वथित जल।
- मूंग दाल पानी + आंवला रस।
- हरड़/द्राक्षा/बेर – मधु से चाटे।
- शालि धान्य + स्वर्ण गैरिक चूर्ण – ठंडे जल से।

- चन्दन, द्राक्षा, जटामांसी, खस
- मुस्ता, गैरिक } पीसकर पिये।
- मूर्वा, मधु से।
- मुलेठी, कौंच मधु से।
- चन्दन, आंवला रस से।

३. **कफज–**
- बली – वमन – नीम, पिप्पली, मदनफल, सरसों– कोष्ण जलेन।
- दुर्बल – उपवास।
- आरग्वधादि गण क्वाथ शीतल कर मधु से
- त्रिफला पिप्पली चव्य का क्वाथ
- मन:शिला पिप्पली मरिच बिजौरा रस – मधु से चाटे।
- विडंग + त्रिफला – मधु से।
- कैथ + त्रिकटु।

४. **द्विष्टार्थज–** अनुकूल।

५. **क्रिमिज–** हृद्रोग औषध।

सतत वमन– वातघ्न, स्तम्भन, बृंहण, सर्पिगुड,
घृत– कल्याण, जीवनीय, धान्वन्तर, त्र्यूषण।

हृद्रोग–

१. **वातज–**
- नस्य, पान, वस्ति– बिल्व रास्ना जौ बेर देवदारू पुनर्नवा कुल्थी पंचमूल क्वाथ से सिद्ध तैल।
- पेय– लघु पंचमूल/सोंठ से पक्व जल/वारूणी मण्ड।
- दूध, दधि, गुड़, घृत, औदक, आनूप प्रयोग– केवल वातज में (शेष में वर्ज्य)।

प्रयोग– दीप्ताग्नि, द्रव (Palpitation), आयाम (खिंचाव–Tightness in Chest), आम रहित अवस्था में।

निषेध– आमयुक्त – स्तम्भ, जाड्य।

वात + कफानुबन्ध – रूक्ष व उष्ण चि०।
- स्निग्ध स्वेद, संस्कृत घृत।
- हृदरोग, श्वास, गुल्म – सौवर्चल (संचल नमक) – २ पल, हरड़ (५०) से घृत १ प्रस्थ सिद्ध करे।
- पार्श्व हृद्शूल गुल्म– सोंठ, आंवला, सैंधव, कायस्था (काकोली), हींग, पुष्कर-मूल, हरड़ से सिद्ध घृत।

- अपतन्त्रक हृदरोग, श्वास– दाडिम, कृष्ण लवण, हिंगु, शुण्ठी, अम्लवेतस चूर्ण।
- विकर्तिका शूल हर (काटनेवत – Angina Pectoris)–
  (a) पुष्करमूल, शठी, सोंठ, बिजौरा मूल, हरड़ को पीस कर यव क्षार, घृत, कांजी, सैंधव के साथ पिये।
  (b) यवानी (अजवायन), सैंधव, यवक्षार, वच, कालाजीरा, सोंठ, दारू हल्दी, बिजौरा, पलाश (ढाक), शठी, पुष्कर मूल का क्वाथ – सुखोष्ण।
- आयाम, स्तम्भ, शूल (आमयुक्त)/द्रव, आयाम, प्रमोह (Faint)– तीतर, मुर्गा मांस रस + स्नेह।
  बला तैल (शा० ४/५१); सुकुमारक (प्रमेह), यष्टाह्वशतपाक (वातशोणित), महास्नेह (४ रों– घृत, तैल, वसा, मज्जा), त्र्यूषणादि घृत (चि० ८/२७)।

२. पित्तज–

हृद्य विरेचन– द्राक्षा, इक्षुरस, मिश्री, मधु, फालसा + त्रिवृत (हेमाद्रि)।
वस्ति– मुलेठी से सिद्ध तैल + मधु।
पान– कटुकी + मुलेठी कल्क– मिश्री मिले जल से।

३. कफज–

- स्वेदन
- वमन– नीम + वच क्वाथ से।
- **पिबेच्चूर्णं वचाहिङ्गुलवणद्वयनागरात् ।।**
  सैला यवानिक कणा यवक्षारात सुखाम्बुना ।।३२।।
  वचा, हिंगु, सैंधव, सौवर्चल, सोंठ, इलायची, अजवायन छोटी पिप्पली, यवक्षार– सुखोष्ण जल से।
- रोहितक, पीपल, खदिर, गूलर, अर्जुन, पलाश, बरगद के क्वाथ में त्रिकटु, निशोथ चूर्ण मिलाकर बनाया अवलेह– गरम जल से।
- कफज गुल्मोक्त घृत, क्षार; शिलाजीत, ब्राह्म रसायन, आमलक लेह (च्यवनप्राश), अगस्त्य लेह (कास)।

शूल–

वात —रूद्धगति→ आमाशय में कोप–
- I. भोजन करते ही तीव्र शूल (बाद में धीर-२ शांत)
- II. पच्यमानावस्था में शूल
- III. पच जाने पर शूल
- IV. सभी अवस्थाओं में तीक्ष्ण शूल।

चि०– वमन, विरेचन; लंघन, पाचन, अनुलोमन।

I. कूठ, वायविडंग, सैंधव, सौवर्चल, तिल्वक, देवदारू, अतीस चूर्ण गरम पानी से।
II. विरेचन फलों से।
III. स्नेह विरेचन।
IV. तीक्ष्ण मूलों से विरेचन।

४. **कृमिज–** सर्व कृमिघ्न चि०।

तृष्णा– वात पित्तघ्न, बाह्य-अन्त: शीत, शमन, शोधन; दिव्याम्बु + मधु; तप्त लोष्ट कपाल सिकता निर्वापित जल; तृण पञ्चमूल से पका जल ठंडा कर शर्करा के साथ दूध मिश्री घृत (अपथ्य– लवण, अम्ल);

नस्य– शीत द्रव्य सिद्ध क्षीरघृत; इक्षु रस, उष्ट्र अस्थि स्त्री दुग्ध से घिसकर + शर्करा। संशमन गण्डूष (सू०अ० ३१)।

१. वातज– दधि + गुड़
विदार्यादि क्वाथ

२. पित्तज–
- पक्व उदुम्बर रस + शर्करा
- उदुम्बर (गूलर) क्वाथ/शीत कषाय + शर्करा।
- सारिवादि गण क्वाथ + शर्करा
- क्षीरिवृक्ष/मधुर औषधि (द्राक्षा) से बनी कल्पनाएं।

३. कफज–
- निम्ब पत्र जल से वमन
- बिल्व, अरहर, पंचकोल, तृण पंचमूल पक्व जल
- हल्दी से पका जल + मधु + शर्करा
- त्रिकटु पटोल निम्ब पत्र युक्त मूंग यूष। जौ।

४,५. सन्निपातज व आमज–
- दोषघ्न।
- त्रिकटु भिलावा वच + अम्ल फल/उष्णोदक/मस्तु।

६. अन्नोद्भवा– उष्ण मण्ड/शीत मन्थ।
७. श्रमजन्य– मिश्री युक्त मन्थ
८. आतप– जौ, बेर के सत्तू → मन्थ + मिश्री
९. शीत स्नान जन्य– मद्याम्बु, गुड़ाम्बु।
१०. मद्यजा– स्नान कर
- मद्य + जल (१/२ भाग)
- मद्य + लवण, अम्ल।

११. स्नेह पान → तीक्ष्ण अग्नि → तृषा
– प्राकृत जल।

- स्नेह अपाक जन्य – उष्ण जल
- स्नेह जीर्ण – मण्ड

१२. स्निग्ध आहार– ठंडा गुड़ का शर्बत
१३. गुरू आहार– गरम जल से वमन
१४. क्षयज– बृंहण
१५. कृश, रूक्ष– दूध, अजा मांस रस
१६. ऊर्ध्व वात के साथ तृषा– क्षय कास हर द्रव्य सिद्ध क्षीर।
१७. रोगोपसर्गज– धान्याम्बु + मिश्री + मधु; रोग चि०।

९. मदात्यय चिकित्सा

मद्य व विष के गुणों में सादृश्य होता है, विष तीक्ष्णादि गुण की उत्कर्षता से विजातीय से शांत होता है, जबकि मद्यज रोग (हीन, मिथ्या, अतियोगजन्य) सजातीय (समपीतेन) से शान्त होता है।

मद्य–

मद्यमम्लेषु च श्रेष्ठं दोषविष्यन्दनादलम् ।।

मद्य अम्ल द्रव्यों में श्रेष्ठ है श्रेष्ठ दोष स्रावक; तीक्ष्ण, उष्ण, दीपनीय तथा सात्म्य होने से श्रेष्ठ धातु साम्यकर।

मदात्यय–

नातिमात्रेण पीत मद्य → अन्नरस क्लेद विदग्ध
(अम्ल, विदाही) ↓
↓ क्षार
उत्क्लिष्ट दोष ↓
↓ मद, तृष्णा, मोह, ज्वर अन्तर्दाह, विभ्रम।
स्रोत रूद्ध वात ↑
↓
सिर, अस्थि, सन्धियों में तीव्र वेदना।

चिकित्सा–

- समपीत सजातीय मद्य (अम्ल) + पूर्व पीतजन्य क्षार → मधुर।
- संशोधन
- औषधि ७-८ दिन तक – विमार्ग स्थित मद्य जीर्ण
- बृंहण – दूध (ओज तुल्य गुण)
- हर्षण– सुखकर पञ्चेन्द्रिय विषय सेवन।

- जो दोष अधिक हो प्रथम उसी की चि० करे। तुल्यदोष में– I. कफ, II. पित्त, III. वात चि०। प्राय: सभी मदात्यय अन्त में पित्त वाताधिक होते हैं।

१. **वातोल्वण–**
- मद्य पिष्टकृत (शालि पीसकर बना) + मातुलुङ्ग (Citrus Medica), वृक्षाम्ल (Garcinia Indica), बेर, अनार, अजवायन, अजमोद, हपुषा, जीरा, त्रिकटु, त्रिलवण (सैंधव, सौवर्चल, विड), आर्द्रक। शीत।
- आम से बने राग, षाडव।
- गेहूँ, उड़द, आर्द्रक, सोंठ, शुक्त; अनार रस, लघुपंचमूल क्वाथ; कंबल ओढ़ना, अगरू – लेप/धूम।
- यौवन से उष्ण प्रिया का आलिङ्गन।

२. **पित्तोल्वण–** गुड़/मधु का शर्बत
मद्य + मधुर/कषाय वर्ग + मधु
शालि, सांठी, मटर, मूंग, आंवला, परवल, अनार।

(a) **प्यास, दाह–**
- वमन– उत्क्लिष्ट कफ व पित्त का।
- शीताम्बु/मद्य + इक्षुरस/द्राक्षारस से।
- तर्पण (सत्तू से)।

(b) **कास के साथ रक्त निष्ठीवन, जी मिचलाना–** गुडुची, मुस्ता, परवल, सोंठ।
V, P ↑ → अति तृट् –
I. शीत द्राक्षारस
II. मधुर, अम्ल रस से आहार (अजा मांस)
III. मद्य + अधिक जल या मुस्ता दाडिम लाजा का जल।

(c) अतिपान → रस/जल धातु क्षीण → तेज ↑ –
शुष्क गलतालु ओष्ठ, जीभ बाहर आना।
- शीत जल पान; मुख लेप– बेर, अनार, चौपतिया .....।

(d) मद्यपान की ऊष्मा + पित्त रक्त → त्वक् दाह
- दाहज्वरोक्त, बाह्य अन्त: परिमार्जन।

अन्य– चांदनी वत मुक्ता, शीत जल से परिषेक, अवगाहन। अलिञ्जर– शीत जल भरे, कमल पत्र ढपे लाल मटके। पुत्र; युवावस्था को किञ्चित स्पर्श करती प्रिया– हरि चन्दन से आर्द्र। जलाशय स्मरण।

दाह शान्त न होने पर– जाङ्गल रस से तृप्त कर शाखाश्रित रोहिणी सिरा का वेधन।

३. **कफोल्वण–**

- वमन, उपवास
- शीताम्बु/मुस्ता पर्पटक सिद्ध जल/शालपर्णी/सोंठ/बला/खस/कौंच सिद्ध जल।
- निराम में भूख लगने पर– लाजा सत्तू + मधु/गुड़ + अजवायन, सोंठ (रूक्ष)।
- पुराण मधु, द्राक्षारिष्ट

अष्टाङ्ग लवण– स्रोत शोधक।

सिता, सौवर्चल, जीरा, इमली, अम्लवेतस	– १ भाग
दाल चीनी, एला, मरिच	– १/२ भाग

निर्मदक– शुण्ठी, मरिच, हरित (धनिया प्याज आदि), आर्द्रक पेशी, को बिजौरा रस से अम्ल कर भूने (पानी जला दे)। करौंदा, मसाले मिलाकर अष्टांग लवण मिला दे। इसे खाकर स्वच्छ पुराना माधव पिये।

पथ्य– उष्ण, अम्ल, कटु, तिक्त, कुलत्थी, यव, गेहूँ, शुष्क मूली यूष, जांगल मांस, पटोल, अनार।

- सकाम स्त्रियों के साथ जागरण।

शेष १० सन्निपातों की इसी प्रकार चि० करे।

हृद्य पानक– सर्व मदात्यय में प्रयोग। दालचीनी, नागकेसर, पिप्पली, मरिच, जीरा, धनिया, फालसा, महुआ, एला, देवदारू, मिश्री, कपित्थ रस से पानक बनाकर कर्पूर मिला ले।

- रूचिकर, अग्निदीपक।

क्षीर प्रयोग–

१. संशुद्धि शमन के बाद भी दोष बना रहना।
२. कफ क्षीण → कार्श्य, लाघव।
३. वात पित्ताधिक्य में।

दूध से रोग नष्ट हो जाने व बल आ जाने पर (नित्य मद्यपी में) क्रम से थोड़ा-२ मद्य देना प्रारम्भ करे, जिससे ध्वंसक व विक्षय न हों।

ध्वंसक विक्षय– घृत क्षीर बृंहण वस्ति; वातघ्न अभ्यङ्ग आहार आदि।

मद्य का महत्व–

- आहार के आदि मध्य व अन्त में प्रयोग।
- सुस्थित मन।
- मद्य सेवी को मेद वात व कफ विकार नहीं होते। तथा यह रोग बिना मद्य के शीघ्र ठीक नहीं होते।
- आनूप/जांगल मांस परिणमनार्थ आवश्यक।

- तीव्र वात रोग में लहसुन, मांस व मद्य का प्रयोग।
- शस्त्र आदि कर्मों में पीड़ाहर, सुखसम्पादन।
- अग्नि उत्तेजक; शोक, श्रमहर; आरोग्य, बल्य पुष्टि।

मद्यपान विधि– स्नान, देव आदि प्रणाम, स्त्रियों के साथ,

I. हृद्य चूर्ण– तालीशादि/एलादि/वय: स्थापक रसायन।

II. स्फटिक शुक्ति में जल मिला शीत मद्य प्रथम भूमि पर कुछ गिराकर
   - ३ (प्याली) चषक पिये।
   - आहार + घृत, आर्द्रक, लहसुन (हरित)/मांस + सौवर्चल; के साथ २ या ३ बार पुन: पान।
   - रात्रि में (संभोग काले) अल्प पान।

दृष्टि भ्रान्ति, मन: क्षोभ होने से पूर्व ही विरत हो जाये।

प्रकृति	उपचार	काल	↑	मद्य
वात	स्निग्ध व ऊष्ण अन्न के साथ	भोजनमध्ये	V	शालिपिष्ट, गुड़
पित्त	शीत; मधुर, स्निग्ध सिद्ध अन्न	भोजनोपरांत	P	जल/मधुयुक्त
कफ	जौ, गेहूँ भोजन उष्ण उपजार से जांगल मांस, मद्य + मरिच।	भोजन पूर्व	K	मार्द्वीक अरिष्ट माधव।
सम		इच्छानुसार		

मद-मूर्च्छा– P ++ V++

पित्त वातघ्न, शीत; सिता, द्राक्षा, इक्षु, खर्जूर, गम्भारी स्वरस; दुग्ध, द्राक्षा, दाडिम सिद्धयूष, साठी, शालि, मूंग, जौ; जीवनीय गण सिद्ध घृत; कल्याणक (उन्मादोक्त), पंचगव्य घृत (अपस्मार), षटपल घृत (राजयक्ष्मा) ।

दूध + चित्रक, पिप्पली रसायन, शिलाजीत रसायन; त्रिफला + घृत मधु शर्करा।

सतत वेग– मुख नासा (श्वास) अवरोध
दुरालभा/मुस्ता – शीताम्बु से
आंवला रस/हरड़ क्वाथ सिद्ध घृत।
पञ्चकर्म (वमन, विरेचन, निरूह, अनुवासन, नस्य), रक्त मोक्षण; धैर्य।

तीव्र वेग– सन्यासोक्त तीक्ष्ण नस्य।

- विषजन्य मद-मूर्च्छा– विषघ्न चि०।

सन्यास (Coma)–

- शीघ्र चि०
- तीक्ष्ण नस्य, अंजन (चन्द्रोदय वर्ति)

- धूम, प्रधमन (मरिच चूर्ण)
- नखान्तर में सूची भेदन, बाल खींचना
- मुख में कटु व अम्ल रस लगाना
- चेतना आ जाने पर – लशुन स्वरस पान
- लघु आहार, कटु तीक्ष्ण उष्ण (स्रोत शोधक)।
- विस्मापन, संगीत, व्यायाम।
- स्रंसन, लेखन, धूम, रक्तमोक्षण से उपचार– आवृत्ति न होने के लिये।

१०. अर्श चिकित्सा

अर्श–

- (i) अस्रावी– अग्नि/क्षार; श्रेष्ठ द्रव्य-भल्लातक, तक्र।
- (ii) स्रावी– रक्तपित्तवत चि०; मृदुक्षार; श्रेष्ठ द्रव्य– वत्सक (कुटज) त्वक्, तक्र।

- (i) दृश्य– शस्त्र, क्षार, अग्नि, लेप, अभ्यङ्ग – (5)
- (ii) अदृश्य– अन्त:परिमार्जन – (6th)

- (i) नूतन, अल्पदोष– औषध – (7th)
- (ii) चिर

(5), (6th), (7th) } कुल ७ कर्म।

क्षार– जो अर्श बहुत उठे न हों, मृदु हों।

क्षारसूत्र– छत्राकार (छाते जैसे ऊपर फैले)।

शस्त्र– उच्छ्रित, अल्पमूल; बडिश का प्रयोग।

शस्त्र व अग्नि कर्म–
- प्राणवान रोगी में बड़े अर्श होने पर।
- दृढ़ता, काठिन्य, कर्कशता।

} (काटकर जलाये)

शस्त्र व क्षारकर्म– बड़े (महत्) अर्शों में।

पाटन (चीरना)/सूचीकूर्च से विकुट (पाछना) करने के बाद क्षार लगाना।

सभी स्थानों के अर्शों में इसी प्रकार चि० करे।

गुद अर्श स्थितियां (Positions) व चिकित्सा क्रम–

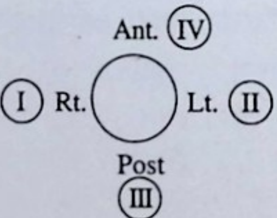

उपक्रम–

पूर्वकर्म–
- स्नेहन, स्वेदन – वात वेदना वृद्धिशमनार्थ
- स्निग्ध उष्ण अल्प द्रवप्राय अन्न
- स्वस्त्ययन
- मुक्त विण्मूत्र

काल– साधारण, व्यभ्रे (बादल न हों)।

मुख्य कर्म– सम फलक पर सूर्याभिमुख गुदा कर उत्तान (Supine) लिटाकर उन्नत कटि देश (कमर के नीचे कुछ रख कर) करे; नाभि से ऊपर का भाग दूसरे मनुष्य की गोद में रखे; यन्त्रण शाटक से ग्रीवा, सक्थि सन्धि बांधे।

घृताभ्यक्त गुदा में घृत लगा अर्श यन्त्र ऋजुवत धीरे-२ प्रणिधान करे। यन्त्र प्रविष्ट हो जाने पर प्रवाहण के साथ-२ अर्श का अभिवीक्षण (Inspection) करे, पिचु/प्लोत से अवगुण्ठित कर, शलाका से उत्पीड्य (दबाकर) (Swabbing & Grasping by Forcep) अग्नि/क्षार कर्म कर, निर्वाप (अग्नि → शीत; क्षार → अम्ल) करे।

पश्चात् कर्म– यन्त्र निकालकर रोगी को उठाये तथा गुद, जघन व वंक्षण का अभ्यंग कर यथाकाल (समय पर) उष्णोदक कोष्ठ में अवगाहन (Hot water tub) कराये। निवात आगार (गृह) में प्रविष्ट कर आचारिक उपदेश।

अवशेष का पुनर्दाह करे। ७ रात्रि के बाद उपक्रम पुन: कर अवशेष या अन्य अर्शों की क्रमश: चि० करे।

तृतीय वलि के अर्श प्रत्याख्येय कहकर उपचार करे/न करे (अन्य)।

सम्यक् दग्ध लक्षण– वातानुलोमन, अन्नाभिरूचि, अग्निवृद्धि, लाघव, इन्द्रिय प्रसाद, उपद्रव शान्त, बल, वर्ण।

क्षार व अग्निकर्म के अ/अतियोग– सू० अ० ३९, ४०।

पथ्य– स्नेह (अग्निदीपन), बथुआ, चौलाई का शाक (शकृत शिथिल)।

वस्ति वेदना– कूठ, सौंफ, देवदारू, रास्ना, पुनर्नवा, अगरू कल्क से नाभि के नीचे लेप।

मूत्र पुरीष अवरोध–
- वरणा, अलम्बुसा (इन्द्रायण), एरण्डमूल, पुनर्नवा, गोक्षुर, सुरभि (रास्ना), कालाजीरा का सुखोष्ण क्वाथ– परिषेक, अवगाहन।
- एरण्ड तैल दूध से।

शस्त्र कर्म के बाद व्रणाधिकारोक्त संशोधन, प्रलेप, कषाय, तैल का प्रयोग।

औषध प्रयोग– शस्त्र क्षार अग्नि के अयोग्य; वात कफोल्वण; दोष संपूर्ण हो बाहर निकले; जाड्य, कण्डू, शोफ।

i. स्नेहन– क्षार, चित्रक, कूठ बिल्व, मूली से सिद्ध तैल से।
ii. स्वेदन– पिण्ड/द्रव स्वेद
iii. धूम– शमी पत्र, अर्कमूल; मानुष केश, सर्प निर्मोक; बैल का गोबर; राल + यव चूर्ण। तुलसी, बड़ी कटेरी, पिप्पली, अश्वगंधा + घी का धूम।
iv. लेप– हल्दी + सेहुण्ड क्षीर; स्नुही क्षीर + अर्क क्षीर + कटु तुम्बी + करंज पत्र।
v. अभ्यंग– कनेर, हींग, वच, नीम पत्र, तुलसी, पिप्पली, बिल्व आदि से सिद्ध तैल।

विशेष योग–

कासीसादि तैल–

कासीस सैन्धव हरताल पिप्पली कूठ सौंफ, विडंग, विदारी, कलिहारी, कनेर, आर्द्रक,

स्वर्णक्षीरी, दन्ती चित्रक, अर्क व स्नुही क्षीर	– १ भाग	तैल पकाये।
तैल	– ४ भाग	
गोमूत्र	– १६ भाग	

प्रयोग विधि/गुण– बिना कष्ट के अर्श क्षार दग्धवत नष्ट।

I. बाह्यार्श में इसे लगाकर, ईंट का टुकड़ा (नुकीला) अग्नि तप्त कर भैंस के मूत्र में निर्वापित कर गुद पर दबाते हुये स्वेदन करे। प्रातः सायं ७ दिन तक। उष्णोदक अवगाहन।

II. पूतिकरंज पत्र + सैंधव → कल्क + स्नुहीक्षीर → वर्ति (नातिशुष्का)– गुदा में रखे– प्रातःसायं/दिन में १ बार/१ दिन के अंतर से × ३ दिन। (रखकर उष्णोदक अवगाह)।
मुख से– देवदाली (जीमूतक) क्षार + हरड़।
शौच– पत्र भृंगोदक/सुखोष्ण जल।
कठिन अर्श में जोंक/सूचीकूर्च से रक्त निर्हरण।

- **त्रिलवणादि चूर्ण (गुल्म)–** अग्निमांद्य हर।
  अग्निमांद्य → गुदशोफ, शूल।

हींग	– १/२ वर्ष	चूर्ण– उष्णाम्बु से।
काला नमक, यवक्षार, इन्द्र जौ, पिप्पली	– १ वर्ष	
मूर्वा	– १/२ पल	
पाठा	– १ पल	
सोंठ	– २ पल	

- प्राणदा (हरीतकी) + गुड़– तक्र से।
- हरड़ (१००) को गोमूत्र (१/२ द्रोण = ५१२ तोला) में सिद्ध कर– मधु से खाये।
- वशिष्ठ हरीतकी (कास)।

- चित्रक– आषाढ़/कार्तिक/मार्गशीर्ष में पुष्य योग में उखाड़कर तक्र/मस्तु/दूध/घी/तैल से। कलश में चित्रक मूल त्वक् कल्क लेप करे सूख जाने पर दधि जमा कर खाये।
- **तक्र–** तक्रं हि परमौषधमनिलकफार्तीनां विशेषाज्जठराश्रितानाम् ।
  गुदाश्रित वात कफ अर्शों में परम औषध।

कार्यविधि– (i) अर्श का समूल नाश (शुष्क) (ii) शरीर स्रोत शोधन।

- घी के घट में तक्र रखकर हपुष, कालाजीरा, धनिया, अजवायन, जीरा, कचूर, काला जीरा, चित्रक, पिप्पली, गजपिप्पली, पिप्पली मूल का चूर्ण मिला दे। आसुत होने (हल्की अम्लता) पर रूक्ष/सस्नेह सान्न/अनन्न (बिना आहार) ७ दिन/१५ दिन/१ माह तक प्रयोग करे– अग्निदीपन।
- तक्र + सैंधव – भोजन पूर्व प्रातः सायं।
- कुटकी मूल पीसकर तक्र से प्रातः पिये।
- चित्रक मूल क्वाथ + गुड़ → लेह – मधु से खाकर तक्र पिये।
- **अभयारिष्ट–** (श्लोक– १९)–
  हरड़ ८ पल, इन्द्रायण ५ पल,
  आंवला १६ पल, कैथ गुदा १० पल,
  लोध, विडंग, एलवालुक, पिप्पली, मरिच २-२ तोला } चूर्ण + जल – १ भार (= २$^{1}/_{2}$ मन)
  पकाए; पानी १/४ बचने पर छान ले।
  गुड़- २ तुला (२०० पल) + धातकी पुष्प ८ पल मिलाकर घृत से चिकने पात्र में १५ दिन के लिये रख दे।
- प्रातः तथा अन्नकाल में उपयोग।
  गुण– अर्श, ग्रहणी, पाण्डु, हृद रोग, यक्ष्मा, विषम ज्वर, प्लीहा, गुल्म, उदर, श्वयथु, कुष्ठ, कृमि नाशक; अग्नि, वर्ण कर।
- **दन्त्यरिष्ट–** (श्लोक-२०)
  दन्ती, चित्रक, त्रिफला, दशमूल १-१ पल + जल १ द्रोण (१०२४ तोला) → क्वाथ– १/४ रहने पर छान कर ठण्डा होने पर गुड़ ५० पल, धातकी पुष्प– १ कुडव (१६ तोला) मिला कर घृत लगे पात्र में १ माह तक रखे। गुण– पूर्ववत् ।
- दुरालभारिष्ट
- आमलकारिष्ट
- गुग्गुल्वासव
- **पान–**
  - शीधु/गौड़ (गुड़ से बनी सुरा) + चव्य, चित्रक, कालाजीरा।
  - शृत शीत अल्प उदक (उबाल कर ठंडा किया)

- धनिया व सोंठ का शृत जल
- लघु पंचमूल पक्व जल
- इन्हीं जलों से पके यूष, पेया, रस आदि का प्रयोग।

- गण्डीर काञ्जी– (श्लोक-२८)
- घृत प्रयोग– रूक्ष कोष्ठ में।
  - घृत + फाणित + सोंठ, यवक्षार, पिप्पली, जीरा, धनिया, काला जीरा, फलाम्ल।
  - पिप्पल्यादि घृत– (श्लोक-३०)।

बद्ध वर्च– उदावर्त वत चि०।

भिन्न वर्च– अतिसार वत चि०।

स्रावी अर्श– पित्त के साथ कफ व वात का अनुबंध → अशुद्ध रक्त। काल बल की अपेक्षा से अशुद्ध रक्त की उपेक्षा।

१. पित्त श्लेष्मोल्वण– (i) पाचन दीपन
(ii) उपेक्षा/संशोधन

२. पित्त वातोल्वण– स्नेह– मुख से/अभ्यंग/वस्ति (गुद से)

३. पित्तोल्वण– स्तम्भन

४. कफोल्वण–
- कुटज त्वक् व सोंठ का क्वाथ
- कुटज त्वक् व फल (इन्द्रयव), अतिविषा, रसाञ्जन (रसौंत) + मधु – तण्डुलोदकेन।
- कुटजावलेह (श्लो० ३४ व ३५)

५. वातोल्वण– • बलादि घृत–

बला, अतिबला, बिल्व, त्रिफला, गज पिप्पली; बरगद, करंज पत्र, मुलेठी, तिन्दुक, कमल	१-१ कर्ष	घृत पाक।
घृत	– १ प्रस्थ	
अजाक्षीर	– १० प्रस्थ	

- पाठादि घृत, चांगेरी घृत।

रक्त स्तम्भनार्थ–

- शीत अभ्यंग, प्रदेह, परिषेक, अवगाहन, कवोष्ण घृतों से अवपीडन।
- स्निग्ध (घृत, तैल) भोजन,दूध।
- कवोष्ण घृत मण्ड
- शीत द्रव्य सिद्ध स्नेह

} से अनुवासन।

पिच्छावस्ति– सेमल पुष्प; जवासा; कुश, काश मूल; गूलर, वट, पीपल सुंग– २-२ पल

दूध – १ प्रस्थ जल – ३ प्रस्थ	पकाये, दूध मात्र बचने पर उतार ले। इस क्वाथ में सेमल का गोंद, मजीठ, चन्दन, कमल, इन्द्रयव, प्रियंगु, कमल केसर का कल्क + मधु, शर्करा मिलाये।

गुण– गुद भ्रंश, प्रवाहिका, रक्तस्राव, ज्वर नाशक।

पथ्य– रक्तार्श में–

- लाजा, चुक्रिका (तिनपतिया-चांगेरी) से बनी पेया।
- बिल्व, सोंठ क्वाथ पक्व पेया + मक्खन, इमली/बेर (खट्टा)।
- शलजम, तुलसी से सिद्ध पेया तैल व घृत में भुनी।
- आंवला, दूग्धिका, वट शुंग, कचनार पुष्प, दधि की मलाई।
- पलाण्डु शाक; चौलाई का शाक – तक्र व बेर से; मसूर दाल– हल्के खट्टे तक्र से। मटर, मूंग, अरहर, दूध, शालि, सांवा।
- अजा क्षीर + बथुआ रस। जवान बकरी का मध्य भाग + अति पलाण्डु से।

प्याज– रक्तस्राव व वात शामक।

- मक्खन + तिल
- केसर + मक्खन + शर्करा
- मथित दधि सर (मलाई)।

अतिस्राव → वाताधिक्य। अत: वात का विशेष शमन करे। कफ और वात कम होने पर प्रबल रक्त व पित्त के लिये शीत उपचार करे।

उदावर्त–

शरीर रूक्षता → मल व वात बिबन्ध → उदावर्त, शूल

अनुवासन स्नैह → वातानुलोमन (C̄ P&K) → अग्नि दीप्त, अर्शसंकोच।

१. स्नेहन– शीत ज्वरघ्न तैल से अभ्यंग २. स्वेद	दोष विलयन।

३. वर्ति प्रणिधान– वात विण्मूत्र अनुलोमन।
पिप्पली सरसों सैंधव जीमूतक, गोमूत्र, गुड़ से बनी वर्ति घृताभ्यक्त गुद में रखे। इन्हीं द्रव्य चूर्णों का नाड़ी से प्रधमन

४. तीक्ष्ण आस्थापन बस्ति (सक्षार) – आनुलोमिक।

योग–

- **कल्याणक क्षार–** त्रिफला, त्रिकटु, त्रिलवण (सैंधव, सौवर्चल, विड), दन्ती, चित्रक, भिलावा को कूटकर + घी, गोमूत्र। इसे मिट्टी के २ शराव कोष्ठों में रख ऊपर से मिट्टी का लेप कर, उपले से पकाये।

उपयोग– क्षार + घी – दूध से। अर्श गुल्म पाण्डु, हृदरोग, उदावर्त, ग्रहणी, मूत्र बिबन्ध, अश्मरी, कृमि, शोथ, हिक्का, श्वास, कास, शूल, आनाह, प्लीहा, प्रमेह नाशक।

- कांकायनोक्त क्षार – (श्लोक ५२)।
- महाक्षार।

पथ्य–
- तक्र + अजवायन, पाठा, सोंठ, लौंग, गुड़।
- अनार रस
- गुडुची, चित्रक, चौपतिया, बाल मूली, लोणी (लोनिया), चौलाई, शतावरी, वास्तुक (बथुआ) पत्र शाक। यव। पिप्पली चूर्ण + गौड़ (गुड़ से बना मद्य)।
- घृत भृष्ट हरड़ + पिप्पली/गुड़/दन्ती/द्रवन्ती – विरेचनार्थ।
- त्रिफला क्वाथ + निशोथचूर्ण
- माणिभद्र योग (कुष्ठोक्त) गुड़ से; मिश्रक स्नेह (गुल्म); सुकुमारक तैल (प्रमेह); नीलघृत; कल्पोक्त विरेचन, तर्पण।

अग्नि मांद्य → अर्श, अतिसार, ग्रहणी (परस्पर कारण भूत) ॥६१॥

११. अतिसार चि०

भेद-६ – V, P, K, S; $\xrightarrow[\text{मंद}]{\text{अग्नि}}$ साम (प्राय:) $\xrightarrow[\text{लंघन, पाचन}]{}$ निराम

भयज, शोकज → V↑ – वातघ्न; हर्षण, आश्वासन।

- **बिंबसी–** वातज।

  दोषों के पक्व हो जाने पर भी बहुत वात से बिबद्ध, सपिच्छ, सफेन, सशूल परिकर्तिका, सरोम हर्ष अतिसार हो, मल न आये; इस प्रवाहिका को बिंबसी कहते हैं।

- **रक्तातिसार–** (पित्तज में अन्तर्भावित)

  यस्तु पित्तातिसारी पित्तलान्यासेवते तस्य पित्तमति वृद्धं रक्तातिसारं तृट्दाहमोह ज्वर शूल पायुपाकांश्च करोति ॥२३॥

चिकित्सा– प्राय: सभी अतिसारों में अग्नि उपहत होकर आम अधिष्ठान हो जाता है। अत: (वातज में भी) सर्वप्रथम आम पाक करे।

I. लंघन, } आम पाक
II. पाचन }
III. संग्राही– मल बंधना (न देने से गुद व नाभि में रूक्)
IV. दीपन– अग्निवर्द्धन
V. कफ संक्षय → वात की स्वस्थान में वृद्धि – वात शामक उपचार।
संग्राही औषध को आम होने या मल रूके होने पर न दे।

आमातिसार–

१. **बहुदोष–**
शूल आनाह, लालास्राव – लवणोदक से वमन
कोष्ठ स्तैमित्य, आध्मान, गौरव, शूल– स्रंसन दीपन औषध
हरड़– गरम जल से/त्रिकटु से।

२. **मध्य दोष–**
- उपवास
- **प्रमथ्या–** द्रव्य का कल्क बनाकर क्वाथ करना।
- पिप्पली, सोंठ, वच, अजवायन, धनिया, हरड़ या
- नेत्रबाला, मुस्ता, बिल्वमज्जा, सोंठ, धनिया की प्रमथ्या।
- वच हरड़ विडंग, पाठा, सोंठ, विड् लवण का चूर्ण

  आम + रक्त – गज पिप्पली को मधु व शर्करा से।

३. **अल्पदोष–** उपवास

अतिसार में पान– वच + अतीस; सोंठ + अतिविषा (अतीस); मुस्ता + पर्पट; सोंठ + धनिया।

आहार– लघु पंचमूल, पंचकोल, गजपिप्पली, हींग, धनिया, जीरा अजवायन, दाडिम, सैंधव, विड् से यवागू आदि।

वातातिसार–
- प्रथम आमपाक।
- मूढवात (Diminished Peristaltic Movement)– कच्चे बिल्व, हरड़ पिप्पलीमूल से बनी यवागू।
- तृट– वस्त्र से छना तक्र; मधु, मण्ड।
- बिंबसी– उदावर्तोक्त संस्कृत छाग मांसरस; अपराजित खड, दधि।
- पुरीषक्षय + तृट् – जौ, मूंग, उड़द, तिल के बने यूष।
  - अजित खण्ड– तक्र, अनार, तैल (प्रचुर मात्रा) + सैंधव।
  - अपराजित खण्ड– शठी, तिन्तीडीक (समाकदाना, खट्टा मसूर), विड, अनार, यवक्षार, पंचकोल, मरिच, त्रिफला, धातकी पुष्प, धनिया, पाठा, अजवायन, काला जीरा, जीरा, कैथ, जामुन व आम की गुठली – सममात्रा। तथा बिल्व गुदा – ६ गुणा।

  गुड़, मूंग का रस, स्नेह और दधि में इन्हें सिद्ध करे।
- दधिसरं वा सगुडदाडिमं यमकभृष्टम् ॥९॥
- दही की मलाई + गुड़, अनार– घृत + तैल में भूने।

- सत्तू को सोंठ चूर्ण के साथ यमक में भूने
- उड़द दाल + घृतमण्ड + मरिच युक्त चावल आदि।
- सोंठ, बेर का चूर्ण + दधि, घृत तैल मधु, फाणित।
- हींग, गुड़ दाडिम सोंठ पिप्पली का चूर्ण– घी/दूध/उष्णोदक/मद्य।
- पीपल, ढाक के क्वाथ से सिद्ध शालि ओदन + दधि + घृत, तैल, मधु।

दधि–

दीपनं रोचनं रूच्यं दधि वातहरं परम् ।
बद्धविड्वाहरत्यस्मात् चिरोत्थामपिबिंबसीम् ।।११।।

अग्निदीपक, रूचिकर, श्रेष्ठ वातनाशक, मल की रूकावट व पुरानी बिंबसी नाशक है।

- **अतितृट् + मल में रक्त व पिच्छा–**
  - आहार के रूप में धारोष्ण दुग्ध।
  - एरण्ड मूल/कच्चे बिल्व से पका दुग्ध।
  - दुग्ध + पिप्पली
  - त्रिकटु सिद्ध दुग्ध + शालि
- **शूलाधिक्य–**
  - दशमूल क्वथित दुग्ध + मधु से आस्थापन बस्ति।
  - पिच्छा बस्ति
  - वातघ्न/पित्तघ्न अनुवासन
- **गुदभ्रंश, शूल–** निराम में खट्टा बेर, चांगेरी (तिपतिया) रस, दधि, यवक्षार, सोंठ कल्क पक्व घृत पान।
  - दशमूल सिद्ध स्नेह से अनुवासन।
- **गुदा बाहर आना–**
  - स्नेह अभ्यंग, स्वेद → मृदु; अन्तः प्रविष्ट; सछिद्र चर्म से गोष्फण बन्ध।
- अनान्त्र मूषिक बृहत्पंचमूल कषाय व दूध में पकाये। इस दूध से वातघ्न द्रव्य कल्क प्रक्षेप डालकर तैल पकाये। (कल्क = तैल/४) । (मूषिक) तैल– अभ्यंग व पान।

पित्तातिसार–

- प्रथम आमपाक, उपवास।
- तृट्– षडंगपानीय + सारिवा, भूनिंब (चिरायता) ।
- आहार– मृदु, मधुर, तिक्त व दीपन द्रव्यों (शतावरी, लघुपंचमूल, आदि) के क्वाथ से युक्त मण्ड, पेया, सक्तु, यूष, रस– अम्ल/अनम्ल; उष्ण/शीत; + मधु।
- क्वाथ– हरिद्रादिगण/वत्सक/मूर्वा, अतीस, इन्द्र जौ, हल्दी, दारू हल्दी।

- अतिविषा, कुटज त्वक्, इन्द्रयव चूर्ण + मधु– तण्डुलोदकेन।
- सोंठ, धाय पुष्प, अनार त्वक् – मधु से।
- सिम्बल मृदु पत्र शीत कषाय + मधु, मुलेठी।
- बिल्व, कैथ; जामुन व आम की गुठली से यवागू/खड़। क्वाथ आदि कल्पनाएं– लोध्रादि/पाठादि/प्रियंग्वादि/श्यामादि।
- **रूक्ष कोष्ठ में शूल–** • यवक्षार + घृत पान।
  • धारोष्ण दुग्ध पान
- बलवान में बिबद्ध मल– विरेचन
  ढाकफली/त्रायमाण सिद्ध दुग्ध + त्रिफलाचूर्ण
- दोष स्रवित हो जाने पर भी संसर्जन काल में
  (i) शूल– बिल्व, मुलेठी, सौंफ, सोया कल्क से दूध, तैल व घी (तैल से ४ गुणा) पकाये। इससे अनुवासन बस्ति दे।
  (ii) अतिसार बना रहना– सिम्बल से पिच्छा बस्ति–

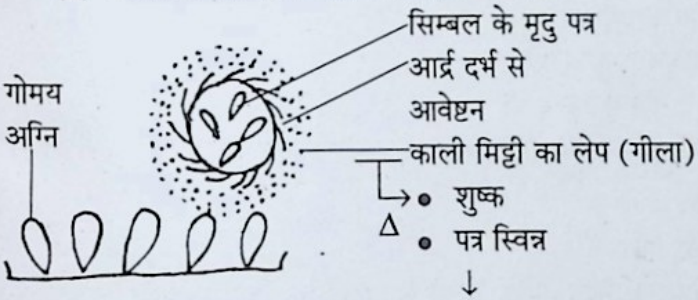

↓
कूटे
↓
१ पल पत्र + १ प्रस्थ दूध → मसले, छाने।

छनित दूध + घृत तैल मधु मुलेठी कल्क → आस्थापन बस्ति।
बस्ति वापस आने पर स्नान कर, कौंच सिद्ध दूध/जांगल रस से आहार।

गुण– पित्त रक्तातिसार, विरेचन आस्थापन अतियोग नाशक। ग्रहणी, गुल्म, शोष, ज्वर हर।

- **चिर, अवेदन अतिसार–** पुटपाक उपचार–
  - अरलु त्वक् कल्क/क्षीरिवृक्ष पत्र, त्वक् कल्क को काश्मरी (गम्भारी) के पत्तों से लपेट कर पुटपाक विधि से पकाये। रस को ठण्डा कर मधु से पिलाये।
  - तीतर पुटपाक।
- **रक्तातिसार–** (P+R)– अतिशीत उपचार।

- क्षीरीवृक्ष पत्र पक्व– अजादुग्ध + मधु शर्करा– आहार काले।
  └ गुद प्रक्षालन (दाह आदि में)।
  – घृत + मधु, शर्करा – दूध से दे।
- कपिञ्जल/दुग्ध आहार।
- बकरी/मृग रक्त घृत भृष्ट कर खाये।
- मुलेठी + शंख पिष्टी – तण्डुलोदकेन।
- तण्डुलोदक + मधु।

- **वाताधिक्य–** शतावरी घृत; मक्खन + शर्करा; सिम्बल सिद्ध घृत
- **वात → विट् बद्ध–** रक्त व फेन के साथ कष्टपूर्वक थोड़ा-२ त्याग होना–
  - सिम्बल पिच्छा बस्ति।
  - मधुर स्कन्ध सिद्ध घृत से अनुवासन।
- **गुददाह–**
  - पटोल, मुलेठी, मधूक (महुआ), क्षीरि वृक्ष कषाय/दूध + घृत, शर्करा, मधु से गुद प्रदेश का परिषेक।
  - शतधौत घृत पिचु/अभ्यंग।
  - पटोलादि गण कल्क + घी – लेप।

  रक्तातिसारी $\xrightarrow[\text{पित्तल सेवन}]{}$ गुदवलि पाक → व्यापद् (मृत्यु) ।
- **श्लेष्मातिसार–**
  - लंघन, आमपाचन।
  - कषाय– मुस्ता, हरड़, सोंठ, कच्चे बिल्व
  - वच विडंग अजवायन धनिया देवदारू
  - चित्रक, पिप्पलीमूल
  - हिंग्वादि चूर्ण (अलसक) – उष्ण जल से।
  - सोंठ, सैंधव, हरड़ चूर्ण– उष्ण जल से।
  - त्रिकटु चूर्ण – मधु व शर्करा से।
  - कैथ– मधु से
  - पिप्पली मधु से।
  - सशूल प्रवाहिकस्य च निरामस्य वातेऽधिके – वच, विल्व, पिप्पली, कूठ, सौंफ कल्क + लवण → पिच्छावस्ति।
  - अनुवासन– बिल्व पक्व कोष्ण तैल/वचादि वर्ग सिद्ध तैल।

त्रिदोषज अतिसार– लाख, पिप्पली, सोंठ, कुटकी, इन्द्रयव, दारूहल्दी की छाल से सिद्ध घृत – पेया मण्ड से पान।

प्रवाहण रूजा– खड़, दधि, स्नेह, दुग्ध, कूटे काले तिल, लवण।

अतिसार मुक्तस्य लक्षण–

यस्योच्चाराद्विना मूत्रं पवनो वा प्रवर्तते।
दीप्ताग्नेर्लघु कोष्ठस्य शान्तस्तस्योदरामयः ।।३०।।

- मूत्र/वात प्रवृत्ति के साथ मल त्याग न हो, अग्नि दीप्त, लघुकोष्ठ।

तण्डुलोदक– चावल के टुकड़े ८ गुने पानी में भिगोकर बनाये।

१२. ग्रहणी दोष चिकित्सा

I. दोष की स्व अजीर्ण अनुसार चि०।
वात– विष्टब्धाजीर्ण;
पित्त– विदग्धाजीर्ण;
कफ– आमाजीर्ण चि०।

II. अतिसार विधि से चि०।

(a) **आमपाचन–**

- सोंठ– गरम जल से
- मुस्ता, अतीस, सोंठ – क्वाथ/चूर्ण गरम जल से।

सप्रवाह वर्च– बिल्व मज्जा, सोंठ, चित्रक चूर्ण + विड् लवण।

- कफ के साथ– चूर्ण अनार रस से।

अतिशूल आमजन्य– हिंग्वादि चूर्ण – उष्ण जल से।

शूल, छर्दि, आनाह, अनुग्रन्थि (नाभि के नीचे उदर में आध्मान)– मरिच जीरा सौवर्चल हरड़ – उष्ण जल से।

आम + P + K – कुटकी, इन्द्र जौ, पाठा, पिप्पली मूल, वच, हरड़, सोंठ– क्वाथ/चूर्ण।

भोजन/पान– पंचकोल युक्त लघु, दीपन, पेया, सलवण, अम्ल (दाडिम)। तक्र, मस्तु, मदिरा, अरिष्ट।

(b) **अग्नि दीपन–** तक्र, घृत।

तक्र– अग्निदीपक, ग्राही, लघु, ग्रहणी में पथ्य।
मधुर विपाक– पित्त अदूषक
कषाय, उष्ण, विकाशी, रूक्ष – कफ में हितकर।
स्वादु, अम्ल, सान्द्र – वात में हितकर।
अविदाहि – सद्यः मथित।

तक्रारिष्ट (यवानी काञ्जिक)–

यवानी (अजवायन), पथ्या, आमलक, मरिच ३-३ पल
लवण पञ्चक (सौवर्चल, सैंधव, विड्, औदभिद, सामुद्र)– १-१ पल } चूर्ण
सद्य मथित तक्र – १ कंस + ——→

↓ आसुत

अम्ल व कटु रस स्पष्ट (व्यक्त) हो जाने पर प्रयोग।

गुण– अति अग्नि दीपक; अर्श, गुल्म, उदर, श्वयथु, कृमि, प्रमेह हर।

विशिष्ट चि०–

१. **वात ग्रहणी–** आम परिपाक कर अग्नि दीपनार्थ घृत पान।

- अग्नि घृत– सैंधव, त्रिकटु, यवक्षार, सर्जक्षार, बिल्वादि पंचमूल, हरड़,
  रास्ना, जीरा, पिप्पलीमूल, शठी, विडंग – कल्क
  आर्द्रक, मातुलुङ्ग, बेर, इमली, दाडिम – स्वरस
  शुष्क मूली – क्वाथ
  } + मस्तु, तक्र, शुक्त, प्रसन्ना, कांजी, तुषोदक, आरनाल } → घृत पाक

- अगस्त्य ऋषि प्रोक्त घृत।

बिबद्ध मल–

आस्थापन → वातशमन
विरेचन – एरण्ड तैल/तिल्वक घृत
संसर्जन – पेया आदि।
अनुवासन – (बिबद्धता बनी रहने पर)
– वातघ्न, दीपन, अम्ल द्रव्य सिद्ध तैल
लघु आहार के साथ थोड़ा-२ घृत – अग्निदीपनार्थ।
अग्नि घृत + मातुलुंग रस– वमन, बिबन्ध, शूल, श्वास, कास।
अग्निघृत द्रव्य सिद्ध तैल– अभ्यंग।
अग्निघृत द्रव्य चूर्ण – उष्ण जल से – वात कफ संसर्ग में।

२. **पित्त दुष्ट ग्रहणी–**

स्वस्थान (ग्रहणी) में उत्क्लिष्ट पित्त द्रव → अग्नि निर्वाप।

(A) पित्त निर्हरण– आस्थापन/वमन/ – तिक्त, लघु द्रव्य।

(B) संसर्जन

(C) शेष दोष शमन–

(१) पटोलादि चूर्ण – मधु/उष्णोदकेन।
– मूर्वा, चिरायता, पर्पटक, वचा, चन्दन, मुस्ता,

त्रिकटु, त्रायमाण, यवानी, कुटज छाल, कुटकी, देवदारू, दारूहल्दी त्वक्, पद्मक, उशीर (खस) अरिष्ट (नीम), पटोल पत्र, अतीस, सौराष्ट्री (फिटकरी), दालचीनी, एला, मधुशिग्रु (श्वेत मरिच) चूर्ण।

गुण– ग्रहणी, शूल, अतिसार, पाण्डु, हृदरोग, गुल्म, ज्वर, प्रमेह, कामला, मुखरोग, अरोचक हर।

(२) सोंठ, रसौंत, अतीस, धातकी, मुस्ता, पाठा, कुटज छाल, इन्द्र जौ, बिल्व, कुटकी चूर्ण – मधु + तण्डुलाम्बु।

(D) अग्नि स्थिरीकरण– पटोलादि चूर्ण क्वाथ सिद्ध घृत। तिक्तघृत।

३. श्लेष्मदुष्ट ग्रहणी– बढ़े जल धातु → अग्नि निर्वाप।

- बार-२ वमन– पिप्पली, सरसों कल्क से तीक्ष्ण कर।
- पेयादि।
- अग्नि उत्तेजन– अम्ल, कटु, आहार + लवण, क्षार।
- आसव– मधूक/द्राक्षा/काश्मरीफल/इक्षुरस; मूलासव।
- मधूकासव– (श्लो०– १३)–

मंजीठ	– २ कुडव	वायविडंग	– १/२ द्रोण
चित्रक	– १/२ आढक	महुआ फूल	– १ द्रोण
भिलावा	– १ आढक	जल	– ३ द्रोण

↓ क्वाथ

१ द्रोण बचाये → छाने → ठंडा करे +

मधु – २ प्रस्थ + प्रक्षेप – चन्दन, खस, ऐला, अगरू।

लाख लिप्त घृताभ्यक्त पात्र में १ माह तक रख दे।

गुण– सर्वदोष हर, अग्निवर्धक, बृंहण; शोष, कुष्ठ, किलास, प्रमेह, आनाह, गुल्म, पाण्डु, हृदरोग नाशक।

- मधूक पुष्प स्वरस (१) $\xrightarrow[\Delta]{}$ १/२ बचाये + १/४ मधु।
- अर्शोक्त – क्षार, तक्र, अरिष्ट, घृत, आहार; धान्वन्तर घृत (प्रमेह), षटपल घृत (राजयक्ष्मा), भल्लातक घृत (गुल्म) ।

४. सन्निपात ग्रहणी– पञ्चकर्म, दोष चि०।

अग्नि मान्द्य–

स्थितियां	**चिकित्सा**
• कफज प्रसेक → अल्प अग्नि	दीपन, रूक्ष, तिक्त
• कृश में (V) मन्दाग्नि → K ↑	स्निग्ध, रूक्ष चि० क्रमशः बार-२।

स्थितियां	चिकित्सा
• क्षीण, कृश, रूक्ष	स्नेह युक्त दीपन
• P ↑	तिक्त, मधुर + दीपन
• V ↑	अम्ल, लवण + स्नेह।
• अग्निमांद्य → K↓ → आम मल त्याग।	घृत + दीपन औषध।
• Hard Stool कठिनता से निकलना	अन्नावग्रह – भोजन से पूर्व लवण युक्त घृत पान।
• स्नेह अतिपान → अग्नि मंद	क्षार, चूर्ण, आसव, अरिष्ट
• उदावर्त → अग्निमंद	निरूह
• दोष अतिवृद्ध → मंदाग्नि	संशोधन, संसर्जन
• अध्व, उपवास, कार्श्य	यवागू + घृत
• चिरमंदाग्नि → क्षाम, क्षीण, कृश	प्रसह रस + अम्ल

घृत– स्नेहमेव परं विद्याद् दुर्बलानलदीपनम् ॥२१॥

श्रेष्ठ अग्निदीपक व स्थैर्यकृत। थोड़ा-२ स्नेह बार-२ देकर अग्नि बढ़ाये।

घृतपान → समान वात स्वमार्गी → अग्नि वर्द्धन → बल वृद्धि।

तीक्ष्णाग्नि/अत्यग्नि–

पित्त $\xrightarrow[\text{वायु के साथ}]{\text{कफ के क्षीण होने पर}}$ स्वस्थाने वृद्धि → अग्नि ↑

अग्नि ↑ $\xrightarrow{V}$ अन्न का शीघ्र पाक → दोष क्षय → धातु क्षीण (पाक) → ओज नाश

उपद्रव– तृट्, कास, दाह, मूर्छा आदि।

लक्षण– भोजन करने पर आराम; जीर्ण होने पर अस्वस्थ।

चि० – गुरू, स्निग्ध, मन्द, सान्द्र, हिम, स्थिर आहार मुहुर्मुर्हु। कृशरा, पायस (खीर), पिष्टी, गुड़, औदक, आनूप, स्थिर जल की चिकनी मछली। मोम + दूध/घी। दूध से भोजन। गेहूँ का आटा + प्रभूत घृत – दूध से पिलाये। खाकर दिन में सोये। विरेचन– श्यामा सिद्ध दूध।

अग्नि मूलं बलं पुंसां बलमूलं हि जीवितम् ।
एष सारश्चिकित्साया यदग्नेः परिरक्षणम् ।।३०।।

पुरूषों का बल अग्नि के अधीन है, और बल जीवन का आधार है। अत: सम्पूर्ण चिकित्सा का सार यही है कि अग्नि का परिरक्षण करे।

१३. मूत्राघात चिकित्सा

मूत्र अवसादज- २० – • मूत्रकृच्छ-४ – V, P, K, S,
• अश्मरी-४ – V, P, K, शुक्र, [सिकतावत-शर्करा]
• शेष-१२ – वातबस्ति .... मूत्रावसाद।

मूत्रकृच्छ–

१. वातज–

- स्नेहन– वातघ्न तैल अभ्यंग, पान।
- स्वेदन– वातघ्न पिण्ड स्वेद, परिषेक, अवगाहन, कुम्भी स्वेद, उपनाह।

स्नेहन, स्वेदनार्थ– दशमूल, बला, एरण्डमूल, पुनर्नवा, शतावरी, पाषाण भेद, बेर, कुलत्थी, जौ – क्वाथ + इन्हीं द्रव्यों का कल्क → यमक व सुअर, रीक्ष वसा + ५ नमक → पक्व तैल।

खानपान– • बादाम, उपरोक्त द्रव्य/तैल, अम्ल।
• प्रसन्ना + सौवर्चल।

२. पित्तज– शीत परिषेक, अवगाहन, प्रदेह।

- तृण पञ्चमूल, गोक्षुर, शतावरी, विदारी, कसेरू का क्वाथ (→ शीत) + मधु, शर्करा।
- इक्षुमूल क्वाथ, सिंघाड़ा क्वाथ।
- दारूहल्दी + आंवला रस + मधु।
- मुनक्का पीसकर पर्युषित जल से।

३. कफज– स्वेद, वमन, कटु, तीक्ष्ण, उष्ण, क्षार, जौ, तक्र।

- मद्य + लघु एला; आंवला/केला रस + मधु + एला।
- प्रवाल (भस्म) तण्डुलोडकेन; कटेरी स्वरस – मधु से।
- त्रिकटु, एला, सारस अस्थि, गोक्षुर – मधु से।
- यवक्षार (जौ की नाल से बना) + दालचीनी, एला, मरिच + प्रसन्ना।

४. सन्निपातज– वस्ति समीपस्थ/प्रबल दोष की प्रथम चि०। या
समदोष– यवक्षार चूर्ण + मिश्री (समभाग)।

- सर्व मूत्राघात– एला, पाषाण भेद, शिलाजतु, पिप्पली चूर्ण– तण्डुलोदक + गुड़ से – १ माह तक।
- खीरा, ककड़ी के बीज, वासा, केसर, कुसुम्भ – पिये।

दाह, रूज, अवरोध– एला, पिप्पली, मुलेठी, पाषाण भेद, गोक्षुर, वासा, एरण्ड क्वाथ + शर्करा।

अश्मरी–

अश्मरी जन्य मूत्रकृच्छ– हरीतकी, गोक्षुर, अमलतास, पाषाण भेद, दुरालभा क्वाथ + शिलाजीत (प्रचुर) + शर्करा – पान।

भेद– (i) नूतन– औषधि दोषानुसार– इन्हीं का अन्य वातवस्ति आदि मूत्राघातों में दोषानुसार प्रयोग।
(ii) चिर – शस्त्रकर्म

१. **वातज–**

- पाषाण भेद, अपामार्ग, शतावरी, गोक्षुर, कटेरी द्वय, कौंच, खस, वरणा, जौ, बेर, कुलत्थी, सागौन फल आदि के क्वाथ + **घृत** + उषकादि गण औषध प्रक्षेप। इन्हीं द्रव्यों के क्वाथ, क्षार आदि।
- सिंही (कटेरी), व्याघ्री (बड़ी कटेरी), गोक्षुर, तालमखाना, एरण्ड मूल कल्क– अमधुर दधि से – ७ दिन।
- शिग्रुमूल कल्क + दधि, लवण + तैल व घृत सिद्ध यूष।

२. **पित्तज–** वीरतरादि गण, वाराहीकन्द, पाठा, पाटला, शिरीष, शालि मूल, विदारी,
श्वेत व लाल पुनर्नवा – क्वाथ
खीरा, ककड़ी, कुसुम्भ, खरबूजा (कर्कारू) बीज – प्रक्षेप } घृत पाक।
– इन्हीं द्रव्यों से कषाय आदि।

३. **कफज–** वरणादि गण, भद्रदार्व्यादि गण, गुग्गुल, छोटी व बड़ी इलायची, कूठ, मरिच, चित्रक, मुस्ता, तुलसी – कल्क + ऊषकादि गण प्रक्षेप → घृत पाक। कषाय, आदि कल्पनाएं।

- **अन्य द्रव्य–**

क्षारावलेह– श्लोक– १६ ।

- तिल, केला, जौ, अपामार्ग, पलाश क्षार + भेड़ मूत्र → लेह।
- अस्थि क्षार– क्रौंच पक्षी, ऊंट, गधा।

अश्मरी जन्य पीड़ा– कपोतवङ्का मूल सिद्ध दूध।
हरड़ की गुठली/पुनर्नवा सिद्ध दूध।

शर्करा– वीरतरादि गण, क्वाथ/चूर्ण/आहार आदि कल्पनाएं।

मूत्राघात– दोषानुसार चि०।

- **अन्य योग–**
  - वीरतरादि गण, (सर्वथा)/भावित शिलाजीत/क्वाथ पक्व यवागू।
  - विरेचन – तिल्वक् घृत।
  - वस्ति – उत्तर वस्ति (बार-२, शर्करा में भी प्रयोग) ।

- लघु पंचमूल (१) + गोक्षुर (२) → जल/दूध सिद्ध कर इसे ही/घी के साथ पिये।
- दुरालभा स्वरस/अर्जुन कषाय/द्राक्षासव
- त्रिफला कल्क + सैंधव – उष्णोदकेन।
- घोड़े/गधे का मल रस।
- मद्य पीकर शीघ्र वेगी रथ पर बैठे।

उत्तर बस्ति– दूधं

(i) शतावरी, गोक्षुर, बृहतीद्वय, पुनर्नवा, खस, मुलेठी, द्विशारिवा, गजपिप्पली लोध्र, तृणपञ्चमूल कषाय

(ii) दूध ४ गुणा

(iii) बला, कुटज, अजवायन, कालाजीरा, इन्द्र जौ; खीरा, ककड़ी बीज; सुनिषण्णक, केवुक, वच, सौंफ, पाषाण भेद, मदनफल, हपुष कल्क। इन तीनों से सिद्ध तैल से।

४. **शुक्राश्मरी–** मुर्गे का मांस खाकर प्रिया प्रमदा सेवन।

शस्त्रकर्म–

- अक्रियायां ध्रुवो मृत्युः क्रियायां संशयो भवेत् ॥२५॥
- राजा से अधिकार प्राप्त कर।

पूर्वकर्म– स्नेहन, शोधन, (कर्षण), स्नेह अभ्यंग, स्वेदन, स्वस्ति, सम्भार।

बिना भोजन कराये, जानुसम फलक (तख्त) पर, दूसरे पुरूष से इस प्रकार पकड़वाकर बिठाये (अर्ध लिटाये) कि पूर्वकाय उत्तान रहे। जानु कूर्पर संकुचित कर, कमर के नीचे वस्त्र की ऐंडवी रखे, तथा रोगी को इसी स्थिति में बांध (दूसरे पुरूष के साथ) दे।

प्रधान कर्म– नाभि प्रदेश पर अभ्यंग कर वाम पार्श्व में मलकर, मुट्ठी से अवपीड (दबाये) करे। अश्मरी के नाभि के नीचे आते ही तुरन्त तैल लगी नख कटी बायें हाथ की प्रदेशनी व मध्यमा को गुदा में डालकर सेवनी के साथ-२ ले जाये। प्रयत्न व बलपूर्वक अश्मरी को मेढ़ व गुदा के बीच लाकर वस्ति (Bladder) को बिना (हिलाये) संकुचित/आयत/विषम किये; अंगुलियों द्वारा तब तक जोर से दबाये; जब तक कि ग्रन्थि वत अश्मरी उन्नत न हो जाये।

सेवनी के वाम पार्श्व में यव सम दूरी पर अश्मरी प्रमाण में शस्त्र चलाये। (अन्य आचार्य– दक्षिण पार्श्व– क्रिया सौकर्य) । सम्पूर्ण अश्मरी अक्रवक्र (सर्पफण) शस्त्र से निकाले (बिना टूटे) थोड़ा सा भी चूर्ण पुनः परिवृद्धि करता है।

स्त्रियों में शस्त्र नीचे से ऊपर को चलाये अन्यथा गर्भाशय पड़ोस होने से मूत्रस्रावी व्रण। पुरुष में मूत्र मार्ग कटने से मूत्रस्रावी व्रण।

दो स्थानों पर भिन्न वस्ति का संधान नहीं होता।

१. क्रियाभ्यास २. शास्त्रोक्त छेदन ३.निष्यन्द परिवृद्ध

पश्चात कर्म–

(१) उष्णोदक द्रोणि अवगाह स्वेद – वस्ति में रक्त नहीं भरता।
- वस्ति में रक्त आने पर – पुष्पनेत्र से क्षीरि वृक्ष कषाय से वस्ति धावन।
  – अश्मरी चूर्ण व रक्त निर्हरण।
- मूत्र विशुद्धार्थ – प्रचुर गुड़ सेवन।

(२) व्रण पर मधु + घृत लगाये।

(३) मूत्र विशोधक द्रव्य सिद्ध उष्ण सघृत यवागू प्रातः सायं – ३ दिन।
- गुड़ + दूध + ओदन – अल्प – अगले १० दिन।
- अम्ल फल (इमली) युक्त भोजन/जांगल मांस रस

(४) व्रण परिचर्या– क्षीरि वृक्ष कषाय प्रक्षालन
लेप– लोध्र, मुलेठी, मंजीठ, पुण्डरीक कल्क
स्वेद– १२ दिन तक।

(५) सात दिन बाद मूत्र स्व मार्ग से न आने पर व्रण को अग्नि दग्ध करे।
स्वमार्ग प्रवृत्ति में मधुर उत्तर बस्ति, आस्थापन, अनुवासन।
यदृच्छया मूत्रमार्ग में शुक्राश्मरी/शर्करा फंसने पर स्रोत से निकाले/नाड़ी का बडिश से विदारण कर निकाले।

असेव्य– १ वर्ष तक स्त्री सेवन, आरोहण, प्लवन; गुरू आहार।

कर्मणि परिहर्तव्या– शस्त्रकर्म में बचाने योग्य– ८

१. मूत्र वह स्रोत	– मूत्रपूर्ण वस्ति → मृत्यु	५. सेवनी	– रूक्	
२. शुक्रवह	– मृत्यु/क्लीव	६. योनि	– ,,	
३. मुष्क स्रोत	– ध्वजभंग	७. गुदा	}	सद्यः मरण।
४. मूत्र प्रसेक	– मूत्र टपकना	८. वस्ति	}	

१४. प्रमेह चिकित्सित

अभिष्यन्दी देह → अग्निमान्द्य
↓
पञ्चविध अन्न $\xrightarrow[\text{विपरिणमन}]{}$ मूत्र व मेद अधिक बनना।

चिकित्सा सूत्र–

- संशोधन (बली) – तेज (अग्नि) ↑, क्लेद व मेद ↓
- संशमन– दुर्बल; – अनुवंध रक्षार्थ।

सामान्य चि०–

१. स्नेहन– भिलावा/सरसों/नीम/त्रिकंटकादि तैल/प्रियंग्वादि घृत।

२. वमन, विरेचन; संसर्जन।

३. वस्ति

- आस्थापना – सुरसादि गण + मुस्ता, देवदारू, सोंठ प्रक्षेप।
- निरूह – पित्त प्राधान्य में – न्यग्रोधादि गण।

संतर्पण– जांगल।

[अति अपतर्पण – मूत्रकृच्छ, बस्तिं मेढ्रशूल, गुल्म, अतिकार्श्य, भ्रम।]

४. संशमन औषध–

हरिद्रा + मधु + आंवला रस से – प्रातः ।

हरड़ चूर्ण मधु से

गुडुची रस/आंवला रस – मधु से

साध्य प्रमेह–

कफज– तगर, विडंग, दारूहल्दी, हल्दी क्वाथ – मधु से।

	मेह (K)	कषाय + मधु		मेह (K)	कषाय + मधु
१	उदक	पारिजात (हरसिंगार) कषाय	६	शुक्र	अर्जुन + चन्दन
२	इक्षु	वैजयन्ती	७	सिकता	चित्रक, ।*।
३	सान्द्र	सप्तच्छद (सतवन)	८	शीत	पाठा + अगरू
४	सुरा	नीम	९	शर्नै	खदिर
५	पिष्ट	हरिद्रा	१०	लाला	त्रिफला + अमलतास

* हींग, प्रवाल, एला, लवण – मद्य/मूत्र/क्षारोदक से।

पित्तज– लोध्र खस अर्जुन चन्दन
नीम गुडुची आंवला पटोल
कुटज, कमल, दारूहल्दी } क्वाथ – मधु से।

१	क्षार	त्रिफला कषाय मधु से	४	हारिद्र	शम्याक (अमलतास) ,,
२	काल	असनादिगण ,,	५	मञ्जिष्ठा	चंदन + मंजीठ ,,
३	नील	न्यग्रोधादि ,,	६	शोणित	गुडुची खर्जूर क्वाथ ,,। मेंहदी पत्र कल्क + मधु – ठंडे जल से।

[सुश्रुत संहिता में काल मेह के स्थान पर अम्ल मेह (न्यग्रोधादि कषाय) की गणना है।]

असाध्य– याप्यनार्थ।

वातज–

१. वसा मेह– अग्निमन्थ कषाय

२. मज्जा– गुडुची + चित्रक क्वाथ + कूठ, कुटज, पाठा, कुटकी कल्क।

३. हस्ति– हस्ति सूकर खर उष्ट्र अस्थि (भस्म)।

४. मधुमेह– कदर खदिर पुर कषाय।

[खदिर – खैर – Acacia Catechu
कदर– श्वेत खदिर/सोमवल्क– Acacia Suma
पुर – गुग्गुल]

इन ४रों में कफ संबंध – स्व कषाय सिद्ध तैल
पित्त ,, – ,, घृत/यमक

कषाय युक्त स्नेह से कफ, पित्त, मूत्र, मेद, आम, वात का उपशम।

विशिष्ट योग– त्रिकण्टकादि स्नेह (श्लो०-१२); धान्वन्तर घृत (श्लो०-१३); लोध्रासव (श्लो०-१५), दशमूलारिष्ट (श्लो०-१६); लोहारिष्ट (श्लो०-१७); मुस्तादि चूर्ण (श्लो०-१९); स्वकषाय (प्रमेहानुसार) भावित शिलाजीत।

आहार विहार–

- जौ– मूत्र कम (बद्ध); मेद पित्त कफहर; स्थैर्यकर।
  - प्रमेहोक्त क्वाथ भावित कर सत्तू, मंथ, वाट्य आदि लघु कल्पनाएं।
  - + मधु, आंवला।
- गेहूँ– यव वत कल्पनाएं।
- शालि, साठी, तृण धान्य (सांवां), मूंग, तिक्तशाक, कैथ, गोमूत्र।
- नंगे पैर पैदल चलना – १०० योजन या अधिक।

प्रमेह पिडिका–

पूर्वरूप– वनस्पति कषाय, बस्तमूत्र पान। तीक्ष्ण संशोधन। अपक्व– शोफवत; पक्व– व्रणोक्त चि०; व्रणरोपण– एलादि गण सिद्ध तैल। उद्वर्तन– आरग्वधादि गण कषाय। स्नान– असनादि गण कषाय। आहार– वत्सकादि गण।

- नवायस लौह– मधु से; शिलाजीत प्रयोग– पूर्ववत।

प्रमेह की कष्ट साध्यता में हेतु– ४

सर्वजत्वान्महामर्मसंश्रयादनुषङ्गतः ।
सुबहूपद्रवत्वाच्च प्रमेहो दारूणो गदः ।।२७।।

१. सर्वदोषजत्व, २. महामर्म (वस्ति) संश्रितत्व, ३. अनुषङ्गत्व (दीर्घकाल तक रहने का स्वभाव), ४. बहु उपद्रवत्व।

१५. विद्रधि वृद्धि चिकित्सित

विद्रधि– निरूक्ति– शीघ्रविदाहित्वात्तस्य विद्रधिरिति संज्ञा ।।११।।

- शीघ्र विदाह होने से विद्रधि।
- सर्व रोगों में शीघ्र चिकित्स्यं।

चिकित्सा– पाक न हो ऐसा प्रयत्न करे, पाक हो जाने पर शस्त्र कर्म से आशय निःपूय कर व्रण वत चि० करे। प्रमेह होने पर साथ में उसकी भी चि० करे (wound heals faster when diabetes in controlled) ।

बाह्य विद्रधि–

(I) आम – शोफ (दोषानुसार) चि०; रक्तमोक्षण (समीपस्थ स्थान); संशोधन, तिक्त।

(II) पाकाभिमुख – उपनाह

(III) पक्व – पाटन, व्रण चि०।

पक्व लक्षण–
- पिण्डित शूल (एक ही स्थान पर सीमित)
- पार्श्व में दबाने पर लब्धसुप्त (दर्द न होना) ।
- शस्त्र कर्म विधि निर्दिष्ट अन्य लिङ्ग।

अन्तः विद्रधि–
- वरणादि कषाय + उषकादि प्रक्षेप पान
- उपरोक्त द्रव्य + विरेचन द्रव्य सिद्ध घृत
- इन्हीं से आस्थापन/अनुवासन
- दोषानुसार गुल्मवत चि०
- मीठा सहजन– पान, आहार, लेप; शिलाजीत रसायन; गुग्गुल।

योग– (१)

त्रिफला, नीम, मुलेठी, कटुका, पटोल	– १-१ शाण	८ गुने जल में क्वाथ; छान +घृत।
निशोथ, त्रायमाण	– १-१ कर्ष	
मसूर	– १ पल	

गुण– विद्रधि, गुल्म, ज्वर, दाह, शूल, तृष्णा, हृदरोग, भ्रम, मूर्च्छा, रक्तपित्त, कामला, कुष्ठ, विसर्प शामक।

(२) **त्रायमाण घृत–** (श्लो०-५)–

त्रायमाण क्वाथ	१ प्रस्थ	घृत पाक।
मुस्ता, कटुका, भू आंवला, त्रायमाण, चन्दन, दुरालभा, जीवन्ती, शतावरी, कमल	१-१ पल	
घृत, दूध, आंवला रस–	१-१ प्रस्थ	

रक्त मोक्षण – समीपस्थ/बाहुमध्य।

उपनाह – पच्यमान, ऊपर उठी में।

पूय स्राव – • ऊर्ध्व/अधोमार्ग : १० दिन तक स्राव की उपेक्षा करे (आने दे), उपद्रवों से बचाये।
• असम्यक् स्राव – निर्वहणार्थ–

वरणादि गण/मीठा सहजन मूल → यवागू + बेर, जौ, कुलत्थीयूष।

विरेचन– १० दिन बाद – तिल्वक घृत/त्रायमाण घृत से। शोधनोपरांत – तिक्तक घृत + मधु – थोड़ा-थोड़ा।

स्तन विद्रधि–

- उपनाह– निषेध – मृदु मांस पक्व कोथ।
- तीनों अवस्थाओं में स्तन निदुर्हन (Squeezing)।
- पकने पर – दुग्ध वाही सिरा, चूचुक (Teat) व कृष्ण मण्डल (Areola) बचाते हुये शस्त्र कर्म।

वृद्धि–

१	वातज	१. स्नेहन– त्रिवृत (घृत, तैल, वसा) से। २. स्वेदन ३. विरेचन– मिश्रक स्नेह (गुल्म)/सुकुमारक स्नेह/तिल्वक, एरण्ड से। ४. निरूह– वातघ्न क्वाथ+ कल्क ५. संसर्जन– मांसरस। ६. अनुवासन– मुलेठी तैल। ७. स्वेद, प्रलेप, उपनाह। ८. पकने पर भेदन कर व्रणवत चि०।
२	पित्तज	पित्त शोफ, पकने पर व्रणवत।
३	कफज	कफ शोफ वत; दारू हरिद्रा क्वाथ– गोमूत्र से। विम्लापन निषिद्ध। कफ ग्रन्थि वत चि०। पक्व → पाटन।
४	रक्तज	पित्तवत; बार-बार रक्तमोक्षण।
५	मेदज	सुरसादि गण द्रव्य + गोमूत्र → रूक्ष स्वेद, सुखोष्ण लेप। • शिरो वैरेचन द्रव्यों का सुखोष्ण लेप • स्वेद • अण्ड, सेवनी को बचाते हुये वृद्धि पत्र से विदारण कर मेद निर्हरण; कासीस + सैंधव + शहद प्रतिसारण कर, सीवन। • चमेली ग्रन्थि, एला, भिलावा से बने तैल से स्नेहन, स्वेदन।
६	मूत्रज	स्निग्ध स्वेदन, पट्टी, सेवनी के नीचे दकोदरवत ब्रीहिमुख से वेधन कर नाड़ी से स्रावण, स्थगिका बन्ध, शोधन रोपण।

७	आंत्रवृद्धि	(१) जो फलकोश Scrotal Sac तक न पहुँची हो, उसमें वात वृद्धि वत चि०– स्नेहन, विरेचन, अनुवासन। (२) बङ्क्षणस्थ (Ing. hernia) में अर्धेन्द्रवक्र शलाका से अग्नि दाह– मार्गरोधार्थ। वस्तिकर्मोपरान्त। (३) अङ्गुष्ठस्योपरि स्नाव पीतं तन्तुसमं च यत्। उत्क्षिप्य सूच्या तत्तिर्यक् दहेच्छित्वा यतो गद: ॥२३॥ आन्त्र वृद्धि के ही पार्श्व के पैर के अंगूठे के ऊपर तन्तुवत पीले स्नायुओं को सुई से उठाकर तिरछा काटकर जलाये। वि० योग– सुकुमारक घृत, गन्धर्वहस्त तैल।

→ विश्वाची (Sciatica) में उसी पार्श्व की कनिष्ठिका और अनामिका अंगुली (पाद) में (पीले) स्नायु का छेदन कर दाह करे।

अन्य मत–
- वृद्धि के दूसरे पार्श्व में अंगुष्ठ दाह, अनामिका में दाह।
- वात कफज गुल्म, प्लीहा में यही दाह।

सुकुमारक घृत– (श्लोक–२०)

पुनर्नवा .... १०० पल
दशमूल, विदारी, अश्वगन्धा, शतावरी, एरण्डमूल– १०-१० पल } + जल– १ वाह-

→ क्वाथ – उतार कर छाने (१/८ बचने पर)

+ गुड़	३० पल	पकाये।
+ एरण्ड तैल	१ प्रस्थ	
+ घी, दूध	२-२ प्रस्थ	
+ द्राक्षा, सोंठ, पिप्पली, पिप्पली मूल, अजवायन, यवक्षार, चित्रक, मुलेठी, सैंधव	२-२ पल	

गुण– सर्व यन्त्रणाओं में किसी प्रकार का कष्ट न देने से सुकुमारक। क्षीण शुक्र, विषमाग्नि, वृंहण, वय: स्थापक; वर्ध्म (Hernia), विद्रधि, प्लीहा, गुल्म, उदावर्त, शोफ, उदर, मेढ्र व योनि रोग, महावात व्याधि में परमौषध।

गन्धर्व हस्त तैल–

एरण्डमूल	१ तुला
जौ	१ आढक
सोंठ	१/२ कुडव
जल	१ द्रोण

} क्वाथ– १/४ बचने पर छाने + दूध – २ प्रस्थ, एरण्ड तैल – १ प्रस्थ
+ एरण्ड मूल – १ कुडव, सोंठ – १ पल } कल्क।

गुण– पूर्ववत।

१६. गुल्म चिकित्सित

गुल्मो हि वातादृते न संभवति। वात के बिना गुल्म की उत्पत्ति नहीं होती, अत: प्रथम सभी में वातहर कर्म।

सामान्य चि०–

I. वातघ्न स्नेह, अभ्यंग
II. स्वेदन
} स्रोतमार्दव → वात शमन – विवन्ध (अवरोध) का शीघ्र भेदन, गुल्म अपकर्षण।

III. स्नेह युक्त– मृदु विरेचन; वस्ति; संसर्जन (अम्ल, लवण, मधुर)। (वात के कारण सभी दुर्विरेच्य होते हैं अत: प्रथम स्नेहन)।

भेदानुसार चि०–

१. वातोत्तर– सामान्य–

रूक्ष रोगी में बद्धमल तीव्रशूल–

- वात व्याधि में कहे तैल पान।
- विडंग, पंचकोल, मरिच, त्रिफला, धनिया कल्क + दूध से घृतपाक।
- ,, + दशमूलक्वाथ से घृतपाक।
- षट्पलघृत (राजयक्ष्मा चि०)
- **हिंग्वादि घृत** (श्लो०-४)– हिङ्गु, धनिया, अम्लवेतस, सौवर्चल, एला, विड, शठी, दाडिम, यवक्षार, त्रिकटु, अजगन्धा, अजमोद (अजवायन), कालाजीरा, पुष्कर मूल, वच, चित्रक, तुलसी कल्क + दधि → घृतपाक। (कल्क १ : घृत ४ : दधि ४ : जल १६)।
- हपुषादि घृत, शुण्ठ्यादि घृत, लशुनादि घृत, दाधिक घृत।
- त्रिकटु, वच, वायाविडंग, कुटकी, चित्रक, सौवर्चल, हरड़, यवक्षार (१० द्रव्य) + दूध → घृतपाक।
- १० द्रव्य + अनार रस → घृतपाक।

विशेष– हृदयस्थ– स्नेहपान; वस्तिस्थ– वस्ति; नाभि, पार्श्वस्थ– स्नेहपान व वस्ति।

अग्नि प्रदीप्त; वात, मल बद्ध–
- स्निग्ध, उष्ण, बृंहण आहार।
- बार-बार स्नेहपान, निरूह, अनुवासन।
- कफ व पित्त का अनुरक्षण – बढ़ने न दे।

(A) K↑ → तन्द्रा, गौरव, अरूचि, हल्लास, अग्निमान्द्य – वमन।
- शूल, आनाह, बिबन्ध – निम्न चूर्ण/घृत – तक्र, बेर, अनार से।
- **त्रिलवणादि चूर्ण–** उष्ण जल/ऊँटनी दुग्ध/घी से।
- हृद, गुद, कटि, यकृत, प्लीहा, गुह्य भाग की शूल नष्ट, अग्नि अति प्रदीप्त।
- अभयादि चूर्ण।

- **यवान्यादि चूर्ण** (श्लो०-१५)–
  [illegible] (Conc. Semen) मूत्राघात हर।
- **क्षार लेह–**
  तिल नाल, पलाश, सर्षप, यवनाल, मूली बीज $\xrightarrow[\text{विधि}]{\text{अन्तर्धूम}}$ क्षार → गोमूत्र में कई बार घोलकर छाने → स्वच्छ भाग (अच्छ) + सोंठ, सैंधव, कूठ, वायविडंग चूर्ण प्रक्षेप → पक्व → लेह – तैल से खाये।
- क्षारागद (श्लो०-१७) – भेलोक्त।
  वि० गुण– सर्प, मूषिक दष्ट; गर; अपस्मार, उन्माद, अश्मरी, योनि रोग, शुक्र दोष हर।

(B) P↑ → संताप – विरेचन – एरण्ड तैल दूध से।
नीलनी फल चूर्ण पूर्वोक्त घृतों से।
P↑ + K – एरण्ड तैल वारूणी से।
P↑↑↑ – त्रायमाण दूध से।

- विरेचन के बाद भी संताप बना रहने पर रक्त मोक्षण।

मल बिबन्ध– उदावर्त चि०।

- छिलके उतरे तिल (२) + सोंठ (१/२) – पीसे + गुड़ (१) – उष्ण दूध से पिये।
  – वातगुल्म, उदावर्त, योनिशूल हर।

रसोन सिद्ध दूध– गुल्म, उदावर्त, गृध्रसी, हृदरोग, विद्रधि, शोष, विषम ज्वरहर।

शूल–

- बृहती द्वय, बिल्व, गोक्षुर, एरण्ड, मातुलुङ्ग मूल, पाषाण भेद का क्वाथ– यवक्षार से पीना।
- देवदारू सोंठ एरण्डमूल पुष्करमूल क्वाथ।
- यवक्षार एरण्ड तैल से।

हींग : सैंधव : एरण्ड : रसोन रस (१ : ३ : ९ : २७) – उदर, गर, गुल्म, वर्ध्म, प्लीहाशूलहर।

२. पित्त गुल्म–

(i) स्निग्धोष्ण उद्भूत–
विरेचन– • कम्पिल्लक – मधु से
• द्राक्षा हरड़ क्वाथ – गुड़ से

(ii) रूक्षोष्ण उद्भूत–
संशमन– तिक्तक/वासा घृत
विरेचन– त्रिफलादि क्वाथ/त्रायमाण घृत/द्राक्षाघृत (विद्रधि चि०)।

पक्वाशयस्थ–

- संशोधन– तिक्त द्रव्यों से बनी क्षीर बस्तियों से।
- शीत पदार्थ (बर्फ) का गुल्म पर धारण।
- विदाह → पाकाभिमुख – रक्त मोक्षण; जांगल मांस आहार।
- उपनाह आदि बांधकर विद्रधि वत चि०।

३. श्लेष्म गुल्म–

- वमन/गर्भिणी आदि अवमनीय में उपवास।
- पेया– उष्ण, कटु, तिक्त, दीपन।
- घृत– वातगुल्मोक्त + हींग, क्षार, अम्लवेतस (दूनी मात्रा)।
  - दशमूलादिक, भल्लातक घृत।
- **घटिका प्रयोग–** आध्मान, बिबन्ध, काठिन्य; उन्नत, मांस में गूढ़, स्थिर, महावस्तु (बड़ा घेरा)–
  १. सर्व शरीर स्वेद (स्नेहनोपरांत), गुल्म स्वेद – बार-बार – गुल्म शिथिल।
  २. घटिका लगाये। गुल्म इसमें आ जाने पर घटि हटा दे/तोड़ दे।
  ३. वस्त्र से गुल्म चारों ओर से घेरकर शीशे/बकरी का खुर से प्रपीडन करे/ दबाये/मले (केन्द्र में नहीं)
  ४. लेप– साल्वण, सुखोष्ण
  ५. स्वेदन – लोहपात्र से
  (१-५) – गुल्म स्वस्थान छोड़ता है/शिथिल।
  ६. स्नेह विरेचन; नीलनी घृत– २ पल मात्रा।
  दशमूल वस्ति
- **मिश्रक स्नेह–**

(१) कफ गुल्म– त्रिफला दन्ती द्रवन्ती दशमूल + जल (१६ गुना) $\xrightarrow{\Delta}$ १/१६ शेष → छाने + घृत, एरण्ड तैल, दूध → पक्व।

गुण– कफ गुल्म, वात मल बिबन्ध, उदावर्त, प्लीहोदर, योनिशूल।

(२) वात गुल्म–

पिप्पली आंवला द्राक्षा श्यामा – १-१ पल
एरण्ड तैल, घृत – १-१ प्रस्थ
} + दूध ६ गुना (१२ प्रस्थ) पकाये।

गुण– रेचक, वृद्धि, विद्रधि, गुल्म, वातव्याधि हर।

- **दन्तीहरीतकी–** (श्लो०-४०)

दन्ती, चित्रक, हरड़ – २५-२५ पल + जल – १ कलश $\xrightarrow{\Delta}$ १/८ बचाये

+ गुड़ – २५ पल,
तैल – १/२ कुड़व
निशोथ चूर्ण – १ कुड़व
पिप्पली चूर्ण – १/२ पल
सोंठ चूर्ण – १/२ पल

} $\xrightarrow[\text{पाक}]{\text{मृदु अग्नि}}$ लेह → ठण्डा → + मधु- १/२ कुड़व + चतुर्जातक चूर्ण-१ कर्ष।

गुण– २५ दिन सेवन से गुल्म, अर्श, श्वयथु, कुष्ठ, कामला, अरोचक, ग्रहणी, पाण्डु, हृदरोग, प्लीहोदर, विषम ज्वर हर। सुख विरेचन।

- अन्य योग–
  - स्नुही दुग्ध भावित निशोथचूर्ण – घी, मधु से।
  - गुग्गुलु – गोमूत्र से।

  I. दूध आदि स्निग्ध आहार II. यवक्षार (कफ छेदन, क्षरण)।
- कफरूद्ध मार्ग शुध्यर्थ– तक्र

  पिप्पली मूल सैंधव कालाजीरा चित्रक चूर्ण + सुरा (पुरानी) ।

दाहकर्म– कफ गुल्म में।

I. रक्त मोक्षण

II. गुल्म को वस्त्र से चारों ओर से घेरकर अग्नि तप्त शर लोह/अग्निमन्थ/तिन्दुक लकड़ी से ऊपर से (नातिगाढ़) जलाये।

- नाभि, हृदय, वस्ति, आंत्र, रोमराजि बचाये।

III. दाह वेग शमन– कषाय, मधुर, शीतल द्रव्य।

IV. व्रणोपक्रम।

संसर्ग, सन्निपात गुल्म– यथोक्त।

रक्तगुल्म–
- प्रसव काल बीत जाने पर।
- पलाश क्षारोदक में घृत व तैल (समभाग) पकाकर दे।
- गुल्म भेदन–
  - तीक्ष्ण, उष्ण चि०।
  - योनि विरेचन – यवक्षार/स्नुहीक्षीर + तिल कल्क– योनि धारण।
- यवक्षार, दूध, मूत्र, दशमूल – उत्तर वस्ति, वस्ति।
- अति रक्तस्राव में रक्तपित्त वत चि०

⇒ गुल्म– १. आम २. केवल वात ३. उदावर्त जन्य अवरोध से।

मन्देऽग्नौ वर्धते गुल्मः प्रदीप्ते तु प्रशाम्यति ।।५२।।

अग्नि के मन्द होने पर गुल्म बढ़ता है, और प्रदीप्त होने पर शमन होता है।

१७. उदर चिकित्सित

स्रोत मुख अवरोध → वात व्याकुल → सर्व उदर रोग।

सामान्य चि० – स्नेहनोपरांत बार-२ विरेचन।

I. हरीतकी चूर्ण – १ प्रस्थ + घृत – १ आढक $\xrightarrow{\Delta}$ मंथन/मिश्र
↓ ठंडा
पाक ← हरड़क्वाथ, अम्ल दधि + छाने ← जौ की राशि में १ माह रखे
(१-१ आढक)

- यवक्षार – १ पल, पंचकोल – ५ पल } मस्तु – १ आढक, दशमूल क्वाथ – १ आढक } घृत– १ प्रस्थ सिद्ध करे।
- चविकादि घृत– (श्लो०–६)।

II. गो दुग्ध + स्नुही क्षीर प्रक्षेप $\xrightarrow{\Delta}$ शीत $\xrightarrow{\text{मंथन}}$ नवनीत + से हुण्ड क्षीर → पाक।

III. एरण्ड तैल– मूत्र– गो, माहिष (वात व K, P के परस्पर आवरण)।
,, / – दूध– ऊँटनी, गाय, बकरी
त्रिकटु + उपरोक्त दुग्ध।
शेष दोष शमनार्थ– चव्य, सोंठ– दूध से।

→ दूध, पुराण अन्न, तक्र, अरिष्ट (अर्शोक्त); आर्द्रक रस + दूध (सम भाग)।
वर्धमान पिप्पली (१०००) रसायन; सलिलं तु वर्जयेत् (जल निषेध)।

पटोलादि चूर्ण विधि– सर्व उदर, (जातोदक भी) हर।

पटोल मूल, हल्दी, विडंग, त्रिफला – १-१ कर्ष
कम्पिल्लक, नीलिनीफल, निशोथ– २,३ व ४ कर्ष } चूर्ण।

I. चूर्ण – गोमूत्र से
II. पेया, मण्ड आहार – १ बार
III. आहार + सोंठ, मरिच, पिप्पली – ६ दिन
IV. चूर्ण – ७वें दिन।
V. आहार (पूर्वोक्त) – ६ दिन

उदर परिषेक– धनिया, सोंठ, बृहत्पंचमूल क्वाथ/मूत्र।

स्वेदन– ढाक, आक, सहजन + गोमूत्र $\xrightarrow{\Delta}$ लेप।

विरिक्त कोष्ठ में वात आध्मान न करे–

१. साल्वणादि द्रव्य (सू० २६/५) लेप।
२. उदर, वस्त्र से कस कर बांधे।

आध्मान हो जाने पर – स्निग्ध निरूह + अम्ल, लवण।
उपस्तम्भ/वात अवरोध – तीक्ष्ण उष्ण निरूह।

क्षीर प्रयोग– सभी चिकित्साओं के पूर्ण हो जाने पर।

स्थैर्यकृत् सर्वधातूनां बल्यं दोषानुबन्ध्यहृत् ।।
भेषजापचिताङ्गानां क्षीर मेवामृतायते ।।४८।।

गुण– सर्व धातु स्थैर्य, बल्य, शेष दोष का निर्हरण, औषध से कृश देह के लिये अमृत वत।

भेदानुसार चि० –

१. वातोदर–

I. स्नेहन– विदार्यादि गण सिद्ध घृत; स्वेदन।
II. विरेचन– तिल्वक् घृत
III. संसर्जन – दूध (४, ५ दिन); यूष + अम्ल लवण।

- प्रदीप्ताग्नि में– IV – पुन: स्नेहन, स्वेदन
  - आस्थापन वस्ति – विदार्यादि क्वाथ + बड़ी एरण्ड तैल।
  - मल अवरोध, अस्थि, सन्धि शूल, स्फुरण, आक्षेप – स्नेहन न करे।
    अनुवासन – वातघ्न, अम्ल + तिल तैल + एरण्ड तैल।
- शूल–
  - सरल, मीठा सहजन, मूली बीज सिद्ध स्नेह – पान, अभ्यंग।
  - स्वेद (उदर पर)

अविरेच्य– दूध, घृत आदि से चि०।

२. पित्तोदर–

(A) बली में–
I. स्नेहन– मधुर द्रव्य सिद्ध घृत
II. विरेचन– श्यामा त्रिवृत त्रिफला पक्व।
III. आस्थापन/अनुवासन– न्यग्रोधादि क्वाथ + मधु घृत शर्करा।

(B) दुर्बल में–
I. अनुवासन
II. क्षीर बस्तियों से शोधन
III. स्नेहन (अग्नि दीप्त होने पर)
IV. विरेचन– त्रिवृत कल्क/एरण्ड तैल + दूध।

$\left.\begin{array}{l}\text{P + K} \rightarrow \text{मूत्र + दूध से} \\ \text{P + V} \rightarrow \text{तिक्त घृत + दूध से}\end{array}\right\}$ विरेचन।

उदर उपनाह– दुग्ध सिद्ध चावल (पायस) ।

३. कफोदर–

I. स्नेहन– वत्सकादि गण क्वाथ सिद्ध घृत

II. विरेचन– स्नुही क्षीर पक्व घृत।

III. संसर्जन– कटु, क्षार युक्त, कफघ्न आहार।

IV. आस्थापन/अनुवासन– मुष्कादि क्वाथ + त्रिकटु + मूत्र/तैल।

V. उपनाह– सरसों, मूली बीज।

VI. स्वेदन– बार-बार।

आहार– वातोदर – } विदार्यादि गण सिद्ध दुग्ध।
पित्तोदर – }
कफोदर – त्रिकटु सिद्ध दूध, कुलत्थी यूष, तीक्ष्ण अरिष्ट।

४. सन्निपातोदर– प्रव्याख्येय।

I. विरेचन – सप्तला, शंखिनी क्वाथ सिद्ध घृत से – १५ दिन/ १माह।
– स्नुही क्षीर, मूत्र सिद्ध घृत से – १५दिन/ १माह।

II. आस्थापना वस्ति – भार्गी, चौलाई, कूठ, रास्ना कल्क, गोक्षुर, एला, पुनर्नवा आदि + गोमूत्र, सैंधव, स्नेह।

दोष निर्हरण का अन्तिम उपाय– सर्व उदरों में।

- मद्य + कनेर, गुञ्जा, श्वेत रत्ती मूल कल्क।
- गन्ना/वल्लीफल (ककड़ी)/मूल – कृष्ण सर्प दंशयित्वा।

स्थिर, लीन, उन्मार्गी विष —प्रमाथी विष→ बहिः प्रवर्त/मृत्यु।
(दोष संघात)

दोषनिर्हरणोपरांत–

I. शीताम्बु स्नान/परिषेक।

II. क्षीर यवागू पान – (१ काल)।

III. वास्तूक (बथुआ)/मण्डूकपर्णी शाक अपक्व/पक्व + स्व स्वरस भावित– १ माह ...... शेषदोषनिर्हरण।

IV. कारभ (ऊँटनी) दुग्ध – बल हेतु।

५. प्लीहोदर– [३ - V - P - K]

I. दोषानुसार स्नेहन स्वेदन

II. दधि आहार

III. वाम बाहु में सिराव्यध + हाथ से प्लीहा मर्दन – रक्तस्यन्दन।

IV. स्नेह पान, शुक्ति क्षार दूध से/हींग + सर्जिक्षार – दूध से/यवक्षार पलाश क्षारोदक से।

- परिजात, इक्ष्वाकु, अपामार्ग क्षार – तैल से।
- सहजन क्वाथ + पिप्पली, चित्रक, सैंधव।

अग्नि मांद्य– त्रिलवणादि (गुल्म), रोहितकषटपल घृत आदि।

रोहितक घृत– (श्लोक–३५)–

रोहेड़ा त्वक् २५ पल
बेर २ प्रस्थ } जल में क्वाथ + पंचकोल, रोहेड़ा छाल– ५-५ पल
↓
१ प्रस्थ घृत सिद्ध करे।

- वातकफोल्वण में गुल्मविधि से अग्निकर्म [पिच्छोदक न बना हो तभी।]।
- पित्तोल्वण–
  - जीवनीय गण सिद्ध घृत, क्षीर, वस्ति, विरेचन।
  - बार-बार रूधिर अवसेचन।

यकृद्दाल्युदर– प्लीहोदर वत चि०।

६. **बद्धोदर–**

I. स्नेहन

II. निरूह, अनुवासन– तीक्ष्ण; तैल लवण मूत्र युक्त।

III. संसर्जन– अनुलोमक

IV. विरेचन– तीक्ष्ण, वातघ्न।

७. **छिद्रोदर–** स्वेद वर्ज्य। कफोदर वत चि०। (शस्त्र कर्म) ।

८. **दकोदर–**

(A) **प्रारंभिक अवस्था–**

(i) उदक दोष निर्हरण– रूक्ष तीक्ष्ण क्वाथ– गोमूत्र से।

(ii) कफघ्न चूर्ण, क्षार; दीपन अन्नपान।

(B) **जठर में उदक उत्पन्न हो जाने पर–**

(i) वातघ्न तैल अभ्यंग कर, उष्णोदक से स्वेदन।

(ii) रोगी को कक्षा (Axilla) से पकड़वाकर, वस्त्र उदर पर वेष्टित करे।

(iii) **वेधन–** ब्रीहिमुख शस्त्र से;
नाभि के नीचे, बायें, ४ अंगुल छोड़कर;
अङ्गुष्ठोदर मात्र अवगाढ़ वेधन;
नाड़ी लगाकर उदक की १/२ मात्रा अवसिञ्चन/निकालना।
नाड़ी निकालकर तैल लवण अभ्यक्त कर व्रण बंधन, उपचार।
३/४/५/६/८/१२/१६ दिन के अंतर से अल्प-२ दोषोदक विस्रावण करे। रेशम पट से कस कर बांधे- आध्मान परिहारार्थ।

I. उपवास; यवागू– स्नेह, लवण रहित।	
II. केवल दूध– ६ माह;	१ वर्ष तक संयम।
III. क्षीर पेया– ३ मास;	
IV. सांवा, कोदौ, अल्प लवण, अल्प दुग्ध– ३ माह।	

अतिविस्रावण जन्य उपद्रव– सहसा एक साथ उदक निकालने से– तृष्णा, ज्वर, अङ्गमर्द, अतिसार, श्वास, कास, पाद दाह।

शस्त्रकर्म– • उदकोदर– उपरोक्त।

• बद्धोदर • छिद्रोदर	स्नेहन स्वेदन	नाभि के नीचे वाम ४ अंगुल	उदर पाटन कर आंते बाहर निकाल कर देखे।	• अवरोध हटाये। • शल्य निकाल कर, छिद्रों का सीवन।

आंतो को मधु + घृत से अभ्यक्त कर यथा स्थान स्थापन कर, उदर की बाह्य व्रण का सीवन करे।

कृष्ण मृदा + मुलेठी चूर्ण व्रण पर लगाकर बांधे।

निवात आगार, क्षीर वृत्ति, स्नेह द्रोणि।

उदर रोगों में पथ्य– दोष संचय → उदर पूर्ण → अग्निमंद।

- दीपन, लघु; पंचमूल; अल्प अम्ल, स्नेह, लवण; कटु।
- साठी चावल (गोमूत्र भावित) – यवागू/पायस।
- इक्षु रस। तक्र।

असेव्य– अतिउष्ण अम्ल लवण; रूक्ष, ग्राही, शीत, गुरू; तिल, गुड़, शाक, पानी, अध्व, दिवाशयन, यान।

तक्र प्रयोग–

नात्यच्छ सान्द्र मधुरं पाने तक्रं प्रशस्यते ।।४६।।

बहुत पतला नहीं, बहुत गाढ़ा नहीं, मधुर, तक्र उत्तम है।

वात	– + पिप्पली, लवण
पित्त	– + मरिच, शर्करा
कफ	– + यवानी, सैंधव, कालाजीरा/मधु/त्रिकटु
सन्निपातोदर	– + त्रिकटु, यवक्षार, लवण
प्लीहोदर	– + मधु, तैल, वच, सोंठ, सौंफ, कूठ, सैंधव
बद्धोदर	– + हपुषा (हऊबेर), अजवायन, लवण, कालाजीरा
छिद्रोकर	– + पिप्पली, मधु
जलोदर	– + त्रिकटु

वात कफ रोगियों में गौरव, अरोचक, आनाह, अग्निमान्द्य, अतिसार होने पर तक्र अमृत वत है।

क्षीर प्रयोग– सर्व प्रयोगोपरान्त।

१८. पाण्डु रोग चिकित्सित

पाण्डु– ५ – V, P, K, S मृद्भक्षण।

सामान्य चि० – दोषज V, P, K, S, पाण्डु की–

I. स्नेहन II. तीक्ष्ण वमन III. स्नेहन IV. संशमन, विरेक चि०।

स्नेहन–

- घृतपान (सर्वप्रथम)– कल्याणक घृत (उ० ९); पंचगव्य घृत (उ० १०); महातिक्त घृत (कुष्ठोक्त) में से कोई एक।
- दाडिमादि घृत– (श्लो०-३)

दाडिम (अनार) सार	– १ कुड़व	}	कल्क + जल – १ आढक
धनिया	– १/२ कुड़व	}	घृत – २० पल
पिप्पली	२ कर्ष	}	↓
चित्रक, सोंठ	– १-१ पल	}	पाक।

गुण– हृद, पाण्डु, गुल्म, प्लीहा, अर्श, श्वयथु, कास, मूढवात, वात-कफ रोग नाशक; दीपन; वन्ध्या में संतान, कष्ट प्रसव में सुख कर।

- दुरालभा घृत – (श्लो-४)।

वमन– तीक्ष्ण

पुनः स्नेहन करके निम्न योग–

- पिप्पली से पका दूध – १५ दिन/१ माह।
- गोमूत्र सिद्ध त्रिफला/पिसी हरड़ – १ सप्ताह।
- त्रिकटु, काले तिल, लोह भस्म [१:१:१] + माक्षिक भस्म [३] → + मधु → वटक – तक्र के साथ खाये।
- **नवायस चूर्ण–** त्रिफला, त्रिकटु, चित्रक, विडंग, मुस्ता – १-१ भाग }
  लौह भस्म – सबके बराबर }

  – मधु व घृत से खाये/तक्र/उष्णोदक।

  गुण– हृद, पाण्डु, कामला, कुष्ठ, अर्श, शोफ, उदर, प्लीहा, प्रमेह।
- ताप्यादि मण्डूर (श्लो०- ८)
- **योगराज–**

  शिलाजतु, स्वर्ण माक्षिक, रौप्यमाक्षिक, मण्डूर भस्म – ५-५ पल }
  त्रिफला, त्रिकटु, चित्रक, विडंग – ८ द्रव्य – प्रत्येक १-१ पल }

– चूर्ण + मिश्री – ८ पल।

सेवन– मधु से द्रवित कर।

गुण– यक्ष्म विष ज्वर कास श्वास अपस्मार हर।

वज्राभिधान गुटिका– (श्लो-१०)–

त्रिफला, इन्द्रयव, मुस्ता, पटोल, नीम, सोंठ कषाय में शिलाजतु ८ पल को १ माह/१५ दिन तक भावित करे।

शिलाजीत + मिश्री (सम) + पिप्पली, वंश लोचन, आंवला, कर्कटशृंगी (१-१ पल) +

छोटी कटेरी का फल व मूल	– १-१ पल	वटंक– अनार रस/दूध/जल/सुरा से सेवन।
त्रिजातक	– ३ कर्ष	
मधु	– ३ पल	

गुण– वज्रवत हृद, गल, गर, उदर, असृग्दर, भगन्दर, गुल्म, वर्ध्म, शुक्र, मूत्र दोष हर।

द्राक्षा लेह– (श्लो०-११)–

द्राक्षा, पिप्पली	– १-१ प्रस्थ	चूर्ण + आंवला रस– २ द्रोण $\xrightarrow[\text{पाक}]{\text{मृदु अग्नि}}$ लेहवत ↓ ठंडा + मधु– १ प्रस्थ
शर्करा	– १/२ तुला	
वंश लोचन, सोंठ	– २-२ पल	

इसमें त्रिसुगन्धि (त्वगेला पत्र) चूर्ण– ३ कर्ष मिलाकर कड़छी से चलाये। इसे चमेली (जाती) पुष्प सुवासित मृद् पात्र में रखे।

गुण– पाण्डु, हृद, कामला, हलीमक, ज्वर, गुल्म, उदर, शोफ, उदावर्त तथा अन्य विरेचन साध्य रोग हर।

- बीजक सार (विजय सार– असन) अरिष्ट।
- **गण्डीरारिष्ट–** (श्लो०-१४)–

गण्डीर (स्नुही) मूल, पुष्प, शाखा	– १ तुला	+ १६ गुना जल ↓ पाक १/४ शेष ↓ छाने
दशमूल	– १/२ तुला	
त्रिफला	– $1\frac{1}{2}$ प्रस्थ	
मुस्ता, भिलावा, विडंग, इन्द्रयव	– १-१ कुडव	
पाठा, दन्ती, मूर्वा, रास्ना, कचूर, चित्रक	– १-१ पल	
द्राक्षा	– १/२ प्रस्थ	

छनित्र + मिश्री	– २०० पल	घट में घृत लगाकर इस क्वाथ को भरकर १ माह तक रखा रहने दे।
लौह चूर्ण	– १ प्रस्थ	
पिप्पली	– १/२ प्रस्थ	
पिप्पली मूल चूर्ण	– १ पल	
मरिच, विडंग, ऐलवालु चूर्ण	– १/२ – १/२ पल	

गुण– ग्रन्थि, अर्बुद, कृमि नाशक।

- मस्त्वरिष्ट– पाण्डु, प्रमेह, स्थौल्य, मेद, अर्श, ग्रहणी, प्लीहा, शोफ, उदर, भगन्दर हर; दीपन।

पथ्य– सात्म्य अन्न, शालि, जौ, गेहूँ, मूंग, जांगल मांस, दूध, घृत, वासा, पटोल, पापड़ा, द्राक्षा, अनार, खजूर, आंवला रस।

अनुपान–	सर्वदा	– तक्र।
	वाताधिक्य	– पंचमूल } सिद्ध जल।
	पित्त ,,	– मुस्ता, ह्रीबेर, सोंठ } सिद्ध जल।
	कफ ,,	– अरिष्ट, द्राक्षासव
विशेष चि०–	वातज	– स्निग्ध
	पित्तज	– तिक्त, शीत
	कफज	– कटु, रूक्ष, उष्ण
	सन्निपातज	– मिश्रित।

मृद्‌भक्षण जन्य पाण्डु–

I. तीक्ष्ण संशोधन

II. घृत प्रयोग– शुद्ध कोष्ठी में बलाधानार्थ

- त्रिकटु, बिल्व, हल्दी, दारूहल्दी, त्रिफला, पुर्ननवा– श्वेत व रक्त, मुस्ता, लोह भस्म, पाठा, विडङ्ग, देवदारू, बिच्छू बूटी, भार्गी से दूध के साथ घृत पकाये।

बच्चे की मिट्टी खाने की आदत छुड़ाने के लिये, नीम पत्र, बैंगन से भावित मिट्टी खाने को दे।

मृदानुसार उत्पन्न दोष चि०–

कषाय मिट्टी – वातघ्न
ऊषर मिट्टी – पित्तघ्न
मधुर मिट्टी – कफघ्न चि०।

कामला– पित्त नाशक, पाण्डु अविरोधि चि०।

पथ्या घृत, दन्तीघृत।

- द्राक्षा १/२ प्रस्थ से पुराण घी १ प्रस्थ सिद्ध करे।
- **हरिद्रादि घृत–** (श्लो०-२५)– हल्दी, त्रिफला, निम्ब (त्वक्), बला, मुलेठी से दूध के साथ सिद्ध भैंस का घी।
- इक्षु रस/विदारी + आंवला रस से अमलतास – १ पल + त्रिकटु।
- प्रातः त्रिफला/गुडुची/नीम क्वाथ।

कोष्ठाश्रित कामला–

तिलपिष्टनिभं यस्तु कामिलावान् सृजेन्मलम् ।
कफरूद्ध पथं तस्य पित्तं कफ हरैर्जयेत् ।।२९।।

तिलपिष्ट निभ वर्च होने पर पित्त मार्ग कफ से अवरूद्ध है; ऐसा जाने (Bile not passing into Int.), इसमें कफ हर चि० करे।

शाखाश्रित कामला–

रूक्ष, शीत, गुरू, मधुर, अव्यायाम, वेग निग्रह → V कोप $\xrightarrow{+K}$ कोष्ठ से पित्त का बहि; क्षेपण (Bile pig in skin)– हारिद्र, नेत्र, मूत्र, त्वक्; मल-श्वेत। आध्मान, मलमूत्रावरोध, हृद् गौरव।

अनुषंगी– दौर्बल्य, अग्निमांद्य, पार्श्वशूल, हिक्का, श्वास, अरूचि, ज्वर।

चि०– रूक्ष, कटु, अम्ल, तीतर, मुर्गा, मूली (शुष्क) यूष, कुलत्थी यूष। अति अम्ल, तीक्ष्ण, कटु, लवण, उष्ण आहार। त्रिकटु– बिजौरा रस से चाटे।

पित्त के स्व स्थान में जाने पर मल में पीलापन आने लगता है।

कुम्भ कामला– शिलाजीत – गो मूत्र से – १ माह।
स्वर्ण माक्षिक – गो मूत्र से – १ माह।

हलीमक–

स्नेहन – गिलोय स्वरस व दूध सिद्ध माहिष घृत।
विरेचन – निशोथ– आमलकी स्वरस से
शमन – मधुर; पित्त, वात शामक आहार
द्राक्षालेह, पूर्वोक्त मधुर घृत।
बस्ति – यापना, क्षीर, अनुवासन।
अग्निदीपन – मृद्वीका अरिष्ट
कास – अभयालेह (अगस्त्यलेह चि० ५/८२)
• पिप्पली/मुलेठी/बला दूध से।

⇒ Cholecystitis व Cholelithiasis में वज्राभिधान गुटिका व गण्डीरारिष्ट को Try करना चाहिए।

१९. श्वयथु चिकित्सित

सामान्य चि०–

सर्व (दोषज– V, P, K, S, द्वन्दज) शोथ, आमयुक्त, सर्वाङ्ग– लंघन, पाचन, शोधन।

I. आम निर्हरण II. स्नेहन III. शमन।

स्नेह जन्य– रूक्ष औषधि।

रूक्ष जन्य– स्निग्ध औषधि।

आमजन्य– लंघन; लघु अन्न; सोंठ, देवदारू, हरड़, पुनर्नवा– उष्ण जलेन। नवायस चूर्ण।

I. **मल– गुरू, तनु–**

- तक्र + त्रिकटु, संचल, मधु।
- गुड़ + हरड़।

मल– लघु, कड़ा–

- त्रिकटु, यवक्षार, लौह भस्म– त्रिफला क्वाथ से।
- बहेड़ा कल्क तण्डुलोदकेन
- गुग्गुलु, गोमूत्रेन/हरड़ गोमूत्र से।
- सोंठ, गुड़ (समभाग) – पुनर्नवा कषाय से

आर्द्रक कल्प– आर्द्रक + गुड़ (सम) – १/२ पल (मिलित) प्रतिदिन बढ़ाते हुये ५ पल (१०वें दिन) तक ले जाकर, यही मात्रा १ माह तक प्रयोग करे।

– शोफ, कास, प्रसेक, पीनस, अलसक, अग्निमान्द्य, गुल्म, उदर, प्रमेह, पाण्डु, कामला, मनोविकार हर।

आहार– शालि, दुग्ध, आर्द्रक रस।

II. • दुग्धाहार, घृत, गोमूत्र।

- त्रिकटु, एरण्डमूल, निशोथ मूल
- सोंठ, मूर्वामूल
- पुनर्नवा, अपामार्ग, पंचकोल

} सिद्ध दूध/ऊँटनी का दुग्ध।

घृत– धान्वन्तर (प्रमेह), कल्याणक (उन्माद), पंचगव्य (अपस्मार), तिक्त, महातिक्त (कुष्ठ)।

III. • **दशमूल हरीतकी–** (श्लो०-७)–

दशमूल १ तुला → क्वाथ – १ कंस
+ हरड़ – १००
+ गुड़ – १०० पल

} $\overrightarrow{\Delta}$ लेह

लेह + त्रिकटु, त्रिजातक, यवक्षार; मधु – १/२ प्रस्थ।

गुण– प्रवृद्ध शोथ, उदर, अरोचक, अविपाक, पाण्डु, गुल्म, मेह, श्वास, कास, अश्मरी, आमवात, अम्लपित्त, मूत्र, शुक्र दोष।

अभ्यंग– पिप्पली, धनिया, जटामांसी, ढाक, तालीशपत्र पीसकर पका तैल।

- **लेप–** उपरोक्त द्रव्य, सरसों, सौवर्चल, सैंधव, शार्ङ्गेष्टा (लाजवन्ती – छुईमुई)/ विभीतक मज्जा।

- **एकांग शोफ–** पुनर्नवा, मांसी, कोशातकी, कनेर, ढाक पुष्प, रास्ना, साल, त्रिफला, देवदारू, लोध्र का प्रलेप।

स्नान– मूलक तोय– मूली के गुनगुने जल से;
कुटज, अर्क, करञ्ज, नीम, पुर्ननवा क्वाथ।

विशेष चि० –

- **वातज शोथ–** त्रिवृत (निशोथ)/एरण्ड तैल पान – १५ दिन/१ माह।
  अभ्यंग, स्वेद, उपनाह।
  एकांग– बिजौरा, अग्निमन्थ, सोंठ, देवदारू, जटामांसी लेप।
- **पित्तज शोथ–** न्यग्रोधादि गण सिद्ध घृत/तिक्त घृत।
  मूर्छा, अरति, तृट्, दाह– केवल दुग्ध।
  विरेचन– गो मूत्र + दुग्ध पान।
  अभ्यंग आदि – शीतवीर्य यथा– घृत, न्यग्रोधादि, चन्दन।
- **कफजशोथ–** आरग्वधादि गण सिद्ध तैल।
  यवक्षार, गोमूत्र, तक्र।
- **भल्लातकारिष्ट–** (श्लो०-१६)– शोफ, उदर, अर्श, भगंदर, ग्रहणी, कृमि, कुष्ठ, मेह, कार्श्य, किक्किस।
- अष्टशतारिष्ट।
  लेप– पुराण पिण्याक (खली), सहजन छाल, अलसी; सिकता + गोमूत्र – सुखोष्ण; अगरू, चोरक लेप।
  एकांग शोफ– अजगन्धा (तिलवन), अश्वगन्धा लेप
  स्नान– सोंठ, कूठ, सिद्ध जल।
- **संसर्ग व सन्निपातज शोथ–** दोषानुसार।
  एक देशाश्रयी शोथ– आसन्न वमन आदि, रक्तमोक्षण।
- **अभिघातज शोथ–** रक्त के साथ **वात** प्रायः दूषित → राग, शोफ।
  – विसर्प व वातरक्त चि०।
- **विषजन्य शोथ–** विषघ्न।

अपथ्य– ग्राम्य, आनूप मांस; शुष्क शाक, तिल, गुड़ युक्त अन्न, दधि, लवण; पिच्छिल, अम्ल मद्य, धाना (भुने अन्न); समशन, गुरू, असात्म्य, विदाही। दिवाशयन, मैथुन।

२०. विसर्प चिकित्सित

पूर्वरूपावस्था में ही – लंघन, रूक्षण, सिरामोक्षण, लेखन, (वमन), विरेचन। स्नेहन निषेध।

निरामावस्था में – क्षीण कफेषु – कफ क्षीण हो जाने पर।
– शीतवीर्य और विरेचक घृत – तिक्तक, त्रायमाण घृत।

वमन – मदनफल, इन्द्र जौ, पटोल, नीम, मुलेठी, इक्षुरस।

विरेचन –
- त्रिवृत् (निशोथ) चूर्ण – घी/दूध/द्राक्षारस/उष्णोदकेन।
- पित्ताधिक्य – त्रायमाण पक्व दूध।
- पित्ताधिक्य – त्रायमाण पक्व दूध।
- त्रिफला।

विसर्प	प्रलेप, परिषेक
वातज	सौंफ, धनिया, बांस आदि
पित्तज	कमल, दूर्वा, सिघाड़ा, गेरू, मुलेठी, घृत, दुग्ध, न्यग्रोधादि।
कफज	अश्वगन्धा, अगरू, वच, गोमूत्र, वरणादि गण
संसर्ग	दोषबलानुसार

आमयुक्त वात के कफ या पित्त स्थान में पहुँचने पर (आश्रित)– रूक्ष, विशीत (अनुष्णशीत) प्रलेप व परिषेक।

अग्नि (V.P)– महातिक्तक घृत

ग्रन्थि (K.V)– रक्त व पित्त का संसर्ग अनुमान कर।
संशमन (लंघन → विरेचन); वात कफ हर कर्म [पिण्ड स्वेद, उपनाह]।

शूल हरणार्थ– स्निग्ध, अम्ल, उष्ण उत्कारिका – उपनाह।
- सूखी मूली/करंज छाल/विभीतक/बांस पत्र कल्क सुखोष्ण लेप।

भेदनार्थ –
- दन्ती, चित्रक मूल त्वक्, कासीस, अर्कक्षीर, स्नुही क्षीर, भिलावा – उष्ण लेप।
- आहार– त्रिफला/मधु + पिप्पली/शिलाजीत/गुल्मोक्त।
- तप्त लोह, पत्थर आदि से पीडन (दबाये) ।

ऊर्ध्व जत्रु ग्रन्थि – तीक्ष्ण धूम, वमन।
- क्षार/अग्नि दग्ध।
- शस्त्र से पाटन व शोधन कर दहन।

पाकाभिमुख/विदग्धावस्था – रक्त निकाल कर स्वेदन – बार-बार।
(रक्त निर्हरण – R.P.; स्वेदन– V.K. शमन)

→ सभी विसर्पों में पक जाने पर– दारण कर ग्रन्थि व्रण वत शोधनादि चि०।

कर्दम (K.P)– शीघ्र वमन (विरेचन) आदि। जलौका से रक्त अवसेचन।
(रक्त प्रक्लेद – त्वक्, मांस, सिरा, स्नायु में क्लेद)

कषाय–
- मुस्ता, पटोल, नीम।
- पटोलादि गण।
- चन्दन, श्वेत कमल।
- मुस्ता, खस, आंवला, सारिवा।
- दारूहल्दी छाल, कुटकी, पटोल, मुलेठी, नीम, मसूर, त्रिफला, त्रायमाण क्वाथ + घृत।

श्रेष्ठास्त्रस्रुतिरेवात्र विसर्पो ह्यसृगाश्रयः ।
यच्च नासावसंसृष्टो रक्त पित्तेन जायते ।।१७।।

विसर्प में रक्त मोक्षण श्रेष्ठ है क्योंकि विसर्प का आश्रय रक्त ही है। विसर्प रक्त व पित्त के बिना नहीं होता।

२१. कुष्ठ चिकित्सित

चि०– १. भैषज्य – (A) स्नेहन (B) शोधन (C) शमन
२. दैवव्यपाश्रय

(A) स्नेहन– पूर्वरूपावस्था से ही।

सर्वदा प्रयोग–
- भल्लातक/तुवरक/सिद्धार्थक (सरसों) तैल।
- भिलावा, हरड़, विडंग सिद्ध घृत।

वातोल्वण– एरण्ड, गिलोय, लघु, बृहत् पंचमूल, आदि सिद्ध घृत या तैल – पान, अभ्यंग।

पित्तोल्वण– अर्जुन, वच, पुनर्नवा, पलाश, नीम, मुलेठी, लोध, मजीठ आदि से सिद्ध घृत।

तिक्तक घृत– (श्लो०-४); महातिक्तक घृत (श्लो०-५)– [सप्तपर्ण आदि ३१ द्रव्य + आंवला रस सिद्ध घृत]।

गुग्गुलु पंचतिक्तक (वात व्याधि)।

कफोल्वण– साल, चिरौंजी, अमलतास, नीम, सतवन, चित्रक, वच, मरिच, कूठ सिद्ध घृत।

(B) संशोधन– सर्व; बाह्य व अन्तः।

१. **वमन–** मुलेठी, इन्द्र जौ, नीम, पटोल पत्र।

२. **विरेचन–** दन्ती, द्रवन्ती, त्रिफला, माणिभद्र वटक।

३. **रक्त मोक्षण–** सिरा वेध (अन्य शृंग, अलाबु, जलोका आगे)।
दोष स्थान व बल के अनुसार १/२/३/४/५ बार।
शोधन कर्म से रोगी निर्बल होता है तथा इसके शून्य (रिक्त) कोष्ठ में वात प्राबल्य हो सकता है अतः बीच-बीच में बार-बार स्नेह पान कराये।

आवर्त घृत प्रयोग–

I. उभय अनुलोमन (वमन, विरेचन) – ब्राह्मी स्वरस सिद्ध घृत।

II. आवर्तकी (Cassia Auriculata)	– १ तुला	क्वाथ – १/८ शेष
जल	– १ द्रोण	

क्वाथ + आवर्तकी मूल कल्क → घृत पाक।

गुण– कुष्ठ, श्वित्र, अपची, भगन्दर, नाड़ीव्रण, मूषिक विष; मेध्य, पुंसवन।

४. • **आस्थापन–** दारूहल्दी, पटोल, बृहती, खस, मदन फल, नीम, अमलतास, इन्द्र जौ से। (क्वाथ + कल्क + स्नेह)

• अनुवासन– इन्हीं द्रव्यों से सिद्ध तैल से।

५. **शिरोविरेचन–** ऊर्ध्व जत्रुगत कुष्ठ व कृमि में।

• दन्ती, मरिच, आर्द्रक, करंज बीज, पिप्पली, विडंग, सैंधव आदि से।

• वैरेचनिक धूम (सू० ३०/४)

(C) शमन चि० –

१. योगराज अवलेह (श्लो०-१४) – रसायन श्रेष्ठ। संज्ञा उत्पादक।

I. अङ्ग तोद, भेद, शूयन्ते (शोथ), स्फुरण, स्फुटन।

II. सात रात्रि बाद स्वस्थ।

गुण– अति विकृत शरीर भी स्वस्थ, यक्ष्मा, आढ्यवात, शोफ, पाण्डु, ज्वर, ग्रहणी हर।

२. सुरा कल्प (श्लो०-१८)।

३. अयस्कृति– पलाश आदि; असनादि; न्यग्रोधादि; आरग्वधादि गण।

४. पथ्य– • गोमूत्र भावित जौ का सत्तू; शालि, गेहूँ, कौदो, प्रियंगु (कंगनी), मूंग, मसूर, अरहर, तिक्त शाक; जांगल मांस; – त्रिफला, भिलावा, नीम, भावित + मधु।

• पान– आंवला, खदिर, नीम का पानी
मूंग, पटोल रस
तक्र + बावची

अपथ्य– अम्ल, लवण, उष्ण; दधि, गुड़, दूध, तिल, उड़द; आनूप मांस।

५. निंबारिष्ट– 'वरूण' द्वारा निर्मित। (श्लो०- २७)।

६. माणिभद्र वटक– माणिभद्र यक्ष द्वारा उपदिष्ट (भिक्षु के लिये)।

विडंग मज्जा, आंवला, हरड़	– १-१ पल	मिलाकर वटक बनाये।
(कुंभ) त्रिवृत्	– ३ पल	
गुड़	– १२ पल	

इस मात्रा को १ माह में सेवन करे (प्रतिदिन ≡ २$^{१}/_{२}$ तोला)।

गुण– कुष्ठ, श्वित्र, श्वास, कास, उदर, अर्श, प्रमेह, प्लीहा, ग्रन्थिरूक्, कृमि, गुल्म।

(गुड़ अधिक मात्रा में अग्नि साद करती है परन्तु हरड़ आदि के साथ मिलकर नहीं।)

७. कटुका (कुटकी), पटोल मूल, त्रिफला, वच, नीम, हल्दी, मजीठ–
- कषाय – कफ, पित्त बहुलत्वक् रोगं।
- क्वाथ, कल्क सिद्ध घृत – वातोल्वण।

८. खदिर/नीम/गुडुची/देवदारू/दारूहल्दी – क्वाथ, कल्क सिद्ध घृत।

९. खदिर का शीत कषाय + मधु रसौंत।

१०. खदिर कषाय – घी, मधु/त्रिफला क्वाथ/विडंग कल्क से।

११. खदिर जलाकर स्रवित रस – विधि (श्लो०-३३)।

१२. नीम, शीशम, अमलतास, असन, रोहितक, देवदारू रस – खदिर विधि।

१३. हरड़ – गुड़ व तैल से – १ माह तक।

१४. लाक्षादि चूर्ण

१५. गुटिका रसायन– त्रिकटु, त्रिफला, तिल, भिलावा, घी, मधु, मिश्री – समभाग → गुटिका।

१६. बावची, चित्रक, हल्दी, विडंग, तुवरक मज्जा, भिलावा, त्रिफला, गुड़ से बने वटक।

१७. घोड़े के मूत्र मिलाकर वटक बनाये।

१८. बावची, विडंग, पिप्पली, चित्रकमूल, लोह मण्डूर, आंवला, तिल तैल – अवलेह।

१९. त्रिफला, पिप्पली, विडंग चूर्ण – तैल, घृत, मधु से।

२०. खदिर लकड़ी का चूर्ण, शिलाजीत विडंग + मधु, घृत।
– किटिभ, कोठ, श्वित्र, कुष्ठ हर।

२१. खदिर, असन निर्मित वटक – (श्लो०-४५)।

२२. वज्रक घृत– (श्लो०-४७)–
वासा, अमृता, नीम, त्रिफला, पटोल, कटेरी, करंज– क्वाथ, कल्क पक्व घृत। – विसर्प, कुष्ठ हर।

२३. महावज्रक घृत– (श्लो०- ४८)।

२४. लेलीतक वसा – मधु + चमेली रस से।
(↳ उत्तरापथ – रस – गंधक; केरल – अजगर वसा)

२५. गिलोय स्वरस – कुष्ठ, प्रमेह, अर्श, वातरक्त हर।

२६. **कुष्ठी के स्थिर कठिन मण्डल–**

- पोटली स्वेद देकर उभरे मण्डल पर तीक्ष्ण शस्त्र से लेखन कर रूधिर निकाले।
- स्वेदन कर शृंग/अलाबु से रक्त निर्हरण।
- छोटे कुष्ठ में प्रच्छान (– त्वक् मात्र पाटन)।
- जलोका से रक्त मोक्षण।

प्रसुप्त (जिनमें शस्त्र से भी रूक् न हो) में रक्त दोष विस्राव कर क्षार लगाये।
स्तब्ध, सुप्त, अस्वेद, अतिकण्डू– कूर्चों से दन्ती, निशोथ, कनेर, करंज, कुटज, चमेली, अर्क, निम्ब पत्र, शस्त्र, समुद्रफेन, गोमय से घृष्ट कर लेप।
लेप– तुलसी, इन्द्र जौ, सतवन, पीलु, कूठ, चमेली पत्र।

२७. **विचर्चिका–** स्नुही के दण्ड (को खोखला कर) में सरसों कल्क भरकर पुटपाक स्विन्न करे। यह कल्क विचर्चिका हर है।

२८. मन:शिला, हरताल, मरिच, सरसों तेल, अर्क दूध– लेप, कुष्ठघ्न।

२९. **सिध्म, श्वित्रहर–**

मरिच, तमाल पत्र, कूठ, मन:शिला, कासीस – तैल में मिलाकर ताम्र पात्र में ७ दिन तक रखे।
लगाकर धूप में बैठे– ७ दिन – सिध्म।
१ माह – श्वित्र।
प्रयोग काल में स्नान न करे।
सिध्म– अपामार्ग (समूल) कूटकर जलाये, राख पानी में घोलकर नितारे – ७ बार। इस जल से प्रियंगु (मालकांगनी) तैल पकाये।

३०. **विपादिका, चर्मदल, कुष्ट, किटिभ, अलसक–** जीवन्ती, मजीठ, दारू हल्दी, कम्पिल्लक, दूध, तुत्थ सिद्ध घृत, तैल + राल, मोम (सम)। (यमक से राल, मोम १/८)।

३१. वज्रक तैल– (श्लो० ६६) – वात कफज रोग हर।

३२. महावज्र तैल (श्लो०- ६७)।

३३. कनक क्षीरी तैल– (श्लो०- ६८) – वात कफोल्वण कुष्ठ, मण्डल, दद्रु, पामा, विचर्चिका हर।

३४. **पामा, किटिभ, विचर्चिका–**मोम, तुत्थ, गुग्गुलु, सिंदूर रसौत पक्व सरसों तैल।

३५. **स्रावी कुष्ठ–** शिलाजीत, कम्पिल्लक, लोध्र, फिटकरी, राल, गंधक, मन:शिला– चूर्ण + मक्खन – लेप।

३६. सिद्धार्थक स्नान–

मुस्ता, त्रिफला, मदनफल, करंज, आरग्वध, इन्द्रजौ, सतवन, कूठ, प्रियंगु, दारूहल्दी • – से स्नान।

- क्वाथ – वमन, विरेचन।
- चूर्ण का देह पर घर्षण – वर्ण्य।

३७. कनेर, नीम, कुटज, अमलतास मूल, चित्रक मूल – गोमूत्र में पकाये, लेह वत होने पर उतारे। – लेप।

३८. श्वेत कनेर मूल, इन्द्र जौ, करञ्ज बीज, दारूहल्दी छाल, चमेली पत्र – लेप।

३९. लेप–
- शिरीष त्वक व पुष्प
- कपास त्वक् व पुष्प
- अमलतास पत्र
- काकमाची (मकोय)।

} पीसकर।

४०. (i) दारूहल्दी, रसौत (v) त्रिफला
(ii) नीम, पटोल (vi) सतवन
(iii) खदिर सार (vii) तिनिश (संदन/छानन)
(iv) अमलतास, कुटज (viii) कनेर

इन ८ का
- कषाय – स्नान, पान
- आलेपन, घर्षण, अवचूर्णन
- तैल; घृत सिद्ध करे।

४१. ब्राह्य लेपार्थ– सरसों, करंज, कटुतुम्बी, इंगुदी तैल, खदिर सार तैल (पाताल यन्त्र विधि)।

४२.
- विशरण (त्वक् मांस फटना) दाह, क्लेद, विस्फोट, चर्मदल – शीत लेप, परिषेक; तिक्त घृत, सिरामोक्षण, विरेचन।
- नख रोम मांस– शीर्ण (गिरना); कृमि उत्पन्न-अन्न व जल त्याग कर ऊँटनी दूध मधु मिलाकर पिये।

४३. कुष्ठ में लेप– गाय, घोड़ा, सुअर, ऊंट के दांतों का लेप।

४४. पनवाड़, विडंग, अमलतास मूल; हल्दी, दारूहल्दी, पिप्पली, कूठ का लेप। – श्वित्रहर, उठे कुष्ठ मंडलों में।

संशोधन–

वमन – १५-१५ दिन;
विरेचन – १-१ माह;
शिरोविरेचन – ३-३ दिन;
रक्तमोक्षण – ६-६ माह पर।

२. दैवव्य पाश्रय चि०– • व्रत, दम (इन्द्रिय निग्रह), यम (तप,...) ब्राह्मण, गुरू, देव पूजा; सभी में मैत्रीभाव।

- जिन (बुद्ध), जिनसुत; तारा (बौद्ध देवता), सूर्य आराधना।
- छिपाये दोष व पाप का प्रकटीकरण।

२२. श्वित्र कृमि चिकित्सित

श्वित्र चि० – श्वित्र कुष्ठ से भी बीभत्स व शीघ्र ही असाध्य हो जाने वाला है अतः यथाशीघ्र चि० करे।२।

(१) **स्नेहन–** महानीलादि घृत (श्लो०-३)

(२) **संशोधन–**

विशेष विरेचन– ३ दिन, मलयू (काकोदुम्बर ≡ कठगूलर) रस गुड़ से पीकर, तैल अभ्यंग कर धूप में बैठे। प्यास लगने पर पेया पिये, पानी नहीं।
→ श्वित्र स्थान में स्फोट उत्पन्न; इन्हें कांटे से फोड़कर;
प्रतिदिन प्रातः – • मलयू, असन, प्रियंगु, सौंफ क्वाथ पान या
• पलाश क्षार गुड़ से। × १५ दिन।

(३) **शमन योग–**

(i) छिलका रहित बावची बीज चूर्ण (गो मूत्र से बहु बार भावित)।
बहेड़ा, करंज, मदनफल, फल्गु (कठगूलर) की मूल का क्वाथ।
चूर्ण को क्वाथ से पीकर तिल तैल अभ्यंग कर प्रतिदिन धूप में बैठे। औषध जीर्ण होने पर तक्र में कोदा, चावल भिगोकर खाये (लवण रहित)।→ ३ दिन में स्फोट उत्पन्न।
अगले दिन स्फोटों को कांटे से विदीर्ण कर शुक्तवर्ति अजामूत्र में घिसकर लगाये। लेप से वेदना होने पर शंखनाभि जल से घिसकर लगाये।
शुक्तवर्ति– (श्लो०-८)– त्रिकटु, सरसों, हल्दी, घर का धुंवा, यवक्षार, सैंधव, चित्रकमूल तथा सबसे आधा वत्सनाभ को अजामूत्र से पीसकर बेर वत गुटिका।– श्वित्र शमन।

(ii) घृताभ्यक्त घड़े में गोमूत्र, चित्रक, त्रिकटु, मधु मिलाकर रखे। १५ दिन बाद सेवन।

(iii) भृंगराज को तैल से लौह पात्र में भूनकर खाये तथा विजयसार पक्व दूध पिये।

(iv) लेप– • मूत्रिका रस क्रिया– (श्लो०-२०) – ३ लेप में ही श्वित्र, मशक, तिल, चर्म कील, अर्बुद नष्ट।
• करंज, अर्क, अमलतास, स्नुही, चमेली के नये पत्ते – गो मूत्र से। पीसकर– श्वित्र, अर्श, दद्रु, पामा, कोठ, दुष्ट नाड़ी व्रण।
• भिलावा कूटकर रात में गो मूत्र में भिगोकर प्रातः छाया शुष्क करे, ऐसे ३ दिन भावना देकर सूक्ष्मचूर्ण बनाये। चूर्ण + स्नुही क्षीर – लेप।

- गुह्य संश्रित श्वित्र– सफेद मुर्गे को ३ अन्नकाल भूखा रख, मुलेठी, कूठ, पनवाड़ बीज चूर्ण + घृत खिलाये। इसके पुरीष का लेप, (शस्त्र से) लेखनकर। × १ माह तक।
- कठगूलर, बावची, चित्रक – गो मूत्र से पीसकर।
- हस्ति मलक्षार, मूत्र व बावची बीज से लेह बनाकर लेप । श्लो-२२।

श्वित्र में सवर्णीकरण–

बावची बीज	१ कुडव	गोमूत्र से पीसकर लेप।
हरताल	१/४ कुडव = १ पल	

पथ्य– रूक्ष आहार, सत्तू आदि।

कृमि चिकित्सा

उदरस्थ कृमि–

(I) स्नेहन, स्वेदन।

(II) क्रिमि व कफ उत्क्लेश– दूध + गुड़; मत्स्य आदि।

- कफ उत्क्लेशन की रात्रि में उपवास।

(III) वस्ति, विरेचन।

- वस्ति– अगले दिन समजलयुक्त गोमूत्र में सुरसादि गण क्वाथ + पिप्पली, मदनफल, विडंग कल्क, तैल, सर्जिक्षार।
- विरेचन – ऊर्ध्व / अधः } वस्ति वाले दिन ही– मदनफल, पिप्पली कषाय + निशोथ कल्क पिलाये।

(IV) संसर्जन– पंचकोल युक्त पेया।

(V) स्नान– कटु, तिक्त, कषाय रस वाले कषायों से।

(VI) अनुवासन– अग्नि दीप्त होने पर विडंग तैल से।

शिरोगत कृमि– शिरोरोग प्रतिषेधोक्त। अति तिक्त, कटु, अल्प स्नेह युक्त आहार।

योग–
- यवागू– विडंग, पिप्पली, मरिच, पिप्पली मूल, सहजन, सर्जिक्षार युक्त तक्र में बनी यवागू।
- सुरसादिगण/शिरीष/अपामार्ग/पारिभद्र/पलाश बीज/करंज – रस मधु से।
- घोड़े का शकृत विडंग क्वाथ/त्रिफला रस से १०० बार भावितकर मधु से।
- पूपलिका = कचौड़ी –
  मूषाकर्णी पत्र/कदम्ब/भृंगराज/निर्गुण्डी पत्र सुपिष्ट + उड़द पिसे → कचौड़ी।
  अनुपान – तक्र/कांजी (पंचकोल, लवण युक्त) ।
- शालि चावल पिष्ट + विडंग चूर्ण → भक्ष्य।

- विडंग तण्डुल (चूर्ण) – १ भाग + २ भाग – भिलावा/देवदारू/सरल तैल– दिन भर धूप में रखकर पान व वस्ति (सरसों तैल भी प्रयोज्य)।

विशेषतः–

पुरीषज	– वस्ति, विरेचन
कफज	– शिरोविरेचन, वमन, शमन
रक्तज	– कुष्ठोक्त
रोम आश्रित	– इन्द्रलुप्त चि०।

असेव्य– दूध, मांस, घी, गुड़, दधि, पत्रशाक; अम्ल, मधुर रस।
[अम्ल अपथ्य है, परन्तु पूपलिका के साथ कांजी, पंचकोल युक्त होने से पथ्य है।]

श्वित्र में प्रयोज्य कुछ अन्य द्रव्य– मूत्र– घोड़ा, हाथी, गधा, बकरी; मल– हाथी, घोड़ा, श्वेत मुर्गा; भस्म– कृष्ण सर्प, चीता त्वक्, हाथी त्वक्; पित्त– गाय, मोर; रक्त– गाय; अस्थि– गधा; शुक्र/मद– हाथी।

२३. वात व्याधि चिकित्सित

(A) **केवलानिल–** अकेले वातजन्य वाधि।

स्नेहन– (i) अन्त: (ii) बर्हि।
- दशमूल सिद्ध महास्नेह।

स्वेदन– पद्मकादि गण से साल्वण पिण्डस्वेद, उपनाह, उत्कारिका

} कोष्ठ मृदु – तोद, भेद, शूल आयाम आदि वात रोग शांत।

- स्नेहश्च धातून् पुष्णाति बलं च देहे जनयति ।५।
- पुन:-पुन: स्नेहन स्वेदन दे।
- उत्कारिका– बेर, कुलत्थी, देवदारू, जौ, सौंफ, उड़द, अलसी, वच, कूठ, रास्ना, तैल फल (सरसों, एरण्ड आदि)। अम्ल; उष्ण, चपटी रोटी सी।
- बंधन– बिल्ली, नकुल, उष्ट्र, शृगाल चर्म।
- निवात आगार।
- स्निग्ध बस्ति व नस्य।

(B) **सदोष अनिल–** अन्य दोषयुक्त वात।

६ उपक्रम–

(१) विरेचन– मृदु, स्निग्ध– तिल्वक घृत, सातला घृत, एरण्ड तैल दूध से।
- दुर्बल व अविरेच्य में– पाचन, दीपन द्रव्यों से युक्त निरूह तथा ऐसा ही भोजन + स्रंसन (भोजन के साथ में विरेचन औषधि)।

(२) अनुलोमन– स्निग्ध, अम्ल, लवण, उष्ण आदि आहारों से संचित मल → स्रोतावरोध → वात निरूद्ध – इसका अनुलोमन करे।

(३) संसर्जन → अग्नि दीप्त

(४) स्नेहन, स्वेदन

आहार– मधुर, अम्ल, लवण

(५) अवपीडक स्नेह

(७) बस्ति कर्म।

	वात स्थान	उपचार
१	आमाशय गत	वमन, षड्धरड़ चूर्ण (कुष्ठ), स्नेह
२	नाभिदेश	कच्चे बिल्व सिद्ध मछली
३	सम्पूर्ण कोष्ठ	आम मल पाचक (अर्श, ग्रहणी में कहीं), क्षार, अन्त: गुल्म चि०।
४	हृदयाश्रित	शालपर्णी सिद्ध दूध
५	श्रोत्रादि गत	स्नेहन नस्य, स्नैहिक धूम, शिरोवस्ति, मर्दन, आलेप।
६	शिरो गत	स्रोत का स्नेह से तर्पण।
७	त्वक् गत	अभ्यंग, स्वेद, निवात
८	रक्त गत	शीत प्रदेह, विरेक, रक्तमोक्षण
९	मांस, मेद	विरेचन, आस्थापन, शमन
१०	अस्थि, मज्जा	स्नेहन– अंत:, बर्हि।
११	शुक्रगत	हर्षण, शुक्र वर्धक आहार; शुक्र विरेचन।
१२	गर्भगत	गर्भ व बालक का सूखना। मुलेठी, गम्भारी फल, सारिवा,
१३	बालक	शर्करा सिद्ध दूध। जीवन्ती, अश्वगन्धा सिद्ध घृत।
१४	सिरा, स्नायु	स्नेह अभ्यंग, मर्दन, स्वेद, उपनाह, बन्धन, अग्निकर्म।
	संधिगत	• संकोच– उड़द, सैंधव सिद्ध तैल अभ्यंग।
		सुप्ति– I. बहुत बार रक्तमोक्षण; – निषेध– म्लान अङ्ग–शोष भय।
		II. तैल लवण गृहधूम प्रदेह।

अपतानक–

अचिकित्स्य– (१) स्रत अक्ष (आंखे शिथिल) (२) स्तब्ध मेढ़् (३) वेदना/वेपन (अ०हृ०) (४) स्वेद (५) प्रलाप (६) खट्वाघाती– खाट पर पैरों से आघात/खाट से नीचे गिर पड़ना। (७) बहिरायाम युक्त।

चिकित्स्य– शेष।

(A) **स्रोत शोधन–**
- स्नेहन, स्वेदन
- नस्य– तीक्ष्ण शिरोविरेचन द्रव्य– त्रिकटु, विडंग, श्वेत मरिच।

(B) **शमन–**

(१) I. अच्छ पान– विदार्यादि गण क्वाथ सिद्ध दूधयुक्त घृत + दधि।
II. भद्रदार्व्यादि तथा अन्य वातघ्न द्रव्य सिद्ध महास्नेह – अभ्यंग, परिषेक, अवगाहन, पान, भोजन, अनुवासन, नस्य।

(२) स्वेद–
- कूप– सुखोष्ण गोमय चूर्ण पूर्ण गड्ढे में रोगी को मुख तक खड़ा करे।
- लोहार की भट्ठी में/तप्त शिला पर सुरा का परिषेचन कर पुआल बिछाकर लिटाये।
- पिण्ड स्वेद।

(३) मूली, एरण्ड, अर्क स्वरस सिद्ध तैल – अभ्यंग
– अम्ल, दधि, मरिच, वचा के साथ पान।

(४) **अणु तैल–** तैल कोल्हू की लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े कर बड़े कड़ाहे में पानी में डालकर क्वाथ करे। ऊपर आये तैल को निकाल ले।
तैल + वातघ्न द्रव्य प्रक्षेप → स्नेह पाक।
गुण– सर्व वात विकार हर।
- अणु तैल द्रव्येभ्यो निष्पद्यत इत्यणुतैलम् ।

वेगान्तर में – तीक्ष्ण अवपीडन व प्रधमन बार-२।
– वात के ऊपर का कफ आवरण नष्ट होता है → वात मुक्त → चेतना।
- वसा पान – कुक्कुट, केकड़ा शिशुमार, सुअर।
- यवागू – जौ, बेर, कुलत्थी, मूली, दही, घृत, तैल युक्त।

गतवेग– वेग पूर्णतः शान्त होने पर– स्नेह, विरेचन, आस्थापन, अनुवासन।
तिल्वक घृत– (श्लो०-२०)
शुद्ध वात रोगों में स्नेह विरेचनार्थ।
- वात + कफ → हृद, पार्श्वशूल।

तुम्बरूफल, हरड़, हींग, पुष्करमूल + सैंधव, सौवर्चल, विड, चूर्ण + यव क्वाथ।

अपतन्त्रक हर अन्य योग–
- सौवर्चल, हरड़, त्रिकटु सिद्ध घृत।
- मुस्ता, पिप्पली, सोंठ, अतीस, बहेड़ा, भार्गी चूर्ण मद्य/उष्णोदकेन।
  – अपतन्त्रक, कास, हृद रोग हर।

- ५० हरड़ का कल्क + सौवर्चल २ पल —(दूध-४ प्रस्थ)→ १ प्रस्थ घृत पाक
- तीक्ष्ण वस्ति न दे; हृदरोग वत चि०।

अन्तरायाम व बहिरायाम–
- अन्तरायाम-अति घोर।
- चि० एकायाम वत। तैल द्रोणि शयन।

दान्त व मुख विवर्ण, स्रस्ताङ्ग, विचेतन, प्रस्वेद } सर्व लक्षण पूर्ण– १० दिन में मृत्यु } मंद लक्षण-कुबड़ा, खंज, पंगु, कुणि, पक्षहत।

[खंज– १ पांव से, पंगु– दोनों पैर; कुणि– १ हाथ; पक्षहत– निष्क्रिय]

हनुस्तम्भ– अर्दित वत।

I. स्वेद → स्रस्त।

II. हाथों से दबाकर
- विवृतास्य – चिबुक उन्नमन (Elevate)।
- संवृतास्य – चिबुक नमन।

[Dislocation of Mandible– Insert both thumbs inside mouth over molar teeth C̄ griping jaw by fingers, press down ward I, & then posteriorly to fit joint in situ.]

जिह्वा स्तम्भ– सा० वात चि०।

एकायाम (अर्दित) – वात पित्त नाशक चि०।
क्षीर तैल – (श्लो०-२६) – पान, अभ्यंग आदि।
क्षीर घृत – अक्षितर्पण।
रोहिणी, खदिर सार युक्त अणु तैल – नस्य।
स्नेहन (श्लो०-२८), स्वेदन, वस्ति, परिषेक, रक्तमोक्षण।

एकांग रोग–
अंग म्लान न होने पर – स्नेहन, स्वेदन, मृदु संशोधन
अनुवासन – बला तैल; आस्थापन।
दोष संसर्ग में – दोषानुसार चि०।

अपबाहुक– भोजनोपरान्त नस्य; निराम में स्नेहपान।

विश्वाची .... पाददाह (निदान अ०१५) – सिरावेध, वात उपचार।

उरूस्तम्भ – उरू में लीन आम व कफ; वात से स्तम्भित होते हैं–
– शोधन से निकालना (वमन आदि) संभव नहीं।

पंच निषेध – स्नेहन, रक्तमोक्षण, वमन, विरेचन, वस्ति।
– आम, कफ के साथ विरोध होने से।

चि०– शमन, कफ शोषण; स्वेद (रूक्ष); व्यायाम-मेदहर।

रूक्ष उपचार– जौ, सांवा, कोदौ, उद्दालक; लवण व अल्प तैल सिद्ध शाक, क्षार, अरिष्ट, मधूदक (मधु युक्त जल)।

- वचादि/हरिद्रादि/वत्सकादि गण + सैंधव। हरड़/पिप्पली।
- कुटज चूर्ण मस्तु से।
- त्रिफला, पिप्पली, मुस्ता, चविका, कुटकी चूर्ण मधु से।

अति अपतर्पित रोगी में– (रूक्ष, कृश, अनिद्रा)–

- जांगल मांसरस; शालि से तर्पण।
- सैंधव – १ पल
सोंठ, चित्रक, पिप्पली मूल – २-२ पल
भिलावा – १०
} चूर्ण + कांजी – १ आढक
↓
१ प्रस्थ सरसों तैल सिद्ध करे।

गुण– सभी वात रोग, विशेषत: उरू स्तम्भ, ग्रधृसी में पथ्य।

कफ हर लेप– सहजन, अग्निमन्थ, सरल, अर्जुन, करंज, अरहर, गोक्षुर का लेप; मर्दन, सेक।

व्यायाम– कूदना, नदी में प्रवाह के विपरीत तैरना।

वातनाशक अन्य योग– निम्न स्नेहों का पान, नस्य, अनुवासन, बस्ति।

- द्रुत बिलम्बित गमन– (Uncontrolled movement fast/slow)–
– सहचर (झिण्टी), देवदारू, सोंठ क्वाथ + तैल – पान।
- परम वातहर– रास्ना, सोंठ, पिप्पली, गजपिप्पली, कचूर, पुष्करमूल कल्क पक्व घृत।
- कफयुक्त वात– पुराण पिण्याक (खली) → क्वाथ
बृहत्पंचमूल → क्वाथ
} तैल पाक
इस तैल से ८ गुना दूध पका कर पिये।
- अस्थिगत वात–
केतकी (केवड़ा), बला, अतिबला मूल → गाढा क्वाथ/रस
↓ + कांजी (प्रचुर)
तैल पाक।
- भग्न– लशुन, दशमूल, रास्ना, मुलेठी, सौंफ, शालपर्णी, पिप्पली, अश्वगन्धा मूल आदि सिद्ध दूध/तैल। (विशेष विवरण– श्लो०-४१)।
- 'भेल' ऋषि प्रोक्त तैल (श्लो०-४३)। – कृच्छ्र वात रोग, वातकुण्डलिका, उन्माद, भूत, अपस्मार, वर्ध्म, गुल्म, हृद, अर्श, योनिरोग।

- सर्ववात रोग हर – गोक्षुर कषाय, दूध – २-२ प्रस्थ, आर्द्रक – ६ पल, गुड – ८ पल } तैल– १ प्रस्थ ↓ पाक।

  [चरक– गोक्षुर स्वरस]
- बला तैल– (श्लो०-४५)– बलामूल, अमृता, रास्ना का योग।
  गुण– श्वास, कास, ज्वर, मूर्च्छा, छर्दि, तृष्णा, क्षत, क्षय, प्लीहा, शोष, अपस्मार, अलक्ष्मी हर।
- अमृताद्य तैल– (श्लो०-४६)– उन्माद, अपस्मार, वात रोग।
- रास्ना तैल– (श्लो०-४७)–
  रास्ना– १००० पल → क्वाथ + तैल– १ द्रोण – पाक + प्रक्षेप– अगरू, कूठ, एलादि।
  इसी प्रकार अश्वगन्धा, बला, अतिबला का कल्प/तैल।

→ स्नेह स्वेद से कफ द्रवित हो पक्वाशय में आकर पित्त रूप दिखाता है, इसको वस्ति से निर्हरण करे ॥५४॥

२४. वातशोणित चिकित्सित

वातरक्त – (i) उत्तान (ii) गम्भीर।
– ८ भेद– V, P, K, S, R, द्वन्दज-३।

सामान्य चि० – स्नेहन, बृंहण, रक्त प्रसादन।

I. स्नेहन

II. रक्त मोक्षण – अल्प-अल्प, बार-बार।
(a) जलौका – दाह, राग, रूक्, तोद होने पर
(b) श्रृंग– कण्डू, उपताप, स्वाप, चिमचिमायन होने पर
(c) सिरावेध/प्रच्छान्न – सञ्चरण शील वातरक्त।
निषेध– म्लान अंग, रोगी– रूक्ष, वातल।
उपद्रव– • रक्तक्षय → गम्भीर शोफ, स्तम्भ, कम्प, ग्लानि, संकोच।
• वेध व्यथा → मूर्च्छा आदि।

III. स्नेहन

IV. विरेचन– सस्नेह/रूक्ष

V. वस्तिकर्म – बार-बार।
दोषानुसार गुडुची/गुड़ + हरड़/वर्धमान पिप्पली शीलन।

विशिष्ट चि० – उत्तान – आलेप, अभ्यंग, परिषेक, अवगाहन।
गम्भीर – विरेचन, आस्थापन, स्नेहपान।

वातोल्वण	पुराण घृत (१० वर्ष पुराना), शतावरी घृत। जीवनीय घृत– (श्लो०-५)– वात-पित्त रोग, सर्वांग, एकांग रोग; वृष्य, चक्षुष्य, पुत्रदाता। उपनाह– जौ, गेहूँ, तिल, मूंग, उड़द चूर्ण + वच, बला आदि कल्क + महास्नेह – दूध → पायस। बिल्व मज्जा, रास्ना + दधि, मस्तु। उत्कारिका– स्नेह फल (एरण्ड, अलसी, सरसों) मज्जा से। लेप– • जौ, मुलेठी, एरण्ड बीज, पुनर्नवा – कांजी से पीसकर। • सहजन मूल + घृत अभ्यंग– रास्ना, मुलेठी, गिलोय, बला कल्क + दूध, मोम, घी।
पित्त प्रबल	कषाय पान– • द्राक्षा, अमलतास फल, विदारी, मुलेठी, चन्दन, गम्भारी कषाय + शर्करा, मधु। • शतावरी, पटोल, त्रिफला, अमृता, कुटकी कषाय। • मधुर, तिक्त वर्ग सिद्ध घृत व दूध। • रास्ना, शतावरी, दशमूल, बला सिद्ध घृत व दूध। • धारोष्ण दूध। विरेचन– • निशोथ चूर्ण दूध से। • दूध + एरण्ड तैल। • गुडुची, अमलतास, वासा कषाय। क्षीर वस्ति घृत युक्त। परिषेक– चन्दन, पद्मक, विस, मृणाल आदि शीतवीर्य द्रव्य शृत क्षीर/दूध, इक्षुरस, मधु, शर्करा, तण्डुलोदक/द्राक्षा, मुलेठी, गंभारी युक्त धान्याम्ल/शतधौत घृत। • दाह, राग, रूक्, विसर्प, शोफ हर– • मसूर, खस, दारूहल्दी, मुलेठी, चन्दन, आदि + घी, दूध, शर्करा → प्रदेह। • अजाक्षीर + गेहूँ का आटा → लेप।
रक्त प्रबल	पित्तवत। बार-बार रक्त मोक्षण।
कफ प्रबल	स्नेह, मृदु वमन, थोड़ा रूक्ष उपचार; अधिक परिषेक व लेप नहीं। कषाय– • आंवला, हल्दी, मुस्ता कषाय + मधु। • त्रिफला कषाय। • मुलेठी, आर्द्रक, हरड़, कुटकी क्वाथ।

	लेप– • नीम, सरसों अश्वगन्धा, यवक्षार, तिल– सुखोष्ण। • घृत + पुनर्नवा। • तिल, सरसों, अलसी, जौ चूर्ण। परिषेक– कटुक स्कन्ध द्रव्य (सू०१८) + क्षारोदक, तैल, गोमूत्र।
संसर्ग	दोषानुसार
सर्व	दोषानुसार अमृता/गुड़ + हरीतकी/वर्धमान पिप्पली का शीलन। बार-बार वस्ति कर्म।
V	चर्तुस्नेह पान, अभ्यंग, वस्ति, कोष्ण लेप, उपनाह, परिषेक।
P, R	विरेचन; घृत दुग्ध पान, परिषेक, वस्ति, शीत लेप।
K	मृदु वमन, अल्प स्नेह, लंघन, कोष्ण लेप, सेक।

व्यापद् – V, K – शीत लेप; दोष स्तम्भन → विदाह, शोफ, रूक्, कण्डू।
P, R – उष्ण लेप; → प्लोष (आग से तपने जैसा), उषा (दाह), रूक्, राग, स्वेद, दरण (फटना)।

वि० योग– मधुयष्ठी तैल – (श्लो०-२२)– पान, नस्य, अभ्यंग, परिषेक।
– वातरक्त, पित्त दाह ज्वर हर।

विशेष स्थितियाँ–

(१) कफ/मेद से मार्गावरोध → वात प्रकोप
- प्रारंभ में स्नेहन, बृंहण न करे।
- I. आढ्यवात चि० II. वात रक्त चि० (स्नेहन, रक्त मोक्षण)।

(२) गम्भीर वातरक्त में वायु → रक्त आक्रान्त
- वात वर्जन।

(३) R, P अतिवृद्ध → आशु पाक–
स्वतः/यत्न से – रक्त स्राव }
विदग्ध होने पर – पूय स्राव } व्रणवत भेदन, शोधन, रोपण।
- मोह, मूर्च्छा आदि उपद्रवों की चि०।

(४) वात रक्त के साथ-साथ प्राण आदि पञ्चवात प्रकोप–
रोग, आसन्नता (निकटता), बल के (पांचों में) अनुसार प्रथम चि० (औषधि) करे।

(५) वात + आम –
I. स्वेदन, लंघन, पाचन; रूक्ष आलेप, परिषेक $\xrightarrow{V}$ निराम।
II. शुद्ध वात चि०।

वात आवरण चि०– पित्त व रक्त संसर्ग से वात के आवरण के अतिरिक्त सभी वात आवरण में – रसायन विधि से लशुन प्रयोग।

- पित्तावृत– पित्तघ्न, वातानुलोमन।
- रक्तावृत– पित्तघ्न, वातानुलोमन, वातरक्त चि०।

वात आवरण	चि०
• पित्त से	शीत और उष्ण क्रिया एकांतर से बार-बार करे; जीवनीय घृत, जांगल मांस, जौ, शालि; दूधयुक्त विरेचन, वस्ति; मधुर सिद्ध अनुवासन; यष्टीमधु तैल, बला तैल।
• कफ	जौ, जांगल, स्वेदन, तीक्ष्ण निरूह, वमन, विरेक, पुराण घृत, तिल, सरसों तेल।
• कफ-पित्त	I पित्त II कफ शमन।
• रक्त	वातरक्त चि०
• मांस	स्वेदन, अभ्यंग, मांसरस, दूध, स्नेह।
• मेद (आढ्यवात)	प्रमेहघ्न, वातघ्न चि०
• अस्थि, मज्जा में स्थित वात	महास्नेह
• शुक्रावृत वात	पूर्वोक्त (देखें – वातव्याधि में शुक्रस्थ वात; शा० १)।
• अन्न से	पाचन, वमन, दीपन; आग्नेय, लघु।
• मूत्र	मूत्रल, स्वेदन, उत्तर वस्ति।
• पुरीष	एरण्ड तैल, वस्ति, भेदन स्नेह।

सर्वस्थान में आवृत्त वात– • कफ व पित्त के अविरूद्ध, वातानुलोमक चि०।
• यापना वस्ति – अनभिष्यन्द, स्निग्ध, स्रोत शोधक।
• मधुर अनुवासन • मृदु विरेचन • रसायन।
• शिलाजीत दूध से • शुद्ध गुग्गुलु।

अपान के किसी से भी आवृत होने पर – दीपक, ग्राही, वातानुलोमक, मूत्राशय शोधक औषधि।

आवृत, विमार्गी वात → स्वस्थान में लाना–

आवृत उदान – ऊर्ध्व } अनुलोमन।
,, अपान – अधः }
,, समान – शमन
,, व्यान – ऊर्ध्व, अधः, तिर्यक् प्रवृत्त।
,, प्राण – रक्षणीय।

चिकित्सा स्थान–

आयुर्वेद फलं स्थानमेतत्सद्योऽर्तिनाशनात् ।।३९।।

– आयुर्वेद का फल है, क्योंकि इससे शीघ्र पीड़ा का नाश होता है।

औषध पर्याय–

चिकित्सितं हितं पथ्यं प्रायश्चितं भिषग्जितम् ।
भेषजं शमनं शस्तं पर्यायैः स्मृतमौषधम् ।।४०।।

चिकित्सत, हित, पथ्य, प्रायश्चित, भिषग्जित, भेषज, शमन, शस्त, औषध।

●

कल्प स्थानम्

१. वमन कल्प

श्रेष्ठ वमन द्रव्य– १. मदन फल– सर्वश्रेष्ठ
२. जीमूतक (देवदाली, घाघर बेल)
३. इक्ष्वाकु (कटु लौकी)
४,५. द्विकोशातकी– (i) धामार्गव (नेनुआ) (ii) कृतवेधन (कटु तोरई)
६. कुटज फल (इन्द्र जौ)

मदन फल प्राधान्य–

दोषदूष्यादिवशाच्चैषामेतत्कल्पनानां च प्राधान्यम् ।।३।।

दोष दूष्य आदि के अनुरूप कल्पनाएं बन जाने से।

कल्प स्थान की उपादेयता–

दोषादीनामेव चाति बह्वस्था भेदाद् .... विकल्प मार्ग प्रदर्शनार्थमुदाहरणमात्रं कल्पसिद्धिस्थानमुपदेक्ष्यते ।।४।।

दोष (दूष्य) आदि अवस्था भेद से बहुत होते हैं, इनके लिये प्रयुक्त कल्पनाओं (वमन, विरेचन, वस्ति, औषधि आदि की) के व्यापद् (अयोग, अतियोग जन्य) असंख्य होते हैं। इसमें बुद्धिमानों के लिये विकल्प (करणीय) मार्ग प्रदर्शनार्थ उदाहरण वत कल्पसिद्धि स्थान कहा है।

१. **मदनफल संग्रह–** बसन्त ग्रीष्मान्तर में शुभ दिन व मुहूर्त में 'नातिहरित पाण्डूनि' (अधिक हरे या अति पीले न हों) मदनफल तोड़कर, वस्त्र से साफ कर, कुशा लपेट कर, गोबर लगाकर, (जौ/भूसा/उड़द/शालि/व्रीहि/कुलत्थी/मूंग के ढेर में ८ रात तक रखकर, बाद में निकालकर धूप में सुखाये। सूख जाने पर फल पिप्पली (मज्जा) निकालकर दधि, घृत, मधु, तिल कल्क के साथ मलकर, धूप में सुखाये। सूख जाने पर नव घट में आकण्ठ भरकर रख ले।

   वमन– पित्त के आने तक।

   मदनफल उपयोग– कफ ज्वर, गुल्म, प्रतिश्याय, अन्त:विद्रधि।

   - १ मुट्ठी फल पिप्पली कुचलकर मुलेठी/शणपुष्पी/अर्क/अपामार्ग कषाय में रात भर भिगो दे। प्रात: मसलकर छानकर पिलाये।
   - बली कफ प्रसेक, अपची, अर्बुद, ग्रन्थि, ज्वर, उदर, अरोचक–

स्वक्वाथ भावित फल पिप्पली चूर्ण + १/३ त्रिफला चूर्ण – उपरोक्त किसी कषाय में घोलकर।

- कफस्थानगत पित्त– फलमज्जा चूर्ण जीमूतक आदि निर्यूह से।

अधोग रक्तपित्त, हृद्दाह – फलमज्जा सिद्ध दूध पक्व यवागू।

कफज वमन, तमक – मज्जा सिद्ध दूध से बना दधि।

गंध वमन– सुकुमार, भेषजद्वेषी में।

फल पिप्पली को ६ वमन द्रव्यों के रस में २१ भावना देकर, सूक्ष्म चूर्ण करे। तालाब के बड़े कमल पुष्प पर सायं छिड़के दे। प्रातः एक बार फिर चूर्ण छिड़क कर फूल निकाल ले। रोगी को हरिद्रा युक्त कृशरा खिलाकर इसे सुंघाये।

→ फल न मिलने पर मदनपुष्प, शलाटू (कच्चा फल) का प्रयोग करे।

२. **जीमूतक–** ज्वर, श्वास, हिक्का।

पुष्प – सिद्ध क्षीर

फल – क्षीर पेया

लोमश – सन्तानिका (रोमयुक्त फल से दूध सिद्ध कर बना दधि/ऊपर की मलाई)

हरित पाण्डु फल– दूध/दधि

पर्यागत, जीर्ण फल → सुखाकर चूर्ण – वात पित्त में दूध से।

पित्त श्लेष्म ज्वर – चूर्ण को अमलतास/नीम/गिलोय कषाय से।

पित्तज ज्वर– चूर्ण/कल्क शीताम्बु से।

कफज/वात श्लैष्मिक ज्वर– चूर्ण/कल्क गरम जल से।

वात पित्त ज्वर – चूर्ण/कल्क, इक्षु/शतावरी स्वरस से।

३. **इक्ष्वाकु–**
- कास, श्वास, ज्वर, वमन, विष, कफ रोग।
- पुष्प आदि का प्रयोग जीमूतकवत।

पुष्प, फल, मृदुपत्र सिद्ध दूध– रक्तपित्त, कफ ज्वर।

फल स्वरस सिद्ध दूध (३ गुना) – उरःस्थ कफ, स्वरसाद।

छाग क्षीर भावित बीज – विष, गुल्म, उदर, गर, गण्ड, ग्रन्थि, अर्बुद, श्लीपद।

फल मध्य (गुदा) पक्व तक्र + मधु, सैंधव – कुष्ठ, विष, पाण्डु।

- फल तैल पान।

४. **धामार्गव–** गर, गुल्म, उदर, कास, कफसञ्चयजन्य रोग, कफस्थान में आश्रित रोग, कण्ठ आश्रित वातश्लैष्मिक रोग, मनोविकार।

पित्त + कफ – कोई एक जीवनीय द्रव्य का कषाय + धामार्गव + मधु, शर्करा → लेह।

- चमेली/हल्दी/वच/पुनर्नवा कषाय + धामार्गव + मधु, शर्करा → लेह।

५. **कृतवेधन–** अति कटु, तीक्ष्ण, उष्ण।
गर, उदर, गुल्म, प्लीहा, पाण्डु, शोथ में प्रयोग।

६. **कुटज फल–** सुकुमार में R, P,K उल्वण रोग, वातरक्त, विसर्प, ज्वर कुष्ठ।
कुटज फल चूर्ण – लवणोदकेन।

२. विरेचन कल्प

प्रमुख विरेचन द्रव्य-९ – त्रिवृत, श्यामा, राजवृक्ष, सप्तला, शंखिनी, तिल्वक, दन्ती, द्रवन्ती, स्नुही।

वि० द्रव्य	प्रधान/श्रेष्ठ
मूल	.त्रिवृत
त्वक्	तिल्वक्
क्षीर	स्नुही
फल	हरीतकी
मृदु विरेचन	अमलतास

(१,२)त्रिवृत– २ भेद

१. त्रिवृत– अरूण मूल	२. श्यामा– श्याव मूल
• कषाय, मधुर रस; विपाक– कटु; रूक्ष, कफ पित्तहर। • सुख विरेचन होने से शिशु, वृद्ध, सुकुमार, मृदु, कोष्ठी में प्रशस्त।	} • गुणों में कुछ न्यून। तीक्ष्ण; कण्ठ हृदय कर्षण; मूर्च्छा, संमोह कर; आशुदोषहर। • बहुदोष, क्लेशक्षम, क्रूर क्रोष्ठी में प्रशस्त।

संग्रह– दोनों ही का ऐसा मूल जो तिर्यग् रूप में ज्यादा फैला न हो, गहरा नीचे गया हो, तथा चिकना हो, उसे निकालकर, इसकी त्वक् को सम्यक् सुखा कर सुरक्षित रख ले।

प्रयोग– (a) दोषानुसार–

- वातज रोग– त्वक् चूर्ण + सैंधव, शुण्ठी – अम्ल द्रव्यों के साथ।
- पित्तज रोग– त्वक् चूर्ण – दूध/मधु/द्राक्षा रस/इक्षु रस/घृत/मधुर द्रव्य क्वाथ + शर्करा।
- कफज रोग– त्वक् चूर्ण – गो मूत्र, मधु, द्राक्षा, नीम रस, त्रिफला, पंचकोल क्वाथ + त्रिकटु चूर्ण।

संस्कार– हेतु मिलाने वाले द्रव्य।
अम्ल– मातुलुंग, दाडिम, आँवला, बेर, करौंदा, कपित्थ रस, तक्र।

मधुर– घृत, शर्करा, द्रांक्षा, इक्षु रस, तुका क्षीर।
तीक्ष्ण– सैंधव, व्योष (सोंठ, मरिच, पिप्पली)।
सुरभि– आम का रस, दालचीनी, एला, तेजपत्र, नागकेसर, कर्पूर।
(दालचीनी, एला, तेजपत्र = त्रिजातक)

(b) हृद्य विरेचन– त्रिवृत कल्क + कषाय + सिता → हिम + मधु, त्रिजातक।

(c) कल्याणक गुड़– श्लो० १२
विडंग, पिप्पली मूल, त्रिफला, धनिया, चित्रक, मरिच, इन्द्रजौ, काला जीरा,

पिप्पली, गजपिप्पली, अजवायन, पञ्च लवण चूर्ण	– १-१ कर्ष	मृदु पाक।
निशोथ चूर्ण, तिल तैल	– ८-८ पल	
आंवला रस	– ३ प्रस्थ	
गुड़	– ५० पल	

गुण– कुष्ठ, अर्श, कामला, गुल्म, प्रमेह, उदर, भगन्दर, ग्रहणी, पाण्डु हर, उत्तम पुंसवन।
सभी ऋतुओं में सेवनीय, कोई परहेज नहीं।

(d)

त्रिकटु, त्रिजातक, मुस्ता, विडंग, आंवला (९ द्रव्य)	– १-१ भाग	–चूर्ण।
निशोथ, मिश्री	– ९-९ भाग	

चूर्ण की मधु के साथ गोली बनाये।
गुण– मूत्रकृच्छ, ज्वर, वमन, कास, शोष, भ्रम, क्षय, ग्रीष्म, पाण्डु, मन्दाग्नि, विष।

(e) ऋतु अनुसार प्रयोग–

ऋतु	संयोग
वर्षा	त्रिवृत + इन्द्र जौ, पिप्पली, सोंठ – मधु व द्राक्षारस से।
शरद्	,, + दुरालभा, मुस्ता, शर्करा, खस, चन्दन, मुलेठी, शिकाकाई – द्राक्षारस से।
हेमन्त	त्रिवृत + चित्रक, पाठा, कालाजीरा, सरल, वच, स्वर्ण क्षीरी – उष्णोदकेन।
ग्रीष्म	,, + शर्करा (सम)।
सर्व	,, + त्रायमाण, हपुषा, सातला (शिकाकाई), कुटकी, स्वर्णक्षीरी चूर्ण – गो मूत्र से ३ बार भावित कर।

(f) त्रिवृत, श्यामा कषाय सिद्ध दूध।

(g) पाण्डु, श्वयथु, गुल्म हर योग–
त्रिवृत ८ मुट्ठी + जल १ द्रोण $\xrightarrow{\text{क्वाथ}}$ १/४ शेष → छाने + गुड़– १०० पल
घृत लिप्त घड़े में मधु पिप्पली चित्रक का लेप कर इसे १ माह के लिये रख दे।

(h) सौवीरक– श्यामा, त्रिवृत क्वाथ में जौ (छिलका रहित) स्विन्न करे। इन्हें अर्द्ध स्विन्न उड़दों के पानी में डालकर ६ दिन धान्य राशि में रख दे।

(i) तुषोदक– छिलका सहित शुष्क जौ भूने → चूर्ण।
चूर्ण को श्यामा, त्रिवृत क्वाथ से स्विन्न कर, अर्द्ध स्विन्न उड़द जल में डालकर ६ दिन धान्य राशि में रखे।

(३) **राजवृक्ष/आरग्वध/अमलतास–** ज्वर, उदावर्त, हृदरोग, वातरक्त।

- मृदु विरेचक, मधुर, शीत।
- बाल, वृद्ध, उर, क्षत, क्षीण, सुकुमार में प्रयोग। अनपायि-हानि नहीं करने वाला।

संग्रह– फल काले (बसन्त का अंत) गुणी फल लाकर बालू में ७ दिन के लिये दबा दे। फिर निकालकर धूप में सुखाये। सुखने पर मज्जा निकालकर शुद्ध पात्र में संग्रहित करे।

प्रयोग– ४-१२ वर्ष तक के बालक में।

- उदावर्त– मज्जा द्राक्षा रस से।
- मज्जा का हिम कषाय दधि मण्ड/आमलकी स्वरस/त्रिवृत कल्क से।

(४) **तिल्वक–** मूल लेकर अन्तर्वल्कल (अन्त: भाग) हटाकर केवल त्वक् मात्र ग्रहण करे। इसे सुखा कर चूर्ण करे। चूर्ण के ३ भाग कर ले।
२ भाग चूर्ण को लोध्र क्वाथ में घोलकर छाने। छने क्वाथ (छनित्र) से बचा १ भाग चूर्ण को भावित करे। पुन: इसे दशमूल क्वाथ से भावना दे। भावित चूर्ण सुखाकर संग्रहित करे।

[तिल्वक/लोध्र– २ भेद – (i) पठानी – ग्राही, आर्तवदुष्टि में।
(ii) शावर – विरेचन कल्पार्थ।]

प्रयोग विधि–
- १ कर्ष चूर्ण – मस्तु/गोमूत्र/सुरा/बेर/आंवला रस से।
- तिल्वक कषाय + कल्क + घृत + शर्करा → अवलेह।

(५) **स्नुही/सुधा–** क्षीर – तीक्ष्ण विरेचनों में श्रेष्ठ।

- दोषों के महान संचय में प्रयोग।

निषेध– मृदुकोष्ठ, निर्बल, बाल, वृद्ध, चिर रोगी। आशुकष्ट।
प्रयोग– गुल्म, उदर, त्वक् रोग, मधुमेह, पाण्डु, दूषीविष, शोफ, दोष विभ्रान्त मन।
संग्रह– २/३ वर्ष की बहु, तीक्ष्ण कंटक युक्त सुधा को शिशिरान्त में उखाड़कर चीरकर क्षीर निकाले।

I. बृहत्पंचमूल क्वाथ II. बृहती क्वाथ III. कण्टकारी क्वाथ में क्रमश: मिलाकर (प्रत्येक बार क्षीर व क्वाथ समभाग) अंगार शुष्क (३ बार आग पर चढ़ा कर) करे (यह कड़े अवलेह वत हो जायेगा)। इसकी (कोल सम) गोली बना ले।

सेवन– १ गोली – मस्तु, मूत्र, सुरा आदि [चरक सं० में ७ अनुपान – सौवीर, तुषोदक, बेर स्वरस, आंवला रस, सुरा, दधि जल, मातुलुङ्ग रस] से।

अन्य– स्नुही क्षीर कसौंदी रस/यूष से।

घ्राण विरेक्– दन्ती, त्रिवृत, अमलतास, शंखिनी, सप्तला चूर्ण
I गोमूत्र } में ७-७ रात्रि तक चूर्ण भिगोकर प्रतिदिन सुखाता रहे। इस प्रकार
II स्नुहीक्षीर } भावित चूर्ण को फूल आदि पर छिड़ककर सुंघाये।

(६,७) शंखिनी (यवतिक्ता/कालमेघ) तथा सप्तला (शिकाकाई)–

प्रयोज्यांग– शंखिनी – फल (नातिशुष्क)
सप्तला – मूल

गुण– दोनों, तीक्ष्ण, विकासी।

प्रयोग– कफज रोग, उदर, गर, श्वयथु आदि।

- दोनों का कल्क – १ अक्ष/कर्ष – मदिरा + लवण से– V-K गुल्म में।
- शंखिनी चूर्ण (२) + सरसों/एरण्ड/तिल तैल (१) – हरड़ कषाय से।

(८,९) दन्ती-द्रवन्ती– (दन्ती द्वय- भा०प्र०)

दन्ती – हस्ति दन्त वत मूल, एरण्ड सदृश फल, उदुम्बर वत पत्र, निकुंभ (कुम्भाकार/द्रव विरेचन)

द्रवन्ती– जयपाल, जमालगोटा, बीज एरण्ड वत

प्रयोज्यांग– स्थिर स्थूल मूल – वर्ण – ताम्र श्याव

गुण– तीक्ष्ण, आशुकारी, विकासी, गुरू, वात प्रकोपक, पित्त व कफ विलायन।

संग्रह– मूल पर मधु व पिप्पली का लेप कर कुशा से लपेटे फिर मिट्टी का लेप कर स्वेदन (पुटपाक) करे, फिर धूप में सुखाये। इससे विकासी गुण दूर होता है।

उपयोग– मूल भावित मूंग आदि के यूष।

- अभिष्यण्ण गुल्म, प्रमेह, उदर, गर – मस्तु/तक्र से।
- भगन्दर, पाण्डु – अजा मांस रस से।
- दन्ती द्रवन्ती कल्क व क्वाथ + दशमूल क्वाथ → सिद्ध घृत – विसर्प, विद्रधि, अलजी, कक्षा, दाह शामक।
- सिद्ध तैल– कफ वात जन्य बिबन्ध, गुल्म, अर्श, हर।

दन्त्यादि चूर्ण– दन्ती द्रवन्ती मरिच, स्वर्ण क्षीरी, दुरालभा, सोंठ, चित्रक, जीरा- चूर्ण – ७ बार गोमूत्र भावना।

उपयोग– चूर्ण घी के साथ। जीर्ण होने पर सत्तू का तर्पण। अजीर्ण, पार्श्वशूल, गुल्म, प्लीहोदर, गण्डमाला, पाण्डु।

मोदक– गुड़ – ८ पल, दन्ती – १ पल, पिप्पली – १ कर्ष
हरड़ – २०, चित्रक – १ पल, त्रिवृत – १ कर्ष

इनसे १० लड्डू बनाये। १०–१० दिन के अंतर से १-१ खाये।

अनुपान – उष्णोदक।

गुण– परहेज नहीं, सर्वरोग, ग्रहणी, पाण्डु, कण्डू, कोठ, अर्श।

हरीतकी– त्रिवृत विधान से कल्प।
ग्रहणी, शोफ, पाण्डु, मेह, उदर रोग।

- सर्वश्रेष्ठ विरेचन– पथ्या, त्रिवृत, लवण चूर्ण – उष्णाम्बु से।

मोदक– हरड़ चूर्ण को स्नुही क्षीर से भावित कर कोलास्थि वत गोली बना ले। सुखाकर रख ले। सेवन– मक्खन से।

प्रयोग– गुल्म, उदर, यकृतशूल, प्लीहाशूल, आनाह, बिबंध।

अल्पस्यापि महार्थत्वं प्रभूतस्याल्पकर्मताम् ।
कुर्यात् संश्लेष विश्लेष काल संस्कार युक्तिभिः ।।६०।।

काल, संस्कार व युक्ति पूर्वक संश्लेष (द्रव्य मिलाना), विश्लेष (योग में से द्रव्य/द्रव्य से गुण हटाना) करके अल्प से महान व प्रभूत द्रव्य से अल्प कार्य लिया जाता है।

मनोऽनुकूलैर्युक्तानि देयानि विरेचनानि ।।६१।।

विरेचन मनोनुकूल बना कर दे इसके लिये दालचीनी, केसर, आम्रातक, दाडिम, एला, मिश्री, मधु, मातुलुंग; मद्य आदि का प्रयोग करे।

३. वमन विरेचन व्यापत्सिद्धिं

व्यापत् कर औषधि–

अतिमात्रमकालेऽल्पं तुल्यवीर्यैरभावितम् ।
असम्यक् संस्कृतं जीर्णं व्यापद्येत्तौषधं ध्रुवम् ।।३०।।

१. अतिमात्रा	३. अल्प मात्रा	५. असम्यक् संस्कृत
२. असमय	४. समवीर्य द्रव्यों से अभावित	६. जीर्ण

वमन विरेचन व्यापत् , हेतु व प्रतिकार–

१.	प्रतिकूल गति (i) वमन → अधो	अतिक्षुधित, अजीर्ण, अतिमृदु कोष्ठ, अल्प श्लेष्मा, दुर्वमन, में हीन/अति मात्रा, तीक्ष्ण, अतिशीत औषधि → अधोगमन, दोषोत्क्लेश	पुनः स्नेहन कर काल आदि की अपेक्षा से यौगिक मात्रा में वमन औषधि दे।

	(ii) विरेचन → ऊर्ध्वगामी	अजीर्ण, श्लेष्मवान, में अतिउष्ण, तीक्ष्ण, लवण, अतिमात्रा, अहृद्य (अप्रिय) → ऊर्ध्व	पुनः स्नेहन कर औषधि दे (लेह/वटक रूप)। तीसरी बार न दे।
२.	पाक/जीर्ण	क्रूर कोष्ठी, अति तीक्ष्णाग्नि में अल्प मात्रा/वीर्य औषधि → अन्न-वत जीर्ण → दोष समुदीर्ण → (अनिर्हरण) – विभ्रम।	कोष्ठ स्निग्ध कर अनल्पअमंद औषध पान।
३.	ग्रथित	• बिना स्नेहन स्वेदन; • कषाय, अल्प, सद्यः बनी, रूक्ष औषधि। • शीतोपचार → स्तब्ध → दोष विग्रथित → अयोग	• वमनीय → पुनः वमन • विरेचनीय→ स्निग्ध स्विन्नकर पुर्नविरेचन दोषाधिक्य में ३रे दिन। दोनों संशोधनों में लवण + तैल अभ्यंग कर पिण्ड प्रस्तर स्वेद।
४.	गौरव	• स्नेहन स्वेदनोपरांत बिना वमन के विरेचन पी लेना • आमावस्था में मृदु विरेचन } अधो-भाग में गुरूता, उदर शूल, वातमूत्र मल सङ्ग।	(i) मूत्रयुक्त तीक्ष्ण आस्थापना (ii) जांगल मांस रस आहार (iii) मदनफल, देवदारू, पिप्पली सिद्ध तैल–अनुवासन। (iv) वातहर द्रव्यों से स्नेहन (v) तीक्ष्ण विरेचन।
५.	दोषोत्क्लेश	कफोल्वण/अतिस्निग्ध/गुरूकोष्ठ/मन्दाग्नि में मृदु औषध → दोष अति उत्क्लिष्ट → जाड्य, तन्द्रा, दौर्बल्य, अंगसाद।	(i) औषधि को शीघ्र वमन करे। (ii) लंघन → अग्नि प्रदीप्त। (iii) स्नेहन (iv) तीक्ष्ण विरेचन।

६.	आध्मान	रस शेषाजीर्ण/वात श्लैष्मिक/रूक्ष/ उदावर्त/मन्दाग्नि में शीत रूक्ष औषधि → आध्मान, मलसङ्ग → उदर उन्नत, मशकवत, शूल, पार्श्व में पूर्णता; शिर, पृष्ठ रूक; श्वास, कास, गुदा व वस्ति में तोद।	उदावर्त, आनाह हर अभ्यंग, स्वेद, वर्ति, दीपन चूर्ण, वस्तिकर्म।
७.	परिकर्तिका (विरेचन) /कण्ठक्षणन (वमन)	अल्प बल/मृदु कोष्ठाग्नि/रूक्ष/ साम/अस्निग्ध में बली औषधि पान → P+V दूषण → परिकर्तिका नाभिवस्ति गुद मेढ़ में दाह के साथ काटने वत पीड़ा, वातसङ्ग, विष्टम्भ।	• कृश–मधुर, वृंहण। (i) पिच्छावस्ति आस्थापन– काले तिल, मधुयुक्त/क्षीरिवृक्ष शृतक्षीर। (ii) ठंडे जल से परिषेक कर दूधयुक्त आहार (iii) अनुवासन– घृत-मण्ड/यष्टीमधु तैल। आमावस्था– लंघन, दीपन; लघु,रूक्ष,उष्ण आहार निराम– लघु, क्षार, अम्ल आहार। वातहर– अम्ल, अनार का छिलका; अनार रस सिद्ध घृत, तिल, देवदारू कल्क उष्ण जल से।
८.	परिस्राव (विरेचन) /कफ प्रसेक (वमन)	क्रूर कोष्ठी/बहुदोष में अल्प मात्रा व गुण/मृदु, स्निग्ध औषध → दोष असम्यक् उत्क्लेष → पित्त कफ संसृष्ट थोड़ा-२ परिस्राव; विष्टम्भ, गौरव, शोफ, कण्डू, पाण्डुता, अङ्गसाद, गुल्म, शूल।	(i) आस्थापन– अश्वकर्ण, पलाश, बला क्वाथ + मधु। (ii) स्नेहन (iii) तीक्ष्ण विरेचन (iv) दीपन चूर्ण, आसव, अरिष्ट।

९.	प्रवाहिका/ शुष्कोद्गार (वमन)	औषध पीकर वेग हठात प्रवृत्त करना/निग्रहण करना → सदाह, शूल, श्वेत पिच्छा + कृष्ण रक्त। अति प्रवाहण में कफ आना।	परिस्राव वत।
१०.	हृद्ग्रह	औषध पीकर भेषज के उद्गार, वमन आदि का निग्रह/वेगावरोध → वातादि कोप → हृद प्रदेश (प्रधान मर्म) का ग्रहण → हृदयोपसरण – मोह, हिक्का, कास, लाला, वेपथु, पार्श्वशूल, नष्टसंज्ञा, दांत कटकटाना, आंखे बाहर, जिह्वा कटना।	I. अभ्यंग II. धान्य स्वेद III. तीक्ष्ण अवपीडन IV. वमन– तण्डुलाम्बु + यष्टीमधु। • कफाधिक्य में कटु औषधियों से वमन। V. पाचन औ०– शेष दोषार्थ। VI. वस्ति।
११.	सर्वगात्र परिग्रह	अस्निग्ध स्विन्न/अब्रह्मचारी/वेग धारण/मृदुकोष्ठी/सुकुमार – रूक्ष औषधि अतिमात्रेण → अतिविरेक → वात कोप → सर्वाङ्गप्रग्रह। शूल, संज्ञानाश।	I. अभ्यंग II. धान्य स्वेद III. अनुवासन– मुलेठी पक्व तैल से। IV. वातघ्न आहार।
१२.	सहधातु स्रवण (जीवादान)	अतिमृदु कोष्ठी/क्षुधित में तीक्ष्ण, अतिमात्रा में औषधि– सर्वमल निकालकर, धातुओं को भी द्रवीभूत कर विस्रावण (अतियोग)।	I. अभ्यंग– शतधौत घृत II. कषाय, मधुर, शीत; प्रदेह, परिषेक, अवगाहन, आहार; अवलेह–शर्करा, मधुयुक्त → स्तम्भन। III. चन्दन, खस, छागरक्त, शीतजल, लाजा सत्तू। IV. पिच्छा वस्ति V. अनुवासन– मधुर वर्ग सिद्ध क्षीर सर्पि/सर्पिमण्ड। • रक्तपित्त वत चि०।

वमन का अतियोग– • घृत, शर्करा मधु के साथ द्राक्षा आदि कामंथ।
• क्षीरि वृक्ष शुङ्ग सिद्ध पेया + मधु (सम)।
• संग्राहक द्रव्य सिद्ध क्षीर भोजन।

अन्य स्थितियां–

१. उद्गार युक्त वमन– धनिया, महुआ, मुक्ता मधु से चाटे।
२. वाक्सङ्ग, हनुसङ्ग – तण्डुल पेया + घृत, स्नेहन, स्वेदन।
३. जिह्वा अन्त: प्रविष्ट – कवल, गण्डूष – स्निग्ध, अम्ल, लवण।
४. निर्गत जिह्वा– जिह्वा पर त्रिकटु + लवण चूर्ण रगड़कर अन्त: प्रविष्ट करे।
५. अक्षि व्यावृत (आंखें बाहर को निकले) – घृताभ्यक्त कर पीडन (दबायें)।
६. विसंज्ञ (मूर्च्छा)– साम वेणु गीत शब्द श्रवण।

विरेचन का अतियोग– रक्तातिसार चि०।

- वमन – तण्डुलोदक + मधु।
- अनार त्वक् चूर्ण– तण्डुलोदकेन।
- गूलर छाल– मधु, शर्करा, मुलेठी से।

अन्य स्थितियां–

१. गुद नि:सृत– अभ्यंग, स्वेद, कषायलेप → स्तम्भ (दृढता), अन्त: प्रविष्ट।

जीवरक्त– उभयातियोगजन्य।

पहचान–

परीक्षण	जीवरक्त (शुद्ध)	रक्तपित्त
• श्वेत सूती वस्त्र रक्त में भिगोये, सुखाये, गरम जल से धोये	वस्त्र साफ	विवर्ण
• रक्त मिश्रित अन्न कुत्ता/कौआ को खाने को दे	खा लें	न खायें

चि०– • आमरण; तृट, नूच्छी आदि की।
• पित्तघ्न; अतियोग की; एणादि रक्तपान + मधु।

छर्दनं न तु दुश्छर्द दुर्विरिच्यं न रेचनम् ।
पाययेदौषधं भूयस्तन्निहन्ति तथा हि तौ ।।३०।।

(एक/दो बार) वामक विरेचक औषध देने पर भी यदि (सम्यक्) वमन, विरेचन जिनमें न हो वह दुश्छर्द/दुर्विरिच्य हैं, इनमें पुन: (तीसरी बार) संशोधन न दे अन्यथा अपाय (हानि) होती है।

विविध व्यापद	**उपचार**
• विरेचन औषधि कफ से मिलकर मुख से आना	(i) मुख शोधन– वमन, कवल (ii) लंघन (iii) पुन: विरेचन औषधि।

विविध व्यापद	उपचार
• दोष बिबद्ध, अल्प, चिर स्रवण	• उष्ण जल पान। – आध्मान, वमन, तृष्णा, विबन्धहर।
• दोषरूद्ध औषध → अप्रवृत्त– उद्गार, अंगशूल	• स्वेद
• सम्यक् विरेचन हो जाने पर भी औषध का उद्गार बना रहना → अतियोग।	औषध वमन कराये, न निकलने पर शीत चि० से स्तम्भित कर दे।
• रूक्ष में विरेचन औ०– (i) जीर्ण (ii) ऊर्ध्व स्थिति	उसी दिन दूसरी औषधि सस्नेह लवण।
• औषधि– कफावृत → लाला, हल्लास, विष्टम्भ, रोमहर्ष।	• तीक्ष्ण उष्ण कटु, कफघ्न औ०।

कभी-कभी औषध कफ से मिलकर उर में ही रूक जाती है, इसमें कफ के क्षीण होने पर सायं या रात्रि में विरेचन होता है।

४. वस्ति कल्प

वस्ति– • ३ भेद

१. निरूह/आस्थापन– उत्क्लेदन, संशोधन, संशमन, लेखन, बृंहण, बाजीकरण, पिच्छा। माधु तैलिक/यापना/स्निग्ध।

२. अनुवासन– दोष व रोगानुसार औषध सिद्ध स्नेह - मात्रा वस्ति।

३. उत्तर वस्ति

• २ भेद– १. मृदु २. तीक्ष्ण।

सर्ववात रोग हर– अजा मांस सिद्ध वस्ति।

लेखन, दीपन, कफवात रोग हर–

एरण्ड मूल, पलाश मूल – ३-३ पल + अमलतास, लघुपंचमूल, रास्ना, बला, गुडुची, अश्वगंधा, पुनर्नवा, देवदारू – १-१ पल

+ मदन फल – ८ (१ पल)

+ जल– २ आढक में पाक– १/८ शेष कर छाने + रसौत, वच, सौंफ, हपुषा, प्रियंगु, मुलेठी, पिप्पली, इन्द्र जौ, मुस्ता – १-१ कर्ष का कल्क + लवण १/४ कर्ष (३ माशा) + मधु, तैल, गोमूत्र।

गुण– जंघा, उरू, पाद, त्रिक, पीठ, कोष्ठ, हृद, गुह्य शूल; गुरूता, बिबन्ध; गुल्म, अश्मरी, वर्ध्म, ग्रहणी, अर्श रोग हर।

- वातरक्त, विसर्प, स्वरभेद हेतु निरूह–
  ८ पल मुलेठी से दूध सिद्ध + सौंफ, मदनफल, पिप्पली, घी, मधु।
- पित्त रोग हर– मुलेठी, लोध्र, खस, चन्दन, कमल, उत्पल सिद्ध गो दुग्ध + शर्करा, मधु, घृत + जीवनीय गण – शीत।
- पक्वाशय शोधन– श्यामा, त्रिवृत, दन्ती, द्रवन्ती का मूल। स्व कल्क + सैंधव युक्त।

सांग्राहिक– क्षीरिवृक्ष, ढाक, लोध्र

ग्राही– प्रियंग्वादि गण क्वाथ + अम्बष्ठादि गण कल्क।

लेखन– त्रिफला क्वाथ + उषकादि गण प्रक्षेप

बृंहण– मधुर वर्ग औषधि क्वाथ + मधुर औषधि कल्क + घी।

पिच्छा– बेर, लसूड़ा, सिम्बल पुष्प/अंकुर + मधु, दूध, रक्त।

दाहहर– चन्दनादि गण

प्रवाहणहर– शाल्मलि वृन्त (नये पत्ते/पुष्प) पक्व दूध + घृत।

परिकर्तिका– कचनार, आढकी, कदम्ब पत्र सिद्ध दूध।

गम्भारी (श्रीपर्णी), कचनार पक्व दूध।

परिस्राव– लाल व श्वेत पुनर्नवा/आखुकर्णी, चौलाई सिद्ध दूध।

जीवादान– जीवनीयगण औषधि + दूध – गो, अव्य, अजा, महिषी।

बृहती क्षीर काकोली पृश्निपर्णी शतावरी
काश्मरी, बदरी (बेर), मूर्वा, उशीर (खस), प्रियुंगु } पक्व दूध + घी, अंजन, शर्करा।

अतिरक्तस्राव– ताजा रक्त–शशक, मृग, मुर्गी, भैंस, बकरी आदि + Anticoagulant सिंबल पुष्प, दर्भ (कुश) आदि मर्दित।

सुकुमारार्थ स्निग्ध मृदु निरूह–

१. दूध – २ प्रसृत + मधु तैल घृत – ३ प्रसृत → मथे। वातहर, बलवर्ण कर।
२. पटोल, निम्ब, पूतिकरंज, रास्ना, सप्तपर्ण का जल/क्वाथ– १ प्रसृत
   घृत– १ प्रस्थ + सरसों कल्क + पंचतिक्त (नीम, गुडुची, वासा, पटोल, कटेरी)।
   – अभिष्यन्द, कृमि, कुष्ठ, प्रमेह हर।
३. कृमिहर– विडंग, त्रिफला, शिग्रु फल, मुस्ता, आखुकर्णी कषाय– ५ प्रसृत + तैल – १ प्रसृत – मथे + विडंग, पिप्पली कल्क।
४. बाजीकर– पयस्या, इक्षुरस, शालपर्णी, रास्ना; विदारी, मधु, घृत– १-१ प्रसृत + पिप्पली कल्क।
५. आनाह, मूत्रकृच्छ–
   गोक्षुर, पाषाण भेद, एरण्ड क्वाथ + तैल, सुरा, आसव + पिप्पली, हरेणु, मुलेठी कल्क– सुखोष्ण निरूह।

६. मलावरोध, आनाह– तैल, गोंमूत्र, दधिमण्ड, अम्लकाञ्जी– ४ प्रसृत + सरसों कल्क।

मृदुवस्तिजड़ीभूते तीक्ष्णोऽन्यो वस्तिरिष्यते ।
तीक्ष्णैर्विकर्षिते स्निग्धो मधुरः शिशिरो मृदुः ।।२९।।

मृदु वस्ति के स्तम्भित हो जाने (वापस न आने) पर तीक्ष्ण वस्ति दे। तथा तीक्ष्ण वस्ति जन्य विकर्षण में मृदु स्निग्ध, मधुर शीतल वस्ति दे।

मार्दव/तीक्ष्णन संस्कार–

- (मृदु) वस्ति + गोमूत्र बिल्व, चित्रक, लवण, यवक्षार, सर्षप → तीक्ष्ण।
- (तीक्ष्ण) वस्ति + दूध, घृत आदि → मृदु।

→ उष्ण से पीड़ित में शीत तथा शीत पीड़ित में उष्ण वस्ति दे।
→ विशोधनीय व्याधियों (कुष्ठ, प्रमेह, मेदस्वी) में बृंहण वस्ति न दे।
→ बृंहणीय (क्षीण, उरः क्षत, दुर्बल, मूर्छित, कृश, शुष्क देही) में शोधन वस्ति न दे।

बल, काल, दोष, रोग, प्रकृति विभाग से स्वऔषधि वर्ग (दोष/रोग) से युक्त वस्ति योजना करे ॥३१॥

५. सिद्ध वस्ति कल्प

सिद्ध वस्ति–

सिद्धवस्तीन प्रयुञ्जीत सर्वदा सर्वदेहिनाम् ।
निर्व्यापदो बहुफलान् बलपुष्टिकरान् सुखान् ।।२।।

सभी कालों में, सभी व्यक्तियों में निर्व्यापद (बिना हानि), बहुत फल, बल पुष्टिकर सुखकर।

माधुतैलिक निरूह–

- मधु, तैल समभाग + सैंधव – १ कर्ष } + एरण्ड मूल क्वाथ।
  सौंफ – २ कर्ष }

  गुण– रसायन, प्रमेह, अर्श, कृमि, गुल्म, आंत्रवृद्धि हर।
- उपरोक्त + मुलेठी।

  गुण– चक्षुष्य, रक्तपित्त शामक।

यापना वस्ति–

घृत, मधु, वसा, तैल – १-१ प्रसृत }
सैंधव – १/२ कर्ष } युक्त।
हपुषा – १/२ पल }

युक्तरथ वस्ति–

- एरण्डमूल क्वाथ + मधु, तैल, सैंधव, वच, पिप्पली, मदनफल।

- एरण्डमूल क्वाथ + मधु, वच, सौंफ, हिंगु, सैंधव, देवदारू, रास्ना– दोषहर, शिव (कल्याणकर)।

सिद्ध वस्ति– बृहत्पंचमूल क्वाथ + तैल, पिप्पली, मधु, सैंधव, मुलेठी।

मुस्तादि वस्ति– (श्लो० ११)– यापना वस्तियों में राजा, रसायन।

बाल, वृद्ध, स्त्री, सुकुमारार्थ– शतावरी, गुडुची, कटेरी, बड़ी कटेरी सिद्ध दूध + पिप्पली, मुलेठी कल्क।

वृष्य वस्ति–

लघु पंचमूल	– १-१ पल	छाग क्षीर सिद्ध करे +
शालि, गेहूँ, जौ, उड़द, सांठी	– २-२ पल	कुकुटाण्ड (मुर्गी के अण्डे) रस
		सिता, घी, **मधु**, सैंधव, सौवर्चल।

गुण– अति शुक्रवर्धक। इनके साथ कौंच, तालमखाना से सिद्ध दूध युक्त आहार। इसमें मधु योगवाही है।

यापना वस्तियों के गुण–

(१) **मृद्वल्पौषधसंयोगात् पादहीन प्रमाणतः ।**
अल्पकालोपयोगाच्च तेषु निष्परिहारता ।।२२।।

मृदु व अल्प औषध संयोग प्रमाण में १ पाद (१/४) कम अल्प काल तक ही उपयोग	होने से किसी परहेज की आवश्यकता नहीं होती।

(२) अति योग/अयोग/स्तम्भन नहीं होता।

(३) लेखन व बृंहण।

निरूहा लेखनाः प्रायो बृंहणाः स्नेहवस्तयः ।
यापनेषूभयं तस्मान्नेष्टं तेष्वनुवासनम् ।।१९।।

प्राय: निरूह– लेखन व स्नेह वस्तियां-बृंहण होती हैं। यापना वस्तियों में दोनों गुण होने से इनके साथ अनुवासन की आवश्यकता नहीं होती।

सावधानियां–
- युक्तिपूर्वक, आवश्यकता होने पर ही प्रयोग।
- मृदुता वश यदि कभी वापस न आयें तो शीघ्र ही मूत्र युक्त तीक्ष्ण आस्थापन दे।

अति सेवन → शोफ, अग्निनाश, पाण्डु, शूल, अर्श, परिकर्तिका, ज्वर, अतिसार।

चि०– अरिष्ट, क्षार आदि से अग्निदीपन।

सपरिहार वस्तियां– परहेज आवश्यक।

- **वातहर–** सौंफ, जौ, बिल्व, अम्ल (कांजी) सिद्ध तैल से अनुवासन।
- **अतिवात–** अग्नितप्त सैंधव से गरम किया घी से।

पित्तहर– शिशिर स्पर्श वीर्यैश्च पिष्टैः क्षीरे चतुर्गुणे।
तैलपादं घृतं सिद्धं पित्तघ्न मनुवासनम् ॥३१॥

शीत स्पर्श व वीर्य वाले द्रव्यों का कल्क सिद्ध घृत + तैल (१) + क्षीर (४ भाग)।

कफहर– महापञ्चमूल सिद्ध तैल से अनुवासन।
कफ + शूल, आनाह– उपरोक्त + लवण, गोमूत्र।

वस्ति कर्मार्थ प्रयुज्य श्रेष्ठ फल– आचार्य पुनर्वसु (गुरू) के अनुसार–

फल	रोगार्थ
गरागरी	कुष्ठ
इक्ष्वाकु	प्रमेह
कुटज	हृदरोग
राजकोषातकी	पाण्डु
कृतवेधन	उदर
मदनफल	सर्वरोग विरोधी; मधुर कषाय तिक्त कटु; अरूक्ष, उष्ण, पिच्छिल; कफपित्त आशुहर, वातानुलोमक; फलश्रेष्ठ; आस्थापन में प्रयुक्त।

वस्ति की क्रियाविधि (Mode of Action)–

अग्निवेश– वस्ति चित्र (विभिन्न) कर्म व गुणकारी कैसे है, जबकि यह नाभि से ऊपर नहीं जाती और शीघ्र ही बाहर निकल जाती है ऐसी स्थिति में यह सम्पूर्ण शरीर के दोषों को कैसे निर्हरित करती है?

गुरू (आत्रेय)–

१. शाखागत, कोष्ठगत, मर्म, ऊर्ध्व, सर्वावयव, अङ्ग आदि के जो भी रोग है वे वायु बिना नहीं होते। विट्, श्लेष्म, पित्त आदि मलों का संचय, विक्षेप व संहार करने वाला वायु ही है। इसके शान्त होने से इससे प्रेरित (उदीर्णित) पित्त, कफ आदि का भी शमन हो जाता है। इसी से वस्ति को अर्द्ध चिकित्सा कहते हैं।

२. जिस प्रकार आकाश स्थित सूर्य अपने वीर्य से पृथ्वी से रस ग्रहण कर लेता है वैसे ही वस्ति पाद से मस्तक तक के दोषों को खींच लेती है।

३. (i) वस्ति औषधि वीर्य → अपान → समान → व्यान → उदान → प्राण।
पञ्चवात वीर्य से तृप्त हो स्व प्रकृतिस्थ हो जाते हैं
(ii) औषध सिराओं द्वारा शरीर में व्याप्त हो →
पित्त व कफ स्व स्थान में स्थितकर;
→ स्व वीर्य से संतर्पित।
→ महाभूतों के अपने-२ गुणों को यथावत करना।

४. व्यानस्तिर्यगपानोऽध: प्राणश्चोर्ध्व प्रकर्षति ।
यथास्वमेव नाडीभिर्हारिणीभिरिवोदकम् ।।४२।।

जिस प्रकार खेत में पानी नाड़ियों/नालियों द्वारा जाता है वैसे ही वस्ति को व्यान-तिर्यक्, अपान-अधो व प्राणवात-ऊर्ध्व को आपनी-२ नाड़ियों (सिराओं) द्वारा प्रकर्षित कर लेते हैं।

सर्वकर्मों में वस्ति का प्राधान्य–

१. सर्व रोगों को नि:शेषत: (मूलत:/बिना छोड़े) नष्ट करना।
२. स्रोतों का अन्त: शोधन।
३. ओज, तेज, शुक्र, मेधा, अग्नि दीपन कर।

६. वस्ति व्यापत् सिद्धि

वस्ति व्यापद्– १२

निबन्धगौरवाध्मानशिरोरूग्वाहनोर्ध्वगा: ।
कुक्षिशूलाङ्गरूग्हिध्माहृत्पीडाकर्तनस्रवा: ।।२।।

अयोग– ६

१. बिबंध　३. आध्मान　५. वाहन (प्रवाहिका)
२. गौरव　४. शिरोरूक्　६. ऊर्ध्वग

अतियोग– ६

१. कुक्षिशूल　३. हिक्का　५. कर्तन (परिकर्तिका)
२. अङ्गरूक्　४. हृत्पीड़ा　६. स्रव (रक्तस्राव)

क्रम	व्यापद्	विवरण	चिकित्सा
१.	विबन्ध	अस्निग्ध/अस्विन्न/गुरूकोष्ठी में शीत, अल्पस्नेह लवण, द्रव्य/अधिक द्रव्य कल्क से घट्ट वस्ति → दोष संक्षोभ– वात, मल, मूत्र का अवरोध, गुदशोथ, कण्डू, शूल आदि।	गरम क्वाथ पान, फलवर्ति, स्वेद, विरेचन। यवानी प्रयोग।
२.	गौरव	सशेष आम में मृदु निरूह → दोष → वातमूर्च्छित, मार्गरूद्ध, अग्नि नाश → गौरव, क्लम, हृदशूल, उद्वेष्टन।	रूक्ष स्वेद, पाचन। अग्निदीपन, हृदशोधन–पिप्पली, रोहिष, खस, देवदारू, मूर्वा पक्वजल + सौवर्चल– पान। दशमूल वस्ति + मूत्र – वस्ति।
३.	आध्मान	दोष बहुल/रूक्ष/क्रूर कोष्ठी में अल्प वीर्य वस्ति दोषावृत → रूद्धमार्ग → वात अवरूद्ध → वात विमार्गी → आध्मान, मर्मपीडन, शूल।	अभ्यंग, स्वेदन, फलवर्ति। बिल्वादि पंचमूल निरूह+पीलु, सर्षप, गोमूत्र।

क्रम	व्यापद्	विवरण	चिकित्सा
४.	शिरोरूक्	बहुदोष, अबल, क्रूर कोष्ठी में तनु, मृदु, शीत, अल्प वस्ति → दोषावृत → वात रूद्ध व ऊर्ध्वग → शिरोरूक्, ग्रीवा-स्तम्भ, प्रतिश्याय, बाधिर्य, दृष्टि विभ्रम।	• अभ्यंग–उष्ण तैल+लवण। • स्वेदन। • तीक्ष्ण धूम, प्रधमन, नस्य, • मुख विरेचक (गण्डूष)। • आनुलोमिक विरेचन, वस्ति।
५.	प्रवाहिका	स्निग्ध स्विन्न महादोष में मृदु, अल्प भेषज वस्ति → दोष का अल्प उत्क्लेश व हरण → प्रवाहिका → वस्ति, गुद शोफ; वात अवरोध, बार-२ प्रवाहण।	• स्वेद, अभ्यंग • निरूह– शोधन, अनुलोमन • लंघन, विरेक् वत संसर्जन।
६.	ऊर्ध्वग	वेगावरोधी में अधिक दबाकर दी वस्ति/बिना स्नेह, लवण दी उष्ण वस्ति/अल्पमात्रा/अल्प भेषज, मृदु वस्ति $\xrightarrow{\text{वात}}$ ऊर्ध्व प्रेरित → मुख व नासा से आना, मूर्च्छा, हल्लास, तृट्, दाह आदि।	• मूर्च्छा– शीताम्बु से मुख सिञ्चन। • प्राणायाम– Controll Resp. • पेट के बल लिटाकर उष्ण हाथों से पृष्ठ, पार्श्व ऊपर को मले। • बाल खींचे। हाथ व वस्त्र से गला पीडन → प्राणोदान निरोध → अपान वस्ति का अपकर्षण कर लेता है। • त्रिवृत, पथ्या कल्क-गोमूत्र से– वस्ति अधोऽनुलोमन। → पक्वाशयस्थ वस्ति में स्वेदन कर दशमूल निरूह दे।
७.	कुक्षिशूल	अति-उष्ण अम्ल घन वस्ति/अति स्वेदित/अल्प दोष/मृदु कोष्ठी में पुनः-पुनः प्रयुक्त वस्ति → अतियोग → उदर-शूल, विरेचन अतियोग लक्षण	• विरेचन अतियोगवत। दाह– कमल, मुलेठी, द्राक्षा कल्क + दूध/तण्डुलाम्बु/मुलेठी जल + घृत– वस्ति।

क्रम	व्यापद्	विवरण	चिकित्सा
८.	अङ्गरूक्	बिना स्नेह स्वेद; गुरू, तीक्ष्ण, अतिमात्रा, दुःस्थित (wrong Position)/दुःशोधित में वस्ति → अतिप्रवृत्त → वातकोप → विमार्गी वात→ अंगरूज, स्तंभ, पर्वभेद	• अभ्यंग– तैल + लवण • प्रस्तर स्वेद • आस्थापन– बिल्व, बेर, एरण्डमूल, जौ, पुनर्नवा, बृहती द्वय, कुलत्थी से शृत मस्तु + मदनफल, सत्तू कांजी से। • जांगल मांसरस आहार। • अनुवासन–वातघ्न पक्व तैल।
९.	हिक्का	मृदु कोष्ठी, अबल में तीक्ष्ण वस्ति (बाहर नहीं आती) → हिक्का	हिक्का चि०। बृंहण। • बहेड़ा, पिप्पली, लवण– गरम जल से पिलाये।
१०.	हृत्पीडा	अतितीक्ष्ण, सवात, असम्यक् प्रपीडित वस्ति → हृदघट्टन	अनुवासन– अम्ल स्कन्ध + लवण स्कन्ध + कुश, काश, बेर। वातघ्न सिद्ध तैल।
११.	परिकर्तन	मृदु कोष्ठ, अल्प दोष में रूक्ष, तीक्ष्ण, अतिमात्रा वस्ति– • निर्लेखन (गुदका) • वात पित्तकोप } परिकर्तिका, मुहर्मुहुः विवर्ण अल्प मल आना।	वस्ति– पयस्या, इक्षु आदि मधुर, शीतल औषधि शृत + मुलेठी, तिल कल्क। आहार– दूध। • पिच्छा वस्ति।
१२.	परिस्राव (रक्तस्राव)	पैत्तिक रोगी में क्षार, अम्ल तीक्ष्ण, सलवण वस्ति → गुद लेखन, दाह, कर्तन → रक्तस्राव (बहुवर्ण विदग्ध रक्त + पित्त)। रक्तक्षय → मूर्च्छा।	• पिच्छा वस्ति। • सिम्बल/बरगद/चौलाई के मृदु पत्र → कल्क पक्व दुग्ध से (पिच्छिल) वस्ति। • गुदा पर शीत, मधुर चि०– सेक, प्रलेप। • रक्तपित्त, अतिसार चि०। दाह– द्राक्षारस + त्रिवृत कल्क – पित्त, मल, वात

क्रम	व्यापद्	विवरण	चिकित्सा
		आम, कुणप गंधी, सरूक् मलत्याग, अरूचि।	शमन। शोधनोपरांत– शर्करा युक्त शीत यवागू। विट्क्षय– माष यूष, दधि। मुस्ता, अतीस, कुष्ठ, सोंठ, देवदारू, वच – जल से।

अतियोग में षट् निर्हरण– आम, शकृत, वात, रक्त, पित्त, कफ। इनके परस्पर संयोग– भेद– ३६ ।

चि०–

आम– कटु, अम्ल, लवण रस– मुख से, पाचन; वस्ति निषेध।

शकृत– वातघ्न ग्राही वस्ति

वात– मधुर, अम्ल, व्यक्त लवण, स्नेह वस्ति।

रक्त– रक्त निर्मित वस्ति

पित्त– कषाय, मधुर, तिक्त वस्ति

कफ– कषाय, कटु, तिक्त वस्ति

षट् संयोग– षट रस युक्त पाचन।

निराम– (आम के अतिरिक्त ५ का संयोग)– षट् रस वस्ति।

⇒ यवागू– बिल्व, मसूर क्वाथ पक्व यवागू।

- सर्व अतिसारों हेतु घृत– गूलर के कच्चे फल; जामुन, आम, गूलर त्वक्; शंख आदि कल्क– १-१ पल + घी– १ प्रस्थ + दूध– २ प्रस्थ → पाक। अग्नि अनुसार सेवन।

७. स्नेहादि व्यापत्सिद्धि

स्नेह वस्ति व्यापद्– ८

स्नेहवस्तौ मरूत्पित्तकफात्यशिविडावृते ।
अभुक्ते शूनपाय्वामदत्तेऽष्टौ व्यापदः स्मृताः ।।२।।

१-५ – वात, पित्त, कफ, आहार, विट् से स्नेह वस्ति आवृत हो जाना;
६. बिना खाये ७. गुदशोथ होने पर ८. आम होने पर।

क्रम	व्यापत्	विवरण व लक्षण	चिकित्सा
१.	वात से आवृत स्नेह	वाताधिक्य में शीत/अल्पवस्ति → वातावृत → अप्रवृत्त– स्तम्भन आध्मान, ज्वर, दर्द।	निरूहं– स्निग्ध, अम्ल, लवण। सायं भोजन के बाद अनुवासन।

क्रम	व्यापत्	विवरण व लक्षण	चिकित्सा
२.	पित्तावृत	पित्ताधिक्य में उष्ण वस्ति से तृट, दाह, तमक, ज्वर।	निर्हरण– मधुर व तिक्त वस्तियों से।
३.	कफावृत	कफाधिक्य में मृदु वस्ति से– तन्द्रा, शीत ज्वर, कफ स्राव, मूर्च्छा।	• कषाय कटु तिक्त वस्ति + सुरा, मूत्र, मदनफल, तैल, कांजी।
४.	अन्नावृत	अति भुक्त में– वमन, मूर्च्छा, शूल, निद्रा, अंगमर्द, आमलिङ्ग।	पाचन– कटु लवण चूर्ण व क्वाथ से। मृदु विरेचन। आमवत चि०।
५.	मलावृत	गुरू वर्च संचय में अल्प बल वस्ति– मल मूत्र वात अवरोध जन्य पीड़ा, गौरव, आध्मान, हृदग्रह।	• स्नेहन, स्वेदन, वस्ति • श्यामा बिल्वादि सिद्ध निरूह व अनुवासन। • उदावर्त हर चि०।
६.	अभुक्त में वस्ति/खाने के तुरंत बाद पिया स्नेह।	अन्न आदि का आवरण न मिलने से → ऊर्ध्वकाय → कण्ठ → मुख व नासा से प्रवृत्त।	निरूह/अनुवासन– गोमूत्र निशोथ, त्रिवृत क्वाथ + जौ, बेर, कुलत्थी → सिद्ध तैल।
७.	शोथयुक्त गुदा में		• स्नेह कण्ठ से आने पर स्तम्भन, कण्ठग्रह, छर्दिघ्नी।
८.	अपक्व स्नेह	गुद उपलिम्पन → रूक्, कण्डू, शोफ।	तीक्ष्ण वस्ति–अर्क पत्र रस शृत तैल से।

नेत्रदोष– ८ (चरकोक्त श्लोक)

ह्रस्वं दीर्घं तनु स्थूलं जीर्ण शिथिल बन्धनम् ।
पार्श्वच्छिद्रं तथा वक्रमष्टौ नेत्राणि वर्जयेत् ।।
अप्राप्त्यतिगतिक्षोभकर्षणक्षणनस्रवाः ।
गुदपीडा गतिर्जिह्मा तेषां दोषा यथाक्रमम् ।।१२।।

१. ह्रस्व	– अप्राप्त्य	५. जीर्ण	– क्षणन
२. लम्बा	– अतिप्राप्ति	६. शिथिल बंधन	– स्रव (द्रव गिरना)
३. तनु	– गति → क्षोभ	७. पार्श्व में छिद्र	– गुद पीड़ा।
४. स्थूल	– कर्षण/रगड़	८. वक्र (अनृजु)	– गतिर्जिह्मा;
			– अस्पष्ट/कुटिल गति।

वस्ति दोष– ८

मांसळस्निग्ध विषमजालवत्स्थूल वातळाः ।
छिन्नः क्लिन्नश्चतानष्टौ वस्तीन् कर्मसु वर्जयेत् ।।
गतिवैषम्यदौर्गन्ध्यजिह्मत्वस्रुतिदुर्ग्रहाः ।
फेनिलच्युत्य धार्यत्वं वस्तेः स्युर्वस्ति दोषतः ।।१३।।

१. मांसल	– गति वैषम्य	५. स्थूल	– पकड़ने में असुविधा
२. स्निग्ध	– दुर्गंध (औषधि में)	६. वातयुक्त	– सफेन औषधि
३. विषम	– कुटिल गति (असम)	७. छिन्न (फटी)	– च्युत (औ० गिर जाना)।
४. जालवान	– स्रुति (औषधि गिरना)	८. क्लिन्न	– अधार्यत्व (धारण नहीं)

[आचार्य चरक के अनुसार–
मांसल – विस्र (कच्चे मांस) गंधी
विषम – गति वैषम्य
जालिक – निस्रवा: – अधिक स्राव
स्निग्ध – (चिकनी वस्ति) – च्युत – हाथ से गिरने का भय
क्लिन्न – (गीली) – अधार्यत्व – हाथ में ठीक से रूकती नहीं।
शेष वस्ति दोषों का विवरण समान है।]

शय्या दोष (Fault in Position)– ७

उच्चकैरत्यवाक्च्छीर्षं न्युब्जं संकुचितं स्थितम् ।
उत्तानं दक्षिणं पार्श्वं सप्त शय्याः परित्यजेत् ।।१४।।

१. शिरोभाग अति ऊंचा	– मूत्राघात
२. शिरोभाग अति नीचा	– (औषधि) अति संप्राप्ति
३. न्युब्ज (मध्य मुड़ा)	– औषधि नहीं पहुँचती
४. संकुचित	– ठीक से न जाना
५. बैठकर	– शीघ्र गामी
६. उत्तान (Supine)	– वातकोप
७. दक्षिण पार्श्व (दायें करवट)	– पक्वाशय तृप्ति (पूर्णता/गौरव) ।

वस्ति दाता दोष– १०

सवातातिस्रुतोत्क्षिप्ततिर्यगुल्लुप्तकम्पिताः ।
अतिमन्दकबाह्यातिवस्तिदोषा प्रणेतृतः ।।१५।।

१.	सवात	(i) बिना वात निकाले (ii) बाद में बिना कुछ औ० बचाये	वात → प्रविष्ट ↓ शूल, तोद	अभ्यंग, गुद स्वेद, वातहर आहार।

२.	अतिस्रुत	शीघ्र प्रविष्ट/निर्हरण } जंघा, गुद,	} वातघ्न आहार, स्वेद
३.	उत्क्षिप्त	सहसा नेत्र ऊंचा कर देना } उरू, बस्ति स्तब्ध, भेद।	} अभ्यंग, वस्ति।
४.	तिर्यक्-प्रविष्ट	वलि से नेत्र मुख अवरूद्ध- औषधि अंदर नहीं जाती	नेत्र निकालकर, साफ कर, फिर प्रवेश करे।
५.	उल्लुप्त	वस्ति दबाते समय बीच में ही पीड़न मुक्त कर दे → गुद में वात प्रतिहत → उर, शिर रूक्, उरू साद।	बिल्वादि, मदनफल, श्यामादि + मूत्र → वस्ति।
६.	कम्पित	हाथ कम्प → गुदा अभिहत → दाह, शोफ, दवथु (सर्वांगदाह)।	कषाय, मधुर, शीत-परिषेक, वस्ति।
७.	अति-प्रविष्ट	वलि क्षरण (क्षत) → अर्ति, दाह, तोद, गुरू, मल प्रवर्त।	घृत पिचु; क्षीर; पिच्छा वस्ति।
८.	मन्दक	धीरे दबाना- देह भावित नहीं होती।	} पुनः स्नेह वस्ति।
९.	बाह्य	नेत्र अंदर तक प्रविष्ट न होना- शीघ्र वस्ति बाहर आ जाती है।	}
१०.	अति प्रपीडित	बहुत जोर से दबा देना- ऊपर कोष्ठ/कण्ठ तक आ जाना।	वस्ति, विरेचन, कण्ठ-पीडन आदि।

वमन, विरेचन, वस्ति से विशोधित में पश्चात कर्म–

क्षाम देह बल अग्नि हो जाने से तैल पूर्ण पात्र/तरूण अण्डवत रक्षण।

आहार– I. मधुर, हृद्य II. अम्ल, लवण III. मधुर, तिक्त IV. कषाय, कटु।

- **प्रकृतिस्थीकरण–**

अन्योन्यप्रत्यनीकानां रसानां स्निग्ध रूक्षयोः ।
व्यात्यासादुपयोगेन क्रमात्तं प्रकृतिं नयेत् ।।२६।।

विरोधी रसों को एक-एक कर क्रमशः प्रयोग तथा स्निग्ध व रूक्ष का इसी प्रकार प्रयोग कर व्यक्ति को प्रकृतिस्थ करे।

प्रकृतिस्थ लक्षण– सर्वसहः स्थिर बलो विज्ञेयः प्रकृतिं गतः।

परित्याज्य/महादोषकर भाव– ८

उच्चैर्भाष्यं रथक्षोभमति चङ्क्रमणासने ।
अजीर्णाहित भोज्ये च दिवास्वप्नं समैथुनम् ।।

(च०उ० १२/११)

[यह श्लोक अ०सं० में नहीं है परन्तु अष्टत्याज्य का वर्णन है।]

१. उच्च स्वर से बोलना	शिरोरोग, तिमिर, उर, स्वर व्यथा; रक्तनिष्ठीवन, तमक ज्वर।	भोजन के बाद स्नेह पान, मौन।
२. रथ आदि क्षोभ कर सवारी	सन्धि, मूर्धा, त्रिक शूल	वातघ्न स्नेह, स्वेद।
३. अधिक घूमना/चलना	पाद, जंघा, उरू सदन	
४. अधिक बैठना	(मध्य भाग के रोग- चरक)	
५. अजीर्ण में भोजन	आमविष, वमन, ज्वर (सू० ११)	आमहर
६. अहितकर भोजन	(दोषप्रकोप – च०)	
७. दिवाशयन	हलीमक आदि (सू० ९)	कफहर धूम, रूक्ष अन्न, लंघन।
८. मैथुन	वातरोग– गुदा अवलुप्त (कटना) विभ्रम, मेढ्र धूमायन (शोथ), मन अंधेरे में प्रविष्ट	जीवनीय गण सिद्ध क्षीरसर्पि; बृंहण आहार; वस्ति।

[क्षीर सर्पि– दूध से निकला घी।]

सदातुरा में वस्ति प्रयोग–

[स्त्री, राजसेवक, वणिक– अ०सं०सू० २७/३३; श्रोत्रिय, राजसेवक, वेश्या, पण्यजीवी (बनिया)– च०सि० ११]

वेगावरोध → वात ↑ ऊर्ध्व

I. फलवर्ति II. वातहर वस्ति।

• बला, रास्ना, मदनफल, बिल्वमूल, चित्रक, दशमूल, अमलतास फल; जौ, कुलत्थी → क्वाथ + मुस्ता, पाठा, इन्द्रजौ कल्क + तैल, घृत, गुड़, सैंधव से वस्ति। – बल, पुष्टि, वर्ण कर।

बालक में वस्ति–

अनुवासन– जीवनीय गण क्वाथ/रस

निरूह– लवण रहित; शीघ्र बल अंग वर्धन में श्रेष्ठ।

८. भेषज कल्प

प्रशस्त भूमि– जांगल/साधारण देश की, कुश, रोहिष युक्त स्निग्ध कृष्ण सुवर्ण मधुर सुरभि मृतिका।

भूमि का पांच भौतिक परीक्षण–

	भूत गुणाधिक्य	लक्षण
१.	पार्थिव	अश्मवती, स्थिर, गुरू, श्यामा, कृष्णा; स्थूल तृण वृक्ष प्राय।
२.	जलीय	स्निग्ध शीतल, जल निकट (आसन्नोदक); स्निग्ध तृण शस्य; कोमल वृक्ष प्राय: श्वेत।
३.	आग्नेय	नाना वर्ण, लघु अल्प पुष्प वान; विरल पाण्डु वृक्ष, प्ररोह।
४.	अनिल	रूक्ष, वर्ण– गधा/राख; रूक्ष तनु कोटर वृक्ष प्राय, अल्प रस प्ररोह।
५.	आकाशीय	मृदु, सम, गड्ढे, अव्यक्त रस– जल, बड़े पर्वत व वृक्ष; श्यामा।

भू का भूत प्राधान्य	बली द्रव्य
जल, पृथ्वी	विरेचन बृंहण
अग्नि, वायु, आकाश	वमन
५ भौतिक	उभय भागहर
आकाश	शमन

भेषज– स्व कालोत्पन्न; संपूर्ण-प्रमाण, रस, वीर्य, गंध। गाढ़ मूल; उत्तर दिशा।
ग्रहण– पूर्व/उत्तर को मुख कर। भेषजागार द्वार– पूर्व/उत्तर।

शाखा, पत्र	वर्षा, बसन्त
मूल	ग्रीष्म; शिशिर (जब पुराने पत्र गिरकर नये आ गये हों)
छाल, कन्द, क्षीर	शरद
सार (अंत: काष्ठ)	हेमन्त
पुष्प फल	ऋतु अनुसार

अन्य आचार्य–
सौम्य औषधि (मधुर, तिक्त, कषाय) – सौम्य ऋतु (वर्षा, शरद, हेमंत)
आग्नेय औषधि (अम्ल, लवण, कटु) – आग्नेय ऋतु (बसंत, ग्रीष्म, शिशिर)
संग्रह–
I. दूध होने पर (सक्षीरा) अर्थात् रस युक्त। न मिलने पर
II. १ वर्ष के अंदर की।

पुराणानि तु पिप्पली विळङ्गगुड़मधुघृतानि।

१ वर्ष से अधिक पुराण– पिप्पली, विडंग, गुड़, मधु, घृत ले।

जांगम द्रव्य–

दूध – चिरप्रसूता

विण्मूत्र – निरोगी

धातु (रक्त), पिच्छ (मोर पंख), शृंग, खुर आदि (पित्त) – वय बलयुक्त।

भेषज कषाय कल्प– ५

१. निर्यास २. कल्क ३. निर्यूह ४. शीत ५. फाण्ट

←----- बल क्रम -------------

१. निर्यास/स्वरस– तुरन्त उखाड़ी औषधि पानी से धोकर, कूटकर, वस्त्र में रखकर निचोड़े।

२. कल्क– पत्थर/दांत से पीसना

चूर्ण–कल्क भेद– • कल्क वत सम्पूर्ण द्रव्य का ग्रहण।
• पानी के साथ प्रयोग।

शुष्क पिष्ट कर सूक्ष्म तान्तव पट से च्युत करे।

३. निर्यूह– क्वाथ–

- औषधियों के छोटे टुकड़े कर/फाड़कर जल से धो ले। स्वच्छ ताम्र/लोह/मिट्टी पात्र में (पात्र की बाह्य तली में मिट्टी राख का लेप करे) औषधि रख स्वरस आने भर का जल डालकर, मृदु अग्नि पर चढ़ाकर, कड़छी से चलाता रहे। अग्नि पात्र में चारों ओर लगे। पानी में रस आ जाने पर अग्नि से पात्र उतार कर वस्त्र से छान ले। स्पर्श सह होने पर प्रयोग करे।
- साधारण नियम– औषधि– १ पल, जल – १/२ प्रस्थ } १/४ शेष रहने पर उतारे। (औषधि : जल :: १ : ८)
- क्षीरपाक– दूध आदि में द्रव्य का सम्पूर्ण रस नहीं आता, (जल श्रेष्ठ विलायक है)।

  द्रव्य का जल में क्वाथ बनाये। फिर दूध (दधि, मस्तु आदि भी) आदि मिलाकर इस प्रकार मृदु अग्नि पर पकाये कि क्वाथ (की मात्रा) जल जाये; दूध (की मात्रा) सम्पूर्णतः बची रहे।

[द्रव्य (१) + जल (८) $\xrightarrow[\Delta]{}$ १/४ शेष (२.२५) क्वाथ + दूध (२.२५) $\xrightarrow[\Delta]{}$ शेष (२.२५)]

४. शीत– शीतल जल में द्रव्य को घोलकर, रात भर रख दे, प्रातः छान ले।
सा० नियम–औषधि १ पल + जल ६ पल। (≅ 1117.5gm ग्राम से कुछ ज्यादा।)

५. फाण्ट– द्रव्य को कूटकर गरम पानी में कुछ समय भीगने दे, फिर छान ले।
सा० नियम– औषधि १ पल + जल ४ पल। (≅ 745 gm)

पञ्च कल्पों की मात्रा–

१. व्याधि २. कोष्ठ ३. बल ४. वय ५. देश

६. काल का विचार कर मात्रा व योजना निर्धारित करे।

मध्यम मात्रा–

१. स्वरस – ४ पल (१६ तोला) ≅ 745 gm

२. कल्क/चूर्ण– १ कर्ष (१ तोला) ≅ 46.56 gm
पानी में घोलकर – ३ पल। ≅ 558.75 gm

३. [क्वाथ– ४ तोला – श्री यादव जी त्रिक्रमजी आचार्य– द्रव्यगुण वि०]
[आचार्य वाग्भट्ट ने निर्यूह, शीत व फाण्ट के लिये जो सा० नियम बताये हैं, उन्हीं के अनुसार मध्यम मात्रा जाने।

१. स्वरस ≅ 745 gm	३. क्वाथ ≅ 120 gm
२. कल्क/चूर्ण ≅ 46.56 gm	४. शीत ≅ 1117.5 gm
• जल युक्त ≅ 558.75 gm	५. फाण्ट ≅ 745 gm

All doses divided in 24 hrs 6 or 8 hrly]

स्नेह पाक–

स्नेहपाकेत्वनिर्दिष्ट प्रमाणे समुदितस्य द्रवस्य
पादेन स्नेहो योज्यस्तत्पादेन कल्कः ।।१९।।

जहाँ कोई निर्देश न हो वहाँ मिलित द्रव का १/४ स्नेह तथा स्नेह से १/४ कल्क ले। (कल्क : स्नेह :: १ : ४; स्नेह : द्रव :: १ : ४) ।

आचार्य शौनक के अनुसार–

स्नेह पाक में शुद्ध जल	प्रयोग होने	पर स्नेह से		१/४ कल्क
,,	क्वाथ	,,	,,	१/६ कल्क
,,	स्वरस	,,	,,	१/८ कल्क।

→ सभी द्रव्य एक साथ पीसकर क्वाथ पकाये।

- ५ तक द्रव जिस स्नेह पाक में हों वहाँ प्रत्येक द्रव स्नेह के सम मात्रा में ले।
- जिस स्नेह पाक में स्वरस/चूर्ण आदि कल्पनाएं न कही गई हों, उनमें औषधि कल्क प्रयुक्त करे।

स्नेह पक्व लक्षण– (i) शब्द (पानी का) बंद (ii) स्नेह स्वच्छ (कल्क से पृथक्) (iii) पाकी द्रव्यों के स्व गंध, वर्ण, रस स्नेह में आ जाना। (iv) अंगुलियों से मलने पर–

- कल्क अंगुली पर न चिपके;
- अतिमृदु/अतिकठिन न लगे;
- कल्क की वर्ति बनने लगे (पकड़ने योग्य) ।

इस स्थिति में अग्नि से उतार ले।

→ तैल में झाग आने पर; घृत में झाग (फेन) आना बंद होने पर पक्व समझे।

अवलेह पाक लक्षण– लेहस्य तन्तुमत्ताप्सु मज्जनं सरणं न च ॥२३॥

(i) तन्तुमान (तार पड़ना) (ii) पानी में डूब जाना, फैलना नहीं।

स्नेह संग्रह– पक्व स्नेह ठंडा हो जाने पर स्वच्छ सूती वस्त्र से छानकर दृढ़ पात्र में रख, ढक्कन लगाकर, ऊपर से श्वेत वस्त्र से बांध कर सुरक्षित रख ले।

पेषणालोळने वारि स्नेह पाके च निर्द्रवे ।।२७।।

पेषण, आलोडन लिखा होने पर; तथा स्नेह पाक में जहाँ कोई द्रव न लिखा हो, वहाँ जल ले।

→ जहाँ कोई परिमाण न कहा हो वहाँ पर द्रव्यों को सम भाग में ले।

[जहाँ समुदाय का मान लिखा हो; वहाँ पर औषधियों को मिलित रूप में उस मात्रा में ले।]

→ जहाँ ग्राह्य अंग त्वक् आदि अनिर्दिष्ट हों/अप्रसिद्ध में मूल ले।

स्नेह पाक भेद– ३

	पाक भेद	पहचान	उपयोग
१.	मन्द	किट्ट कल्क वत अतिमृदु	नस्य
२.	चिक्कण	मोमवत (वर्ति बनना)	पान, वस्ति
३.	खर चिक्कण	(बिखरा सा, गोली/वर्ति न बने), कृष्ण	अभ्यंग
	• दग्ध		निष्कार्य

• आम ईषत्पाक स्नेह → अग्निसाद।

हिमवद्विन्ध्यशैलाभ्यां प्रायो व्याप्ता वसुन्धरा
सौम्यं पथ्यं च तत्राद्यमाग्नेयं वैन्ध्यमौषधम् ।।३२।।

हिमालय व विन्ध्याचल के मध्य में प्राय: सभी प्रकार की भूमि व्याप्त है। हिमालय की औषधियां सौम्य व पथ्य तथा विन्ध्य की आग्नेय हैं।

परिमाण–

वंशी– (सूर्य किरण के खिड़की प्रवेश में दिखते सूक्ष्म कण; त्रसरेणु, ध्वंशी)

१ मरीचि – ६ वंशी
१ सर्षप – ६ मरीचि
१ तण्डुल – ८ सर्षप
१ धान्यमाष (उड़द) = २ तण्डुल
१ यव – २ धान्यमाष
१ अण्डिका – ४ यव

१ माषा	–	४ अण्डिका
१ शाण	–	४ माषा
१ कर्ष	–	४ शाण
१ पल	–	४ कर्ष
१ कुडव	–	४ पल
१ प्रस्थ	–	४ कुडव
१ आढक	–	४ प्रस्थ
१ द्रोण	–	४ आढक
१ वाह	–	४ द्रोण
१ धरण	–	१/१० पल
१ द्रखुम	–	२ शाण (Gr-Dram)
२ कर्ष	–	शुक्ति, अष्टमिका
२ पल	–	प्रसृत, अष्टमान
२ कुडव	–	मानिका
२ द्रोण	–	शूर्प
तुला	–	१०० पल = २० भर

पर्याय–

माषा – हेम, धानक

कोल – वटक

कर्ष – सुवर्ण, अक्ष, पिचु, विडालपदक, पाणितल, तिन्दुक, कवलग्रह, षोड़शिंका

पल – मुष्टि, प्रकुञ्च, चतुर्थिका, विल्व, आम्र

कुडव – अञ्जलि

आढक – पात्र, कंस

द्रोण – नल्वण, अर्मण, उन्मान, घट, कुम्भ, कलश

शुष्कमेयेष्विदं मानं द्विगुणं तु द्रवार्द्रयोः ।।२६।।

शास्त्रीय योगों में मान शुष्क द्रव्यों का प्रायः लिखा जाता है, द्रव तथा आर्द्र द्रव्यों का दो गुना परिमाण ले।

●

उत्तर स्थान

विवेचन– बालग्रहोर्ध्वांगशल्य दष्ट्रा जरा वृषैः + अल्पकाय।

१. बालोपचरणीय

क्रम–

१. स्वच्छ	१०. रक्षाकर्म	१९. अन्नप्राशन
२. सचेष्ट	११. धात्री चयन	२०. कर्णवेध
३. नाभिछेदन	१२. दुग्धपान	२१. १ वर्ष तक परिचर्या
४. स्नान	१३. षष्ठी	२२. अपस्तन
५. मुख शोधन	१४. प्रसूता स्नान	२३. पालन
६. प्राशन व	१५. नामकरण	२४. क्रीड़ा
७. गर्भोदक वमन	१६. नवजात परिचर्या	२५. अभ्यंग, उद्वर्तन, स्नान
८. जातकर्म	१७. निष्क्रमण	२६. ऋतु प्रभाव बचाव
९. आहार (प्रथम)	१८. उपवेशन	२७. घृत/अवलेह प्रयोग।

१. स्वच्छ– जात होते ही उल्वा से मुक्त कर सैंधव + घी से मार्जन।

२. सचेष्ट– I. अतिप्रबल मोह
II. ज्वर
III. सर्व धातु अस्थिर
IV. योनि पुटों से अवपीड़न

} लीयमान संज्ञा → प्राण प्रत्यानयन–
- बला तैल परिषेक
- कर्णमूले अश्म संघट्टन

चेष्टा न आने पर/होने पर– (१) काली तीलियों के शूर्प से हवा
(२) दायें कान में मंत्र–

अङ्गादङ्गात् संभवसि हृदयादभि जायसे।
आत्मा वै पुत्रनामासि स जीव शरदां शतम् ।।
शतायुः शतवर्षोऽसि दीर्घमायुर वाप्नुहि ।
नक्षत्राणि दिशो रात्रिरहश्च त्वाभिरक्षतु ।।४।।

३. नाभिछेदन–
- प्राण प्रत्यागम (आ जाने) तथा प्रकृतिस्थ हो जाने पर।
- नाभि बंधन से ४ अंगुल ऊपर क्षौमसूत्र से बांधकर काटे।
- कुष्ठ तैल सिञ्चन।

४. **स्नान–** जल– क्षीरीवृक्ष कषाय/सर्वगंधोदक (एलादिगण)/कपित्थ पत्र कषाय, कवोष्ण जल।

[क्षीरीवृक्ष– पीपल, गूलर, पाकड़ (पकरिया), बरगद, पलाश (ढाक ≡ टेसू)]

५. **मुखशोधन–** दायीं तर्जनी अंगुली पर रूई लपेट कर (कार्पास पिचु – उबला) जिह्वा, ओष्ठ, कण्ठ साफ करे।

तालु को उन्नमित (ऊपर उठाकर) शिर पर स्नेह पिचु रखे।

६. **प्राशन–**

- ऐन्द्री, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, वचा कल्क + मधु, घी – हरेणु मात्र (मटर के बराबर) स्वर्ण के चम्मच (आकार– अश्वत्थ पत्र वत) से खिलाये – मेधा, आयु, बल उत्पादक।
- अन्य कल्क– ब्राह्मी/बला/अनन्ता (दूर्वा)/शतावरी।

७. **गर्भोदक वमन–**

- उर, कण्ठ शोधन; लाघव, अभिलाषा (आहार)।
- सैंधव युक्त घी से।

८. **जातकर्म–** प्राजापत्य विधिना।

९. **नवजात आहार–** प्राय: प्रसूता में हृदयस्थ सिराओं के फैलाव से ३रे/४थे दिन स्तन्य आता है।

प्रथम दिन– अनन्ता युक्त मधु, घृत – त्रिकाल।

द्वितीय/तृतीय दिन– लक्ष्मणा सिद्ध सर्पि – त्रिकाल।

[अनन्ता → डल्हण – स्वर्ण; इन्दु– दूर्वा]

- नित्य कानों में तैल में भीगी रूई रखे।
- शिर पूर्व करके क्षौम पर लिटाये।

१०. **रक्षाकर्म–**

- मंत्राभिमंत्रित जल कलश शीर्ष भाग में व द्वार के दोनों ओर रखे।
- बेर, खदिर, नीम से स्पर्श हुई वायु।
- सरसों, अलसी कण (तोड़कर), कणिका (चावल के टुकड़े) अंदर बाहर छिड़क दे।
- बलि– प्रात: सायं।
- धूपन– व्रणोक्त गुग्गुलु आदि।
- १० दिन तक अथर्व वेद विद द्वारा शान्तिकर्म।
- मायूरी, महामायूरी, आर्या, रत्नकेतु, धारिणी का प्रात: सायं वाचन।
- हींग, वचा, शिलाजीत, सरसों की पोटली– दरवाजे पर (ऊपर), माता व कुमार के गले में, शैय्या के सिरहाने बांधे।

- देहली पर तिरछा मूसल रख दे ।
- तिन्दुक लकड़ियां रात-दिन जलाये इसमें सरसों व तण्डुल के कण डालता रहे।
- खुश लोगों से घर भरा रहे।

११. **धात्री–** उचित चूचुक व स्तन्य।

समान वर्णा (ब्राह्मण में ब्राह्मण आदि), मध्यम वया, ब्रह्मचारिणी, जीवित संतान वाली, बहुक्षीरा, वस्त्र व आचार शुक्ल।

अष्टदोष (देह)– (	१. दीर्घ	३. अति कृष्ण	५. अतिलोम	७. अतिस्थूल
	२. ह्रस्व	४. अति श्वेत	६. अलोम	८. अतिकृश)

स्तन दोष– 'अलम्बोर्ध्व चूचुकातिपीनहीन स्तन दोष' मुक्ता।

१. अलम्ब चूचुक	३. अतिपीन स्तन (स्थूल)
२. ऊर्ध्व चूचुक	४. अतिहीन स्तन (कृश) ।

स्तन्य परीक्षा– जल पात्र में दुहने पर तुरन्त मिल जाये।

१२. **स्तन्यपान विधि–** पूर्व मुख कर, प्रथम दक्षिण स्तन, धोकर तथा; थोड़ा दूध दबाकर निकालने के पश्चात (अतिवेग– कास, श्वास, ज्वर, छर्दि) ।

स्तन्य नाश हेतु– रूक्ष आहार, कर्षण, क्रोध, शोक, काम आदि।

स्तन्य जनन– शीधु (सिरका) के अतिरिक्त सभी मद्य, आनूप; द्रव; मधुर, अम्ल, लवण; दुग्धवर्धक द्रव्य; क्षीर पान; श्रम न करना; सौमनस्य।

[द्रव्य– शालि, कुश, कास, साठी, इक्षु आदि (सू० १५/२२)।]

इन अवस्थाओं में स्तन्य न पिलाये – भूख, शोक, थकी, क्रोध, धातु (रस, रक्तादि) दोष, गर्भिणी, विरूद्धाहारोपरांत, औषधि जीर्ण न होने पर।

१३. **षष्ठी–** छठी रात्रि में विशेष रक्षा, बलि करे तथा प्रसन्न बन्धुओं के साथ जागरण करे। (पूजा– काश्यप सं०) ।

१४. **प्रसूता स्नान–** १०वें/१२ दिन शुभ दिन में।

१५. **नामकरण–** १०/१०० दिन/१ संवत्सर पूर्ण होने पर; पिता द्वारा। उस दिन चंदन आदि लगाये।

पुत्र– त्रिपुरूषानूक– ३ पीढ़ियों के नाम के अनुसार

सम (२/४) अक्षर, पूज्य, वृद्धि, नक्षत्र देवतानुसार, विसर्गान्त।

घोष	अन्तस्थ-मंगल	ऊष्म	प्रत्यय-दूषित/तद्धित न हो
(ग, घ; ज, झ,	(र	(श, ष	
ड, ढ; द, ध	ल	स, ह)	
ब, भ।)	व)		

कन्या– विषम अक्षर, स्पष्टार्थ, अक्रूर, मनोरम; सुखोद्य, दीर्घवर्णान्त; आशीर्वादात्मक।

इसके बाद वैद्य प्रकृति भेद अध्यायोक्त लक्षणों से आयु परीक्षा करे (कुमार शिर – पूर्व/उत्तर)।

१६. नवजात परिचर्या–

- निवास/कुमारागार– वास्तु दृष्टि से श्रेष्ठ, हवादार, सीधी हवा न आती हो, प्रकाश युक्त। अंधेरा, चूहा, मच्छर रहित।
- वस्त्र–
  - स्वच्छ, मृदु
  - धूपित– वचा, घी, कुष्ठ, श्रीवेष्टक, सरसों से।
- सहसा न जगाये, ऊपर को न उछाले → उत्रास → वेगरोध।
- मुख की लार कम करने हेतु– आंवला, व्योष (सोंठ, मरिच, पिप्पली), बृहती (बड़ी कटेरी) मूल, सैंधव + मधु– मुख के अन्दर लगाये। इससे आहार रूचि भी होती है।

धारण/बंधन– जीवित गैंडे के सींग का भाग, मणि, एन्द्री।

स्तन दोषजन्य रोग–

अतिपीन	ग्रीवास्तम्भ
ऊर्ध्व	ऊर्ध्वदृष्टि
अतिलंब	श्वास (उच्छवास) रोध
गर्भिणी	पारिगर्भिक

स्तन्याभाग में– बकरी, गाय का दूध (बृहती आदि की मूल से सिद्ध कर)

१७. निष्क्रमण– ४ माह में, सूतिकागार से बाहर निकाले (अलंकृत कर); आगे-२ अग्नि, स्कन्द चलें, देवताओं को प्रणाम करवाये।

१८. उपवेशन– ५वें माह, २ हाथ भूमि लीप कर, पूजा कर सहारा देकर भूमि पर बिठाये, मंत्र पढे, कटि आदि का मर्दन।

१९. अन्नप्राशन– ६ठे माह, क्रमशः आहार देना व स्तन्य घटाना प्रारंभ करे।

२०. कर्ण वेध– ६/७/८ वें माह, शुभ दिन, शीत समय में स्वस्थ बच्चे का–
पुत्र– प्रथम दायां, पुत्री– प्रथम वाम कर्ण

वेधन स्थान–

मध्यतः कर्णपीठस्य किञ्चित् गण्डाशयं प्रति ।
जरायु मात्र प्रच्छन्ने रविरश्म्यवभासिते ।।४५।।

कुमार को धात्री की गोद में बिठाकर बायें हाथ से पालि पकड़ सूर्य की ओर करे। कर्ण पीठ के मध्य में थोड़ा गण्ड की ओर, जहाँ त्वक् जरायुमात्र (पतली) हो, जिसमें

से सूर्य की किरणें दिख रहीं हों वहाँ महावर से निशान बनाकर (दैवकृत छिद्र में) दायें हाथ से सूची से ऋजु, लघु, एक ही बार में वेध करे। ऊपर, नीचे, पार्श्वों को बचाये। इस प्रकार रक्त स्राव, राग आदि नहीं होते।

→ ऊर्ध्व– कालिका; पार्श्व–मर्मरी; अध: – रक्ता सिराएं। **सिराव्यध जन्य रोग–** राग, रूक्, ज्वर, शोफ, दाह, मन्यास्तम्भ, अपतानक, संरम्भ।

पश्चात् कर्म–
- स्नेहासक्त सूत्र निधापन।
- सुखोष्ण तैल सिञ्चन।
- ३रे दिन धागा मोटा करे, इस प्रकार क्रमश: छिद्र बढ़ाये।
- कर्ण का स्वेदन, अभ्यंग (बृंहण स्नेहों से) । – कर्ण पुष्टि, रूक् नहीं होती।
- दृढ हो जाने पर स्वर्ण रत्न पहनाए।

(वेधन पूर्व कान को स्वच्छ व सुई को Sterlize कर ले)

→ अति उष्ण ऋतु/अजीर्ण आदि में व्यध न करे।

स्त्रियों में वेधन– यदि पाली में न हो तो पाली के अंदर के अपांग Tragus में (अन्त:) छेदन करे बाह्य छिद्र न करे। श्लो० ४९

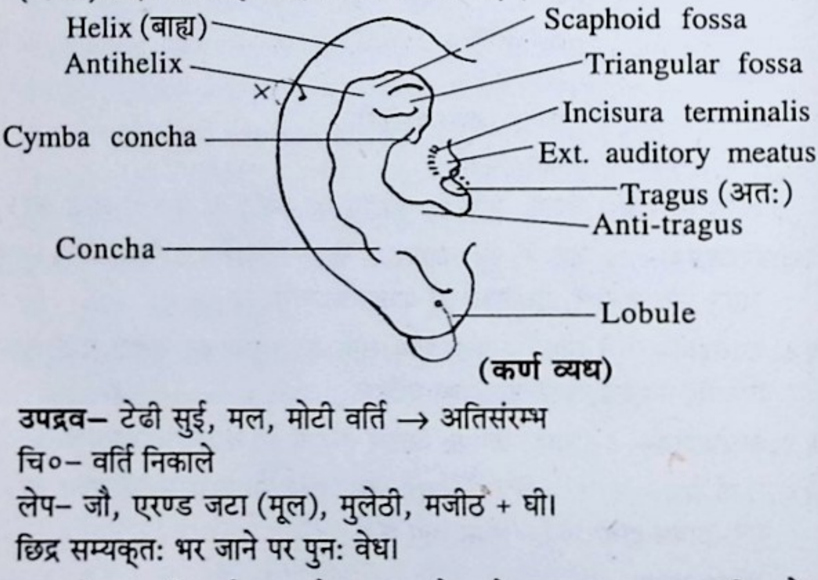

(कर्ण व्यध)

उपद्रव– टेढी सुई, मल, मोटी वर्ति → अतिसंरम्भ

चि०– वर्ति निकाले

लेप– जौ, एरण्ड जटा (मूल), मुलेठी, मजीठ + घी।

छिद्र सम्यक्त: भर जाने पर पुन: वेध।

२१. १ वर्ष तक परिचर्या– घर से बाहर न ले जाये। चमकता प्रकाश न दिखाये।

२२. अपस्तन–

अथैनं जात दशनं क्रमशोऽपनयेत् स्तनात् ।
पूर्वोक्तं योजयेत् क्षीरमन्नं च लघु बृंहणम् ।।५३।।

दांत आ जाने पर धीरे-धीरे दूध (स्तन पान) छुड़ाये तथा लघु, बृंहण, क्षीरयुक्त आहार दे।

विधि– स्नेह कम कर स्तनों पर लेप/कृत्रिम क्षत करे।

प्रीणन मोदक– चिरौंजी, मुलेठी, मधु, लाजा, मिश्री → लड्डू।

अन्य आहार – कच्चा बिल्व, ऐला, शर्करा, लाजा → सत्तू – दीपन।
– धाय पुष्प, शर्करा लाजा → सत्तू – संग्राही

अपस्तन्य में भूख बढ़ जाने पर– अत्यग्नि व पारिगर्भिक चि०।

२३. पालन–

- अभियुक्त (पालक) गुण–

अभियुक्तः सदाचारो नातिस्थूलो न लोलुपः ।
कुमार धारः कर्तव्यस्तत्राद्यो बालचित्तवित् ।।५७।।
अधार्मिकं दुराचारः स्थूलो विकट गामिनम् ।

१. सदाचारी ३. अलोलुप ५. बालचित् विद्
२. चुस्त ४. जिसका प्रथम कार्य कुमार धारण हो। ६. धार्मिक
७. सत्मार्गी।

- औषधि प्रयोग– सौम्य, अतीक्ष्ण। अधिक आवश्यकता न होने पर विरेचन न दे।
- **त्रासयेन्नाविधेयं च त्रस्तं गृह्णन्ति हि ग्रहाः।**
  वस्त्र पातात् परस्पर्शात् पालयेल्लंघनाच्च तम् ।।५९।।

त्रास → ग्रह गृहण; वस्त्र पात, परस्पर्श, कूदना– इनसे बचाये।

२४. क्रीड़ा–

क्रीडाभूमि– सम; पत्थर, धूल आदि रहित।

- निम्बोदक/विडंग + काली मिर्च – पानी में घोलकर छिड़के

खिलौने– लाख, घोषवान, विचित्र, अत्रासकर, रमण, बृहत्, अतीक्ष्णाग्र; गव, अश्व आदि/फल वत।

२५. विद्याग्रहण–
- वर्ण समझने की शक्ति होने पर।
- धर्म व विनय युक्त।

२६. अभ्यंग उद्वर्तन आदि– प्रतिदिन।

- चन्दन, बृहती, कूठ, सैंधव, असगंध, एरण्डमूल, तिल, सरसों, अपामार्ग तण्डुल, कौंच; अजा दुग्ध – सिद्ध तैल– अभ्यंग– पुष्टिकर।
- ,, – + ३ गुना भुने जौ का चूर्ण – उबटन।
- अश्वगंधा चूर्ण से उबटन।

स्नान– सर्वौषधि (एलादिगण) कल्क/जीवनीय गण कल्क मिला जल।

२७. ऋतु प्रभाव से बचाव–

ऋतु	दुष्प्रभाव निवारण
शीत, बसन्त	आरग्वधादि क्वाथ + वत्सकादि कल्क → सिद्ध घृत
ग्रीष्म	प्रातः जीवनीय सिद्ध शीत दुग्ध। सत्तू + सिता + घृत। (सत्तू का मंथ निषिद्ध)। बहुत पानी पीने वाले को घी न चटायें। काकोली, शर्करा, मेदा, वंशलोचन, मुलेठी, जीवक सिद्ध घृत - सात्म्य घृती में।
शरद	मुलेठी, चिरौंजी, कायफल, गुडुची, द्राक्षा, दुग्धिका, अश्वगंधा, काकड़ा श्रृंगी, महुआ पुष्प सिद्ध क्षीर घृत।

२८. घृत/अवलेह प्रयोग–

- ब्राह्मीघृत– (श्लो० ६९) – ब्राह्मी, सरसों, वचा, सारिवा, कूठ सैंधव, पिप्पली सिद्ध घृत।

गुण– वाणी, मेधा, स्मृति वर्धक, भूतोन्माद हर।

- सारस्वत घृत– (श्लो० ७०)
- १ वर्ष तक– वच, अल्प स्वर्ण रज (भस्म) – घृत व मधु के साथ। मेध्य, रक्षोघ्न, अग्निवर्धन।
- हरड़, पिप्पली, कूठ, हल्दी, सारिवा, वच, जटामांसी, कैडर्य (मीठा नीम)– सम + ब्राह्मी चूर्ण (बराबर)/दूर्वा/लक्ष्मणा/तालमखाना/श्वेत सरसों /शतावरी चूर्ण - घी के साथ।

→ मृद्भक्षण से बचाये → पाण्डु, शोफ, श्वास, कास, अतिसार, कृमि, वमन, मूर्च्छा, अग्निसाद, स्तन्यद्वेष, अंगरूक्, भ्रम।

→ मसूढ़े मजबूत न होने तक दातौन न करे → वातकोप → दंतरोग।

२. बालामय प्रतिषेध

बाल– त्रिविध– I. क्षीरप II. क्षीरान्न III. अन्नाद।

रोगोत्पत्ति–

दोष प्रकोपक कारण
धात्री आहार विहार दोष– स्तन्य दोष } दोष प्रकोप → बालरोग

स्तन्य दोष	गुण व स्वरूप	जल द्वारा परीक्षण, रोग
वात	वर्ण– श्याव, अरूण अनुरस– तिक्त कषाय; विशद, रूक्ष, अलक्ष्य गंध (कोई एक जैसी नहीं), फेनिल।	अतृप्ति, आध्मान, मूत्र-मल बिबन्ध, कर्शन। जल में टुकड़े-टुकड़े होकर फैलना व तैरना।
पित्त	कृष्ण नील ताम्रावभास तिक्तावभास (स्वाद तिक्त लगना); अनुरस– तिक्त, अम्ल, कटु; गंध– कुणप, रूधिर; अति उष्ण।	विदाह कर। जल में डालने पर पीली रेखायें।
कफ	अति शुक्ल, मधुर; अनुरस– लवण गंध – घृत तैल वसा मज्जा वत; पिच्छिल, बहल (सांद्र), तन्तुयुक्त, गुरू!	• अतिनिद्रा। • जल में नीचे बैठ जाना।
सन्निपात • गर्भिणी	दोष → क्षीरवहारसायनी → सर्वलिङ्ग	क्षीरालसक पारिगर्भिक

व्याधि निदान–

- बच्चा जिस प्रदेश को बार-बार स्पर्श करे/प्रयास करे; वहाँ रूज समझे।
- नेत्र बंद– शिर दर्द।
- जिह्वा, ओष्ठ काटना; श्वास; मुट्ठी बंद, ऊपर देखना – हृदव्यथा।
- आन्त्र कूजन, स्तन काटना, वेष्टन (ऐंठना), पृष्ठ विनमन (घुटने मोड़कर अंदर को मुड़ना), पेट ऊंचा उठाना – जठर रोग।
- मूत्रसङ्ग, तृट्, मूर्च्छा, उत्रास; खल्ली हस्तपाद स्तम्भ; कुब्ज बनना; केश खींचना– वस्ति व गुह्य वेदना।
- मुख बिगाड़कर अधिक रोना– सर्वत्र वेदना।

चिकित्सा–

- स्तन्य शोधन; धात्री को रोग व दोष अनुसार शमन व शोधन औ० [वमन, विरेचन, वस्ति आदि (तीक्ष्ण)]
- शिशु को आवश्यक होने पर सुकुमार व अल्प काय के अनुसार–
- कनीयसी मात्रा (अल्प) में औषधि दे।
- मृदु वमन– बिना स्नेहन किये (घृत व क्षीर सेवन से बाल सदा स्निग्ध रहते हैं।) ।

- विरेचन साध्य रोग में वस्ति दे। (विरेचन निषेध)
- मर्शनस्य साध्य रोग में प्रतिमर्श दे।

स्तन्य दोष	चिकित्सा
१. वातदुष्ट	(i) स्नेहन– दशमूल क्वाथ ३ दिन पिलाकर फिर वातघ्न द्रव्य सिद्ध घृत दे। (ii) मृदु विरेचन (iii) वस्ति (iv) वातघ्न अभ्यंग, स्वेद, उपदेह, मर्दन। बालक को सरल रास्ना अजमोद देवदारू चूर्ण घी से चटाये।
• तिक्त अनुरस	क्वाथ– मूंग, उड़द, पलाश, काकोली, क्षीर काकोली।
• कषाय ,,	हींग, सैंधव + घी। } से दुग्ध शोधन।
• फेन, विच्छिन्न, प्लवन,	बिल्व, अग्निमंथ सिद्ध दूध व घी। }
२. पित्त	• गुडुची, पटोलपत्र, शारिवा, शतावरी, निम्ब, चन्दन, क्वाथ- धात्री, बालक। • पटोलादि/पद्मकादि/शारिवादि/न्यग्रोधादि – मधु से। – सिद्ध घृत। • पित्तघ्न विरेचन (धात्री), शीत-अभ्यंग, प्रदेह, सेक।
• ताम्रावभास	हृद उद्वेष्टन; – प्रियंगु, मुस्ता, शाबर लोध्र क्वाथ।
• अम्ल अनुरस	अम्ल पित्त; – द्राक्षा, मुलेठी, विदारी, गम्भारी क्वाथ
• कटु अनुरस	वमन, अतिसार, कास, श्वास; – काकोली, विदारी, मधुपर्णी (गुडुची) क्वाथ।
• अति उष्ण	**अनाम**, दाह, ज्वर, विरेचन; – चंदन, कमल, उत्पल (श्वेत कमल) क्वाथ।
३. कफ	शिशु वमनार्थ– • सैंधव, पिप्पली युक्त घी – पिलाये। • सैंधव, मुलेठी, मदनफल पुष्प कल्क-मधु से– ओंठों पर लगाये। धात्री की तीक्ष्ण वमन; संसर्जन; आरग्वधादि क्वाथ/**मुस्तादि** क्वाथ। रूक्ष, उष्ण, नस्य, धूम, गण्डूष, प्रदेह, परिषेक।
• लवण अनुरस	विसर्प, कोठ, कण्डू; – नीम, पटोल, क्षीरीवृक्ष से शोधन।
• तन्तुमान	दौर्बल्य, श्वास, कास; – पिप्पली, सोंठ चूर्ण – मधु व घी से।
• गुरू	शैथिल्य, प्रतिश्याय, सिङ्घाणक (नाक व कण्ठ का मिलित स्वर), **क्षीरालसक**; – पाठा, त्रिकटु चूर्ण/पंचकोल चूर्ण + मधु, घी।

स्तन्य दोष	चिकित्सा
४. सन्निपात	**क्षीरालसक**– • पानी जैसा स्वच्छ + विच्छिन्न आम; दुर्गंध, नाना वर्ण, फेनिल अतिसार। • मूत्र– पीला/श्वेत • विष्टम्भ, तृष्णा, ज्वर, छर्दि, विजृम्भिका (जृंभा), शुष्कोद्गार, अरूचि, भ्रम, अङ्गविक्षेप, कूजन; घ्राण अक्षि मुख पाक; दृष्टि असम्यक्, स्वरसाद आदि। चि०– • धात्री व बालक को शीघ्र वमन। • मुस्ता, पाठा, अतीस, कुष्ठ, कुटकी क्वाथ/वचादि/हरिद्रादि/पाठादि महाकषाय/जामुन, आम, तिन्दुक, कपित्थ पत्र क्वाथ/बिल्व मज्जा कषाय।
सामान्य-श्रेष्ठ स्तन्यदोषहर–	मूर्वा, सोंठ, मरिच, पिप्पली, त्रिफला, बेर, जामुन छाल, देवदारू, सरसों, पाठा चूर्ण मधु से।
• तनु शोधन	इक्षुमूल, कसेरू, मुलेठी क्वाथ
• सांद्रता ,,	मधु, गम्भारी, गुडुची, तण्डुलाम्बु। तुलसी, सरसों, कटेरी, बड़ी कटेरी क्वाथ।
• ग्रथित ,,	पद्मक, उशीर, प्रियंगु, श्वेत चन्दन क्वाथ।

दंतोद्भेद– दन्तोद्भेदश्च सर्वरोगायतनम् ॥१९॥

(१) अस्थि, मज्जा – कालक्रम से पच्यमान → दन्ताशय → उत्सेध (उभार)
↓
अङ्गहर्ष ← दंत मांस (Gum) संघट्टन
↓
दन्तमांस श्लेष्मा (Mucous membrane) कण्डू
↓
चूचुक दंश, बच्चा जो पाता है, वह मुख में रख लेता है।
↳ (Dust → Infection → Disease)

(२) वात → दन्तमूल मूर्छन
↳+K अस्थि, मज्जा में स्थित → सभी ओर विसर्पण (V) ┐ + P
(सर्व) धातु मल दूषण ←┘
↓
विविध उपद्रव विशेषत: – ज्वर, शिर: शूल, तृष्णा, भ्रम, अभिष्यन्द, कुकूणक, पोथकी, वमन, कास, श्वास, अतिसार, विसर्प।

केवल विकृत वात (कफ रहित) $\xrightarrow{P}$ अस्थि मज्जा शोषण → दांत नहीं निकलते (असम्भव)।

२ बार दांत निकलने में हेतु– अस्थि व मज्जा असम्पूर्ण वीर्य होने से इनसे निकले दांत प्रायः उसी वय वर्ष में गिर जाते हैं, जिस माह में वह निकले होते हैं। आपूर्यमाण (परिपक्व होती) धातु से पुनः दन्तोद्भेद होता है।

इसीलिये वृद्धों में दांत गिरकर फिर नहीं निकलते।

दन्तोत्पत्ति हेतु– अस्थि, मज्जा।

(सहायक – वात, कफ)

काल–
- अष्टम मास में प्रारंभ, शुभ, दीर्घायु (सम्यक् धातु बल)।
- चतुर्थ माह– अन्य (हीन/मध्यमायु), असम्यक् धातु बल।
- सदन्त जन्म/ऊपर के पहले निकलें– अशुभ।
  शान्तिहोम, नैगमेष पूजन, प्रायश्चित् – गो वत्स का मुख मधु + लाजा से पूर्ण कर शिशु ३ बार चूमे। बालक को स्नान कराकर ब्राह्मणों को दान कर दे।

अभिघात →
- सहसा बलान्निपतित दंत → अधिष्ठान गत धातु बीज भ्रंश
- सन्तति व्युच्छेद
- शोणित अति प्रवृत्ति
- निःसार

(सन्तति व्युच्छेद, शोणित अति प्रवृत्ति, निःसार) } उस स्थान पर सिराएं दुबारा उत्पन्न नहीं होतीं। } पुनरनुत्पाद (दांत दुबारा नहीं निकलता)

रोग से च्युत दांत में भी प्रायः ऐसा होता है।

दांत निकलने की प्रक्रिया का सुख पूर्वक, द्रुतीकरण–
- दंतपाली (मसूढे) प्रतिसारण– पिप्पली चूर्ण/धातकी पुष्प + आंवला चूर्ण मधु से।
- वच, बृहती द्वय, पाठा, कटुका, अतिविषा, मुस्ता + मधुर गण सिद्ध घृत।

दन्तोद्भेदोत्थ रोग चि० – अधिक औषधि न दे, स्वतः उपशमन हो जाता है।

वृद्धकाश्यपोक्त घृत– मंजीठ, धाय पुष्प, लोध्र, सोनपाठा, बला, अतिबला; शाल, माष, मुद्गपर्णी; कच्चा बिल्व, कपास फल – क्वाथ + क्षीर मस्तु सिद्ध घृत → सिद्ध करे। विविध रोगहर।

रोगानुसार चिकित्सा–

१. **वातज्वर–**
- देवदारू, मुस्ता, मुलेठी, मजीठ, मिश्री क्वाथ
- मुलेठी,सोंठ,मरिच,भार्गी,बिच्छूबूटी,शतावरी क्वाथ, क्षीर सिद्ध घृत।

२. **पित्त ज्वर–**
- + अतिसार, वमन – लाजा, पिप्पली, गजपिप्पली क्वाथ + शर्करा, मधु।
- आम/रक्तातिसार – गजपिप्पली/देवदारू चूर्ण शर्करा से।
- शिरोभिताप – कैथ, चांगेरी, बेर, मकोय पत्र का माथे पर लेप।
- तृट – दाडिम चूर्ण उष्ण जल से।
- ज्वर, अतिसार, कास, पाण्डु, वमन, मातृका (स्तन्य) दोषादि – पटोल, नीम, कुटज, सप्तपर्ण, अजवायन, देवदारू, विडंग, सरल, + मधु, घृत।

३. **कफ ज्वर–** मुलेठी, त्रिकटु, वच, पिप्पलीमूल लाजवन्ती, क्षीरी वृक्ष पत्र, पाठा पक्व घृत – मधु से।
- मण्डल– गजमूत्र + घृत → लेप।

४. **शूल, आनाह, गुदभ्रंश, श्वास, कास, बिलम्बिका–** हरड़, सौवर्चल, यवक्षार, विडंग, त्रिकटु, चित्रक, हींग, तिक्ता (कटुकी) से (सम भाग क्षीर) घृत सिद्ध करे।

५. **शोष–**

दिन में अति सोना, शीताम्बु, श्लैष्मिक स्तन्य सेवन → रसवाही स्रोत कफ से अवरूद्ध → अरोचक, प्रतिश्याय, ज्वर, कास → सूखना, नेत्र व मुख स्निग्ध शुक्ल।

चि०– १. स्रोत शोधन २. अरोचक चि० ३. बृंहण चि०।

(१) स्रोत शोधन– सिंही (कटेरी → लघु – इन्दु; बृहती – प्रियव्रत शर्मा), अश्वगंधा, तुलसी, पिप्पली कल्क सिद्ध घृत।

(२) अरोचक चि०–
- कुटकी, पंचकोल चूर्ण/
- बेर, धातकी पुष्प, आंवला चूर्ण

} घी से पतला कर।

(३) बृंहण चि०–
- मुलेठी, पिप्पली, लोध्र, पद्मक, उत्पल, चंदन, तालीस सारिवा सिद्ध घृत।
- अशोक, रोहिणी, पिप्पली – मधु, घृत से चाटकर मिश्री मिला अजा दुग्ध पिये।

स्नान– गोक्षुर, करमर्द पत्र क्वाथ से।

लेप– बला, अतिबला, तुम्बरू, शल्ली, वच– सुरा से पीसकर।

६. **शुष्क कास–**

धात्री दुग्ध शोधन– घृत भृष्ट पिप्पली + उड़द यूष।
- कास, ज्वर, वमन– अतीस, कर्कटश्रृंगी, पिप्पली – मधु से।
- कास, तृट, अतिसार, वमन– लाजा, धनिया चूर्ण – शर्करा व मधु से।
- वमन, मूर्च्छा, ज्वर, श्वास, कास, अतिसार, पीनस– बृहती फल, मूल, त्वक्; पिप्पली, पिप्पलीमूल, वंशलोचन क्वाथ– मधु से।
- श्वास, कास, पीनस – पंचकोल, छोटी, बड़ी कटेरी मूल, भार्गी, वंशलोचन चूर्ण – मधु व घी से।

७. **दूध पीते ही वमन–**
- कटेरी व बड़ी कटेरी फल रस + पंचकोल – मधु व घृत से।
- पिप्पली + पञ्चलवण– मधु व घृत से।

८. **कृमि–** त्रिकटु/नीम– मधु व घी से।

९. • **महापद्म–** शिर व वस्ति पर पद्म (लाल) वर्ण का त्रिदोषज विसर्प
• शाखा → हृद प्रदेश;/हृद प्रदेश → गुद
} असाध्य विसर्प (प्राणान्त)

१०. **परिभव/पारिगर्भिक–**

गर्भ/अन्य (Hormonal) हेतु → स्तन्य दुष्टि → परिभव।

लक्षण– कोष्ठ वृद्धि; कासाग्निसादवमथुतन्द्राकार्श्यारूचिभ्रमै: ।

चि०– अग्निदीपन।

- पिप्पली, पिप्पलीमूल, कटुका, देवदारू, सर्जिक्षार, यवक्षार, विड, बिल्व मज्जा, चित्रक, अजवायन कल्क से दधि, (कांजी, सुरामण्ड) के साथ घृत पाक।
- दूध पीते ही वात युक्त अतिसार– उपरोक्त चि०।
- बहुत ज्यादा भूख लगना– अत्यग्नि चि०, स्निग्ध आहार।
  - विदारी, जौ गेहूँ, पिप्पली चूर्ण + घृत – मधु, शर्करा युक्त उष्ण दूध से।
  - तालमखाना को छाग दुग्ध में पकाकर दे।
  - तालमखाना को छाग दुग्ध में पकाकर दे।
  - क्षीरी वृक्ष मूल में अलंकार युक्त स्नान।

  गोमूत्र गन्धी– गाय शकृत रस से स्नान।

११. **पर्वानुप्लव–**

शिरं पृष्ठं ततो मुष्कौ ततः पादौ च यो रूजेत् ।
हस्ताभ्यामुत्थितो वायुः सपर्वानुप्लवः स्मृतः ।।७२।।

वात दोनों हाथों से प्रारंभ होकर क्रमश: शिर, पृष्ठ, मुष्क (अण्डकोश), तथा पैरों में जाकर रूजा उत्पन्न करे।

चि०– वात व्याधि चि०

अभ्यंगार्थ तैल– हल्दी, वच, आक, असगंध, त्रिकटु, कायफल, कटेरी (२), आंवला, हींग, रोहिष $\xrightarrow{\text{अजा मूत्र, सुरा}}$ सिद्ध तैल।

१२. **तालुकण्टक–** तालु मांस में कफ प्रकोप से।

→ तालु व मूर्ध्नि निम्न।

लक्षण– स्तन द्वेष, कृच्छपान; द्रव मल, तृट् ; कण्ठ व नेत्र रूज, ग्रीवा को कठिनता से धारण करना (रोकना), वमन।

चिकित्सा– (I) तालु उत्क्षिप्त (ऊँचा उठाये) ।
(II) तालु पर लेप– यवक्षार + मधु।

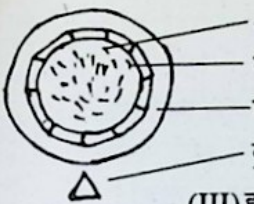

आर्द्रक, हल्दी, कुष्ठ कल्क
वट पत्र आवरण
गोबर (गाय) का लेप
कुकूल स्वेद (कोयला की अग्नि) से पाक

} रस– • तालुलेप
• नेत्रो में डाले।

(III) हरीतकी, वचा, कुष्ठ कल्क + मधु – दूध (स्तन्य) से पिलाये।

१३. मस्तुलुङ्गक्षय → वातकोप → ताल्वस्थि नमन

ल०– तृट, दैन्य।

चि०– मधुर गण सिद्ध घृत, पान, अभ्यंग।

हिम (ठंडा) जल छिड़के → उद्वेग → ताल्वस्थि ऊर्ध्व।

१४. **मातृका/(पूतना)/पृष्ठारू/गुदकुट्ट/अनाम–** मल उपलेप (लगा रहना)/स्वेद → गुदा में रक्त कफज ताम्र वर्ण व्रण, कण्डू।

चि०–
- पित्त व्रण हर चि०।
- धात्री पय शोधन– पित्तकफघ्न औषधि।
- श्वेत चन्दन शीतल जल से दुग्ध पान के बीच-२ में दे।
- लेप– श्वेत चन्दन + मधु, रसौत।
- परिषेक– त्रिफला, बेर, प्लक्ष त्वक् क्वाथ।
- जलोका से रक्तस्राव– लालिमा, कण्डू अधिक होने पर।

अनाम, स्थौल्य, पित्त रक्त, कण्डू, गलगण्ड, कण्ठ रोग, अति उन्नत उदर में स्तन पान अन्तर (बीच-२) में रसौत (या दारू हल्दी क्वाथ) दे।

विविध–

- शिशु सूतिकागार में स्तन न पकड़े– हरड़, आंवला, मैनफल चूर्ण + घृत, मधु – जिह्वा पर मले।
- गर्भ नाल में ५वें दिन भी अलग न होने पर– प्रदीप्त अंगार रज (भस्म) ठंडी होने पर छिड़क दे।
- नाल गिरने पर उन्नत नाभि– छाग शकृत भस्म छिड़के।
- नाल गिरने पर व्रण– असगंध, मुलेठी सूक्ष्म चूर्ण + घी – लेप।
- नाभि पाक– मुलेठी, लोध, हल्दी, काली निशोथ– चूर्ण → अवचूर्णन।
कल्कसिद्ध तैल → परिषेक।

तुण्डि– वायु से फूली पीड़ायुक्त नाभि।

चि०– वातहर स्नेह, स्वेद, उपनाह।

विनाम, विजृंभिका– असम्यक् नाभि छेदनजन्य।

चि०– वात पित्तहर, अन्तः व बाह्यकर्म।

उल्वक/सहज/अम्बुपूर्ण–

हेतु– गर्भोदक वमन न होना।

सम्प्राप्ति → गर्भोदक + कण्ठस्थ कफ → हृदयस्थ रस दूषित → स्रोतोरोध।

लक्षण– मुष्टिबद्ध (मुट्ठीबंद), मोह, हृद्रोग, आक्षेपक, श्वास, कास, छर्दि, ज्वर।

चि०– • स्रोत शोधन– प्रातः छाग मूत्र स्तन पानान्तर में, नित्य।
- स्नान, अभ्यंग निषेध।
- खरगोश के सिर का योग (श्लो० ९३)।

परिदग्ध त्वक् (जल जाना)– दूर्वा, तिल, कमल, शमी पत्र, शिरीष त्वक्, अनंत मूल, मुलेठी, खस का लेप।

पाण्डु– • मूर्वा, आंवला, हल्दी चूर्ण + मधु – गोमूत्र से।
- त्रिफला, भृंगराज सिद्ध घृत।

मृद्भक्षणजन्य रोग– पाठा, विडंग, हल्दी, दारूहल्दी, मुस्ता, भार्गी, पुनर्नवा, बिल्व, त्रिकटु, बिच्छू बूटी पक्व घृत।

→ व्याधि की भेषज का लेप स्तनों पर कुछ समय के लिये कर दे, फिर धोकर पान कराये।

→ ग्रहज रोग– दैवयुक्तिव्यपाश्रय चि०।

३. बालग्रह विज्ञानीय

ग्रह– १२ – कुमार (स्कन्द) की रक्षा हेतु शूलपाणि द्वारा निर्मित।

मनुष्यविग्रह– ५ – स्कन्द, विशाखा (स्कन्दापस्मार), मेषास्य, श्व, पितृ।

स्त्री विग्रह– ७ – शकुनि, पूतना, शीत पूतना, अदृष्टि पूतना, मुख मण्डितिका, रेवती, शुष्करेवती।

आवेश योग्य– निवृत्ताचार, भिन्नपात्र भोजी, दूसरे के वस्त्र आदि उपयोग।

पूर्वरूप– सतत रोदन, ज्वर।

सा० लक्षण– उत्रास, भ्रूक्षेप, दीनता, फेनस्राव, ऊर्ध्व दृष्टि, रात्रि में जागना, रोना, स्तन्य द्वेष, स्वर वैकृत, खरोंचना।

विशेष लक्षण–

	ग्रह	लक्षण	
		गंध	
१.	स्कन्द-प्रधान	वसा, रक्त	एक आंख से स्राव, शिरोविक्षेप मुहुः, एक पक्ष हत, स्वेद, नतकन्धरः, टेढा मुख, लार, ऊर्ध्व दृष्टि, मुट्ठी बंद, मलबद्ध; एक आंख, गण्ड, भ्रू चलित। वैकल्य/मृत्यु ध्रुव।

	ग्रह	लक्षण	
		गंध	
२.	विशाखा/ स्कन्दापस्मार	पूय, रक्त	बार-बार संज्ञानाश, केश खींचना, नतकंधर (ग्रीवा झुकना); हाथ, पैर भ्रू चलाना, फेन, ऊर्ध्व दृष्टि। ज्वर, रात्रि जागरण।
३.	मेष/नैगमेष (अजानन)	बस्ताभ (बकरा)	आध्मान, हस्त पाद स्पन्दन, फेन, वमन, अतिसार, ज्वर, एक नेत्र पर शोफ
४.	श्वग्रह	विट्	बहिरायाम, कुत्ते जैसा चिल्लाना
५.	पितृ ग्रह	शव	रोमहर्ष, बार-बार डरना, ज्वर, कास, अतिसार, वमन, अंग आक्षेप।
६.	शकुनि	शकुनि (गीध)	अतिसार, रात में मुख में स्फोट जो दिन में ठीक; गुद पाक।
७.	पूतना	काक	वमन, अतिसार, मूत्रनिग्रह, जागरण
८.	शीत पूतना	वसावत् विस्र	अतिसार, तिर्यक दृष्टि; एक पार्श्व ठंडा दूसरा गरम।
९.	अन्ध पूतना	मत्स्य/ अम्ल	वमन, अतिसार, ज्वर, कास, कण्डू, पोथकी, अक्षि शोथ।
१०.	मुख मण्डितका	गोमूत्र	ज्वर, उदर पर कृष्ण सिरायें।
११.	रेवती	बस्त	श्याव नीलत्व, मुख टेढ़ा, ज्वर, शोष।
१२.	शुष्क रेवती	गृध्र	पुरीषं हरितं द्रवम् । क्रम से सभी अंग क्षीण, • मल-अनेक रंग, उदर में गोल गांठे, जिह्वा मध्य निम्न, तालु-श्याव। • तृष्णा, क्षाम (निरंतर क्षीण) } असाध्य, मृत्यु।

ग्रहावेश में कारण– ३

हिंसा – असाध्य – पूय वमन, सर्वमार्ग रक्त स्राव → मृत्यु।

रति – कष्टसाध्य।
अर्चनाकाङ्क्षा – सुखसाध्य। } सिद्ध मंत्रों से होम, बलि।

४. बालग्रह प्रतिषेध

साफ घर में सरसों तैल दीपक जलाये।

पुराण घृत से बच्चे को अभ्यक्त करे।

स्नान– नीम, अग्निमंथ, जामुन, वरणा, अपामार्ग, नीली कोयल, कैथ, वट, पीपल, पाकड़, गूलर, कदंब, करंज आदि पत्र से उष्ण जल से।

धूम–
- पूती दशाङ्ग (नाटा करञ्ज– पत्र, मूल, त्वक्, सार, पुष्प, फल, शुंग; स्वरस, कांटा, दूध), वच, सरसों, भिलावा, अजवायन, कूठ + घी।
- सरसों, नीमपत्र, कोयलमूल, वच, भूर्जपत्र + घी।

घृत पान– शारिवा, सुरभि, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, वच, कूठ, सरसों, अश्वगंधा, तुलसी कल्क सिद्ध घृत।

अपराजिता विद्या (भूर्जपत्र पर गोरोचन से लिखी) को लक्ष्मणा, सहदेवी आदि के (पत्र में लपेटकर) साथ प्रतिसरा (चरखे का धागा) से उत्तर मुख किये बालक के गले में मंत्र पाठ के साथ बांध दे। (श्लो०८) ।

बलि– भवन की चारों दिशाओं में, तिराहे, चौराहे, वृक्ष आदि में।
- पूड़ी, पुआ, पायस, गुलगुले, कृशरा, मधु, दही, भूतोदन (बिना घी का भात), धूप, गुग्गुलु, सम्भालु पत्र, तुलसी आदि।
- महादेव पूजन, परिग्रह मंत्र (बलि स्वीकृति मंत्र), कुमार स्कंद आज्ञा पाठ, अग्नि पूजन, अग्नि पूजन, अग्निदंड (श्लो०१४) ।

५. स्नपनाध्याय

स्थान– दूर्वा, क्षीरीवृक्ष युक्त भूमि जहाँ नदी का प्रवाह पूर्व या उत्तर को हो।

मण्डल– चौकोर, परिमाण– ४/८/३२ हाथ/नल्व

नल्व– ३ – (i) गोचर्म (ii) चाप (धनुष) (iii) ईषु (बाण)

दिक्	देव नाम	कलश नाम
पूर्व	इन्द्र	विजय
दक्षिण	यम	वैजयन्त
पश्चिम	वरूण	जयन्त
उत्तर	कुबेर	अपराजित

स्नान-जल– पूतीकरञ्ज त्वक् पत्र, क्षीरीवृक्ष, बिल्व, कैथ त्वक्, पत्र, पानी में उबाले। इस जल से रात्रि में मण्डल में बिठाकर स्नान कराये। जल ही इस लोक में परम पवित्र है इस आस्था से।

पूजन– सपरिवार महादेव, विष्णु, पितामह आदि देव।

स्मरण– पुष्कर, नैमिषारण्य, गया, प्रभास आदितीर्थ, कपिल, अश्विनौ, गो, नारद, धन्वन्तरि, अगस्त्य आदि।

६. प्रत्येक ग्रह प्रतिषेध

ग्रह	स्नान, परिषेक	बलि	अन्य
स्कन्द	३ रात्रि गायत्री अभिमंत्रित जल (वातहर वृक्षपत्र कवोष्ण क्वाथ) से चौरास्ते पर स्नान (धात्री व कुमार)।	लाल चावल, लाल वस्त्र, मुर्गा	• रात्रि में होम; • ३ समय मंत्र • सिद्ध जल छिड़के। • रास्ना/देवदारू कल्क सक्षीर सिद्ध घी पान।
विशाखा	दूर्वा, बिल्व, शिरीष, मुस्ता, सुरसादि गण क्वाथ से स्नान। (चौराहा)	दधि आदि	क्षीरिवृक्ष कषाय + जीवनीय कल्क– सक्षीर सिद्ध घृत।
नैगमेष	अग्निमंथ, वरूण, नल, रोहिष, पूति करंज, नीम क्वाथ से स्नान (नदी किनारे)।	फल, ओदन, दधि, गुड़ की राजमार्ग, क्षीरी वृक्ष में।	गुग्गुलु, असगंध सरसों, खस, वच, कूठ, सौंफ पक्व तैल – अभ्यंग।
श्वग्रह	बिल्व, एरण्ड, करंज पत्र क्वाथ से परिषेक।	घी, दधि, तिल-कल्क से चौराहे पर।	आंवला, शतावरी, एरण्ड, त्रिकटु सिद्ध घृत।
पितृग्रह	बिल्व, कैथ, करंज, अग्निमंथ, तुलसी पाटला, वरणा, नीम, हरसिंगार, मातुलुङ्ग पत्र क्वाथ से रात्रि में।	गुड़, पूए, तिल पिष्ट; बैल प्रतिमा (स्वर्ण की आंखे) क्षीरीवृक्ष मूल में।	• वच धूम। • गुग्गुलु, कूठ, दूर्वा जटामांसी वच सिद्ध तैल– नस्य।
शकुनि	घर के बगीचे में क्षीरी वृक्ष क्वाथ से। गुद व्रण– शुक्ति, शंख, शम्बूक, भस्म; मंजीठ, हरड़; मुलेठी सिद्ध तैल। मुखस्फोट– अर्जुन फल, लोध, मुलेठी, गूलर, वच चूर्ण + मधु।	तिल पिष्टी से पक्षी बनाकर करञ्ज के नीचे	वचादि/सिद्धार्थकादि धूम। गाय/कौवा की पूंछ के बाल से धूम।

ग्रह	स्नान, परिषेक	बलि	अन्य
पूतना	कैथ, शिरीष, वट, बिल्व, एरण्ड, बकुल, बांस आदि पत्र क्वाथ + एलादि गण युक्त जल। शून्य गृह में।	माला, ओदन, कृशरा, पिष्टतिल की कूड़े के ढेर पर या शून्यगृह में।	काकोल्यादि गण सिद्ध घृत पान।
शीत-पूतना	वरण, कैथ, तुलसी, बिल्व आदि पत्र क्वाथ।	मूंग, चावल जलाशय तीर।	निम्ब पत्र धूम।
अंध-पूतना	वरूण, आक, नीम, गेरू, शतावरी आदि के क्वाथ से। घर में।	मांस, रक्त चौराहे पर	एलादि गण का शिर व मुख पर लेप। जीर्ण भिक्षुसंघाटी धूप
मुख-मण्डि-तिका	बिल्व, एरण्ड, अग्निमंथ पत्र आदि क्वाथ से स्नान- गोमध्ये। • मूर्वा, त्रिकटु, रास्ना, मुस्ता, हल्दु अश्वगंधा चूर्ण + देवदारू भस्म– • मधु व घृत से सेवन • धूपन, लेप, अभ्यंग (तैल), नस्य, परिषेक।	गंध, धूप, माला, पारद, मन:शिला से बनी, गाय के बाड़े में।	लघु पंचमूल, मधुर वर्ग सिद्ध घृत+मधु। • मूर्वादिपक्व घी/ दूध (अजा) • धात्री कफघ्न द्रव्य स्तनों पर लगाये व पिये। अशोक रोहिणी चूर्ण + मधु घी।
रेवती	असगंध, विदारी, अजश्रृंगी, सारिवा, श्वेत व लाल पुनर्नवा, माषपर्णी, मुद्गपर्णी सिद्ध जल से नदी संगम, या क्षीरी वृक्षों के पास।	श्वेत माला, लाजा, ओदन, खीर, गोतीर्थ में।	एलादि, कुलत्थी, माष चूर्ण से लेप। • कूठ, राल सिद्ध तैल अभ्यंग। • अर्जुन, जीवनीय आदि कल्कसिद्ध घृत।
शुष्क रेवती	शुष्क वृक्ष में स्नान।	कुल्माष+शुष्क मांस, + मद्य– शुष्क वृक्ष में।	धूपन निषेध। वच, अश्वगंधा, हींग, लाज सरसों– उद्वर्तन। स्कंदवत चि०।

७. भूत विज्ञानीय

लक्षयेत् ज्ञानविज्ञान वाक् चेष्टा बल पौरूषम् ।
पुरूषेऽपौरूषं यत्र तत्र भूतग्रहं वदेत् ।।३३।।

पुरुष में जहाँ अमानुषीय ज्ञान, विज्ञान, वाणी, चेष्टा, बल और पौरूष लक्षित हों वहाँ भूतग्रह जाने।

- भूत– अनन्त
- भूत अधिपति– १८
- अनुप्रवेश हेतु– प्रज्ञापराध सद्यः/पूर्वकृत। → मलिनता। व्रणी।

क्रम	अधिपति	अनुप्रवेशनीय	तिथियां (प्रायः)	लक्षण
१.	देव	तप, स्वाध्यायी	शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा १३,१४, पूर्णमासी।	ईश्वर– सांड़वत स्वर; इन्द्र– मेघवत स्वर; कुबेर– वाणी से धन देना; वरूण– तिनके आदि से मारना।
२.	असुर	क्रोधी, अभिमानी	कृष्ण– १२,१३; सन्ध्या।	स्वयं को रूद्र, इन्द्र कहने वाला, दांत व नखों से दूसरे पर चोट करना।
३.	गंधर्व (हसन आदि)	परस्त्रिगामी, संगीत प्रेमी	४, ८, १२, १४	प्रसन्न, शुभगंध, नाचना, गाना, मुखवाद्य (सीटी बजाना) आदि।
४.	नाग (उरग)	धनी, ब्राह्मण	पंचमी, संध्या मध्याह्न।	धूप से डर, ओंठों को जीभ से चाटना, जलप्रिय।
५.	यक्ष (मणिवर, विकट आदि)	अति व्याकरण शील, हास्य प्रिय	शुक्ल– ७, ११	नेत्र-लाल, गति- सगर्व मत्त, स्त्रीकामी, कुछ ढूंढता(शस्त्र) सा; एकान्त प्रेमी।
६.	ब्रह्मराक्षस (यक्षसेन आदि)	वेदज्ञ, मंदिर/ जलाशय क्रीड़ा प्रिय।	शुक्ल ५, ८ पूर्णमासी; संध्या	हास, नृत्य, चिल्लाना, दौड़ना, लकड़ी, से प्रहार; भो (रे) कहकर बुलाना पानी मांगना।

क्रम	अधिपति	अनुप्रवेशनीय	तिथियां (प्रायः)	लक्षण
७.	राक्षस (व पिशाच आदि)	हीनसत्व, चोर, लालची, झूठा। मद्यपी	२, ३, ८ कृष्ण ९, १२; रात्रि।	अन्नद्वेषी, रात्रिभ्रमण, क्रोध, आघात; **विशाखा**– भूमि ताड़न, रूदन; **संगम**– बार-बार हाथ, पैर, मुख, धोना; **विद्युन्मालि**– जल वृष्टि जानकर वाहन हटाता है; **विरूपाक्ष**– मांस की इच्छा।
८.	प्रेत (पिशाच)		–do–	तिनके तोड़ना, डरा, अन्न-द्वेषी।
९.	पिशाच	परोपतापी	१४	दौड़ना, स्त्री, शून्य घर, सामने से चोट करना, डराने पर घबरा जाना। स्मृति नष्ट, सम्बद्ध व असम्बद्ध बातें। नग्न, मलिन, सड़कों से फटे पुराने वस्त्र, तृण आदि बीनना, लालची, बहुत खाने वाला। **कश्मल**–सदैव भयभीत; **कुश**– शरीर कंपाकर, दौड़कर दूसरों को डराता है। **जिस्तेजा**– मल-मूत्र शरीर पर लगाना; स्त्रियों को रोकना।
१०.	कूष्माण्ड			काला, शोथयुक्त लटकते वृषण, बिलम्बित गति।
११.	कार्खोंद			तिनके, चिथड़े पहने, नंगा ही श्मशान आदि में दौड़ना।

क्रम	अधिपति	अनुप्रवेशनीय	तिथियां (प्रायः)	लक्षण
१२.	मौकिरण			आंखे लाल व डरी, अन्न व जल मांगना।
१३.	बेताल			सत्यवादी, वेपन, अति-निद्रालु।
१४.	पितर	मातृपितृ सिद्ध सेवक	दशमी, अमावस्या	चल नेत्र पक्ष्म; दृष्टि– अ-प्रसन्न, शंकित; दायें कंधे पर वस्त्र; अरूचि; तिल गुड़ में रूचि।
१५.	गुरु	– do –	६, ९	इन्हीं जैसा आचरण।
१६.	वृद्ध	,,	,,	
१७.	सिद्ध	,,	,,	
१८.	ऋषि	धर्म, शास्त्र, वेदज्ञ	,,	

• कश्मल, कुश, जिस्तेजा, प्रेत, कूष्माण्ड, कार्खोद, मौकिरण, बेताल ये पिशाच वर्ग के हैं।

असाध्य– दीर्घकालिक, नग्न, शिर के बाल ऊर्ध्व।

८. भूत प्रतिषेध

अहिंसक भूत की जप, होम, बलि, व्रत से चि०।

हींग, व्योष (त्रिकटु), लहसुन, अर्कमूल, जटामांसी, दूर्वा भूतकेशी, वचा, तिल, सेहुण्ड, आंवला, काकड़ाशृंगी, ब्राह्मी, सरसों, अजवायन आदि–

- सिद्ध पुराण घृत – पान;
- सिद्ध नया तैल – नस्य, अभ्यंग;
- चूर्ण – धूपन;
- कल्क – लेप;
- क्वाथ – स्नान।

गुण– सर्वभूत, उन्माद, अपस्मार हर।

आसुर ग्रह– सिद्धार्थक घृत (श्लो०८) – कृत्या, विष, उन्माद, अपस्मार हर। भूतराव घृत, महाभूतराव घृत। बलि– वस्त्र, दूध, गुड़, मद्य, मधु, घी,जौ आदि।

देवग्रह– मृदु उपचार।

बलि– मंदिर में; शुचि, शुक्ल, माला, गंध, दूध + चावल, दधि, श्वेत छत्र आदि।

घृत– हींग, सरसों, वच, व्योष – प्रत्येक १/२ पल
गोमूत्र – ४ प्रस्थ
घृत– १ प्रस्थ
} सिद्ध करे।

उपयोग– पान, नस्य, अभ्यंग।

ब्रह्म राक्षस–

बलि– सिद्ध जौ – १ आढक (२५६ तोला); पूर्व, चौराहा, गहनवन में।
१ घड़ा पानी; तिल कल्क, छत्र, वस्त्र, लेपन (चंदन)।

घृत– खैर क्वाथ – २० पल;
त्रिकटु, त्रिफला, हींग, वच, सरसों, नीम पत्र, लहसुन – १/२-१/२ पल
घी – ७ कुडव;
गो मूत्र – २१ कुडव; से घृत सिद्ध करे।

उपयोग– पान, नस्य, अभ्यंग।

जप पूजा– १२ भुजा वाले, नाथ, आर्या, अवलोकितेश्वर का ध्यान, जप।

- मायूरी, महामायूरी विद्या श्रवण।
- भूतेश (महादेव जी) का पूजन तथा इनके प्रमथ आदि गणों हेतु मंत्र जप।

९. उन्माद प्रतिषेध

उन्माद भेद– ६ – वात पित्त कफ सन्निपाताधिविषनिमित्ताः।

१. वात २. पित्त ३. कफ ४. सन्निपातज
५. अधि [अन्तः आवेग (मानस) यथा– धन स्त्री आदि नाश] ६. विषजन्य।

निरूक्ति– उन्मार्गगैः शरीरमानसैर्दोषैर्मनसो मदः ।।२।।

उन्मार्गी शारीरिक व मानसिक दोषों से मन में मद होने से उन्माद कहा जाता है।

हेतु व सम्प्राप्ति–

- अहित आहार विहार
- देव द्विज गुरु उल्लंघन
- राग द्वेष → व्याधि →
- विष, उपविष, गर उपयोग

} • हीन सत्त्व में → मति (बुद्धि) चलित
मन उपहत
• प्रकुपित दोष उदीर्ण → हृदय उपसरण →
मनोवह स्रोत आवृत
↓
उन्माद

पूर्वरूप– शिर शून्यता, निःश्वासाधिक्य, अरूचि, ज्वर, चित्त अनमना, कोठ, अर्दिताकृति।

स्वप्न– तेल पेरने जैसे चक्र (कोल्हू) पर चढ़ना, वात कुण्डलिका (बबंडर = चक्रवात) में मंथन, गंदे पानी में डूबना आदि।

सामान्य लक्षण–

सामान्यलिङ्गं मनोबुद्धिस्मृत्यादिसंप्रमोषः ।।६।।

- मन, बुद्धि, स्मृति आदि का नाश। → हत सारथि रथ वत भ्रमण; सुख दुःख आचार धर्म अधर्म प्रलुप्त।

विशिष्ट लक्षण–

१. वातज– अस्थान मुस्कराना, हंसना, गाना, रोना आदि, भ्रमण, अन्न जीर्ण होने पर रोग बढ़ना। नेत्रों में लाली।

२. पित्तज– क्रोध, नग्न, शीतेच्छा, शस्त्र आदि लेकर दौड़ना, आंखों में ताम्र हरित हारिद्रत्व।

३. कफज– अल्प वाक चेष्टा आहार; लाला, सिङ्घाणक स्राव; शौचद्वेषी, स्त्रीप्रियत्व, मुख पर शोथ; आंखों में सफेदी। भोजन करने पर रात्रि में रोग वृद्धि।

४. सन्निपातज– परिवर्जनीय।

५. मानसिक– मुहुर्मुहुः हाहाकार, अकस्मात रोना, शोक, रात्रि जागरण, नष्ट हुई को बार-बार स्मरण।

६. विषज–

विषेण श्यावववदनो नष्टच्छायोऽबलेन्द्रियः ।
वेगान्तरेऽपि सम्भ्रान्तो रक्ताक्षस्तं विवर्जयेत् ।।१३।।

मुख में श्यावता, छाया नष्ट, इन्द्रिय बलहीन।

वेगान्तर (दो वेगों के मध्य का काल/वेग समाप्त होने पर) में भी विभ्रम व नेत्रों में लाली होने पर अचिकित्स्य है।

चिकित्सा–

(अ) संशोधन → मार्ग अनावृत → मनः प्रसाद।

वातज– स्नेह पान, मृदु शोधन

कफज, पित्तज } वमन, विरेचन, स्नेहन, स्वेदन, वस्ति, शिरोविरेक। – सिराव्यध।

- स्नेहनार्थ– V– शैरीष तैल, P– महाकल्याण घृत, K– पंचगव्य घृत।

(ब) शुद्ध शरीर में मन प्रकृतिस्थ करना–

१. हींग, सौवर्चल, व्योष – प्रत्येक २ पल + घी – १ आढक – गो मूत्र के साथ सिद्ध करे।
– उन्माद, अपस्मार, भूत हर।

२. ब्राह्मी घृत – (श्लो० १८), उत्तम मात्रा – ४ पल।
१ पल से प्रारंभ कर १-१ प्रतिदिन बढ़ाते हुये ४ तक पहुँचे। – उन्माद, अपस्मार, स्त्री बन्ध्यत्व हर।

३. कल्याणक धृत – (श्लो०-१९), भूत, उन्माद, अपस्मार, गर, प्रमेह, नपुंसक, अल्परज; पुंसवन; स्मृतिवृद्धि।
४. महाकल्याणक घृत – (श्लो०-२०)
५. महापैशाचिक घृत (श्लो० २१) – उन्माद आदि; बालानां अङ्गवर्धन।
६. लशुनाद्य घृत– गो चर्म का योग।

→ सिद्ध पुराण घृत (केवल) उत्तम मात्रा में पिलाकर घर में बंद कर दे।

→ • नस्य– तीक्ष्ण अवपीडन + सर्षप तैल।
- तीक्ष्ण धूम – वात, कफज, में दुर्गंधित।
- पैत्तिक– शीत, मधुर, लघु आहार।
- शरीर पर सरसों का तैल लगाकर हाथ पैर बांधकर धूप में चित्त लिटा दे।
- प्राणभय दिखाये (बिजली के झटके आदि), देश काल आदि की अपेक्षा से।

→ • काम ⇌ क्रोध; शोक ⇌ हर्ष; भय, ईर्ष्या, लोभ को परस्पर विरोधी भावों से शान्त करे।

→ अधिक लक्षण दिखने पर भूत अनुबन्ध की चि०।

उन्माद मुक्त के लक्षण–

प्रसादश्चेन्द्रियार्थानां बुध्यात्ममनसां तथा ।
धातूनां प्रकृतिस्थत्वं विगतोन्मादलक्षणम् ।।४०।।

इन्द्रियविषयों, बुद्धि, आत्मा व मन की निर्मलता तथा धातुओं का प्रकृतिस्थ होना।

१०. अपस्मार प्रतिषेध

स्मृत्यपायो ह्यपस्मारः .... ।।२।। स्मृति नष्ट (अपा) होना अपस्मार है।

सम्प्राप्ति–

चिन्ता, शोक, भय आदि → चित्त पीड़ित
↓
दोष– चित्त– रज, तम
देह– V, P, K, मल } प्रकोप → सत्व हत
↓
हृद, संज्ञावाही स्रोतों में व्याप्त
↓
धी, सत्व अभिसंप्लव → अपस्मार

सा० लक्षण– तमः प्रवेश, दांत काटना, मुख से फेन, हाथ पैर विक्षेप, असत् देखना, गिरना; अक्षि, भ्रू टेढे। दोष वेग जले जाने पर विबुद्ध, कालान्तर में पुनः वेग (Epileptic Fits) ।

भेद– ४ – V, P, K, S ।

पूर्वरूप– हृत्कम्प, शून्यता, भ्रम, तम दर्शन, ध्यान; भ्रू, अक्षि विकृत, अशब्द का श्रवण, स्वेद, लाला, सिंघाणक (Nasal discharge), अनिद्रा, तृट् ; स्वप्न में गाना व नाचना आदि।

दोषानुसार लक्षण–

१. **वातज**– सक्थि स्फुरण, मुहुर्मुहु: अपस्मरति, विनत अंगुलि (मुड़ी), नेत्र त्वक नख– रूक्ष श्याव अरूण; कृष्ण दर्शन।

२. **पित्तज**– शीघ्र संज्ञा (Short fit duration); फेन, अक्षि आदि पीत। तृट्, दीप्त रूप दर्शन।

३. **कफज**– चिर ग्रहण व बोधन, शुक्ल रूप दर्शन।

४. **सन्निपातज**– सर्वलिङ्ग – वर्जयेत् ।

चिकित्सा–

१. **संशोधन**–

- आवृत धी चित्त हृद् स्रोतों को प्राक् प्रबोधनार्थ तीक्ष्ण कर्म व वचन।
- V, P, K में क्रमशः वस्ति, विरेक्, वमन प्रधान चि० करे।

वमन द्रव्य– मदन, कुटुतुम्बी, इन्द्र वारूणी, अरिष्ट (नीम), कुटज।

विरेचन– गोमूत्र, निशोथ, श्यामा, द्रवन्ती, शिकाकाई, स्नुही।

आस्थापन वस्ति– दशमूल, बला, रास्ना, सरल, देवदारू, जौ, बेर, कुलत्थी, गोमूत्र, यवक्षार, सैंधव + हींग, स्नेह।

नस्य, अभ्यंग, अनुवासन– उपरोक्त वातघ्न द्रव्य सिद्ध सरसों का तेल।

२. **संसर्जन**– पेया आदि। वेग मुक्त से प्रिय बातें करे।

३. **संशमन**–

- गोमय स्वरस, दूध, दधि, मूत्र से घृत पाक (सभी सम मात्रेण) → पंचगव्यघृत
- महापञ्चगव्यघृत – (श्लो० १६) ।
- शैरिष तैल– (श्लो० १७) – उन्माद, अपस्मार, योनि, शुक्र रोग, कार्मण, अभिचार, सर्व विष हर; रसायन।
- ब्राह्मी घृत – (श्लो० १८) – ब्राह्मी स्वरस + वच, कूठ, शंखपुष्पी कल्क सिद्ध पुराण (१० वर्ष) घृत।
- तैल, घी – १-१ प्रस्थ; जीवनीय – १-१ पल, दूध – १ द्रोण → स्नेह पाक।
- काश, विदारी, इक्षु, कुश क्वाथ शृत दूध। वात, पित्तापस्मार।
- मुलेठी कल्क – २ पल + आंवला रस – १ द्रोण से घृत – १ प्रस्थ सिद्ध करे– पित्तापस्मार।

- घी : कूष्माण्ड स्वरस : मुलेठी कल्क : : ४ : ७२ : १ सिद्ध करे।
- तैल + लहसुन/शतावरी + दूध/ब्राह्मी स्वरस/कुष्ठ रस/वचा चूर्ण – मधु से।

प्रधमन– त्रिफला, त्रिकटु, यवक्षार, बिल्व, चिरचिटा, करञ्ज बीज चूर्ण।

अभ्यंग– श्वेत गुञ्जा, नीम, श्योनाक, मीठा सहजन, त्वक क्वाथ + गोमूत्र (सम) → तैल पाक।

नस्य– कपिल गाय पित्त, कुत्ता, शृगाल, विडाल (बिल्ली), सिंह आदि का पित्त।

धूप व अंजन– पुष्य नक्षत्र में लिया कुत्ते का पित्त। कुत्ते के कंधे, पर्शुका आदि से धूम। गीध के मल से धूम।

→ अधिक लक्षण होने पर भूतानुबन्ध की दैवव्यपाश्रय चि- करे।

→ रोगी को अग्नि, जल एवं विषम स्थानों से सदा बचाये।

- कृच्छ साध्यता – शारीर, मानस दोनों दोषों के एक साथ कुपित होकर महामर्म (हृदय) का आश्रय लेने से।

११. वर्त्म रोग विज्ञानीय

वर्त्म रोग– २४ (वाग्भट्ट); [सुश्रुत– २१]।

१. कृच्छोन्मीलन	१३. अंजननामिका
२. निमेष	१४. विसवर्त्म
३. वातहत	१५. उत्क्लिष्ट वर्त्म
४. कुम्भी/का (पिटका)	१६. श्याव वर्त्म
५. पित्तोत्क्लिष्ट	१७. श्लिष्ट वर्त्म
६. पक्ष्मशात/सदन	१८. सिकता वर्त्म
७. पोथकी	१९. कर्दम
८. कफोत्क्लिष्ट	२०. बहल
९. लगण	२१. कुकूणक
१०. उत्संग	२२. पक्ष्मोपरोध
११. उत्क्लिष्ट/रक्तोत्क्लिष्ट	२३. अलजी (बाह्य)
१२. अर्श	२४. अर्बुद

चिकित्सकीय वर्गीकरण–

१. भेषज साध्य– कृच्छोन्मीलन।

२. याप्य– पक्ष्मोपरोध।

३. वर्जनीय– (३) निमेष, वातहत, अर्श।

४. शस्त्रकर्म- शेष-१९ -

- कुट्टन – पक्ष्मसात;
- छेदन – अर्बुद;
- भेदन- (६) कुम्भी, लगण, उत्संग, अञ्जन, विस, अलजी;
- लेखन- (१०) पोथकी, श्याव, श्लिष्ट, सिकता, बहल, कुकूणक, उत्क्लिष्ट–४।

(९→२३) लगण से अलजी तक → कठिन व उन्नत होने पर; व्रीहिवक्त्र से भेदन कर, दबाये, फिर शेष उपचार करे।

	वर्त्म रोग	संप्राप्ति व लक्षण	अन्य विवरण
१.	कृच्छोन्मीलन	वात → वर्त्माश्रयी सिरा सोकर जगे में वर्त्म स्तम्भ, वेदना, खोलने में कष्ट, अश्रु, धूल भरी प्रतीत होना, मर्दन से आराम मिलना।	सुश्रुत अवर्णित Blepharosph-asm/Spastic ectropion
२.	निमेष	वात → वर्त्म जल्दी-२ चलाना (खोलना, बंद करना), दर्द नहीं।	निमिष (सु०)
३.	वातहत	वात → विमुक्त संधि, निश्चेष्ट होकर वर्त्म नीचे गिर जाय। आंखे बंद।	सु० वर्णित (Opthalmop-legia- 7th Cr. N. palsy)
४.	कुम्भी/का	पित्त → अन्तर्वर्त्म (Inner Surface of lid) में जलकुम्भी बीज वत काली बहुत पिडकाएं। फूटना, पुनः भरना।	कुम्भीका (सु०)
	उत्क्लिष्ट चतुष्टय-		
५.	पित्तोत्क्लिष्ट	पित्त → सदाह क्लेद निस्तोदं रक्ताभं स्पर्शन क्षमम् । वर्त्म में दाह, क्लेद (चिपचिपी), चुभन, लाली, Tenderness.	
६.	कफोत्क्लिष्ट	स्तम्भ, क्लेद, उपदेह (मैल)	
७.	रक्तोत्क्लिष्ट	रक्त → राजि (Dilated blood vesseles) स्पर्शनाक्षम (Tenderness).	क्लिष्ट (सु०)– अकस्मात लाल अल्प वेदना।
८.	उत्क्लिष्ट	रक्त, त्रिदोष → वर्त्म म्लान (सूखना)	

	वर्त्म रोग	संप्राप्ति व लक्षण	अन्य विवरण
९.	पक्ष्मशात (Fall of lashes)	पित्त → पक्ष्मान्त (Lid-Lash Junction) आश्रित; (I) कण्डू, दाह, (II) पक्ष्म गिरना।	
१०.	पोथकी	पोत्थक्य: पिटका: श्वेता: सर्षपाभाघना: कफात् । शोफोपदेहरूक्कण्डूपिच्छिलास्रसमन्विता: ॥९॥ कफ → श्वेत सरसों जैसी, घनी, पिटकाएं → शोफ, मैल, रूजा,कण्डू,पिच्छिलस्राव।	सुश्रुत वर्णित (Trachoma-Follicles c̄ congestion in upper tarsal conjunctiva)
११.	लगण	ग्रन्थि:पाण्डुररूक्पाक:कण्डूमान कठिन:कफात्। कोलमात्र:सलगण:किञ्चिदल्पस्ततोऽथवा ॥११॥ कफ → पाण्डु, अरूज, अपाकी, कण्डू, कठिन, बेर के बराबर या कुछ कम गांठ।	Chalazion
१२.	उत्संग	रक्त → रक्त (लाल) पिटका, इसी प्रकार की अन्यों से घिरी।	(सुश्रुत उत्संगिनी - सन्निपातजन्य)
१३.	अर्श	रक्त → वर्त्म के अंत:भाग में रक्तवर्ण अधिमांस-वर्त्म स्तब्ध, स्निग्ध, दाह, रूजा, लाली, स्राव; छेदन करने पर फिर वर्धन।	शोणितार्श-सु०, योगरत्नाकर Cancer of lid
१४.	अञ्जननामिका	मध्ये वा वर्त्मनोऽन्ते वा कण्डूषारूग्वती स्थिरा। मुद्गमात्रासृजाताम्रा पिटकाञ्जननामकिा ॥१५॥ रक्त → वर्त्म के मध्य/किनारे पर मूंग सम पिटका, कण्डू, रूज, स्थिर।	सुश्रुत वर्णित Stye
१५.	विसवर्त्म	जलकुम्भीवत; बाहरसे दोषों से शोथ, तथा अन्दर से (Inner surface) सूक्ष्म खाचितम (छोटे-२ सूक्ष्मछिद्र Porous)- जिनके अंदर जल भरा होता है।	सुश्रुत वर्णित, भा०प्र०; सु० व यो०र० के अनुसार त्रिदोषज
१६.	श्याववर्त्म	रक्त, त्रिदोष → श्याव, रूक्, क्लेद, शोफ	सु० वर्णित
१७.	श्लिष्टवर्त्म	रक्त, त्रिदोष → कण्डू, शोथ, राग, पलकें चिपकना	सु०,यो०र०, भा०प्र० में नहीं।

	वर्त्म रोग	संप्राप्ति व लक्षण	अन्य विवरण
१८.	सिकतावर्त्म	वर्त्मान्तः पिटका रूक्षाः कर्कशाः सिकतोपमाः। Minute hard yellow spots in the palpebral conjunctiva due to accumulation of epithelial cells & inspissated mucus in depressions called Henle's glands - Lithiasis.	सु० वर्णित
१९.	कर्दमवर्त्म	कीचड़वत काली पिटकाएं।	वर्त्मकर्दम-सु०
२०.	बहल वर्त्म	वर्त्म जैसे वर्ण का मोटा मांस बढ़ना	सु० वर्णित- सवर्ण समान पिटकाओं के व्याप्त हो जाने से वर्त्म मोटा होना। Multichalazion.
२१.	कुकूणक	दन्तोत्पत्ति (शिशु)-शून (शोथ) Oedematous, ताम्र अक्षि, देखने में अक्षम, वर्त्म में शूल, पिच्छिलता। कान, नाक, आंखे मलना।	Opthalmia, neonaturum
२२.	पक्ष्मोपरोध	वर्त्मसंकोच (Entropion-lid अंदर को मुड़ना) - (i) पक्ष्मों की अन्तर्मुखता से खरता (ii) अन्य रोम पुनः निकलना → तीक्ष्णाग्र से रगड़ कर अक्षिशोथ, दाह, रोम निकालने से कुछ दिन शान्ति। (वातज)।	पक्ष्मकोप-सु०- त्रिदोषज (Trachome); भा० प्र०- वातज (Trichiasis-cause-entropion, Trachoma etc.)
२३.	अलजी	कनीनिक (Nasal Canthus) में वर्त्म के ऊपर कठिन, उन्नतग्रन्थि, ताम्रवर्ण → पक्व → रक्त व पूय स्राव, फिर भरना। कनीनके बहिर्वर्त्म कठिनोग्रन्थिरून्नतः। ताम्रः पक्वोस्रपूयस्रुदलज्याध्मायतेमुहुः ॥२५॥	सुश्रुत वर्णन नहीं Lacrimal abscess stye

	वर्त्म रोग	संप्राप्ति व लक्षण	अन्य विवरण
२४.	अर्बुद	वर्त्मान्तर्मांसपिण्डाभ: श्वयथुर्ग्रथितोऽरूज: । सास्त्रै: स्यादर्बुदो दोषैर्विषमो बाह्यतश्चल: ॥ ॥२६॥ रक्त, त्रिदोष → वर्त्म के अन्त: भाग में मांस पिण्डाभ शोथ, ग्रथित, अरूज, विषम, बाहर से चल (हिला सकते है-Movable)।	सुश्रुत वर्णित- रक्त भरी लटकी गांठ; त्रिदोषज। यो.र., भा.प्र.- सुश्रुत वत। Benign tumour Haemangioma or Cyst-Dermoid, Sebaceous.

नेत्र रोगों की सामान्य संप्राप्ति–

सर्वरोग निदानोक्त → दोष प्रकोप $\xrightarrow[\text{अनुसरण}]{\text{पित्त}}$ सिरा → ऊर्ध्व → नेत्र अवयव/
दोष प्रकोपक कारण सर्वाक्षि आश्रित → रोग।
(विशेषत: अचक्षुष्य)

१२. वर्त्मरोग प्रतिषेध

१.	कृच्छोन्मीलन	• द्राक्षा कल्क व क्वाथ सिद्ध पुराण घृत+शर्करा चूर्ण– रात्रि में। • स्निग्ध नस्य, धूम, अंजन, तर्पण, पुटपाक। • वस्ति – दशमूल सिद्ध। • वर्त्म स्वेद – क्षीर स्विन्न एरण्ड पत्र से। • दाह – बिन्दु रूप, मुद्ग मात्र अन्तर से (Lid margin से मूंगवत दूरी पर) ।
२.	कुम्भीका	I. लेखन II. सैंधव प्रतिसारण III. परिषेक - परवल, आंवला, मुलेठी क्वाथ + घी।
३. ४.	पित्तोत्क्लिष्ट रक्तोत्क्लिष्ट	I. स्नेहन – मधुरौषध सिद्ध घृत से II. सिरा व्यध/विरेचन– त्रिवृत क्वाथ + त्रिफलाचूर्ण/त्रिफला-क्वाथ + ब्राह्मी। III. लेखन (से रक्त स्रावण) IV. मुलेठी क्वाथ प्रक्षालन। V. परिषेक – चन्दन शृत पय से।

५.	पक्ष्मशात	I. सूची से कुट्टन। II. अंजन– कासीस $\underset{\Delta}{\rightarrow}$ पुष्प चूर्ण ताम्रपात्र में रखकर तुलसी रस से १० दिन तक भावना दे। इसका अंजन करे।
६.	पोथकी	I. लेखन – (बार-२)। II. सोंठ सैंधव पिप्पली चूर्ण प्रतिसारण III. प्रक्षालन-उष्ण जल से। IV. परिषेक– खैर की लकड़ी; अरहर, सहजन पत्र– कषाय से। V. आश्च्योतन– आम जामुन पत्र क्वाथ से। VI. अंजन– विडंग, लाक्षा, दारूहल्दी त्वक्, गेरू, हरताल, मन:शिला चूर्ण + मधु।
७.	कफोत्क्लिष्ट	I. लेखन II. प्रतिसारण– सैंधव, पिप्पली, कासीस, मन:शिला, रसौत चूर्ण + मधु। III. अञ्जन– उपक्लेद (कीचड़ आने पर)– कासीस, सैंधव, चमेली कली, रसौत → वर्ति से।
८.	लगण (Chalazion	कफोत्क्लिष्ट वत। अग्निदाह। उष्ण उपचार।
९. १०.	उत्संग पिटका अञ्जननामिका (Stye)	I. भेदन, पीडन कर उल्लिखित (Matter बाहर निकाले)। II. प्रतिसारण– तगर, ऐला, सैंधव, मन:शिला चूर्ण + मधु। III. परिषेक– हल्दी, मुलेठी, पटोल, लोध्र क्वाथ + मधु।
११- १७.	१४-२०	विस, उत्क्लिष्ट, श्याव, श्लिष्ट, सिकता, कर्दम, बहल– सैंधव प्रतिसारण। विस, श्लिष्ट – दहन – अग्नि/क्षार।
१८.	कुकूणक	धात्री– स्नेहन– निम्बपत्र, त्रिफला, खदिर मूल कल्क सिद्ध घृत। बार-२ – [वमन– सैंधव, सरसों, पिप्पली, मुलेठी + उष्ण जल। विरेचन – पिप्पली, द्राक्षा, हरड़ निर्यूह (क्वाथ)। स्तनलेप– पिप्पली, मुस्ता, हल्दी, दारूहल्दी कल्क। धूम– सरसों + घृत। कषाय पान– परवल, मुस्ता, द्राक्षा, गुडुची, त्रिफला। बालक– I. वर्त्म का लेखन II. प्रतिसारण– मधु, सैन्धव, रसाञ्जन (रसौत)। III. प्रक्षालन– आंवला, जामुन, अश्मन्तक पत्र क्वाथ।

		• रूजाहर– IV. परिषेक– कूठ, गुडुची कल्कोदक+गुड़, मधु। • रसक्रिया– शंख, मनःशिला, सैंधव, रसांजन, मधु–(Drop)
१९.	पक्ष्मोपरोध (Entropion)	(A) लेखन, रक्तस्रावण। (B) प्रवृद्ध रोम में → भ्रुवोऽधस्ताद् द्वौभागौ पक्ष्मान्तात् भागमेकं समुत्सृज्य यवमात्रं तदाकृति तिर्यक् छेदयेदार्द्रवाससा च रक्तं गृह्णीयात् ॥१८॥ 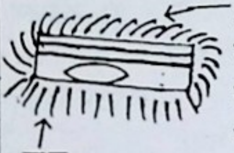 पक्ष्म ← भ्रू से २ भाग नीचे, पक्ष्म के १ भाग में यव के बराबर तथा उसी की आकृति में तिर्यक् छेदन कर, आर्द्र (भिगोई, निचोड़ी रूई की बत्ती) वस्त्र से रक्त ग्रहण करे। फिर क्षौमसूत्र से धनुर्वक्रा सूची से मुद्गमात्रान्तर (Distance between two sutures=१ मूंगवत) पद से सीवन करे। 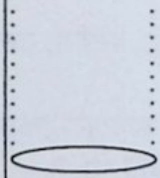 ← सीवन सूत्र के २ सिरे; माथे पर पट्टी बांधकर इस प्रकार फंदा दे कि वर्त्म न अधिक कसे तथा न ही ढीली रहे। • इस पर शतधौत घृत + मधु युक्त कवलिका रखे। • वर्त्म पर पट्टी न बांधे। • व्रण वेदना– यष्टीमधु (मुलेठी) चूर्ण सिद्ध घृत लगाये। परिषेक– वट आदि कषाय + दूध। ५/६ ठे दिन व्रण स्थिर हो जाने पर सिर की पट्टी खोल दे, तथा टांके निकाल दे। स्वर्ण गैरिक अवचूर्णन । अति उत्क्षिप्त– सिर की पट्टी में सीवन सूत्र अधिक कसने से → श्वयथु – मृदु स्वेद, स्नैहिक नस्य। (C) वर्त्म उलटकर दोषोपहत वलि का विलेखन कर, तगर/हरड़ बीज कल्क से प्रतिसारण कर क्षार/तप्त शलाका से दाह। (D) उपपक्ष्म – नये रोम आना। (i) संदंश से उखाड़े (ii) तनु सूची के अग्र को अग्नि वर्ण (Red hot) कर रोमकूप दहन करे। (iii) परिषेक, नस्य (तीक्ष्ण)

२०.	बाह्य अलजी	भिन्न होने पर लेखन, दाह-क्षार/अग्नि, व्रणोपचार।
२१.	अर्बुद	स्वेदन, समूल छेदन, लेखन, प्रतिसारण। I. देह शोधन II. उत्तान लिटाकर, उष्ण जल में भीगे वस्त्र से वर्त्म स्वेदन। III. वर्त्म स्थिरीकरण (वस्त्र लगे अंगुली, अंगुठे से)। IV. मण्डलाग्र से सर्व वर्त्म पर तिर्यक शस्त्रपद/लेखन। कार्पास पिचु से रक्त पोछे। V. प्रतिसारण – सक्षौद्र VI. प्रक्षालन – उष्ण जल से VII. घृत सेक, मधु + घी लगाकर; कानों के ऊपर व नीचे यव सत्तू पिण्ड रखकर, बाँध दे। VIII. ३रे दिन खोलकर परिषेक आदि। IX. ४थे दिन नस्य; ५वें दिन मुक्त करे।

सुलिखित लक्षण– सम नखनिभं शोफ कण्डूघर्षाद्यपीडितिम् ॥२७॥

वर्त्म की आभा नख वत, शोफ, कण्डू, रगड़ आदि न होना।

असम्यक् लेखित – पुनः लेखन।

अतिलेखन– रूक्, पक्ष्म नाश, वर्त्मस्रंस (गिरना)।

चि०– स्नेह, स्वेद, वातहर;

नेत्रसिंचन– श्वेत लोध्र पर मक्खन लगाकर एरण्डमूल कल्क से लिप्त कर पुटपाक करे। स्विन्न हो जाने पर लोध्र धोकर सुखा कर चूर्ण कर ले। चूर्ण को पोटली में रख स्त्री/छाग क्षीर में मले/इससे सेच न करे।

१३. सन्धिसितासित रोग विज्ञानीय

सन्धिगत रोग– ९ – [४ साध्य, ५-असाध्य (चतुःस्राव, अलजी)]

१	जलास्रव	V↑ – जलवाहिनी सिरा → कनीनिक (Nasal canthus) वर्त्म शुक्ल संधि (Lid-Sclera Jn.) से जलाभ अश्रु स्राव → राग, शोफ, अरूज।	असाध्य
२	कफास्रव	K – श्वेत, पिच्छिल, बहल स्रवण।	,,
३	उपनाह	K → शोफ– • तीक्ष्णाग्र, क्षार बुद्बुद (पकते समय) वत • पृथु (विस्तीर्ण) मूल, चल, स्निग्ध,	शस्त्रसाध्य

		• सवर्ण, मृदु, पिच्छिल, महत्, अपाकी • कण्डू, अरूज।	
४	रक्तास्त्रव	R – ताम्र, अत्युष्ण अश्रु स्त्रवण।	असाध्य
५	पर्वणी	शुक्ल भाग में वर्त्मसन्धि आश्रित, ताम्र, मूंगवत पिटका; दाह, शूल, फटने पर रक्त स्त्रवण। (R)	शस्त्रसाध्य
६	पूयास्त्रव	त्रिदोष + रक्त– कनीनिक प्रान्त में वर्त्मसन्धिगत त्वक् मांस पाक → रक्त + पूय का जल्दी-२ स्त्राव।	असाध्य
७	पूयालस	कनीन सन्धि गत व्रण– सूक्ष्म, शोफ, संरम्भ, आध्मान → पूय स्त्राव, वेदना।	शस्त्रसाध्य
८	अलजी	कनीन के अन्तर में शोफ; रूक् तोद दाह युक्त।	असाध्य
९	कृमिग्रन्थि	अपांग (Temporal region)/कनीन (Nasal Canthus) में कण्डू युक्त पक्ष्म गिराने वाली ग्रन्थियां– पूयस्त्रावी, कृमियुक्त, अर्ति (दर्द)।	शस्त्रसाध्य

सिताश्रित (शुक्लगत Scleral) रोग– १३

१	शुक्तिका	P → श्वेत भाग (Sclera) पर असित (काले)/श्याव/पीत बिन्दु/ सर्व शुक्ल भाग मलिन आदर्श (दर्पण) वत। दाह व रूक नहीं। मलभेद, तृट्, ज्वर।
२	शुक्लार्म	K → शुक्लभाग वत श्वेत, देर में बढ़ने वाला अधिमांस।
३	बलास ग्रथित	शोफ– अरूज, सवर्ण, बहल (घन), मृदु, गुरू, स्निग्ध, जल बिन्दु जैसी आभा।
४	पिष्टक	बिन्दु– पिष्ट धवल (चावल पिट्टी जैसे), उत्सन्न (उभरे)।
५	सिरोत्पात	R → शुक्ल भाग में रक्त राजी (लाल रेखाओं से भरा), दाह, वेदना, शोफ, अश्रु, उपदेह (कीचड़)
६	सिराहर्ष	सिरोत्पात उपेक्षा → राजी वृद्धि → देखने में अक्षम
७	सिराजाल	बृहत्, रक्त, घन, उन्नत।
८	शोणितार्म (Pterig-ium)	शोणितार्म सम श्लक्ष्णं पद्माभमधिमांसकम् ॥१९॥ सम, श्लक्ष्ण, लाल कमल जैसी आभा वाला अधिमांस
९	अर्जुन	नीरूक्श्लक्ष्णोर्जुनोबिन्दुः शश लोहित लोहितः। बिन्दु– खरगोश के रक्त जैसा लाल, निरूज, चिकना।

१०	प्रस्तार्यर्म	त्रिदोष + रक्त → शुक्ल भाग में मांस – मृदु, आशु वृद्धि, अरूक्, श्याव लाल।
११	स्नावार्त्म	स्नायु सन्निभ (बढ़ा मांस)
१२	अधिमांसार्म	मांस– शुष्क रक्त पिण्डवत श्याव, बहल, पृथु।
१३	सिरा पिटका	कृष्ण भाग के समीप शुक्ल में सर्षप वत, दाह घर्ष युक्त पिटकाएं, सिराओं से आवृत (घिरी) औषधि साध्य–६ – शुक्ति, सिरोत्पात, हर्ष, पिष्टक, ग्रथित, अर्जुन। शेष-७ – नव – औषधि अन्यथा शस्त्रकर्म। अर्म-५ – छेद्य – जब तक कृष्ण भाग में न आयें। • असाध्य– मांस, स्नायु आवृत/चर्मवत उभार/दृष्टि प्राप्त (Pupil Covered)।

असित (कृष्ण भाग Corneal) रोग– ५

१	क्षतशुक्ल	P → कृष्ण या दृष्टि भाग (Cornea; pupil region) में त्वक् छिन्न कर अश्रु व राग के साथ **शुक्ल** बनने से कृष्ण मण्डल पक्व जम्बू निभ तथा कुछ निम्न (Depressed Cornea) हो जाता है। कृच्छ साध्य। द्वितीय पटल में पहुँचकर – याप्य। द्वितीय पटल वेधन– तोद बाहुल्य, सूचीविद्धाभ कृष्णता। तृतीय पटलच्छेद – असाध्य– व्रण निचित (पूर्ण)।	
२	शुद्ध शुक्ल	K → शंख जैसी शुक्लता, अधिक रूक् नहीं।	साध्य।
३	अजका	R → कृष्ण भाग में ताम्र वर्णी, अतिवेदना युक्त पिटका बकरी की मींगनी जैसी उभरी, काली; ताम्र पिच्छिल अश्रुस्राव।	असाध्य
४	सिराशुक्ल	त्रिदोष + रक्त → • तोद, दाह युक्त ताम्र सिराएं। • उष्ण/शीत, अच्छ/घन अश्रु स्राव।	त्याज्य।
५	तीव्रवेदन	त्रिदोष + रक्त → दृष्टि व कृष्ण भाग श्वेत होना– धवल बादल से उपलिप्त, निष्पाव (सेम) अर्धदलाकृति। अतितीव्र रूज, राग, दाह, शोथ, पाकात्यय।	असाध्य

शुक्ल में असाध्यता– (i) लिंगनाश युक्त, (ii) श्याव लोहित अंदर से (iii) अति उत्सेध (उठा) (iv) अति अवगाढ़ (अधिक दबा) (v) अश्रु (vi) नाड़ी व्रण से घिरा/आवृत (vii) पुराण (viii) विषम (ix) विच्छिन्न मध्य (बीच से फटी Cornea)

१४. सन्धि सितासित रोग प्रतिषेध

(अ) **सन्धिगत–**

१. उपनाह– 1. स्वेदन 2. व्रीहिमुख से भेदन 3. मण्डलाग्र से सभी ओर से (समन्ता) लेखन 4. प्रतिसारण– सैंधव, पिप्पली चूर्ण + मधु 5. बंधन 6. आश्च्योतन – पटोल पत्र, आंवला क्वाथ।

२. पर्वणी– 1. वर्त्म की उत्तर संधि (किनारे से) १/३ भाग वडिश से पकड़कर वृद्धि पत्र द्वारा मूल से १/२ पर काट दे। १/२ न छोड़ने से अश्रु नाड़ी होने का भय। 2. मधु सैंधव प्रतिसारण 3. अर्मवत चि०।

३. पूयालस– 1. सिरा व्यध 2. उपनाह 3. अक्षिपाकोक्त चि०।
4. अंजन – सैंधव, आर्द्रक, कासीस, लौह, ताम्र (सुसूक्ष्म) + मधु।

४. कृमि ग्रन्थि–
1. स्वेद (सूखे गोबर) 2. भेदन 3. लेखन
4. प्रतिसारण– कासीस, सैंधव, त्रिफला, मधु।

(ब) **सित रोग (Scleral Diseases)–**

१. **शुक्तिका–** पित्ताभिष्यन्द वत

२–३. बलास ग्रथित, पिष्टक–

- सिरा वेध के अतिरिक्त सम्पूर्ण कफाभिष्यंद चि०।
- रसक्रिया– तिल/यवनाल – १५ दिन, अजाक्षीर में भावित कर सुखाकर जलाये। भस्म को क्षार कल्प से कड़छी में चिपकने तक पकाये।
- अंजन–
  - सैंधव, हरताल, मरिच, कट्फल (कायफल), शंख, समुद्रफेन से वर्ति बनाकर।
  - त्रिकटु, कट्फल चूर्ण + बीजपूर (बिजौरा) रस।

शोथ– हरिताल, सैंधव, सोंठ, देवदारू, पुनर्नवा से विडाल (आंख के चारों ओर का घेरा) पर लेप।

४-७. सिरोत्पात, जाल, हर्ष; अर्जुन– रक्ताभिष्यन्द वत चि० ।

सिराहर्ष–
- स्वर्ण गैरिक + मधु
- कासीस, सैंधव, मधु

} – अंजन।

अर्जुन–

आश्च्योतन– शर्करा + मातुलुङ्गरस/मस्तु।

अंजन – शंखनाभि + मधु/समुद्रफेन + सिता/स्फटिक (फिटकरी), केशर, शंख नाभि, मुलेठी।

८-१२. अर्म– (Pterigium)– पञ्चविध

(A) तनु, लाल, धूमवत गंदला/दधिनिभ– शुक्लवत चि०– काय शिरो विरेक, लेखन अञ्जन।

(B) अन्य सभी– शस्त्रकर्म।

1. स्नेहन
2. आहार– पेया/विलेपी/जांगल रस
3. शिर कुछ नीचे कर उत्तान लिटाये।
4. स्वेद– वस्त्र गरम जल में भिगोकर।
5. अंजन– सैंधव + बीजपूर रस
6. अक्षि मर्दन – अंगूठे से, आंख बंद कर } अर्म प्रचलित। (Movable)

   ...... नेत्र संरोषित (लाल) हो जाता है।
7. परिचारक-२– (१) शिर पकड़ना (२) वर्त्मों को वस्त्र की सहायता से पकड़कर खुला रखना। (Lid fixation)।
8. रोगी अपांग (कान की ओर) देखे।

मुख्य शस्त्र कर्म–९– कनीनिक (Nasal Canthus) में अर्म में जहां-२ वलि (Folds) दिखें वहाँ-वहाँ बडिश/मुचुण्टी से अधिक न खींचते हुये पकड़े। इसे कुछ उठाकर सुची अग्र से काले व श्वेत मण्डल (Cornea & Sclera) से पूर्णतः पृथक् कर, कुछ खींचे। तीक्ष्ण मण्डलाग्र या वृद्धि पत्र से विलेखन कर, कनीनिक की ओर लाकर कनीनिका (Caruncle C̄ plica Semilunaris) के बराबर १/४ भाग बचाते हुये छेदन (Excise) करे। कनीनक में अश्रुवाही तथा सिराएं बचाये।

व्याप्त जालवर्त्म को एषणी से कनीनिक की ओर अनुसरण (खिसकाते हुये) कर मोचने से उठाकर पूर्ववत छेदन करे।

(→ यदि अर्म अपांग प्रदेश (Temporal Canthus) में हो तो–

- कनीनिक की ओर वीक्षण (रोगी दृष्टि)।
- अपांग प्रदेश में लाकर अपांग तथा सिराओं को बचाते हुये अपांग सम काटे।)

१०. प्लोत (Swab) से रक्त साफ कर देखे, कि सम्यक् छिन्न हो गया है।

११. प्रतिसारण– सैंधव चूर्ण/यवनाल भस्म – कई बार।

१२. प्लोत से शुद्ध (पोछ) कर मधु लगाकर, शीत जल से परिषेक करे।
१३. सुखोष्ण घृत से परिषिक्त कर मधु + घृत लगाकर बांधे।
१४. शिर व पैरों पर शतधौत घृत व शीतल प्रदेह लगाये।
२रे दिन, पट्टी बंधे-२ ही मुलेठी सिद्ध घृत से शिर परिषेक।
३रे दिन - पट्टी खोलकर करंज बीज सिद्ध दूध से अक्षिस्वेद।
५वें दिन घृत गरम जल से पिये।
७वें दिन मुक्त। धूप व आकाश दर्शन त्याज्य।

व्यापद्–

हीन छेदन– पुनर्वृद्धि, राग, अश्रुपात, प्रकाश देखने में अक्षम आदि।
अतिच्छेद– अक्षिपाक, स्तम्भ, स्फुरण, रक्तस्राव, तिमिर, लाली, विवद्धवर्त्म।
नेत्रशोफ– धूमपान, शिरोविरेक, सिराविस्रावण।
अश्रुस्राव– नस्य। कृष्णगत व्रण– व्रण शुक्रवत चि०। शेष अर्म– लेख्यांजन।

→ सोंठ, मनःशिला, हरताल, एला, सैंधव, शर्करा, १:१ भाग } मधु से
रसाञ्जन ४ भाग }

पतला कर अंजन– शेष अर्म, कफज तिमिर, पिल्लहर।

- सिराजाल– मोटी व कठिन सिराओं को बडिश से पकड़कर मण्डलाग्र से काटे (उल्लिखित)।

१३. **सिरापिटका–** सूची अग्र से अवलम्वित (उठा) कर, कृष्ण भाग को बचाते हुये छेदन (Excise) करे। सूक्ष्म पिटका का लेखन करे। शेष रहने पर अर्मवत चि०।

शुक्ल रोग (Diseases of Cornea)– दोषानुसार त्रिफला घृत पान, रक्तमोक्षण, विरेचन, आश्च्योतन मुखालेपन, तर्पण, पुटपाक।

१. **क्षत/व्रण शुक्ल–** त्रिवृत निर्यूह सिद्ध (३बार) घृत पान। सिरावेध।
आश्च्योतन– मुलेठी, मजीठ, क्षीर काकोली सिद्ध अजा दुग्ध + शर्करा।
अनुवासन– वेदना होने पर– सौंफ, मुलेठी + घृत मण्ड से।
• लाक्षा, स्वर्ण गैरिक, चन्दन, चमेली कली → वर्ति– रक्त, पित्त, व्रण शुक्ल हर।
निम्न शुक्ल का उन्नतीकरण– (i) सरूज– स्नेहपान, नस्य, जांगल रस।
(ii) नीरूज– तर्पण (सिद्ध मक्खन से), पुटपाक (मुर्गे की आंत)।

२. **शुद्ध शुक्ल–** (Corneal Opacity/May be due to Corneal Injury)–
I. आश्च्योतन– हल्दी, मुलेठी, सारिवा, लोध्र कषाय।
II. विरेचन
III. अवपीड नस्य– दन्ती, ज्योतिष्मती कल्क।

IV. मर्श/प्रतिमर्श– शिरोविरेचन द्रव्य पक्व तैल से।

V. **महानीला वर्ति–** (श्लो० ३१)
सोंठ, सैंधव, मुलेठी, बृहती मूल, ताम्र– आंवले के रस से पीसकर ताम्र पात्र में लेप करे। इस पात्र को घी + आंवला पत्र के धूम से धूपित (कई बार) करे। इसे मधु व जल के साथ घिसकर लगाये।
- हाथी व सुअर के दांत से बनी वर्ति।

VI.
- शुद्ध शुक्र उत्सादन (निम्नता सही करना)– संप्रहर्षण।
- पिप्पली/सैंधव को ३ दिन त्रिफला रस से भावना देकर अंजन।

→ इससे राग, अश्रु वेदना होने पर–
संधाव अंजन– ताम्र पात्र में शंख घिस कर घृत, यव, शमी पत्र से धूपन कर बनाये।

VII. मधूक (महुआ) सार/विभीतकास्थिमज्जा मधु से लगाये।

VIII. **वेदनाहर, उत्सादन–** जौ, गेहूँ, जीवनीय गण, जटामांसी चूर्ण + घी → उत्कारिका – स्वेदन, उपनाह।

IX. उपनाह से दोष प्रचलित हो जाता है अब लेखन अंजन बरते।
- दंत (गो, खर, उष्ट्र), समुद्रफेन, शंख को अर्जुन छाल क्वाथ से पीसकर बनी वर्ति से।

X. **प्रत्यञ्जन–** तरूण बेर, खदिर, तिन्दुक अस्थि – अन्तर्धूम दग्धचूर्ण।
→ उत्सन्न (उठे)/शल्य युक्त शुक्र का बाल आदि से लेखन कर पुटपाक/ बलास ग्रथितोक्त क्षार रसक्रिया करे।

३. **सिरा शुक्ल–** नये का व्रण शुक्लवत उपचार।
- न ठीक होने पर **अर्मवत चि०।**
- प्रतिसारण– रसाञ्जन + मधु।
- प्रत्यंजन– समुद्रफेन, शंख, चन्दन को अजाक्षीर में पीसकर → वर्ति। मधु से घिसकर लगाये।

४. **अजका–** (Perforated Corneal Ulcer C̄ a pralapse of the Iris)–
चिकित्स्यि– 1. दृष्टि उपघात न कर रही हो 2. कृष्णान्तज (Near limbus) ।
- रक्तमोक्षण, मधुर विरेचन, क्षीर वस्ति, सिराशुक्लवत चि०, शस्त्रकर्म।

अजका में शस्त्रकर्म– (I) अजका को पार्श्व से सुई से वेध कर उदक विस्रावण करे, अंगुष्ठ से दबाकर; गोमांस चूर्ण वसा लगाकर पूरण (व्रण) करे, तथा बांध (पट्टी) दे। – नित्य × ७ दिन।

(II) व्रण रूढ होकर कृष्ण भागसम हो जाने पर स्नेहाञ्जन करे।

(III) नस्य – घृत

पुन: आध्मान (अजका आ जाना herniation of Iris) हो जाने पर भेदन, छेदन आदि इस प्रकार युक्ति से करे कि अतिच्छेद से अक्षि निमज्जन (आंख गड्ढे में जाना) न होने पाये।

→ सभी शुक्ल रोगों में सिद्ध (यथा दोष) घृत पान तथा मर्श नस्य नित्य दे। इनसे बल प्राप्त दृष्टि शुक्रहर तीक्ष्ण अंजनों के प्रयोग से घटती नहीं है।

१५. दृष्टि रोग विज्ञान

दृष्टि रोग– २७ . [सुश्रुत-१२]

सम्प्राप्ति–

मल/दोष– सिरानुसरण → पटल (४) में आश्रित – १ → २ → ३ → ४।

	पटल (आक्रांत)	लक्षण
१.	प्रथम	व्यक्त रूप भी बिना किसी निमित्त के अव्यक्त दिखना।
२.	द्वितीय	जो न हो, उसको भी देखना
	↳ तिमिर–	वस्तु को यत्न से, निकट से. देखना
		दूर का व सूक्ष्म न दिखना
		दूर की वस्तु निकट व निकट की दूर मानना
		मण्डल संस्थित दोष– मण्डलवत देखना
		दृष्टि मध्ये दोष– एक वस्तु के २ रूप दिखना
		दृष्टि में अनेक स्थानों पर दोष– एक वस्तु के अनेक रूप दिखना
		दृष्टि के अभ्यंतरगत दोष– छोटे ⇌ बड़ा
		अध: संस्थित दोष – समीपस्थ न दिखना (Hypermetropia).
		ऊपरिस्थ दोष – दूरस्थ न दिखना (Myopia).
		पार्श्वस्थ दोष – पार्श्व की वस्तु न दिखना
३.	तृतीय	ऊर्ध्व देखता है, नीचे का नहीं दिखता।
	↳ काच	↳ तनु, लघु, आवृत जैसा।
		जैसे-२ वर्ण रञ्जित होता जाता है, वैसे-२ क्रमश: दृष्टि घटती जाती है।
४.	चतुर्थ ↳ लिङ्गनाश	दृष्टि मण्डल आच्छादित।

I → II → III → IV

अव्यक्तता तिमिर काच लिंगनाश

पटलों में क्रमशः (उपेक्षा वश) अनुप्रवेश से दोषानुसार लक्षण/रोग–

		तिमिर	काच	लिङ्गनाश	दृष्टि
१	वातज	व्याविद्ध देखना, चल, मलिन, कभी लाल आभायुक्त कभी स्वच्छ दिखना। जाल, केश, मशक, स्फुलिंग दृष्टि के सामने आना।	अरूण दिखना, अपनी नासा न दिखना, अनेक चन्द्र, दीप आदि दिखें वक्र को ऋजु समझना।	रज व धूम आवृत दृष्टि। दृष्टिमण्डल (Lens) स्पष्ट अरूणाभ, विस्तीर्ण/सूक्ष्म। सिरा संकोच → हत दृष्टि (न दीखना)।	**गम्भीरा–** दृष्टिमण्डल अंदर को धंस जाता है।
२	पित्त	विद्युत, खद्योत (जुगनू) प्रकाश; प्रायः मोर, तीतर पुच्छवत नील वर्ण देखना	कांस्य नीलाभ दृग, वस्तुओं में नीलता देखना, सूर्य, चन्द्र के चारों ओर परिवेष (घेरा) दिखना; अग्नि, मरीचि (रश्मि), इन्द्रधनुष दिखना।	दृष्टि (Lens) भ्रमर वत नीली, स्निग्ध प्रकाश रहित (निरालोका)।	• **ह्रस्वा–** बड़े रूप भी छोटे देखना (पित्तवशात)। • **पित्त विदग्ध [दृष्टि–** पीत दर्शन दृष्टि (Lens) में
३	कफज	प्रायः स्निग्ध और श्वेत देखना; शंख, चन्द्र, कुन्द पुष्प, कुसुम, कुमुद पूर्ण देखना।	दृष्टि-निष्प्रभ, चंद्र सूर्य, प्रदीप पूर्ण देखना। दृष्टिमण्डल (Pupil) सिताभास (Whitish)	मूर्तकफ..शुक्लिमा। कफ मूर्त हो स्निग्ध दृष्टिगत होता है। दर्शननाश। कमलिनी पत्र पर रखे जल बिन्दुवत चल; उष्ण में संकोच (Constracted) तथा छाया	पीतता-वश]।

		तिमिर	काच	लिङ्गनाश	दृष्टि
				में परिसर्पण (Dilatation); शंख, कुन्द, इन्दु, कुमुद, स्फटिक वत शुक्लिमा।	
४	रक्तज	लाल व तमोभूत (अंधेरी) देखना।	रक्त/कृष्ण दृष्टि से ऐसा ही दिखना	दृष्टि (Lens)- काला /लाल; निष्प्रभ, हत दर्शन	
५	संसर्ग (३)	मिश्र लक्षण कभी स्पष्ट कभी कभी अस्पष्ट देखना।	चित्र राग (अनेक रंग)	चित्र राग दृष्टि।	
६	सन्निपात				
	(कफज लिङ्गनाश– मूर्तः कफो दृष्टिगतः स्निग्धो दर्शननाशनः । बिन्दुर्जलस्येव चलः पद्मिनीपुटसंश्रितः ॥ उष्णे सङ्कोचमायातिच्छायायां परिसर्पति । शङ्खकुन्देन्दु कुमुदस्फटिकोपमशुक्लिमा ॥८॥)				

- **नकुलान्ध्य–** संचित मलों → दृष्टि नकुल वत चमकना।
  - दिन में चित्र (नाना वर्ण की वस्तुएं) देखना, परन्तु रात में नहीं दिखता।
- **दोषान्ध (रात्र्यन्ध)–**
  - सूर्य अस्त होते समय → स्तम्भित दोष → दृष्टि स्थगित (रात में नहीं दिखता)।
  - दिन स्पष्ट होते ही दोष दृष्टि पथ से भ्रष्ट/विलीन → दिन में साफ दिखना। [Night Blindness– 1. नकुलान्ध्य 2. दोषान्ध]
- **विदग्धोष्ण दृष्टि–**
  - उष्णतप्त के सहसा शीत जल में निमज्जन से → त्रिदोष + रक्त + ऊष्मा → ऊर्ध्व → अक्षि।
  - दाह, ओष (अन्तःउष्णिमा), शुक्ल मालिन्य। दिन में गंदला दिखना तथा रात्रि में अन्धता।
- **विदग्धाम्ल दृष्टि–** अति अम्ल रस सेवन → त्रिदोष + रक्त → दृष्टि।
  - क्लेद, कण्डू, कलुष (धुंधली दृष्टि)।
- **धूमर–** शोक, ज्वर, शिरोरोग (High/Low BP; High temp; Brain tumour etc.) → वातादि दोषों से दृष्टि धूमाविल (धुएं वत गंदली) → धूमदर्शी (धुएं सा दिखना)।

- **औपसर्गिक लिङ्ग नाश–**
  - हीनसत्व के सहसा अद्भुत रूप,भास्वर (चमक), सूर्य आदि दर्शन → वातादि दोष → नेत्र में आश्रित हो। तेजं शोष → दर्शन शक्ति नष्ट।
  - इसमें कोई व्यथा/व्याधि लिङ्ग नहीं मिलता; दृष्टि – वैदूर्य वर्ण (निर्मल), स्तिमित, प्रकृतिस्थ सी दिखती है।

साध्यासाध्यता–

असाध्य-८– गम्भीरा, ह्रस्वजा, लिङ्गनाश-६-V, P, R, S, संसर्ग, औपसर्गिक।

याप्य-७ – नकुलान्ध्य, काच-६ V, P, K, R, S, संसर्ग।

साध्य-१२ – कफज लिंगनाश, पित्तविदग्धदृष्टि, दोषान्ध (रात्रि), विदग्धोष्ण, विदग्धाम्ल, धूमर, तिमिर-६- V, P, K, R, S, संसर्ग ।

[तीनों संसर्गों (V-P, V-K, K-P) में मिश्र लक्षण (Undistinguisable) होने से इसे '१' ही संख्या दी गई है।]

१६. तिमिर प्रतिषेध

तिमिर → काच → अंधता। अतः तिमिर की शीघ्र चि० करे।
(उपेक्षा)

सामान्य चि०–

घृतपान– रात्रि में।

१. जीवन्त्याद्य घृत २. द्राक्षाद्य घृत ३. पटोलादि घृत

४. **त्रिफला घृत–** (श्लो० ६)

त्रिफला – ८ पल
जल – १ आढक } → Δ १/४ शेष → छाने (क्वाथ)
+ दूध (सम भाग)
+ त्रिफला कल्क – १ पल
+ घी – १/२ प्रस्थ
↓
पाक।

सेवन– मिश्री/मधु/त्रिफला क्वाथ के साथ पिये।

५. महात्रैफल घृत (श्लो०७)।

अन्य योग– • नित्य रात्रि में त्रिफला चूर्ण/घृत पान।

१. त्रिफला घृत + त्रिफला + मुलेठी, मधु से रात्रि में चाटे तथा हिताहारी रहकर १ मास तक आमलकोदक पिये– भगवान निमि।

२. बेर की लकड़ी के पात्र में गो घृत + लौह रज (भस्म) रखकर त्रिफला चूर्ण के साथ पिये।

३. पुराण घृत + मिश्री, शतावरी, मुलेठी चूर्ण से।
४. अग्नि तप्त लौह पिण्ड निषिक्त पुराण घृत।
५. त्रिफला/+स्वर्ण/रजत/लौह चूर्ण (भस्म) – घी + मधु से।
६. लोहपात्र में स्वर्ण माक्षिक, लौह, त्रिफला चूर्ण, मधु, घी रखकर, उड़द के ढेर में १ माह के लिये रख दे।
७. प्रात: हरड़ खाये।
८. भास्कर चूर्ण
९. सुखावती वर्ति (श्लो० १५) – कुक्कुटाण्ड योग।
१०. दृष्टिप्रदा वर्ति – (श्लो० १६)–
त्रिफला, कुक्कुटाण्ड त्वक्, कासीस, लौह भस्म, नीलोत्पल, विडंग, समुद्रफेन– बकरी क्षीर से पीसकर ताम्रपात्र में लेप। ७ दिन बाद फिर इसे अजा क्षीर से पीसकर वर्ति बना ले।
११. रागयुक्त तिमिर– कृष्ण सर्प योग।

दोषानुसार चि०–

१. वातज तिमिर–

I. दशमूल क्वाथ, घी से ४ गुना दूध, त्रिफला कल्क → घृत पाक– स्नेहन।
II. विरेचन– त्रिफला, लघु पंचमूल क्वाथ + दूध, एरण्ड तैल।
III. अंजन, प्रत्यञ्जन।
IV. तर्पण– सौंफ, कुष्ठ, नेत्रबाला, काकोली, क्षीर काकोली, मुलेठी, प्रपौण्डरीक, सरल काष्ठ, पिप्पली, देवदारू से घी (१ भाग) को दूध (८ भाग) में सिद्ध करे।
V. प्रसादन, स्नेहन पुटपाक (सू०अ० ३३); निरूह, अनुवासन।

२. पित्तज तिमिर–

I. स्नेहन– जीवनीय, त्रिफला घृत से।
II. सिरा व्यध
III. विरेचन– शर्करा, एला, त्रिवृत चूर्ण मधु से।
IV. नेत्र परिषेक– पद्मक, उशीर, वट आदि क्षीरीवृक्ष अंकुर शृतक्षीर।
V. नस्य– सिता, उत्पल सिद्ध अजा घृत।
VI. तर्पण– लोध्र, मूर्वा, पुण्डरीक, जटामांसी, मुलेठी, लाल चंदन, उशीर (खस) से दूध में सिद्ध घी।

३. कफज तिमिर–

I. स्नेहन– अमृताक्वाथ में त्रिफला, पिप्पली कल्क शृत घृत।

II. सिरा व्यध

III. विरेचन– पूग (सुपारी), अभया, शुण्ठी, कृष्णा (पिप्पली), दंती, बड़ी दन्ती (निकुंभ) क्वाथ।

[नस्य– करञ्ज, कट्फल, वच, त्रिफला, पंचकोल, दारूहल्दी कल्क से]

IV.

- **कोकिला वर्ति–** शंख, प्रियंगु, मन:शिला, त्रिकटु, त्रिफला।
- **पीता वर्ति–** (श्लो० ३९)– कृष्ण लोह, त्रिकटु, सैंधव, त्रिफला, स्रोताञ्जन, हल्दी, दारूहल्दी, तगर, तेजपत्र, पिप्पली, मरिच।
- मन:शिला, शंख, सैंधव, मरिच → वर्ति – तिमिर, शुक्ल, पिल्ल, अर्म हर।

V. **तर्पण–** तालीश, पाठा, अपामार्ग, विडंग, जटामांसी, खस, हल्दी कल्क से क्षीरी वृक्ष क्वाथ में सिद्ध घृत।

VI. **स्वेदन–** सहजन पत्र पानी में उबालकर उससे मात्रा में।

४. **रक्तज तिमिर–** पित्तवत।

५. **सन्निपातज तिमिर–** उल्वण दोषानुसार चि०।

- अंजन– खस क्वाथ + पिप्पली, सैंधव चूर्ण → छाने + घी $\xrightarrow[\text{पाक}]{}$ घन होने पर उतार कर, ठंडा होने पर मधु मिलाये।
- शिर: परिषेक– वट प्ररोह, मुलेठी, दूर्वा, लोध्र, तिल, कमल शृत क्षीर से।

६. **संसर्गज तिमिर–** दोषानुसार सान्निपातिक।

काच– तिमिर वत, रक्तमोक्षण जलोका से कराये, सिरावेध नहीं।

धूमर, अम्लविदग्ध, पित्तविदग्ध, उष्णाविदग्ध–

- जीर्ण (१० वर्ष पुराना) घी से स्नेहन कर शीत विरेचन व लेप।
- **रस क्रिया–** गोमय रस, दुग्ध, घी पक्व अंजन + स्वर्ण गैरिक, तालीस चूर्ण आवाप (प्रक्षेप)।

रात्र्यन्ध–
- मरिच को दधि से घिसकर अंजन।
- कुम्भयोनि (अगस्त) पत्र पक्व घृत पान।
- कारञ्जिक वर्ति – करंज, कमल (उत्पल). स्वर्णगैरिक, कमलकेशर को गोमय रस से पिष्ट कर।
  द्विहरिद्रादि वर्ति– निशा द्वय, अंजन (रसांजन), मधु, जाती रस।
- जीवन्ती/शतावरी/एरण्ड के पत्र घृत भ्रष्ट कर (साग बनाकर) खाये।

नेत्र रोगों में पथ्यापथ्य– व्रण वत।

- वेग अधारण, नित्य अंजन, नस्य। क्रोध शोक त्याग; खाने के तुरंत बाद पानी न पिये।

- रूक्ष, आम, उत्कट आसन, विदग्ध आहार, वमन, भूख, तृट तथा विरेचन, नस्य, वमन, पुटपाक आदि के मिथ्यायोग से तिमिर रोगी बचे।

→ सूर्य, उपराग (ग्रहण), अग्नि, विद्युत आदि दर्शन → हत दृष्टि – स्निग्ध हिम संतर्पण, अंजन – स्वर्ण घी से घिसकर।

नेत्र रक्षण उपाय– त्रिफला, रक्त स्रवण, विशोधन, पक्षिमांस, मनःप्रसन्नता, पैर प्रक्षालन। अहित दर्शन कभी न करे। भास्वर, चंचल, सूक्ष्म न देखे।

१७. लिङ्गनाश प्रतिषेध

कफज लिङ्गनाश साध्य है।

पर्याय– नीलिका, पटल, माध्यम

उपद्रव– ६

१. आवर्तकी – श्वेत अरूण आवर्त (Circles)

२. शर्करा – अर्कक्षीर में रेशे बनने पर बने कूर्चिका पिण्ड वत (दानेदार)।

३. राजीमती – शालि शूक जैसी रेखाओं से आवृत

४. छिन्नांशुका – छिन्न, विषम, दग्धाभ; सरूक्

५. चन्द्रकी – कांस्य छाया, चन्द्रक संस्थान (मोर पंख चंद्रिकावत)

६. छत्रकी – एक वर्ण न हो, छत्रनिभ।

अवेध्य– उपद्रव युक्त, सिराव्यध अयोग्य (सू० ३६/८), तृट्, पीनस, कास, अजीर्ण, भीरू; वमित के शिर, कर्ण, अक्षि में शूल होने पर; नात्युष्णशीतवाताभ्रे – अति उष्ण/अतिशीत में वायु और बादल होने पर; असम्पूर्ण नीलिका।

असंजात नीलिका (Incomplete Cataract)–

असंजाता हि विषमा दधिमस्तु तनुश्च सा ।
शलाकयाऽवघृष्टापि पुनरूर्ध्वं प्रपद्यते ।।
करोति वेदनां तीव्रां दृष्टिं च स्थगयेत् पुनः ।।५।।

विषम, दही के मस्तु (जल) सा पतला (Incomplete Protein Changes); शलाका से अवघृष्टन (Limbus पर Rod रखकर हल्का दबाना) से पुनः ऊपर आता है, तथा तीव्र वेदना व दृष्टि स्थगन (कुछ समय के लिये न दिखना) करता है।

→ कफ वर्द्धक आहार से यह शीघ्र सम्पूर्ण होता है फिर निष्क्षेक्ष्य (रोगी देखकर अंगुलियों की संख्या न जान सके) होने पर वेधन करे।

→ वात पित्तल आहार– चिर (देर में पूर्ण होना), उपद्रव होना।

शस्त्रकर्म–

१. स्नेहन

२. विरिक्त (वमन, विरेचन)
३. रात्रि में घृत युक्त आहार
४. प्रातः निर्मल दिन में, बिना कुछ खिलाये।

पूर्वकर्म–
- सज्जोपकरण (Ready Instruments), स्वस्त्ययन करे, सूर्य, विदेहाधिपति (निमि/जनक) को प्रणाम करे।
- निवात, प्रकाश युक्त स्थान में, बिठाये किञ्चिद् उत्तान (Light Supine posi.) दोनों टांगे फैली, हथेलियां भूमि पर। पीछे से परिचारक शिर पकड़ कर स्थिर रखे।

[Operation table के द्वारा Upper body को हल्का सा raise कर इस position को achieve कर सकते हैं।]

५. नेत्र स्वेदन (वाष्प से हल्का)
६. आंख बंद कर पलक को अंगुष्ठ तल से हल्का मले
} दोष निर्हरण आसान।

७. **प्रधान कर्म–**

I. आंख को Lt. thumb व Index fing से खोलकर (or already Lid fixation), Rt. thumb Index व Middle finger से वेधन शलाका ग्रहण करे।

II. कृष्ण भागाद्भागद्वयस्यापाङ्गादेकभागस्य च सङ्गमे
दृष्टे रार्जवं नात्यूर्ध्वमधोवा नेत्रसहजन्मनि सन्धौ विध्येत् ॥७॥

वेधन स्थल– कृष्ण भाग (Cornea) के २ भाग तथा अपाङ्ग (Temporal Side Sclera) के १ भाग के Junction पर [Incise 10-2 O'clock at Limbus- outer margin] ।

दृष्टि का निष्कम्प हस्त से ऋजु (Straight) वेधन करे, न ऊपर, न नीचे, सहज (स्वाभाविक उत्पन्न) सन्धि में करे।

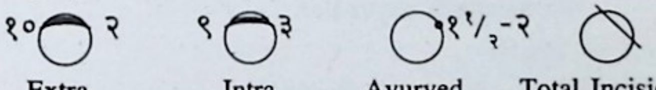

Extra Capsular — Intra Capsular — Ayurved Vedhan — Total Incisionat Limbus

For Lt eye; Temporal Side

सम्यक् विद्ध लक्षण– वेधन में शब्द होना
अम्बु बिन्दु स्रुति (Liquid drop आना)

प्रविष्ट मात्रां च शलाकां धारयेत्।

III. शलाका को प्रविष्ट मात्र कर रोक ले, तथा स्तन्य से सेच करे, इससे राग, अश्रु, वेदना उत्पन्न नहीं होते।

IV. रोगी को आश्वासन देकर

V. भ्रमयन् शलाकामादृष्टिमध्यात् प्रवेशयेत् ॥९॥
शलाका को भ्रमण कराते (घुमाते) हुये दृष्टि के मध्य में प्रवेश करे।

VI. अधश्चास्यावलोकयतो लिङ्ग नाशमद्रुतमविळम्बित-
मनुसुखमधोमुखपनयेदुच्छिङ्घयेच्चैनम् ॥१०॥
रोगी के नीचे को देखते हुये लिङ्गनाश को न जल्दी, न धीरे सुखपूर्वक नीचे से लाकर, शलाका को धीरे-२ घुमाते हुये आकर्षण करे (खींच लाये) (Intra capsular extraction) ।

VII. स्रस्त कफ (Pieces) का विशोधन करे।
दृष्टि शुद्ध होने पर अंगुलि, तन्तु, संतान दिखाये।

८. **पश्चात् कर्म–**

I. सुखोष्ण घृत प्लोत (लगा) पिचु रखकर बांध दे।

II. निवात में तकिया लगाकर लेटे–
- वाम अक्षि – दायें पार्श्व
- दक्षिण अक्षि – वाम पार्श्व
- उभय अक्षि – उत्तान।

III. यथा शक्ति उपवास।

त्यांज्य–
- ३ दिन– उद्गार, क्षवथु, कास, निष्ठीवन उत्क्षेपण (थूक फेंकना)।
- ७ दिन– स्नान, अम्बुपान, दन्तधावन, मुख नीचे को कर बैठना।

IV. स्नेहविधि पालन (सू० २५/४१-४४)।

V. मूर्ध्नि व पाद पर घृताभ्यंग।

- **व्रणोपचार–** ३रे दिन आंख खोलकर

परिषेक–
- एरण्ड पत्र सिद्ध/श्रृत उष्ण दुग्ध/जीवनीय सिद्ध क्षीर/घी।
- लघुपञ्चमूल सिद्ध दूध/घी।

पूर्ववत (पट्टी) बांध दे।

७ दिन पूर्ण होने तक नित्य यही उपक्रम करे।

७वें/१०वें दिन सर्वथा मुक्त कर दे।

आहार– • त्रिकटु, आंवला युक्त द्रव भोजन, अल्प स्नेह, लवण। वाट्य/विलेपी उष्ण जल से। – रूक्, राग आदि नहीं होते।

[वाट्य– छिलके उतारे जौ को भूनकर १४ गुने जल में पकाकर, ऊपर का द्रव छान ले, यह वाट्य है। (शा०म०ख०२)]

उपद्रव–

१. रूज्, राग–
- मुलेठी, कुष्ठ, कमल, द्राक्षा, लाक्षा, शर्करा सिद्ध अज पय से आश्च्योतन।
- शिर वक्त्र लेप– शारिवा, गैरिक, यव, दूर्वा + घृत।
- आहार– वातघ्न सिद्ध दूध, जांगल रस + जीवनीय।
- सिराव्यध, अधिमन्थ चि० (Glaucoma)।

२. पाक–

३. व्यध दोष → अभिष्यन्द, अधिमन्थ आदि।

वेधन दोष व चि०– अध ऊर्ध्व कृष्णासन्नमपाङ्गासन्नं सिरा व्यधश्च।

	व्यध दोष	**लक्षण/उपद्रव**	**चिकित्सा**
१.	अध: व्यध	अतिशूल, अश्रु, राग शलाका पर बहल (घन) पिच्छिल उपलेप, कृष्ण भाग में वलि (Folds in Cornea) व उपचय (Depression), नयन स्राव।	असाध्य।
२.	ऊर्ध्व व्यध	अतिरूक्	उष्ण घृत परिषेक, वातघ्न।
३.	कृष्ण भाग के निकट	पटल अपनयन (वर्त्म बंद करने में रगड़) से सुख नहीं। कृष्ण भाग में रूजा। दृष्टि भी रक्त आच्छादित तथा कृष्ण मण्डल (घेरा) होना (/Redish Cornea & pupil region)	घृत परिसेक, विरेचन, रक्त मोक्षण।
४.	अपांग के निकट	शोफ, शूल, तोद, भेद, अश्रुस्राव	घृत सेक, उपवास भ्रुवों के अन्तर (मध्य) में दाह (भ्रुवोरन्तरे च दाह:)।
५.	सिराव्यध	रक्त आना, विविध वेदनाएं	स्तन्य, मधुक (मुलेठी) पक्व घृत से परिषेक। अपाङ्ग में दाह।

- सिरा जाल होने पर पहले उसे हटाये फिर आंख में बल आ जाने पर स्निग्ध कर वेधन करे। (Scleral disease)।

शलाका भ्रमण दोष– ५ – क्षोभणमूर्ध्वमधोऽत्यर्थदृष्टिघट्टनमतिदृष्टिप्रेरणं च ॥२४॥

	दोष	लक्षण/उपद्रव	चि०
१.	क्षोभण	स्पन्दन, तोद, भेद, परिमन्थ (पूरी आंख में मथने जैसा दर्द)।	मुलेठी पोटली मृदित (मली) घी से परिषेक, जलोका।
२.	ऊर्ध्व प्रणयन (ऊपर जाना)	राग, अतिवेदना	उपवास, घृत सेक
३.	अधो	शूल, रक्त आना	क्षोभण वत चि०
४.	अत्यर्थ दृष्टि घट्टन (रगड़)	आकुल दृष्टि	• सर्पिमण्ड अनुवासन, • नावन।
५.	दृष्टि के आगे अधिक शलाका पहुँच जाना	रक्तस्रवण, रक्ताभ रूपदर्शन।	सर्पि सेक, उपवास, जलौका।

लिङ्गनाश दोष– ५– लिङ्गनाशदोषास्तु स्फुटनमवगळनं
विस्तरणमुत्प्लवनं लीनता च॥२५॥

१. **स्फुटन–** शलाका के स्पर्श से ही लिङ्गनाश फट जाना।
   I. एरण्ड पत्र से स्विन्न कर खण्डों (Pieces) का शोधन करे।
   II. पिप्पली, सैंधव, मधु से अवपीडन।

२. **अवगलन–** शलाका निकाल कर (I) स्तन्य परिषेक (II) सोंठ, गुड़ से अवपीडन। (III) जलोका।

३. **विस्तृत–**
स्वेद – सुखोष्ण जल से भीगे वस्त्र से।
प्रतिमर्श – घृतमण्ड।

४. **उत्प्लवन (Jump)–**
I. ठंडा जल छिड़कना
II. छींक लाना (उच्छिङ्कन)
दोष स्थिर/चल – III. भङ्गपत्र स्वेद
IV. शलाका निर्हरण। फिर भी उत्प्लवन होने पर स्नेह पान, नस्य आदि देकर पुनः शलाका डाले। यदि अब भी उत्प्लवन हो तो– भ्रुवोरन्तरे दाह।

५. **लीन–** बाहर लाते समय दृष्टिमण्डल में लीन हो जाना।
क्षीर से नाड़ी स्वेद।
प्रतिमर्श – सौंफ, मुलेठी + घृत।

वेध्य अक्षि में कार्य नियम–

- सद्योविद्ध – स्वेदन, दाह, प्रतिमर्श, सेचन।
- ३रे दिन – अवपीडन, जलोका
- ७वें दिन – सिरामोक्ष, विरेचन, बस्ति
- दृष्टि स्थिर होने तक – पथ्य; सूक्ष्म, दीप्त रूप सहसा न देखे।

शलाका दोष– ८

१. स्थूलाग्र	-	विशाल व्रण	५. कुण्ठित	-	रूज (Blunt)
२. तनु अग्र	-	पटल उत्प्लवन	६. विषम	-	अश्रु
३. तीक्ष्ण	-	अन्त: क्षत	७. ह्रस्व	-	दुर्ग्रहण (पकड़ने में असुविधा)
४. खर	-	रूज	८. दीर्घ		

विद्ध अक्षि में अञ्जन–

- अरहर मूल, मरिच, हरताल, रसाञ्जन, गुड़ की वर्षाजल से बनी वर्ति।
- **पिण्डाञ्जन–** चमेली, शिरीष, धव, मेष शृंगी, पुष्प; वैदूर्य, मोती को अजाक्षीर से पिष्ट कर ताम्र पात्र में पतला लेप करे। ७वें दिन इसे पुन: अजाक्षीर से पीसकर छाया शुष्क करे।
  गुण– दृष्टि में निर्मलता व बल लाना।
- स्रोतांजन, प्रवाल, मन:शिला, समुद्रफेन, मरिच से इसी प्रकार बनाये।

१८. सर्वगाक्षिरोग विज्ञानीय

सर्वगाक्षि रोग– १६

१-४ अभिष्यंद– ४ – V, P, K, R, – (Conjunctivitis).

५-९ अधिमंथ– ५ – V, P, K, R, हताधिमंथ, – (Glaucoma).

१०. अन्यतोवात, ११. वातपर्याय, १२. अल्पशोफ, १३. अम्लोषित १४.शुष्क अक्षिपाक, १५. सशोफ अक्षिपाक, १६. अक्षिपाकात्यय।

- त्याज्य–२– हताधिमन्थ, अक्षिपाकात्यय।
- मिथ्याचार से V-5, K-7, R-3 दिन तथा पित्तज अधिमन्थ– सद्य: **दृष्टिनाश।**
- अभिष्यन्द → अधिमंथ

  V ⟶ V → हताधिमंथ

  (उपेक्षा)

  P, K, R ⟶ P, K, R,

- V- अन्यतोवात, वातपर्याय
  V-P – शुष्काक्षिपाक
  S.R., – सशोफअक्षिपाक।

अम्लोषित– पित्त रक्तोल्वण त्रिदोष– अन्नरस → अम्लीय → सिरा → नेत्र

	रोग	लक्षण
१.	वात → अभिष्यंद ↓ उपेक्षा	नासानाह, अल्पशोफ, तोद; शुष्क व अल्प मैल, पलक चलाने में कष्ट, सूक्ष्म शल्यों से पूर्ण सी प्रतीत होना; स्निग्ध उष्ण से आराम।
२.	V अधिमन्थ ↓	कर्णनाद, भ्रम, मथने जैसी पीड़ा (माथा, आंख, भ्रू आदि में)।
३.	हताधिमन्थ	अनेक वेदनाएं, दृष्टि में दृष्टिहर व्रण।
४.	अन्यतोवात (Trigeminal neuralgia)	वात से मन्या (Dorsolateral Muscles of Neck), शंख (Temporal region) में तथा इनके पास में तीव्र वेदना। आंखों में राग, शोफ, अपैच्छिल्य, सङ्कोचयति पर्यश्रु (अश्रु न आना)।
५.	वातपर्याय	उपरोक्त वेदना, नेत्र टेढा/छोटा।
६.	पित्त → अभिष्यन्द ↓	दाह, शोफ, क्लेद, अश्रु उष्ण, राग पीताभ दर्शन।
७.	P. अधिमंथ	अंगारपूर्ण, यकृत्पिण्ड समप्रभ।
८.	कफ → अभिष्यंद ↓	जाड्य, शोफ, कण्डू, निद्रा; स्रांद्र स्निग्ध बहुश्वेत पिच्छा वद् दूषिका (मैल); अश्रु।
९.	K. अधिमंथ	Cornea depressed & sclera elevated. धूल भरा सा दिखना। नासा से स्राव व आध्मान।
१०.	रक्त → अभिष्यंद ↓	पित्ताभिष्यंद वत; रक्तमण्डल दर्शन।
११.	R. अधिमंथ	ताम्र वत, उत्पाटन (उखाड़ने) जैसी रूक्, बन्धूक (दुपहरिया) निभ राग, स्पर्शनाक्षम (Tender), कृष्ण-अग्न्याभ दर्शन; रक्त में डूबी सी।
	→	सभी अधिमंथों में शंख, दन्त, कपोल, कपाल (Head) में अति रूक् होती है।

१२.	वात-पित्त → शुष्काक्षिपाक	घर्ष, तोद, भेद; वर्त्म-रूक्ष, कठोर; विकूणन, विशुष्क, शीतेच्छा; पाकवत शूल। (Uveitis) ।
१३.	सशोफ अक्षिपाक (Panophthalmitis)	त्रिदोष + रक्त → शोफ, अतिरूक्, दाह। शुक्लमण्डल (Sclera) – पक्वोदुम्बरसङ्काश। अश्रु– बार-२, उष्ण शीत विशद पिच्छिल अच्छ घन।
१४.	अल्प शोफ	उपरोक्त लक्षण कम। (Endophthalmitis) ।
१५.	अक्षिपाकात्यय	शोफ, संरम्भ, गंदे अश्रु; दाह, दर्शन संरोध (न दिखना) । कृष्ण भाग कफ पूर्णत्व तथा श्वेत भाग में क्लेद व राग। (Whitish Cornea & Reddish Sclera)
१६.	अम्लोषित	श्याव लोहित नेत्र; शोफ, दाह, पाक, अश्रु; आविल (धुंधला) दर्शन।

[सुश्रुत ने सर्वगत १७ रोग बताये हैं, इनमें अक्षिपाकात्यय नहीं है तथा सिरोत्पात Angio neurotic oedema of eye व इसकी उपेक्षाजन्य सिराप्रहर्ष Orbital cellulitis वर्णित है।]

१९. अभिष्यन्द प्रतिषेध

पूर्वरूपावस्था में ही वातज रोगों के अतिक्ति सभी में – शिरोविरेचन, धूमपान, कवलग्रह, उपवास।

सभी रोग में **बाह्य लेप**– चंदन, मरिच, तमालपत्र, एला, स्वर्णगैरिक, तगर, रसौंत, सैंधव, मुलेठी।

- वात पित्त– दारूहल्दी, तुत्थ, हरड़ का लेप।
- कफ – हरड़, सोंठ, रसौत, स्वर्ण गैरिक लेप।

अभिष्यन्द– ऊर्ध्वजत्रुगत सभी स्रोतों का स्यन्दन करने से।

अधिमन्थ– ऊर्ध्वजत्रु स्थित अंगों का मन्थन करने से।

अभिष्यन्द से होने वाले प्राय: सभी अक्षि रोग रक्त को दूषित कर के होते हैं, अत: इनकी शीघ्र चि० करे।

वातज अभिष्यन्द–

I. आश्च्योतन– • दारूहल्दी – १ पल + जल – १/२ प्रस्थ → क्वाथ १/८ शेष + मधु।
• एरण्ड मूल व पत्र पक्व अजाक्षीर।

II. स्नेहन– पुराण घृत पान।

III. स्वेदन– रास्ना, शतावरी, दशमूल, बला, बेर, कुलत्थ, यव, को अजाक्षीर में उबाले। इसकी वाष्प से स्वेद/नाड़ी स्वेद दे।

IV. रक्त मोक्षण– वातदुष्ट रक्त निर्हरण।

V. स्नेहन।

VI. विरेचन– तिल्वक कषाय + घृत।

VII. आस्थापन, अनुवासन – (वात प्रतिश्यायवत) ।

VIII. नस्य–
- स्वेदन द्रव्य सिद्ध तैल/घृत।
- एलादि गण क्वाथ + मुलेठी कल्क, क्षीर → सिद्ध तैल; – इसी से शिरोवस्ति।

IX. तर्पण– पीड़ा शान्त न होने पर।
- गम्भारी, मुलेठी, कुमुद, उत्पल (नीला कमल), एरण्ड, पूग, कुष्ठ, बृहती, तमाल, जटामांसी, सारिवा, प्रपौण्डरीक (स्थल पद्म), दर्भमूल, कसेरू सिद्ध दूध से।

- **वर्ति–** गाय की अम्ल दधि का सर (मलाई) लेकर चांदी के पात्र में लेप करे। नीला हो जाने पर सुखाकर मस्तु के साथ वर्ति बनाये, इन्हें छाया शुष्क कर ले। इनका अंजन करे।

प्रत्यञ्जन– स्फटिक, शंख, मुलेठी, गेरू को इक्षु रस से पीसकर वर्ति बनाकर। सभी वात रोगों में यही चिकित्सा करे।

वातज अधिमन्थ–
- उपरोक्त।
- कटसरैया, बिल्व आदि क्वाथ, सक्षीर, घृत सिद्ध कर पान।
- भ्रू में दाह।

पित्तज अभिष्यन्द व अधिमन्थ–

I. स्नेहन– शर्करा युक्त घृत पान।

II. आश्च्योतन– चंदन, मुलेठी, लोध्र, मंजीठं, स्वर्ण गैरिक क्वाथ + मधु।

III. सिरा मोक्षण।

IV. स्नेहन पुनः कर विरेचन– त्रिफला, गम्भारीक्वाथ + शर्करा, निशोथ चूर्ण।

V. मधुर रस क्रिया – (श्लो० ३६) ।

VI. नस्य – मुलेठी + इक्षुरस।

कफज अभिष्यन्द व अधिमन्थ–

३ दिन उपवास, तीक्ष्ण – धूम, कवल, नस्य।

आश्च्योतन – शिग्रु पल्लव रस + मधु।

परिषेक– नीम, परवल, चमेली पत्र, लोध्र द्वय, सोंठ चूर्ण को पोटली में बांधकर मधुयुक्त गौड़/शीधु में भिगोकर।

स्वेद– कैथ, करंज, बिल्व, सहजन, तुलसी, अर्क, नीम के पत्र गोमूत्र में स्वित्र कर वाष्प स्वेद।

धूपन– नाड़ी द्वारा।
जौ, मदन, भोजपत्र, शमीपत्र + घी।

- लघु आहार देकर दूसरे दिन प्रातः –

स्नेहन– सोंठ, मरिच, पिप्पली पक्व घृत + यवक्षार चूर्ण – पान।

- सिराव्यध, विरेचन।

कुमारी वर्ति– हरीतकी तुत्थ – समभाग (१:१) } जल से वर्ति बनाये।
(श्लो० ४५) मरिच चूर्ण – १/८

- **चूर्णाञ्जन/पिण्डाञ्जन–** मुलेठी + त्रिफला क्वाथ।
  – कफज अभिष्यंद व पोथकी हर।
- कासीस $\xrightarrow[\Delta]{}$ पुष्प → चूर्ण, को ताम्रपात्र में रख १ सप्ताह तक तुलसी रस की भावना दे। इसके अंजन से वर्त्म उपचय व पक्ष्मशात ठीक होता है।
- **काण्ड चित्रावर्ति–** (श्लो० ४९) – सैंधव, त्रिकटु, त्रिफला, विडंग, लोध्र, प्रपौण्डरीक, मुलेठी, तुत्थ, रसाञ्जन, ताम्र चूर्ण को अजाक्षीर पिष्ट कर, भृंगराज स्वरस से भावना देकर बनी वर्ति। – सर्वरोग हर।

कण्डूहर– मन:शिला, सैंधव, श्वेत मरिच – मातुलुंग रस से पीसकर → वर्ति।

तर्पण व रसक्रिया– करञ्ज, लहसुन, सहजन बीज व त्वक् से।

रक्तज अभिष्यन्द व अधिमन्थ– पित्त वत।

- **आश्च्योतन–** स्तन्य/इक्षुरस/शर्करोदक (5% Dextrose Soln.) ।
- रक्तमोक्षण– बार-२; सिराव्यध/जलौका।
- उत्तम मात्रा में घृत पान – वेदनाहर।
- स्नेहाञ्जन – (श्लो० ५६) ।
- नस्य– मुलेठी, शर्करा, नीलोत्पल, स्तन्य सिद्ध घृतमण्ड।

अभिष्यन्द	अक्षिसेचन
V	एरण्ड, बृहती, मधुशिग्रु, वृहत् पंचमूल क्वाथ।
P } R	दारूहल्दी, लाक्षा, उत्पल, द्राक्षा, मंजीठ, मुलेठी द्वय क्वाथ + मिश्री।
K	त्रिफला, सोंठ, नीम, लोध्र, वासा क्वाथ
S	समस्त द्रव्य मिलित।

सर्व अभिष्यन्द वेदनाहर– तुत्थ, व्योष, अभया, लोध्र, मुलेठी, को कांजी में पीसकर ताम्र पात्र में रख ले।

अभिघात रूजाहर– हल्दी द्वय, त्रिफला, मुस्ता को स्तन्य पिष्ट कर + शर्करा, मधु – ताम्र पात्र में रखकर, परिषेक करे।

रसक्रिया– कृष्ण सर्प वसा, मधु, आंवला रस। सर्व रोग, काच, अर्म।

अपराजिता वर्ति– रसाञ्जन १ भाग
आर्द्रक २ भाग
हरड़ ४ भाग
तुत्थ ८ भाग
} वर्षा जल से पीसकर → वर्ति।

गुण– वातज के अतिरिक्त शेष अभिष्यंद, तिमिर, कुकूणक, पोथकी, पिल्ल, अर्महर।

→ मरिच, सैंधव (१:१) + पिप्पली, समुद्रफेन (२:२) + सौवीरांजन (९) – चित्रा नक्षत्र में चूर्ण करे। कफज अक्षि रोगहर अंजन।

षण्माक्षिक योग–

मरिच, आंवला, शंख, तुत्थ, अंजन, स्वर्णमाक्षिक (१:२:३:४:५:६) – तिमिर, अर्म, क्लेद, काच, कण्डूहर।

नित्य प्रयोगार्थ दृष्टिवर्धक अञ्जन–

पिप्पली, तगर, कमलपत्र, मुलेठी, हल्दी → वर्ति।

२०. अक्षिपाक पिल्ल प्रतिषेध

शुष्काक्षिपाक– वातभिष्यन्दोक्त घृत पान।

आश्च्योतन – दारूहल्दी, प्रपौण्डरीक क्वाथ।

– मंजीठ, मुलेठी, कालानुसारी, शारिवा, लोध, लाक्षा, प्रपौण्डरीक– राग हर।

– लोध्र, कोरण्टक (पीली कटसरैया) फूल क्वाथ – वेदनाहर।

नस्य – अणु तैल।

स्निग्ध तर्पण पुटपाक।

- वात व पित्त में से जो अधिक प्रबल हो उसी के अभिष्यन्द वत चि०।

अञ्जन–
- अभयाञ्जन – (श्लो-७)
- पिण्डाञ्जन (श्लो-८); स्नेहाञ्जन।

वस्ति– मुलेठी सिद्ध घृत मण्ड/क्षीर + सौंफ चूर्ण।

सशोफ, अल्प शोफ– स्नेहन, स्वेदन, सिराव्यध।

विरेचन– द्राक्षा, अभया क्वाथ + त्रिवृत कल्क, घृत।

आस्थापन

पिण्ड स्वेद– शिर पर (सू०अ० २६/८)

शिरोविरेक– सर्षप तैल – सैंधव/तुलसी + घी/अणु तैल।

अनुवासन– क्षीरसर्पि

धूमपान

स्वेदन– शिर व नेत्र का – सुनिषण्णक, पत्तूर, एरण्ड पत्र को दूध + जल में खौलाकर।

आश्च्योतन– लोध्र चूर्ण घी में भूनकर सूक्ष्म वस्त्र में पोटली बनाकर उष्ण जल में मले। इस जल से आश्च्योतन।

सन्धाव– शिग्रु (सहजन) पत्र रस ताम्र पात्र में रगड़, घी से धूपन करे।

- उपयोग अधिकतम ३ दिन।

सन्धाव के बाद स्तन्य से अनुसिञ्चन।

पिण्डाञ्जन– मुलेठी, बृहती त्वक्, ताम्र रज को अजाक्षीर से पीसकर; घृतलगे शमी, आंवला पत्र से अनेक बार धूप दे। – शोथ, वेदनाहर।

अम्लोषित– पित्ताभिष्यन्द वत।

पिल्ल– १८ – दीर्घ कालानुबन्धिनो रोगा: पिल्ल सञ्ज्ञा: ॥२६॥

अधिक समय तक बने रहने पर इन १८ को पिल्ल कहा जाता है–

१-४. उत्क्लिष्ट वर्त्म – पित्त, कफ, रक्त, निचय।

५. पोथकी, ६. विसवर्त्म, ७. कुकूणक, ८. पक्ष्मोपरोध, ९. पूयालस १०. शुष्काक्षिपाक ११. अल्पशोफ, १२. अम्लोषित

१३-१५. अभिष्यन्द P, K, R.
१६-१८. अधिमंथ P, K, R. } (Except V.) ।

– इनकी चि० पहले वर्णित है, पिल्लभूत (चिर) होने पर निम्नवत–

चि०– I. स्नेहन II. वमन III. संसर्जन क्रम IV. सिरामोक्षण
V. विरेचन VI. लेखन (वर्त्म) VII. जलोका } – बार-२ ।

बहि: विडाल लेप– प्रियंगु, लोध्र, पद्मकेसर, चन्दन, मुलेठी कल्क + मधु

नेत्र प्रक्षालन– • तुवरिका, (अरहर), त्रिफला, रोचना (गो) क्वाथ + मधु। – प्रात:सायं।
– कषाय वृक्ष पल्लव (पत्र) के कषाय से।
↳ इन्हीं से स्वेद [बीच-२ में]।

आश्च्योतन–

तुत्थ	– १ पल	ताम्र पात्र में घोले।
श्वेत मरिच	– २० पल	
धान्याम्ल पिष्ट (कांजी)	– ३० पल	• कई वर्ष पुराने रोगों हेतु श्रेष्ठ।

रसक्रिया– हरड़, अरहर + जल ८ गुना $\xrightarrow[\Delta]{}$ १/८ शेष → छाने
↓ Δ
कड़छी पर चिपकने लगने पर उतारे।

- रोपण गुण।

शीतअञ्जन– पलाश शाखा स्वरस $\xrightarrow[\Delta]{}$ + बृहती, खस चूर्ण → घट्ट।

- वच, हरताल, देवदारू – तुलसी रस से पीसकर अंजन।
- तुत्थ, गेरू को छाग पय में पीसकर गुटिका बनाये, इसका प्रत्यञ्जन करे। इसे दिव्योदक (या Distill water) में घोलकर आश्च्योतन करे।

पूयालस– चिर होने पर सूक्ष्म शलाका से दाह।

स्वस्थ पुरूष का नेत्र रक्षण– पुराण अन्न, मूंग (कफ, पित्तहर), घी; शाक, जांगल मांस, दाडिम, सिता, सैंधव, त्रिफला, द्राक्षा, वर्षाजल पान; छत्र व जूता धारण, दोष शोधन (पञ्चकर्म द्वारा)।

अपथ्य– वेगरोध, अजीर्ण, अध्यशन, क्रोध, शोक, दिवाशयन, रात्रिजागरण, धूप; विदाही, विष्टम्भी आहार।

द्वे पाद मध्ये पृथु सन्निवेशे, सिरेगते ते बहुधा च नेत्रे ।।४०।।

तलवे में २ चपटी सिराएं हैं जो कई प्रकार से नेत्रों में जाती हैं। अभ्यंग, उद्वर्तन आलेप आदि का वीर्य इनसे नेत्रों में पहुँचता है। मल, उष्णता, संघट्टन, पीडन आदि से दूषित हो ये नेत्र दूषण करती हैं। अत: सदैव जूता, अभ्यंग, तथा धावन अनुशीलन करे।

अक्षि रोग संख्या–

वर्त्म-२४, सन्धि-९, कृष्ण-५, शुक्ल-१३, दृष्टि-२७, सर्वग-१६। कुल-९४।

२१. कर्णरोग विज्ञानीय

कुल कर्ण रोग– २५ [सु०– २८; च०– ४]

	रोग	लक्षण ससंम्प्राप्ति
१.	कर्णशूल वातज	(रक्तज को पित्तज में अन्तर्भावित कर परिगणन) प्रतिश्याय, जल क्रीडा, कर्ण कण्डूयन (तीली आदि से), शब्द का मिथ्या योग आदि → वात कोप → कर्ण सिरा → कर्णस्रोत में शूल – अर्धावभेदक (Migraine), चिरपाक → अल्प लसिका स्राव, शून्यता, कभी खुला कभी बंद सा लगना।
२.	पित्तज	दाह, शीतेच्छा, ज्वर, शोथ, शीघ्र पाक → पीत लसिका स्राव – यह जहाँ स्पर्श करती है वहाँ भी पाक करती है।

३.	कफज	शिर हनु, ग्रीवा गौरव; मन्दरूज, कण्डू, शोथ,उष्णेच्छा; पाक → श्वेत घन स्राव।
•	रक्तज	अभिघात आदि → रक्त दुष्ट → पित्त से कुछ अधिक लक्षण।
४.	सन्निपातज	जाड्य, पाक → श्वेत कृष्ण रक्त घन पूय बहना। (Pus) ।
५.	कर्णनाद	V → शब्दवाही सिरा – अकस्मात् नाना शब्द।
६.	बाधिर्य	• कर्णनाद उपेक्षा से – • K + V – } ऊँचा व कृच्छ सुनना → बाधिर्य।
७.	प्रतिनाह	V → कफ शुष्क → स्रोत लिम्पन – रूक्, गौरव, बंद होना।
८.	कर्ण कण्डू	} स्थिर/चिर
९.	कर्ण शोफ	
१०.	पूतिकर्णक	P → कफ विदग्ध → अरूक्; घन, दुर्गन्धित, क्लेद युक्त, बहुत पूयस्राव।
११.	कृमिकर्ण	त्रिदोष दुष्ट कान → मांस रक्त क्लेद → जन्तु।
१२.	कर्णक्षत	क्षत (Injury) → विद्रधि।
१३.	,, विद्रधि	} दोषानुसार दर्द, दौर्गन्ध्य, बाधिर्य।
१४.	,, अर्श	
१५.	,, अर्बुद	
१६.	कूचिकर्णक	गर्भ में वात द्वारा शष्कुली (Ear pinna) को संकुचित कर देना।
१७.	पिप्पली	गर्भ में एक/अनेक पिप्पली वत मांसांकुर।
१८.	विदारिका	S → त्वक् वर्ण स्थिर शोथ, रूज– उपेक्षा → पाक →कटु तैल (सरसों) निभ स्राव → कृच्छरोहण → कर्णशष्कुली संकोच।
१९.	पालीशोष	V → सिरा।
२०.	तन्त्रिका	कृशादृढा च तन्त्रीवत् पाळीवातेन तन्त्रिका ॥१९॥ वात → पाली वीणावत कृश व दृढ।
२१.	परिपोट	सुकुमार कान का सहसा प्रवर्धन $\xrightarrow{V}$ पाली में अरूण शोफ, वेदना, त्वक् फटना।
२२.	उत्पात	भारी आभूषण का कर्ण धारण $\xrightarrow{P.\ R.}$ रूक्, श्याव, दाह, पाकवान **शोथ–** स्फोट, पिटका, राग, ओष, क्लेद युक्त।
२३.	उन्मन्थो-गल्लि	V.K → पालीशोथ (सर्व), – स्थिर, सवर्ण, कण्डू, अरूक्।
२४.	दु:ख वर्धन	दुर्विद्ध, वर्धित कर्ण– S → शोथ – सकण्डू दाह पाक रूक्।
२५.	लिह्या	K.R. → सूक्ष्म कृमि → पिटका – सकण्डू क्लेद, वेदना।

साध्यासाध्यता–

असाध्य–४– पिप्पली, सन्निपातज शूल, विदारी, कूचीकर्णक।

याप्य– १– तन्त्रिका

साध्य– शेष-२० ।

[सन्निपातज शूल– Perforated T.M. C̄ Sepsis]

२२. कर्णरोग प्रतिषेध

वातज कर्णशूल–

I. **स्नेहन–** वातघ्न सिद्ध घृत पान – दुग्ध अनुपान से, रात्रि में। कान पर स्नेह लेप।

II. **नाड़ी स्वेद–** कान का।
- बिल्व, जौ, बेर, कुलत्थ, उड़द, अर्क, शिग्रु पत्र क्वाथ से।

III. **कर्ण पूरण–**
- पीपल के तरूण पत्र/अर्क/एरण्ड/मूली/अग्निमंथ/बिल्व/स्नुही पत्रों में तैल व लवण लगाकर पुटपाक स्विन्न कर निचोड़ कर निकाले रस से।
- देवदारू/सरल की १८ अंगुल लम्बी लकड़ी के १/३ भाग पर तैल सिक्त वस्त्र (क्षौभ) लपेट कर जलाने से स्रुत स्नेह से।

IV. **धूमपान–** वर्ति– मोम, नीम (बकायन), मधु शिग्रु फली, जौ, वच, जटामांसी, एला, गुग्गुलु– सूक्ष्म पीसकर, श्योनाक नाल पर लगाकर।

V. **पिण्डस्वेद–** सर्वधान्य (जौ, गेहूँ, तिल, उड़द आदि) को स्नेह व गोक्षीर सिद्ध कर बनायी उत्कारिका को कान पर एरण्ड पत्र रखकर रखे।
- **परिहार्य–** प्रवात, शीताम्बुपान, शिरः स्नान।

पित्तज शूल–

I. **स्नेहन–** प्रातः घृत + शर्करा पान।

II. विरेचन

III. **कर्ण पूरण–** मुलेठी– (१) + जल (१६) $\xrightarrow[\Delta]{}$ १/८ शेष → छाने

\+ तैल (१/२)

स्नेह पाक $\xleftarrow{\Delta}$ + दूध (४)

मुलेठी, खस, शारिवा, काकोली, जीवक, दूर्वा, मृणाल, मंजीठ, लोध्र, चन्दन, भिस कल्क।

IV. **स्वेदन–** इन्हीं द्रव्यों से।

कफज शूल–

I. **वमन–** पिप्पली पक्व घृत/घी + मधु।

II. तीक्ष्ण धूम।

III. **कर्णपूरण–** देवदारू, चमेली पत्र का क्वाथ व कल्क सिद्ध तैल।

IV. **नाड़ी स्वेद–** धान्याम्ल (कांजी) क्वथित दशमूल वाष्प।

- कुश, आम, त्रिवृत, मांसी, शुण्ठी, मुस्ता पक्व तैल से कर्ण पूरण।

V. **गण्डूष–** कफघ्न।

रक्तज कर्णशूल– पित्त वत व सिरा व्यध।

सन्निपातज/स्राव– पाक होकर पूय आना। दोषानुसार– धूम, नस्य, गण्डूष, वमन।

I. पूय को प्रात: सायं पिचुवर्ति (Cotton stick) से साफ कर जौ, अगरू, घी, गुग्गुलु, मदन से धूपन कर मधु से पूरण करे।

II. रसक्रिया– बेर, सल्लकी, जामुन, धातकी, वट, प्लक्ष (पाकड़), गूलर क्वाथ से रसक्रिया बनाकर, इसमें भीगी वर्ति कान में रखे।

III. प्रक्षालन– उपरोक्त औषधि क्वाथ + मधु/कपित्थ स्वरस से/सुरसादि गण।

IV. अवचूर्णन (Dusting)– सुरसादि गण/उपरोक्त द्रव्य।

कर्णनाद व बाधिर्य– वात शूल वत चि०।

कफानुबन्ध होने पर प्रथम कफ हर वमन, नस्य, तीक्ष्ण धूमपान।

बाधिर्य–

असाध्य– बालवृद्ध क्षीण कास शोष चिर।

दोषानुबन्ध अनुसार स्नेहन, स्वेदन, नस्य, शिरोवस्ति, वस्ति।

I. स्नेहन– पुराण घृत/वातघ्न सिद्ध घृत।

II. स्निग्ध विरेक/संसर्जन। स्नेहन।

III. जलोका द्वारा कर्ण के पास रक्तमोक्षण।

IV. वस्ति, शिरोवस्ति, नस्य, धूम पान, कर्ण में तैल पूरण।

बिल्व तैल– (श्लो० ३०)– बाधिर्य हर।

तरूण बिल्व फल + गोमूत्र $\xrightarrow[\Delta]{}$ क्वाथ
+
दूध के साथ $\xleftarrow[\Delta]{}$ { मिश्री, मुलेठी, विजयसार बीज का कल्क
तैल ← तैल पाक
↓
गरम अवस्था में ही बिल्व के शीत क्वाथ में डालकर मथे } → तैल पिण्डीभूत → दूसरे बिल्व क्वाथ में डालकर मथे
फिर निकाले ↵
+
दूध– ८ गुणा

पाक ← { मुलेठी, चन्दन, एलादि कल्क } + { फिर निकाले + दूध– ८ गुणा }

क्षार तैल– (श्लो-३२)

शुष्क मूलक भस्म, यवक्षार, सर्जक्षार, हींग, सोंठ, सौंफ, वच, कूठ, देवदारू, सहजन, भूर्जपत्र, मुस्ता, सैंधव, सौवर्चल, विड, औद्भिद लवण, शुक्त, केला, बिजौरा रस के साथ तैल पाक।

गुण– शूल, नाद, वाधिर्य, कण्डू, शोफ, क्लेद, उपदेह, कृमि, पूतिकर्ण।

→ [कर्णपट (T.M) में छिद्र न होने पर इनसे पूरण करे।]

- कर्ण सुप्तता– सिरा व्यध। (सू० ३६/९)
- शोथ, स्राव, मन्दश्रवण – वमन।
- **प्रतीनाह–** (Hard ear wax)–
  स्नेहन, स्वेदन → wax क्लिन्न
  विशोधन – कर्णशोधन यन्त्र से
  पूरण– तैल/मातुलुंग रस/मधु + सैंधव।
- साफ करते समय वेदना/रक्त आने पर घृतमण्ड से पूरण व नस्य।
- मलपूर्णता (wax) होने पर भी यही उपचार।

कर्णकण्डू– कफघ्न तीक्ष्ण नस्य व धूम आदि; रूक्ष, तिक्त, कटु आहार।

कर्ण शोफ– उपरोक्त; कटु तीक्ष्ण उष्ण – लेप व परिषेक।

पूतिकर्ण } कर्णस्राव वत।
कृमिकर्ण– } क्रमिघ्न, सर्षप तैल पूरण, हरताल + गोमूत्र पूरण, बैंगन के बीज से धूपन।

कर्ण विद्रधि– I. वमन II. आम व पक्व विद्रधि वत चि०।

क्षतविद्रधि– पित्तज कर्णशूल वत।

कर्ण अर्श– नासार्श वत

कर्ण अर्बुद– नासार्बुद वत

विदारिका (आम)– कर्ण विद्रधि वत।

पालीशोष– वातशूल वत १. नस्य २. आलेप ३. स्वेदन

४. उद्वर्तन– तिल, चिरौंजी, मुलेठी, जौ, अश्वगंधा कल्क से।

५. अभ्यंग– मुलेठी, विदारी, सौंफ, अश्वगंधा कल्क
अश्वगंधा, बृहती, शतावरी– क्वाथ (८)
दूध (८)
} से तैल (१) सिद्ध करे।

६. फिर भी क्षीयमाण होते पाली के भाग को छेदन (Excise) कर विधिवत् सन्धान व यही क्रिया करे।

तन्त्रिका– पालीशोष वत चि०, नस्य, अभ्यंग।

परिपोट– • पालिशोषवत चि०,

• उपनाह– तिल, मुलेठी, प्रपौण्डरीक, सरसों घृत, दूध → उत्कारिका पकाकर।

उत्पात– जलोका, शीत प्रदेह। अभ्यंग–

• तिल, मुलेठी, सारिवा, उत्पल, लोध्र, कदम्ब, बला, आम, जामुन-पत्र; धान्याम्ल सिद्ध तैल।
• क्षीर सर्पि
• विसर्पोक्त घृत।

उन्मन्थ–

• तीक्ष्ण शिरोविरेक
• पालि उद्वर्तन – तिल, सरसों, लोध, निशाद्वय कल्क।
• लेप– तालीश पत्र, तेजपत्र, इलायची, कट्‌फल, रसाञ्जन।
• अभ्यंग– परवल, कुटकी, रसौत, शिरीष पक्व तैल।

दुःख वर्धन–

• परिषेक– जामुन, आम, अश्मन्तक पत्रक्वाथ।
• तैलाभ्यंग– लाक्षा, विडंग पक्व तैल।
• अवचूर्णन– मुलेठी, हल्दी, प्रपौण्डरीक, मंजीठ चूर्ण।

लेहिका पिटका–

स्वेदन– गोमय पिण्ड से।

लेप– कूटज, करन्ज, इंगुदी बीज; अमलतास त्वक – कल्क।

अभ्यंग– उपरोक्त द्रव्य + मरिच, निम्बपत्र, मोम से सरसों का तैल पकाकर। – व्रणहर।

परिदहन– जलोका, शीत लेप। (पिटकाओं में दाह होने पर)।

पाली रोग– (Diseases of Pinna)–

• प्रकोपक कारण त्याग।
• आवश्यकतानुसार स्नेह स्वेद शोधन अभ्यङ्ग प्रदेह नस्य रक्त स्रवण।

१. पच्यमान – सर्जरस (राल), अपामार्ग, पटोल, नीम, जलवेतस त्वक् लेप।
२. फटनशील – सहजन, अमलतास, करञ्ज, घी आदि से लेप।
३. श्यावता – हल्दी, रास्ना, निशोथ, अनन्ता, चौलाई मूल से लेप।
४. कण्डूमान – पाठा, अनन्ता, रसौत, मधु– लेप।
५. दाह – क्षीरि वृक्ष, जीवनीय कल्क + मधु, घृत – लेप।
६. व्रणित – जीवनीय + मधु – लेप।
७. कृश – गोधावराह वसा – लेप।

८. ग्रथित – • ग्रन्थि पाटन (Incision) कर लेखन (Scrapping) ।
• प्रतिसारण – पिप्पली, सैंधव, मधु।

९. स्रावक्ती – मधु, मधुक (मुलेठी), मधूक (महुआ), मधुपर्णी (गुडुची) – लेप।

विच्छिन्न कर्ण अनुसन्धान– [Plastic surgery/Reconstruction of Ear pinna (Injured → Excised)]– रोग (पालिशोष आदि) द्वारा कटे या बलात् कटे कर्णपालि को संधान (१५ बंध) करे।

इसमें ३ प्रकार की स्थितियां हो सकती है

१. कटे दोनों भाग (i) गण्ड से जुड़ा – गण्ड भाग व (ii) बाह्य भाग उपस्थित हों।
२. बाह्य भाग (पालि) नष्ट हो चुकी हो, गण्ड पालि जुड़ी हो।
३. सम्पूर्ण (बाह्य कर्ण) पालि नष्ट हो चुकी हो।

प्रथम व द्वितीय अवस्था में–

• कर्ण सन्धियां–१५ – स्थान विशेषानुसार नाम प्राय: हैं–

१. चक्रनेमि	६. व्यायोजिम	११. शुष्क शष्कुली
२. उत्पल भेद	७. गण्डाधार	१२. सङ्क्षिप्त पालि
३. कवाट	८. असङ्गिम	१३. हीन
४. अर्द्धकवाट	९. आहर्य– पालि न होना	१४. वल्लि
५. बल्लूरक	१०. निर्वेधिम– मांसल पीठ में आहार्य।	१५. यष्टि– ग्रथित, निर्मांस, सिरावृत।

इनमें बाह्य पालि भाग दीर्घ होने पर – आभ्यन्तर सन्धि;
गण्ड ,, ,, ,, ,, – बाह्य सन्धि;
दोनों भाग सम – सम सन्धि।

→ यदि गण्ड भाग में ही पालि हो तथा वह मोटी, चौड़ी व स्थिर हो तो उसका पाटन (बीच से चीरकर) कर, २ भाग कर, ऊपर से छेदन कर जोड़े। अथवा नयी पालि बनाये– संधान।

तृतीय अवस्था– संधान [Reconstruction] ।

• रोगी के केश बांधकर बंधन संधि का निश्चय करे।
• कर्ण (Base) पर छेदन/भेदन/लेखन करे तथा रक्त की शुद्धता-अशुद्धता (V, P, K दुष्ट) की जांच करे।
• गण्ड स्थान (कपोल प्रदेश) से रक्तसिरा व मांस युक्त भाग लेकर पालि बनाए।
• वय व दोष की समानता में कर्णपीठ को मध्य में सम लाकर स्थिर करे (पालि बनाये) व वर्धन करे।

[रक्त दोष परिहारार्थ व्रण प्रक्षालन – V – धान्याम्ल + उष्ण जल; P – दूध + शीताम्बु; K – वारूणी + जल]

- सीवन क्षौमसूत्र से करे।

कर्णसंधान के अयोग्य– अशुद्ध रक्त, अतिरक्त स्रावी, क्षीण रक्त (Anaemia), शोफ, राग, उष्ण समय, बिना देह शोधन।

नासा संधान–

१. छिन्न नासा में शोधनोपरांत कटी नासा के बराबर एक पत्र काटकर, उसके समान कपोल से मांस युक्त त्वचा लेकर (नासा के ही पास की) नासा के निकट रख (चिपका कर) सीवन करे।

२. नासाच्छेद (Excised)– लेखन कर त्वचा को ऊपर उलटकर कपोल की त्वचा जोड़कर सीवन करे। श्वास हेतु २ नाड़ी लगा दे। आम तैल परिषेक।
अवचूर्णन– लाल चंदन, मुलेठी, अंजन। शोणित स्थापन द्रव्य। मधु व घी लगाकर व्रणवत उपचार।

→ रोहण में अधिक मांस बढ़ जाने पर नासा का अपान्त (Margin) चर्म काटकर श्लक्ष्ण कर सिल दे।

३. सद्य: छिन्न नासा में दूसरा भाग रखकर सीवन करे।

→ हीन कर्ण व नासा का वर्धन करे (श्लो-८४)।

ओष्ठ संधान– नासावत, केवल नाड़ी प्रयोग नहीं।

२३. नासा रोग विज्ञानीय

कुल संख्या– १८ (याप्य– १- दुष्ट पीनस; साध्य- शेष)

सामान्य लक्षण– कृच्छोच्छ्वास, पीनस, क्षवथु, अनुनासिक स्वर, पूतिनास, शिरोव्यथा।

	रोग	निदान व लक्षण
	प्रतिश्याय (पीनस)	सम्प्राप्ति– ओस, वात, धूल, अति- भाष्य, स्वप्न, जागरण; अन्य देश का जल पीना, तकिया नीचा/अति उच्च, जलक्रीडा; वमन, अश्रु वेग धारण → वातोल्वण दोष प्रकोप → नासा → प्रतिश्याय → क्षय।
१.	• वातज	मुखशोष, भृशक्षव, नाक बंद, तोद (दंत, शंख, शिर), स्वरसाद, चिर पाक → शीत अच्छ कफ (पानी जैसा) स्रुति।
२.	• पित्तज	तृष्णा, ज्वर, पिटका (नासा में), भ्रम, नासाग्रपाक; रूक्ष उष्ण ताम्र पीत –स्राव।
३.	• कफज	कास, अरूचि, श्वास, वमन, गात्र गौरव, मुखमाधुर्य, नासा कण्डू, स्राव – स्निग्ध शुक्ल कफ स्राव।

	रोग	निदान व लक्षण
४.	• सन्निपातज	सर्वलक्षण, अकस्मात बढ़ना व घटना।
५.	• रक्तज	दुष्ट रक्त → नासासिरागत → प्रतिश्याय। ताम्र नेत्र, श्वास में दुर्गंध, उर: सुप्तता, कण्डू; पित्तज ल०।
६.	दुष्ट	उपरोक्त सभी– उपेक्षा → दुष्ट प्रतिश्याय। • ज्वर, श्वास कास, उर पार्श्व वेदना, मुख दुर्गंध • स्राव– पूय जैसा श्वेत-लाल ग्रथित कफ • कृमि– अणु, लम्बे, स्निग्ध, श्वेत।
	→ पक्व	लिङ्ग– अंग लाघव, छींक शमन, चिकना पीला श्लेष्म स्राव, रस व गंध ज्ञान न होना।
७.	भृशक्षव (सम्प्राप्ति)-२	•तीक्ष्ण सूंघना, सूर्य रश्मि, सूत्र आदि स्पर्श (Nasal Mucous membrane) → V↑ → तरूणास्थि क्षोभ (Nasal Cartilage) → भृशक्षव। • रूका क्रुद्ध घन (Compressed) वात → शृंगाटक में होकर लौटकर निकलते समय → अतिछीकें।
८.	नासिका शोष	कुपित वात → नासा कफ शुष्क। शूक पूर्णाभ, कृच्छोच्छ्वास।
९.	नासा नाह	कफ रूद्धवात → नासा स्रोत संवृत (Constriction) जैसा निश्वास उच्छ्वास संरोध।
१०.	घ्राणपाक	P → नासापुट (Nostril) त्वक् मांस पाक – दाह, शूल।
११.	नासास्राव	K → स्वच्छ जल वत स्राव, विशेषत: रात्रि में।
१२.	अवीनस	K → नासा स्रोत रूद्ध – सघुर्घुर श्वास, पीनस से अधिक वेदना, भेड़वत– सदा स्राव, प्रक्लिन्न नासा (आर्द्र) । 'अजस्र पिच्छिलं शीतं पक्वं सिंघाणकं घनम् ॥१५॥' निरन्तर चिपचिपा शीत पका (पीला) घन स्रवण।
१३.	दीप्ति	R → नासा दग्धवत; बाहर व अंदर से स्पर्शनासह (Tender), दाह।
१४.	पूतिनास	तालु मूल में दुष्ट मल (S) → मुख व नासा से दुर्गंधित V+K निकलना।
१५.	पूयरक्त	• निचय (S) } → नासा से पूय व रक्त स्रवण; शिर दाह, रूजा। • अभिघात }

	रोग	निदान व लक्षण
१६.	पुटक	P + K → नासा में वात रूद्ध → कफ शुष्क → पुट
१७.	नासार्श	दोषलिंगानुसार– मांस, मेद, सन्निपातज, (V., P., K., R.)।
१८.	नासार्बुद	

२४. नासा रोग प्रतिषेध

प्रतिश्याय– चि० सूत्र– (A) प्रतिश्याय पका (स्वेद, धूम आदि से) कर (B) निर्हरण (शिरोविरेक आदि) करके घ्राणपथ शुद्ध करे।

सामान्य चि०–

I. स्नेहन, स्वेदन, वमन, धूमपान, गण्डूष, स्निग्ध उष्ण भोजन, निवात।

II. पाचनार्थ– गुड़, आर्द्रक, क्षीर, त्रिकटु, अम्ल आहार। अजामांस।
धूम– घृताभ्यक्त सत्तू मिट्टी के पात्र में रख।

III. पक जाने पर, शिरोविरेचन, अवपीडन नस्य।

असेव्य– शीताम्बु – स्नान, पान; ऊंचा तकिया, बिना तकिया, क्रोध, शोक।

१. वातज–

(A) • स्नेहन– वातघ्न सिद्ध घृत + सैंधव, महाषट्फल घृत। – प्रात: पिये।
• आहार– स्नेह जीर्ण होने पर बाल मूली यूष। सर्वधान्य (मूंग आदि) यूष; सोंठ + दूध।
• स्वेदन– • शिर स्वेद / • नाड़ी स्वेद } पिप्पली, दशमूल, सोंठ, जौ, एरण्ड मूल क्वाथ सिद्ध दूध।
• वातघ्न आस्थापन, अनुवासन, शिरोवस्ति।

(B) • शिरोविरेचन– क्षवक (नकक्षिनी) चूर्ण, सैंधव + घी/तैल।

२. पित्तज–

(A) • स्नेहन– प्रात: घृत (शीत द्रव्य सिद्ध) पान। सुखोष्ण जल परिषेक।
└── • खस, पटोल, सारिवा, शतावरी, क्षीरी वृक्ष शुंग आदि का क्वाथ + मुलेठी, चन्दन, सिंघाड़ा, कसेरू, द्राक्षा आदि → घृतपाक।
• आहार– रस + सैंधव।
• विरेचन– द्राक्षा, पटोल, काश्मरी, मूर्वा, त्रिवृत क्वाथ + त्रिवृत, हरड़,सुपारी चूर्ण।
• शीत– स्नान, मुखलेप, कवल, धारागृह।

(B) • शिरोविरेक– पुराण घृत + सैंधव/घृतमण्ड + कट्फल।
आहार– शीतल दुग्ध से।

३. कफज–

(A) • स्नेहन– यवक्षार युक्त घृत – उष्ण जल से।
- आहार– तिल, उड़द, यवागू।
- वमन– उष्ण जल से।
- धूम, कवल– तीक्ष्ण; नाड़ी स्वेद। आहार– चना, जौ।

(B) • नस्य– क्षवक, विडंग, सैंधव सिद्ध तैल। आहार– सोंठ, मूंग, तैल, तीक्ष्ण, उष्ण।

घ्राण पथ शोधनोपरांत नस्य– देवदारू, सरल, काकोली, जीवक, मुलेठी, पिप्पली, सारिवा, दूध पक्व तैल।

४. सन्निपातज प्रतिश्याय– दोषाधिक्य वत।

नावन– रसाञ्जन, अतिविषा, मुस्ता, देवदारू सिद्ध तैल।

५. रक्तज प्रतिश्याय– पित्तज प्रतिश्याय वत तथा रक्तपित्त वत।

६. दुष्ट प्रतिश्याय/पीनस–

(A) स्नेहन– त्रिकटु, चित्रक, यवक्षार, विडंग, सैंधव आदि सिद्ध घृत – मधु से।
- जांगल मांस रस से भोजन देकर, कफ प्रति. वत चि०।

(B) नस्य– त्रिकटु, इन्द्रजौ, विडंग, जीरा, सैंधव से।
- विरेचन– भुना जौ, आम्रातक, जीरा, त्रिवृत– गोमूत्र में क्वाथ + हरड़, सोंठ, मरिच, सुपारी, सैंधव, यवक्षार, बिजौरा रस पान। – उष्ण जल से।
- घृत पान– मुस्ता, हल्दी, सोंठ, यवक्षार सिद्ध/हींग, यवक्षार, देवदारू सिद्ध।
- निरूह, अनुवासन – तीक्ष्ण। अरिष्ट पान।
- धूमपान– कोशाम्र पत्र, मूर्वा, अग्निमंथ, महापंचमूल, कटेरी, एरण्ड, मांसी, नीम, शिग्रु फल, सर्षप, विडंग, दन्ती, पूतिकरञ्ज, पिप्पली, वार्ताक (बैंगन) बीज; कनेर मूल त्वक्, पत्र, पुष्प, फल – घृताभ्यक्त कर। कृमिघ्न योग।
- वर्धमान पिप्पली उपयोग।

७-८. भृश क्षवथु, पुटक–

क्लेदन– नीम, कट्फल, कुष्ठ, मरिच चूर्ण से प्रधमन

नस्य– पिप्पली, कुष्ठ, सोंठ, विडंग, द्राक्षा कषाय, कल्क पक्व तैल/घृत से नावन।

९. नासाशोष–
- स्नेहन– बलातैल पान व शिरोवस्ति।
- स्वेदन।
- नस्य– क्षीर सर्पि।
- स्नैहिक धूम।

१०. **नासानाह–** नासाशोषवत, शिरोविरेक।

११-१२. **नासापाक, दीप्त–** जलौका मोक्षण; वमन, विरेचन, लेप, परिषेक – शीत।

१३. **नासास्राव–** तीक्ष्ण धूमपान।

१४-१५. **अवीनस, पूतिनासा–**
- नस्य– गुड़, मरिच, हिंगु, विडंग आदि से।
- कफ प्रति. वत– स्नेहन, स्वेदन, वमन।
- **नस्य** (वमनोपरांत)–
- निर्गुण्डी, शिग्रु, अग्निमंथ, फणिर्जक (फणिज्झक, अर्जक), क्षवक, सुरसा (तुलसी) पत्र पक्व सरसों तैल।
- लाक्षा, विडंग, पिप्पली, लौंग, क्षवक, हल्दी, कूठ; वच, करंज कल्क पक्व तिल तेल।

१६. **पूयरक्त–**

प्रारंभिक अवस्था– रक्त प्रतिश्याय वत।

प्रवृद्ध अवस्था– नाड़ी व्रण वत चि०; वमन, नस्य, धूम।

१७. **नासार्श (Nasal Polyp)–** • क्षार/अग्नि दग्ध।

स्थूल अर्श– शस्त्र से काटकर दाह कर शीत क्रिया।

नासा में रखने हेतु वर्ति– कुम्भ (त्रिवृत), निकुम्भ (दन्ती), चित्रक, सैंधव,पिप्पली, मन:शिला, हरताल कल्क → वर्ति बनाकर मधु व घी लगा ले।

नस्य–
- करंज, लोध्र, उत्पल, मुलेठी, तिन्दुकास्थि, त्रिफला, खदिरसार पक्व तैल।
- अरहर, बहेड़ा, हल्दी, लोध्र, प्रियंगु, करंज कल्क से गुड़ के पानी में पका तैल।

दोषानुसार स्नेहन, वमन, विरेचन आदि।

१८. **नासार्बुद–** बडिश से ग्रहण कर मण्डलाग्र से मूल सम छेदन (Excise) करे। कट जाने पर छींक दे [बाहर निकाले]। व्रण को स्वच्छ कर तप्त शलाका/तैल से दहन करे।

अग्निदग्धोपरांत शीतल प्रेदह।

नस्य– व्रण भर जाने पर।

- तीक्ष्ण, उष्ण लवण द्रव्य + गोमूत्र + लोध्र प्रक्षेप $\underline{\Delta}$ सरसों/करंज तैल।
- **पित्तज व रक्तज अर्बुद–**

  लेप– गोदन्त, सैंधव, हरताल, कासीस, कांस्य, नील जल में पीसकर। शीत प्रदेह, परिषेक। अभ्यंग, नस्य, पान– शीत सिद्ध घृत।

• मांस, मेद, सन्निपातज अर्श व अर्बुद– यही चि०।

प्रशस्त छेदन– सम। हीन छेदन– पुनः वृद्धि; अतिच्छेद– स्वर, गंध हानि, विसर्प, मूर्च्छा।

२५. मुख रोग विज्ञानीय

सामान्य हेतु व सम्प्राप्ति– मछली, भैंस, सुअर मांस, कच्ची मूली, उड़द सूप, दधि, दूध, इक्षु रस, फाणित अति सेवन, शिर नीचे रखकर सोना, दन्त साफ न रखना; असम्यक्क धूम, वमन, गण्डूष, सिराव्यध कफोल्वण दोष प्रकोप → मुख रोग।

	ओष्ठ रोग–११	
१.	खण्डोष्ठ	वात → ओठ के २ भाग (फटना) (Hare lip)
२.	ओष्ठ कोप	•V → ओष्ठ स्तब्ध, रूज, कठोर, खुरदरा, फटना।
३.	• P ,,	तीक्ष्ण, Tender, सरसों वत पिटिकाएं, क्लेद, शीघ्रपाकी।
४.	• K ,,	शीत असह्य, गुरू, शून (शोथ), सवर्ण पिटका युक्त।
५.	• S ,,	नाना वर्ण, दुर्गंधित स्राव, पिच्छिल; अकस्मात म्लान, शून, रूजा, विषमपाकी।
६.	• R ,,	शोणित प्रभ → रक्त स्रवण → खर्जूर सदृश, रक्तर्बुद।
७.	• मांसज ,,	मांस पिण्डोपम, क्रिमि उत्पन्न।
८.	• मेदज ,,	तैलाभ, शोथ, क्लेद, कण्डू, मृदु स्पर्श।
९.	• क्षतज ,,	ओठ बार-२ चटक कर फटना → ग्रथित, कण्डू।
१०.	जलार्बुद	V + K → जल बुद्बुद् वत (Hydrocyst) ।
	गण्डरोग– १	
१.	गण्डालजी	गण्ड का स्थिर शोफ, दाह, रूक् युक्त।
	दंतरोग– १०	
१.	शीतोदालन	V – उष्ण असह्य, शीत से रूजा। दालन (चीरने) वत।
२.	दन्तहर्ष	प्रवात; अम्ल, शीत भक्ष्य से; खट्टे से, दर्दयुक्त, व हिलते से प्रतीत।
३.	दन्त भेद	तोद, भेद, रूक्, स्फुटन। फटने पर असाध्य।
४.	चाल	दांत हिलना
५.	कराल	दांत कराल (बड़े/आगे को निकले) उत्पन्न होना।
६.	अधिदन्त	/खलवर्द्धन; सामान्य संख्या से अधिक निकलना, निकलते समय अतिरूक्, [(Extra tooth)] बाद में शमन।
७.	शर्करा	दन्त अधावन; मल/कफ $\xrightarrow[\text{वात से शुष्क}]{}$ शर्करा

		पूतिगंध, स्थिरीभूत (Hard tartar C̄ Bad Smell) ।
८.	कपालिका	शर्करा उपेक्षा जन्य, दन्त कपाल (Enamel) का अणु रूप में नाश।
९.	श्याव	R, P, V → दन्त श्याव (Blackish)
१०.	कृमिदन्तक	वातोल्वण त्रिदोष → दंत आश्रित → मज्जा शुष्क → सुषिर (Cavity) । अन्नमल, सुषिर में भरकर सड़ने से सूक्ष्म कृमि उत्पन्न (Bacteria) → पूय, रक्त दुष्ट। अकस्मात् तीव्र अर्ति, संरम्भ, असित (Black), चल (Movable) दांत निकालने पर (प्रलून) पूय, रक्त स्रुत।
	दंत मांस/ मूलगत–	
१.	शीताद (Gingivitis)	K. R. → दुर्गंधित (पूय युक्त) मसूढ़ों से रक्तस्राव। शीर्य दन्तमांस (Gum) – मृदु, क्लिन्न, काले।
२.	उपकुश	P.R. → पाक। (Pyorrhoea) दाह, लाल उभरे, कण्डू, रक्त स्राव; रक्त पूर्ण होने पर पुनः आध्मान। दांत– चल, मंद रूज। पूतिवक्त्र (दुर्गन्ध) ।
३.	दन्त पुप्पुट	K.R. → २/३ दांतों में घन शोफ (बदरास्थिनिभ) तीव्र रूक्, शीघ्र पाक (Epulis)
४.	दन्त विद्रधि	R.S. → दन्त मांस शोथ (Root abscess)– रूक्, दाह; भिन्न (फटने) होने पर पूय रक्त स्रवण।
५.	सुषिर	R.P. → दन्तमूलों में शोथ – रूजा, लालास्राव, दन्तमांस प्रशातन (विशेषतः नष्ट/गलना) ।
६.	महासुषिर	सुषिर + सन्निपात ज्वर – पूय रक्त स्राव, दंत बंधन शीर्ण। (Acute nectrotic gingivitis) ।
७.	अधिमांसक	K → दांतों के अन्त में कील वत शोथ; हनु, कर्ण, रूजा; खाने में कष्ट। (Inflammatory gum behind 8th tooth)
८.	विदर्भ	अभिघातज; दन्तमांस घृष्ट → संरम्भ, दंत हिलना।
९-१३.	दन्तनाड़ी	साध्य भी दन्तमांसाश्रित रोगों की उपेक्षा से → दोष अन्तःस्रवण → त्वक् मांस अस्थि प्रभेदिनी नाड़ी (सूक्ष्म)– मुहुः-२ पूयस्राव। भेद– ५ – V.P.K.S. शल्यजन्य।

	जिह्वागत– ६	
१.	V	शाक (सागौन) पत्र सम खर, फटी।
२.	P	दाह, ओष, लाल मांसांकुर पूर्ण।
३.	K	शाल्मली (सेमल) कण्टाभ, बहल (मोटी) ।
४.	अलस	K.P → जिह्वा के नीचे शोफ; पक्व → मत्स्यगंध → मांस गलना।
५.	अधिजिह्वा	K.P.R. → अध: प्रबंध (Frenulum) में जिह्वाग्र सन्निभ शोफ। लालास्राव, ओष, जाड्य, खर, कण्डू; वाक्, आहार में असमर्थ।
६.	उपजिह्वा	उपरोक्त शोफ, जिह्वा के ऊपर। पकने पर असाध्य।
	तालु रोग– ८	
१.	तालुपिटका	V → तालुमांस दुष्ट → पिटकाएं – रूज, खर, घनस्राव युक्त।
२.	गल शुण्डिका Uvulitis	R + K → तालु मूल में शोफ • मत्स्य वस्ति निभ, मृदु, लटकने वाला, पिच्छिल → कण्ठोपरोध, तृट्, कास, वमन; आहार → नासामार्ग।
३.	तालु संहति	तालु मध्य बिना दर्द का मांस संहत हो जाना।
४.	तालु अर्बुद	R → तालु मध्ये पद्माकृति शोथ
५.	कच्छप	K → कच्छपाकार चिर वृद्धि, अरूक्
६.	पुप्पुट	K, मेद → स्थिर शोथ – कोलाभ (बेर), निरूंज।
७.	पाक	P → पाक – पूय स्राव, महारूज।
८.	तालु शोष	वात पित्त ज्वर में आयास (परिश्रम) से।
	कण्ठगत–	
१-५.	रोहिणी– ५ भेद	जिह्वा प्रबंधजा: कण्ठे दारूणा मार्गरोधिन: । मांसांकुरा: शीघ्रचया रोहिणी शीघ्रकारिणी ॥४६॥ कण्ठ स्थित जिव्हामूल में मांसांकुर– दारूण, मार्गरोधी, शीघ्रचया (वृद्धि), शीघ्रकारी (मारक) ।
	V	कण्ठ, मुख शोष; हनु, कर्ण में रूक्।
	P	ज्वर, ओष, तृट्, कण्ठ धूमायन; शीघ्रवृद्धि,लाल,Tender.
	K	पिच्छिल, पाण्डुर।
	R	तप्त अंगारनिभ, कर्णरूक्, पित्त वत आकृति।
	S	गंभीर पाक, निचय, सर्वलिङ्ग।

६.	शालूक	कफोल्वण दोषों → कोलवत ग्रथित उन्नत शोफ। कण्ठ-शूक कांटे वत, मार्गरोध।
७.	वृन्द	गले के पार्श्व में वृत्त, उन्नत शोफ + दाह, ज्वर।
८.	तुण्डिकेरी (Tonsilitis)	"हनुसन्ध्याश्रित: कण्ठे कार्पासीफलसन्निभ: । पिच्छिलोमन्दरूक् शोफ: कठिनस्तुण्डिकेरिका ॥५०॥ कण्ठ में हनु संधि में आश्रित कठिन शोफ – कपास फल वत आभा; पिच्छिल, धीमी वेदना युक्त।
९.	गलौघ	कण्ठ मार्ग में अर्गल (परिध)वत; अंदर व बाहर घोर शोथ। ज्वर, लाला, शिरो गौरव, तन्द्रा।
१०.	वलय	गलौघ वत, कम वेदना, उन्नत शोफ।
११.	गिलायु	एक/अनेक मांसांकुर/कील; पृथु मूल; कृच्छ-उच्छवास, निगलना; अल्परूक्।
१२.	शतघ्नी	बहु मांसांकुर आवृत, तृट्, ज्वर, शिर: शूल। (शतघ्नी– गोला, जिसके चारों ओर कीले (Pins) लगी हों) ।
१३.	गलविद्रधि	समस्त गले में व्याप्त, शोथ– शीघ्र जन्म व पाक, महारूज, पूतिपूयनिभ स्राव (सड़न गंध वाला Pus) ।
१४.	गलार्बुद	गले के प्रारंभिक भाग में जिह्वा के अंत में शोथ– अपाकी, स्थिर, रक्तवर्ण नीरूज (Painless)।
१५.-१७.	गलगण्ड	पवन श्लेष्म मेदोभिर्गळगण्डो भवेत् बहि: । वर्द्धमान: सकालेन मुष्कवल्लम्बतेनिरूक् ॥५७॥ V.K. मेद → गले के बाहर, समय के साथ बढ़कर वृषण वत लटकने वाला, निरूक्।
	वातज	कृष्ण/अरूण, तोद, कृष्णराजि – वृद्ध → तालुगल शोष, मुख वैरस्य।
	कफज	स्थिर, सवर्ण (त्वक्वत), कण्डू, शीतस्पर्श, गुरू– वृद्ध → तालुगल लेप, मधुरास्यता।
	मेदज	कफवत; देह वृद्धि के साथ बढ़कर → शब्द, स्वर अल्पता/ भ्रंश।
१८.	स्वरहा	कफ रूद्ध वात → शुष्क कण्ठ, स्वरनाश, प्रयासपूर्वक श्वास।
	सर्वमुख रोग– ८	
१.	मुखपाक	(5 – V, P, K, R, सर्व) ।

	• वातज	V → सर्वमुख सञ्चरण → अन्तर्व्रण – अरूण, रूक्ष; ओष्ठ– ताम्र, त्वचा उतरना। जिह्वा– शीत असह्य, गुरू, फटी, कण्टकपूर्ण। मुख (Inner side of checks) पाक, खोलने में कष्ट।
२.	ऊर्ध्वगुद	अर्श, गुल्म, कफ (कृमि) आदि से अध: प्रतिहत → ऊर्ध्व वात → वक्त्र दौर्गन्ध्य (Foul odour) ।
३.	• पित्तज	P → मुखपाक – दाह, ओष; तिक्त वक्त्रता, व्रण वत वेदना।
४.	• रक्तज मुखपाक	– पित्तवत।
५.	• कफज मुखपाक	मधुरास्य, व्रण– कण्डू, पिच्छिल।
६.	अर्बुद	K → कपोल आश्रित अन्त: भाग में श्याव पाण्डु अर्बुद। छेदन आदि से बढ़ना (Malignant) ।
७.	सर्वदोषज मुख-पाक	S.R. → सर्वलिङ्ग।
८.	पूतास्यता	दातौन द्वेषी → मुख दुर्गंध।

संख्या– कुल ७५

ओष्ठ	–	११ (गणना में १० है)	जिह्वा	–	६
गण्ड	–	१	तालु	–	८
दंत	–	१०	कण्ठ	–	१८
दंतमूल	–	१३	मुख	–	८

साध्यासाध्यता– [असाध्य– २३; याप्य-२]

(A) **अनुपक्रमणीय/असाध्य–**

- ओष्ठ– S, R, मांसज कोप – (३)
- दंत– स्फुटित भेद, कराल, श्याव – (३)
- मांस/मूल– महासुषिर, सन्निपातज दंतनाड़ी – (२)
- जिह्वा– अलस, उपजिह्वा – (२) [सुश्रुत– १ – अलस]
- तालु– पिटका, अर्बुद, कच्छप – (३) [सुश्रुत– १ – अर्बुद]
- कण्ठ– S., R. रोहिणी, गलौध, वलय, शतघ्नी, गलार्बुद, स्वरघ्न/हा, गलगण्ड– मेदज में स्वरभ्रंश हो जाने पर, कृच्छोश्वास, १ वर्ष पुराण। –(८) [सुश्रुत– ९, (रोहिणी-S)] ।
- सर्वसर– ऊर्ध्वगुद, अर्बुद – (२)

(B) **याप्य–** दन्त हर्ष, भेद। – (२)

(C) **साध्य–** शेष (शस्त्र, औषधि प्रयोग)।

२६. मुख रोग प्रतिषेध

खण्डौष्ठ (Harelip)	I. स्नेहन, स्वेदन, दोनों खण्डों के अन्तों (Margins) को विलेखन कर सुश्लिष्ट कर क्षौमसूत्र से सीवन करे। शोधन, रोपण तैल– ज्योतिष्मती, लोध्र, मुलेठी/पटोल, कमल, मकोय, श्रावणी (छोटी मुण्डी)/सारिवा सिद्ध तैल। नस्य– वातघ्न मधुरौषध सिद्ध तैल।
वातज ओष्ठ कोप	देवदारू, गुग्गुलु, राल, मोम सिद्ध महास्नेह – अभ्यंग। नाड़ी स्वेद– एरण्ड पत्र क्षीर क्वथित। नस्य/शिरोभ्यंग– खण्डौष्ठ तैल।
P, अभिघातज	जलौका; लाल चन्दन, मुलेठी, गुडुची पक्व घी लेप।
रक्तज	अचिर की पित्तौष्ठ वत।
कफज	जलौका; लेप– त्रिकटु, पाठा, यवक्षार, सर्जक्षार + मधु। स्वेद, नस्य, धूम, कवल – कफघ्न। प्रतिसारण– मेदवत।
मेदज	स्वेदन, वृद्धिपत्र से विपाटन कर मेद निकालकर अग्निदग्ध करे। प्रतिसारण– कूठ, तगर, दंती, निशोथ, विड, हरताल, विडंग चूर्ण। रोपण तैल – जलार्बुद का।
जलार्बुद	भेदन, शोधन; प्रतिसारण– त्रिकटु, कुटकी, तेजबल; यव, सर्जक्षार सैंधव, कासीस चूर्ण + मधु। अवगाढ़ (Deep) अतिवृद्ध में – क्षार/अग्नि कर्म। रोपण तैल– हल्दी, लोध्र, मुलेठी, मालती, हरेणु (सम्भालु बीज), तगर पक्व तैल।
गण्डालजी	I. अपक्व– शोफ चि० II. पच्यमान– उपनाह III. पक्व–विदारण। व्रण वत उपचार।
शीत दन्त	I. स्वेद– उष्णाम्बु, II. ब्रीहिमुख से दन्त पालि लेखन, III. पिचु तैल से दहन। प्रतिसारण– प्रियंगु, जामुन की गुठली, अनार त्वक्, त्रिफला, रसौत, सैंधव, शुण्ठी, मुस्ता चूर्ण + मधु, घृत। गण्डूष– क्षीरी वृक्ष कषाय; नस्य– अणु तैल।
हर्ष, भेद	गण्डूष– वातघ्न सिद्ध तैल। स्निग्ध नस्य।
चाल	कवल– दशमूल क्वाथ + तैल, घी, वसा, मधु।

	प्रतिसारण– पिप्पली, सैंधव, तुत्थ, लोध्र, रक्तचंदन, स्रोतांजन, मुस्ता, त्रिफला चूर्ण। नित्य स्नैहिक धूम; भोजन– स्निग्ध, मधुर; विरेचन।
अधिदंत	I. क्षार लेप → दंत जर्जर II. पाटन (Extraction) रक्त बंद न होने पर दग्ध (Cauterisation); व्रण उपचार।
दन्त शर्करा	I. दन्त मूलों का बगैर पीडन किये, दन्त लेखन से शर्करा Tartar का विलेखन (खुरच कर हटाना) करे : II. क्षार तैल अवसेचन। प्रतिसारण– पाटली त्वक् चूर्ण। नित्य दंत धावन आदि तथा दंत हर्ष वत चि०।
कपालिका	– do –
कृमिदन्त	सुषिर (Cavity) को गुड़/मोम/घी से भरकर कुब्ज (मुड़ी) शलाका से दहन। सतवन/अर्क क्षीर पूरण।/सर्षप/करंज तैल। **रूजा हर–** हींग, विडंग, सर्जक्षार, कट्फल, कासीस, कूठ का Extract लगाये। इन्हीं से सिद्ध तैल का गण्डूष। **शांत न होने पर–** I. शस्त्र (Forcep) से पार्श्वों से मोक्षण (मसूढ़े को दांत से अलग) करे। II. दन्त निर्घातन (शलाका) से हिलाये (चल)। III. संदंश यन्त्र (Tooth forcep) से पकड़कर उद्धरण (Extraction) करे। यथा संभव ऊपर का दांत न निकाले, इसमें रक्त मोक्षण आदि करके देख ले। उत्तर दन्त उद्धरण → अतिरक्त स्राव → इन्द्रिय भ्रंश/वात व्याधि। **पश्चात कर्म–** मुख प्रक्षालन कर, गण्डूष– तैल + मुलेठी;/मधु। नस्य– विदारी, मुलेठी, सिंघाड़ा, कशेरूक से १० गुणे दूध में सिद्ध तैल। → ऊपर का दांत निकाल कर इस चि० के साथ, शीघ्र शीतोपचार करे।
शीताद	रक्त विस्रावण; गण्डूष– रसाञ्जन, मुस्ता, त्रिफला, अर्जुन त्वक्, प्रियंगु, सोंठ कषाय। प्रतिसारण– उपरोक्त द्रव्य + मधु। – • तेजबल, त्रिकटु, हल्दी, कूठ, पाठा, कुटकी, लोध्र, मजीठ, मुस्ता का चूर्ण। –मसूढ़े के सभी रोगों में कण्डू, शोथ, वेदना, रक्तस्राव नाशक।
उपकुश	उष्णाम्बु स्वेदन, उत्सन्न दन्तमांस का मण्डलाग्र से लेखन। गण्डूष– सुखोष्ण घृत मण्ड/तैल

	प्रतिसारण– मरिच, कूठ, मुलेठी, प्रियंगु, लाक्षा, लालचंदन, गेरू, रसौत, सोंठ, सैंधव + घृतमण्ड, मधु। नस्य, गण्डूष– पृथक्पर्णी, विडंग, विदारी, मुलेठी, मधुकपयस्या, देवदारू पक्व तैल। • बार-बार रक्तावसेचन।
पुप्पुट Epulis (≡ Gum tumour)	स्विन्न, छिन्न, भिन्न, विलेखन; [Tumour को Incise कर उसे काटकर सम्पूर्णतः (Excise) निकाल कर Scrapping करे] प्रतिसारण– सर्जीक्षार, मुलेठी, शुण्ठी, सैंधव।
दंत विद्रधि	1. पकने से बचाये। रूक्ष व शीत उपचार। कवल– तिक्त, कटु, कषाय, उष्ण द्रव्य (वीर्य)। 2. पक जाने पर– अवगाढ़ पाटन (Deep Incision), दाह। गण्डूष– त्रिफला, चमेली, अरिष्ट (नीम) क्वाथ। नस्य– मुलेठी सिद्ध सर्पिमण्ड।
सुषिर	• छिन्न लिखित • घर्षण– लोध, मुस्ता, त्रिफला, ढाक, लाल चंदन, रसांजन, शत-पुष्पा (सौंफ), कट्फल से। गण्डूष– उपरोक्त का क्वाथ; क्षीरिवृक्ष, पलाश, आंवला कषाय।
अधिमांस	अचिर में स्रावण (रक्त मोक्षण) बड़ा होने पर बडिश/मुचुण्डी से पकड़कर मण्डलाग्र से छेदन (काट दे) करे। तीक्ष्ण प्रतिसारण। कवल– यवक्षार + तैल।
विदर्भ	दंतमूलों (Gums) का शस्त्र से विशोधन कर क्षार लगाये। गण्डूष– घृत मण्ड। प्रतिसारण– लोध, मजीठ, मुलेठी, पतंग (लाल चंदन)।
दंतनाड़ी	संवृत नाड़ी का एषण कर संबद्ध दांत को समूल (निःशेष) उखाड़ कर शलाका से दाह करे (ऋजु नाड़ी में)। मुड़ी, गहरी, अनेक गति वाली नाड़ी को गुड़/मधु/सिक्थ (मोम) से भरकर (सिरिंज से अतिउष्ण) दाह करे। गण्डूष– क्षीरि द्रुम कषाय। शोधन/रोपण– सरसों का तैल/प्रपौण्डरीक, हल्दी द्वय, मुलेठी, मोम, लोध, कुटकी, शर्करा, पद्मक, चंदन, मूर्वा, पोई, बथुआ, चौलाई पत्र, मजीठ, इमली, कैथ पत्र पक्व तैल। धूमपान, रक्तमोक्षण, नस्य।

वातज– जिह्वा कण्टक	वातोष्ठ वत।
P ,,	घर्षण → रक्तस्राव, मधुर द्रव्य मले, गण्डूष, नस्य।
K ,,	तीक्ष्ण – घर्षण, गण्डूष, नस्य।
जिह्वालस	नये में तीक्ष्ण प्रतिसारण, सिरावेध।
अधिजिह्वा	उन्नमित कर बडिश से ग्रहण कर मण्डलाग्र से काटे (छेदन)। तीक्ष्ण नस्य आदि।
उपजिह्वा	अङ्गुलिशस्त्र से विस्रावण कर यवक्षार प्रतिसारण।
गलशुण्डिका	कफघ्न उपचार वृद्ध, आगे आई, ककड़ी बीज निभ, सिराजाल न हो, जिह्वा के ऊपर अग्र होना– बडिश/मुचुण्डी से निविष्ट कर मण्डलाग्र से नात्यग्र, नातिमूले छेदन (Excise) करे। अग्रच्छेदन– अनुपशम, शोफ, लाला वृद्धि। अतिच्छेद – रक्त क्षय → मृत्यु। सम्यक् छेदन कर प्रतिसारण आदि करे।
तालु संघात तालु पुप्पुट नया कच्छप	गलशुण्डिका वत शस्त्रकर्म कर लेखन।
तालुपाक	अपक्व शोथ– प्रतिसारण– कासीस, रसाञ्जन, मधु। गण्डूष– मधुर कषाय शीत। **पक्व होने पर–** मण्डलाग्र से अष्टापद (Octopus) वत भेदन कर तीक्ष्ण अवघर्षण। कवल– • पटोल, नीम, चमेली, कनेर, गुडुची, वासा, कटुका, हरिद्राद्वय, वेताग्र, कण्टकारी क्वाथ। • मधु, तैल।
तालुशोष	• भोजनपूर्व मुलेठी, पिप्पली, सोंठ सिद्ध घृत पान – तृट्हर। • गण्डूष– अम्ल द्रव्य। • नस्य– पयस्या मधुक मधूलिका पक्व क्षीरसर्पि। • धूम– स्निग्ध। • अन्नपान– तृष्णाहर।
कण्ठरोग	ज्वर आदि उपद्रव न होने पर। कटु तीक्ष्ण– नस्य, अवघर्षण, गण्डूष, सिराव्यध।

	क्वाथ– रसाञ्जन, इन्द्रयव, दारूहल्दी, नीम। कवल/गुटिका/प्रतिसारण– त्रिकटु, यवक्षार, दारूहल्दी, रसौत, तेजोवती, पाठा, नीम त्वक्, त्रिफला, चित्रक को शुक्त, गोमूत्र में क्वाथ कर।
रोहिणी	
– V	अन्तर्बहिः स्वेदन, अंगुलि शस्त्र में मधु + लवण लगाकर विस्रावण; तीक्ष्ण प्रतिसारण; गण्डूष– महापंचमूल क्वाथ। • एला, पुनर्नवा, सिंही, कपित्थ कल्क से दूध पक्व तैल– गण्डूष, नावन।
– P	उपरिवत विस्रावण; लाल चंदन, शर्करा, लोध, प्रियंगु – प्रतिसारण। – कषाय गण्डूष।
– R	असाध्य, पित्त वत चि०।
– K	स्वेदन, लेखन; कटु प्रतिसारण व गण्डूष। नस्य– नीम, चमेली, अपामार्ग, विडंग पक्व तैल। शालूक वृन्द, तुण्डकेरी, गिलायु – कफज रोहिणीवत चि०।
गलविद्रधि Quinsy	रक्त मोक्षण; <u>लोध्रवरारसाञ्जन</u> <u>पत्तङ्ग</u> <u>गैरिकरोचनापिप्पली</u> <u>सैंधव</u> चूर्णेरव-घर्षणम् । (त्रिफला) (हल्दी) इन्हीं के क्वाथ से गण्डूष।
गलगण्ड	
– V	• स्वेद, विस्रावण • व्रण भर जाने पर उपनाह– तिल, चिरौंजी, लट्टू [कंदयल (पीले फूल)] मूली, सन, अलसी के बीजों से। • नीम, गुडुची, कुटज, हंसपदी, कृष्णा (पिप्पली), बलाद्वय, देवदारू सिद्ध तैल का पान।
– K	• बार-२ स्वेदन व रक्त मोक्षण • तीक्ष्ण लेप– कलिहारी, अतिविषा, मेढ्रशृंगी, शिरीष, अजगंधा, गुञ्जा फल, कटुतुम्बी – पलाशक्षाराम्बु पिष्ट सुखोष्ण। • वत्सकादि गण + पञ्चलवण सिद्ध तैल पान। • तीक्ष्ण वमन आदि। शान्त न होने पर पकाकर व्रण वत चि०। • आहार– जौ, मूंग, यूष + सोंठ, मरिच, पिप्पली।

मेदोज	स्वेद, सिरावेध; वात कफोक्त प्रलेप। प्रात: असनादि गण चूर्ण गोमूत्र से नित्य पिये। ठीक न होने पर– शस्त्र से विदारण कर मेद विशोधन (निकालकर) सीवन करे। • वसा/घृत/मधु से दहन। शोधन, रोपण, तैल– रोचना कासीस, तुत्थ चूर्ण पक्व तैल।
मुखपाक	सामान्य चि०– मुख प्रक्षालन– त्रिफला क्वाथ/तिक्त,कटु, कषाय + मधु। चर्वण (मुख में चबाना) – द्राक्षा, पाठा, चमेली, मातुलुंग, अर्जुनपत्र। योग– दारूहरिद्रा (१) + जल (२०) → क्वाथ + गेरू $\underset{\Delta}{\rightarrow}$ अवलेह + मधु। घी लगे पात्र में रख ले। मुलेठी/पाटला/नीम/वासा/चमेली/लोध्र/त्रिफला/जामुन त्वक/खदिर त्वक – यही कल्पना। **खदिरादि बटी–** (श्लो० ५४)
• V	नस्य, गण्डूष– दशमूल, काकोली, रास्ना, मुलेठी, सारिवा क्वाथ, कूठ कल्क $\underset{\Delta}{\rightarrow}$ तैल।
• P	गण्डूष– क्षीर, इक्षुरस, द्राक्षा, शर्करोदक। मेंहदी पत्र चर्वण।
• K	प्रतिसारण– मरिच, यवक्षार, सैंधव। तुलसी पत्र– चर्वण। पलाशोदक गण्डूष।
• R	पित्तवत।
• S	दोषानुसार।
अर्बुद (सर्वसर)	नया, अवृद्ध– मण्डलाग्र से छेदनकर, मुष्कक भस्म + मधु से/सर्जीक्षार + शुण्ठी चूर्ण से प्रतिसारण। गण्डूष– निम्ब, गुडुची क्वाथ + मधु, तैल। आहार– जौ।
पूतिमुख	स्नेहन, स्वेदन, वमन, शिरोविरेचन। शीताद उपकुश चि०। मुखशोधन– • सर्जक्षार, हींग, मन:सिला, एला, शुण्ठी, विडंग + मधु। • मंजीठ, धाय, प्रियंगु, लोध्र, पद्म चूर्ण + जल।

→ मुख, दन्तमूल, गलरोग प्राय: कफ, रक्त भूयिष्ठ होते हैं अत: इनमें दूषित रक्त विस्रावण प्रधान है। कवल– कटु, तिक्त। आहार– यवतृण धान्य, स्नेह रहित क्षारयुक्त यूष।

→ कण्ठ रोग प्रमाद वश श्वास रोध कर सकते हैं (बढ़कर)।

२७. शिरोरोग विज्ञानीय

शिरोगत रोग– १०; कपालगत– ९।

शिरोगत रोग निदान–

धूम, धूप, तुषार (ओस), जलक्रीड़ा, अति स्वप्न, जागरण, प्रवात, अश्रु रोकना, रोना, अत्यम्बुमद्यपान, कृमि, वेगधारण, असम्यक् उपधान (तकिया), अभ्यंग द्वेष, लगातार नीचे देखना; गंध– असात्म्य, दुष्ट, आम; भाष्य → दोष प्रकोप → शिरोगत।

१. **वातज शिरस्ताप–** शंख तोद, ग्रीवा के भाग में फटन, भ्रूमध्य व ललाट में अतिवेदना; कानों में शब्द; आंखें बाहर निकलती सी। चक्कर, सिरा स्फुरण, ग्रीवा हनुसङ्ग। प्रकाश असह्य, नासास्राव। मर्दन, स्नेह, स्वेद, बंधन से आराम।

२. **अर्धावभेदक–**
- अर्द्धमूर्धा का V शिर स्ताप। (Migraine)
- १५ दिन/१ माह पर कोप व स्वतः शान्त।
- बहुत बढ़कर आंख, कान नाश।

३. **पित्तज शिरोभिताप–**
- धूमायन, ज्वर, स्वेद, अक्षिदाह, मूर्च्छा।
- रात्रि में/शीत उपचार से मृदु।

४. **कफज–** दिन में कम तथा रात्रि में अधिक दर्द, कर्णकण्डू, वमन।

५. **रक्तज–** पित्तज से अधिक दर्द।

६. **सन्निपातज–** सर्व लक्षण।

७. **कृमिजन्य–** संकीर्ण भोजन → शिर का रक्त व मांस क्लिन्न → त्रिदोष दुष्ट → मूर्ध्निजन्तु उत्पन्न।
तीव्र रूजा, चित्तविभ्रंश, ज्वर, कास, बलक्षय, शोफ; छेद दाह स्फुरण पूतिता, शिर तालु में कण्डू, शोफ, प्रमीलक। सिंघाणक– ताम्र अच्छ। कर्णनाद।

८. **शिरःकम्प–** वातोल्वण सन्निपातज → कम्पन।

९. **शंखक–** पित्तोल्वण सन्निपात + रक्त → शंख भाग में शोफ।
तीव्र दाह रूजा, राग, प्रलाप, ज्वर, तृट्, भ्रम; मुख-तिक्त; पीत वदन। शीघ्र चि० से बच सकता है अन्यथा ३ रात्रि में मृत्यु।

१०. **सूर्यावर्त–**
वात + पित्त (अनुबंध) → शंख, अक्षि, भ्रू, ललाट में वेदना, स्पन्दन। सूर्योदय से प्रारम्भ होकर मध्याह्न तक बढ़ना (विशेषतः क्षुधित में) फिर शाम तक घटना। शीत व उष्ण में अनियमित आराम।

कपाल गत रोग–

१. उपशीर्षक (Hydrocephaly)– गर्भ के कपाल (Cranium) में वात दुष्ट → सवर्ण, नीरूज (Painless) शोफ।

२. पिटका ३. अर्बुद ४. विद्रधि

५. **अरूंषिका–** P.R.K + कृमि → क्लेद युक्त सिद्धार्थ निभ पिटकाएं।

६. **दारणक–** K + V → कण्डू, केशच्युति, सुप्ति, रौक्ष्य, त्वक् स्फुटन (सूक्ष्मवत– May be seen by magnefying lens) ।

७. इन्द्रलुप्त– (रूज्जा/चाचा/रूह्या)–

रोमकूपस्थ (Hair follicle) P
- + V → रोम च्यवन
- + K, R → रोम कूप रूद्ध

} दुबारा रोम नहीं आता।

८. **खलति–** उपरिवत सम्प्राप्ति। बाल क्रम से धीरे-२ झड़ना।

भेद– ४
- V – अग्नि दग्धाभ
- P – स्वेद, सिरावृता
- K – घन, त्वक्वर्ण (पूरी त्वक् पाण्डुर)
- S – असाध्य– नखाभ, अग्निदग्धवत निर्लोम, दाह।

९. **पलित–**

<u>शोकश्रम</u> <u>क्रोध</u> कृतः शरीरोष्मा शिरोगतः ।
केशान् सदोषः पचति पलितं सम्भवत्यतः ।।२१।।

देहोष्मा $\xrightarrow[\text{V/P/K/S}]{}$ शिर → पचति (Protein) → पलित।

भेद– ५
- वातज – स्फुटित (फटे केश), श्याव, खर, रूक्ष, ज्वलत (जल- अ०हृ०) प्रभ।
- पित्तज – सदाह, पीताभ
- कफज – स्निग्ध, वृद्धि युक्त। स्थूल, शुक्ल।
- सन्निपातज– मिश्र लक्षण। असाध्य।
- शिरोरूजोद्भव– विवर्ण, स्पर्शनासह (Tenderness)

→ असाध्य– सन्निपातज खलित, पलित।

→ सभी शिरों रोगों में (विशेषत: वृद्धों में) रसायन चि० आवश्यक है।

२८. शिरो रोग प्रतिषेध

१.	वातज शिरोभिताप	निवात, शिरोभ्यंग; रात्रि में स्नेहन– रात्रि में घी/तैल दूध से या उड़द/मूंग + घी – दूध से। परिषेक– प्रात: दशमूल सिद्ध सुखोष्ण दूध से। पिण्ड स्वेद/लेप– दशमूल सिद्ध पायस। चंदन, कमल, तगर, कूठ,+ घी।

		नस्य– कर्पासमज्जा, दालचीनी, मुस्ता, चमेली, क्षार गरम जल से पीसकर।
	R.P. अनुबंध	कुङ्कुम (केशर) शर्करा संस्कृत आज्य (घृत) से मर्श (१०/८/६ बिन्दु)। रक्त मोक्षण निषिद्ध → वात कोप। स्नैहिक धूम, शिरोवस्ति, वस्ति। • दाह कर्म। → बृहत्पंचमूल, बला, सारिवा, कृष्णशारिवा क्वाथ + मुलेठी, जीवक, ऋषभक, पुनर्नवा कल्क + दूध → घी, तैल सिद्ध करे। – नस्य, शिरोवस्ति, कर्ण पूरण।
२.	अर्द्धावभेदक	उपरोक्त चि०। नस्य– निर्गुण्डी पत्र रस + घृतमण्ड + सैंधव।
३.	सूर्यावर्त	उपरोक्त; रक्तमोक्षण।
४.	पित्तज व	I. स्नेहन II. सिरामोक्षण III. काय विरेचन
५.	रक्तज शिरोभिताप	IV. शीत द्रव्य + शतधौत घृत– शिरोवक्त्र सिञ्चन, प्रदेह। नस्य, शिरोवस्ति–चंदन, सारिवा, मुलेठी, दूर्वा, उत्पल, प्रपौण्डरीक, मजीठ, विदारी कल्क से सक्षीर घृत पाक। पान, नस्य, भोजन, अभ्यंग, वस्ति– जीवनीय गण के कल्क से घी से १६ गुणे दूध के साथ घृत पाक। अनुवासन– दूध, इक्षुरस, खर्जूर, द्राक्षा, कशेरू, मृणाल सिद्ध सर्पिमण्ड आस्थापन– अञ्जनादि गण शृत क्षीर।
६.	शंखक	प्रत्याख्येय। P.R. शिरोभितापवत; विसर्पवत चि०। लेप– कृष्णतिल, शतावरी, नीलोत्पल, मूर्वा, पुनर्नवा।
७.	कफज-शिरोभिताप	लंघन, पुराण घी से स्नेहन कर वमन, रूक्षपिण्डस्वेद। नाड़ी स्वेद– सहजन, नीम, एरण्ड पत्र क्वाथ। लेप– देवदारू, कुष्ठ, मजीठ, सरल, रोहिष + लवण – सुखोष्ण। उपनाह– यवचूर्ण, मुलेठी, चंदन, हल्दी, कूठ, प्रियंगु, सौंफ, देवदारू + तिल, अजाक्षीर, सैंधव। नस्य– विडंग तैल/सरसों तैल + सोंठ, मरिच, पिप्पली। धूमवर्ति– महुआ, मेषश्रृंगी, हिंगोट त्वक्। प्रधमन– शिरोविरेचन (सू० १४/६);

		नस्य– (१) मर्श, प्रतिमर्श– शिरोविरेचन द्रव्य पक्व तैल से। (मर्श– १०/८/६; प्रतिमर्श– १/२ बिन्दु) (२) स्नेहन नस्य– कर्णनादोक्त। कवल– तीक्ष्ण। धूम– मनःशिला, मांसी, तुत्थ, कासीस चूर्ण + घृत। • मांसी चूर्ण बार-बार सूंघे।
८.	S. शिरोभि-ताप	मिश्र दोषानुसार।
९.	क्रिमिज-शिरोरोग	• रक्तमोक्षण निषेध। • I. स्नेहन– दुरालभा, देवदारू, कुटकी, करंज, त्रिफला, कट्फल, वच, त्रिकटु कल्क + अजामूत्र– घृत पाक। II. • स्वेदन। • शिरोकर्ण अभ्यंग– देवदारू करंज, कटभी, सरसों, विडंग, तिल, गोक्षुर पक्व तैल। • पुनः स्वेदन। III. **नस्य–** (a) रक्त– कृमि बाहर आना। (b) सप्तपर्ण त्वक्/फूल रस। क्रिमि पातन। (c) सरल, देवदारू, कट्फल, सरसों, अपामार्ग क्षवक, कटु अलाबु, तुलसी बीज, पिप्पली, चावल चूर्ण पक्व तैल– सद्यः क्रिमि मारक। परिषेक– नीम, अर्क, बांस, तुलसी, कुटज, करंज, कनेर पत्र क्वाथ। **कृमि निकल जाने पर नस्य–** करंज, तुलसी, विडंग, हरड़, अर्क, कनेर मूल, मालती, क्षवक, पिप्पली, सौंफ, महुआ, शण-पुष्पी, निम्बसार कल्क आदि पक्व सरसों तैल।
१०.	शिरःकम्प	अक्षीण, अनुपद्रुत में चि०– वातज वत; दाह निषेध।
१.	उपशीर्षक	जन्म के बाद शीघ्र चि० करे। वातव्याधि के स्नेह–पान, नस्य, अभ्यंग; स्वेद, उपनाह। पकने दे। पक जाने पर विद्रधि वत कर्म।
२. ३-४.	पिटका अर्बुद, विद्रधि }	स्व चि०। **पिटका → व्रण**– नीम, हल्दी, मुलेठी, आंवला फल से पकाये तैल से शोधन-रोपण। विद्रधि में शोधन रोपण– मूर्वा, चन्दन, शारिवा, धातकी, हल्दी,

		लोध्र, महुआ, मंजीठ, पद्मकेसर, शतपर्वक (इक्षु) मूल पक्व तैल से। विद्रधि भर जाने पर त्वक् सुप्त होने पर वमन दे तथा थोड़ा स्निग्ध कर विरेचन दे।
५.	अरूंषिका	जलौका मोक्षण। बाल हटाकर निम्बोदक परिषेचन। लेप– • तिलमषी + स्नुही क्षीर • मधुक उत्पल तिल एरण्ड अर्क/भृंगराज पत्र • शिग्रु, मूली, सरसों बीज –गोमूत्र पिष्ट। • नेत्रबाला, आंवला, सोंठ, मूली बीज, सरसो – क्षीर-पिष्ट। • शिरीष त्वक्, मुलेठी– क्षीरपिष्ट। • कण्डू, क्लेद, दाह, स्वेद, वेदना हर– • मिट्टी के पात्र में भुना कुष्ठ चूर्ण + तैल • चित्रकादि तैल (इन्द्र लुप्त चि०) } –अभ्यंग।
६.	दारणक	ललाट सिरा व्यध। लेप– चिरौंजी, मुलेठी, कुष्ठ, माष, सर्षप + मधु।
७.	इन्द्रलुप्त	• आसन्न सिराव्यध कर तुत्थ, मनःशिला, मरिच का लेप। • तैल– चित्रक, कनेर, करंज, चमेली, से सिद्ध तैल। I. सूची कूर्च से प्रच्छान्न कर कलिहारी मूल भैंस के दूध से पीस-कर लेप। II. एरण्ड पत्र से रात्रि भर के लिये ढक दे। III. प्रातः इसे हटाकर लेप– • भृंगराज पत्र स्वरस/झिण्टी पुष्प पक्व मक्खन (भैंस) • वार्ताक (बैंगन) फल पक्व तैल ÷ मधु, रसांजन। • छोटे बैंगन का रस + मधु। → हस्ति दन्त मषी + तैल। पूतिकरञ्ज पत्र + सैंधव – लेप। खालित्य की चि० करे तथा रोम आने तक भीगने न दे।
८.	खलति	इन्द्रलुप्त चि०। दोषानुसार संशोधन। रोम सञ्जनन लेप– • लाल अग्निमंथ पुष्प; किंशुक (ढाक), मांसी मूल; मुलेठी, हस्ति दन्त भस्म – भेड़ के दूध में पीसकर। • काकोल्यादि कल्क (मधुर वर्ग) से क्षीरिवृक्ष कषाय में तिल व बहेड़े का तैल पाक कर– नस्य व अभ्यंग।

	अकाल पलित	• खलित योग प्रयोग।
		• दोषानुसार स्नेहन, स्वेदन, संशोधन, रक्त विस्रावण।
		• नस्य व अभ्यंग– अणु तैल (अर्दितोक्त)
		लेप– मुलेठी, आंवला, मधु; तिल, आंवला, मधु } से केश मूल का लेप।
		• दुग्धिका व कनेर को दूध से पीसकर श्वेत बाल उखाड़ कर, इनकी मूल पर लगाये।
		• महानील तैल (श्लो० ५३)– पान, नस्य, अभ्यंग।
		• **खलित, पलित, वलि (झुर्री), हरिलोम (पिंगल केश)–** संशोधनोपरांत नस्य–
		लघुपंचमूल, जीवनीय सिद्ध तैल– नावन।
		• दूध, कटसरैया, भृंगराज, तुलसी रस– (१-१); तैल– (६४); मुलेठी– (१६)–पाक → नस्य।
		• **हरिलोम, वलि–** दूध, प्रियाल (चिरौंजी), मुलेठी, जीवनीय गण काले तिल पीसकर वक्त्रलेप।
		• **केशवर्धक व रञ्जक–**
		  • तिल, आंवला, कमल केशर, मुलेठी, मधु का लेप।
		  • लौह चूर्ण, अम्ल (मातुलुंग रस/आंवला) से पीसकर त्रिफला मिलाकर लेप – उत्तम राग (रञ्जक) ।
		→ कन्या (बड़ी इलायची), तिल, निम्ब बीज, मुलेठी, त्रिफला, वच, भृंगराज चूर्ण + अजा, गो, माहिष घृत (समभाग) –लोह पात्र में रखकर १ माह भूमि में गाड़ दे। फिर इसको बालों में अभ्यंग – खलित, पलित हर।
		• मयूरादि व महामायूर घृत – मोर के योग।

→ ऊर्ध्व जत्रुगत रोग– २३१ ।

[नेत्र–९४, कर्ण– २५, नासा– १८, मुख– ७५, शिर– १९]

''ऊर्ध्वमूल मधः शाखमृषयः पुरूषं विदुः'' ।।६५।।

विद्वानों के (गीता आदि) अनुसार पुरूष का ऊपर मूल तथा नीचे शाखाएं हैं। इस मूल ≡ उत्तमांग में सभी इन्द्रियां व प्राणायन स्थित हैं।

''सर्वेन्द्रियाणियेनास्मिन् प्राणायेन च संस्थिताः ।।६६।।''

अतः इसके रोगों की शीघ्र चि० करे।

२१. व्रणविभक्ति परिज्ञानीय

व्रण– " यावदायुर्व्रणीते विवृणोति वा शरीरमितिव्रणः ॥२॥"
व्रण का चिन्ह पूरी उम्र बना रहने के कारण।

भेद–

1. (i) निज (दोषज) – १५ – [V, P, K, R, S, V-P, P-K, V-K, V-R, P-R,
↑ दोष अधिष्ठित K-R, VPR, VKR, PKR, VPKR]
(ii) आगंतुज– शस्त्र, विष, आदि जन्य।
2. (i) शुद्ध (ii) दुष्ट (दोष दूषित)

आशय– ८ – त्वक्, मांस, सिरा, स्नायु, संधि, अस्थि, कोष्ठ, मर्म।
←– सुख साध्यता क्रम ————

आकृति– ४ – आयत, चतुरस्त्र, वृत्त, त्रिपुटक (त्रिभुजवत) ।

सुखरोपणीय	कृच्छसाध्य	याप्य	असाध्य
स्फिक् (Breech), पायु, प्रजनन (मेढ्र), ललाट, गण्ड, ओष्ठ, पृष्ठ, कर्ण, फलकोश, उदर, जत्रु, मुखाभ्यन्तर	अक्षि, दंत, नासा, अपांग श्रोत्र, नाभि, जठर, सीवनी नितम्ब-पार्श्व (Hips), कुक्षि, वक्ष, कक्षा, स्तनसंधि। कुष्ठ, विष, शोष, मधुमेह व्रण में अन्य व्रण होना।	अवपाटिका, निरूद्ध मणि, रूद्धगुद, व्रण ग्रन्थि, सर्व अस्थिक्षत।	फेन पूय रक्तवात वाही अन्तःशल्य, अधोभाग के व्रण जिनमें वमन (ऊर्ध्व) से दोष निकल रहे हों, रोमान्त, उपनख, मर्म, जंघास्थि, प्राणाश्रित, अन्तर्मुखी भगंदर, कट्यस्थि की सीवनी में संश्रित।

शुद्ध व्रण– संरम्भ रहित, जिह्वावर्ण, श्लक्ष्ण, नीरूज, निरास्त्राव, पर्यन्त (Margins) पर श्यावता, ओष्ठ (किनारे) व मध्य सम या मध्य भाग थोड़ा उन्नत।

दुष्ट व्रण– अति संवृत, विवृत, मृदु, कठिन, उत्साद, अवसाद, शीत, उष्ण, पूय।

- V – श्याव, अरूण, कृष्ण, कपोत कण्ठाभ, मस्तुवत अल्पस्त्राव। तोद।
- P – पीला, नीला, हरा, कृष्ण, पिंगल, स्त्राव – गोमूत्र वत; क्लेद, पिटिका।
- K – पाण्डु, स्निग्ध, स्थूलौष्ठ, स्त्राव – नवनीत, नारियल जल वत, सिरा, स्नायु जाल, मंद वेदन, कठिन।
- R – प्रवाल रक्त, कृष्ण स्फोट, घुड़साल गंधी, स्त्राव– R+P ।
- P+R – घृत मण्डाभ, मत्स्य धावन गंधी, काला, उष्ण पूय।

आश्रय विशेष से स्राव–

त्वक् – घृष्ट/स्फोट फटना – जल वत (पीतावभास) स्राव, अल्प विस्र।

मांस – घृताभ, घन, पिच्छिल

सिरा – सद्य: रक्त अतिप्रवृत्ति, पक जाने पर पूय टपकना। तनु, विच्छिन्न, पिच्छिल, अवलम्बी, श्याव।

स्नायु – घन, स्निग्ध, सिङ्घाणकाभ, सरक्त।

सन्धि – दबाने पर नहीं आता, संधि चलाने से आता है। पिच्छिल, अवलम्बी, फेन व रक्त मिश्रित।

अस्थि – अभिहत – स्फुटित, भिन्न
दोषावदारित (Bone T.B. etc)
दोष भक्षण → नि:सार
} मज्जा मिला स्राव + रक्त। स्निग्ध।

कोष्ठ – मूत्र, पुरीष, रूधिर, पूय, उदक स्रवण।

मर्म – लक्षण, पृथक् नहीं, क्योंकि उपरोक्त से ही मर्म बनते हैं।

आकृति विशेष से साध्यासाध्यता → ४ सामान्य आकृतियों से भिन्न- (प्राय: आगंतुज) कष्ट साध्य।

सुचिकित्स्य– वयस्थ, दृढ़, प्राणवान, सत्व, जितेन्द्रिय, दीप्ताग्नि ।

दीप्ताग्नि नाम प्रक्लिन्नदेहत्वात् ।

अग्नि दीप्त होने पर क्लिन्नता नहीं होती।

[क्लिन्नता– अग्नि मांद्य, देश, काल जन्य]

क्लिन्नता → मांस उपद्रव।

असाध्य व्रण– मांस पिण्ड वत ऊपर आना, अन्त: पूय; किनारे गुदा वत उठे, कठिन, गोश्रृंग वत उठे; मांसांकुर, दूषित रक्त स्रावी, मध्य उन्नत पर्यन्त सम/निम्न/सुषिर (Cavity); स्नायु जाल युक्त। मेद, मज्जा, वसा, मस्तुलुंग (Brain Matter/C.S.F.) स्रावी। कोष्ठ व्रण से पीला काला स्राव। क्षीण में नाड़ी व्रण। शिर व कण्ठ के व्रणों से शब्द, वायु आना। शिर: कपाल व्रण में मस्तुलुङ्ग दर्शन।

व्रण + ज्वर, तृट्, कास, श्वास, अतिसार, वमन आदि।

साध्य → असाध्य– स्नायु क्लेद, सिराच्छेद, कृमि, गम्भीर (Deep); विक्षोभ, अशुद्ध कोष्ठ, मैथुन, मद्यपान।

रोहणशील व्रण– कपोत वर्ण प्रतिमा यस्यान्ता:क्लेद वर्जिता: ।
स्थिराच्चपिटकावन्तो रोहतीतिमादिशेत् ॥३१॥

३०. व्रण प्रतिषेध

- व्रण चि० में अपतर्पण प्रधानतम है।
  अपतर्पण (उपवास, लंघन आदि) दोष व देह बलानुसार प्रयोग → व्रण शुद्ध, राग, शोफ रहित, हताश्रय।
- आलेप– १० –
  स्नैहिक – वातज व्रण में, स्नेह/स्निग्ध द्रव्य से।
  निर्वापण – पैतिक शोफ, विष, अग्नि, क्षार दग्ध में शीत द्रव्य लेप।
  प्रसादन – अन्तर्दुष्ट रक्त होने पर किया निर्वापण।
  स्तम्भन – रक्त स्राव होने पर।
  विलायन – कफ मेदाधिक्य अपक्व, ग्रथित शोफ में, शीत रूक्ष द्रव्य से।
  पाचन – विदग्धावस्था में।
  पीडन – सूक्ष्म मुखी व्रण में रूक्ष व पिच्छिल लेप।
  शोधन – अशुद्ध व्रण में।
  रोपण – शुद्ध में।
  सवर्णीकरण – रूढ़ में।
- **सप्तकर्म–** प्रक्षालन, आलेप, घृत, तैल, रसक्रिया, चूर्ण, वर्ति।

लेप– दिन में, ताजा, रोम प्रतिलोम लगाये, सूखते ही हटा दे (Except पीड़न)

- रात्रि प्रयोग– पुष्कलावत के अनुसार तम से ढकी ऊष्मा, रोमकूपों से बाहर नहीं निकल पाती।
- पर्युषित– अम्लता, निर्वीर्य।
- अनुलोम– सम्यक् औषधि त्वक् में प्रविष्ट नहीं होती।
- शुष्क– दाह, ओष, राग, श्याव, शूल।

प्रदेह– शीत, तनु, मुहर्मुहु – R.P., त्वक प्रसादन।

प्रलेप– उष्ण/शीत, बहल (घन) – V.K. ।

कल्क– क्षत में लगाया जाने वाला प्रलेप।

(१) शोफयुक्त व्रण, कठिन, विषयुक्त –
- जलौका से रक्त मोक्षण।
- शीत प्रदेह– न्यग्रोध (वट), उदुम्बर, अश्वत्थ, प्लक्ष (पाकड़), वेतस वल्कल + घृत। – श्रेष्ठ शोफहर।
- सत्तू, मुलेठी, घृत, सिता – शोफहर।

(२) वातोल्वण, स्तब्ध, कठिन, महारूजा – कृशरा, पायस उत्कारिका स्वेद।

(३) दाह, शूल युक्त व्रण शोफ – तिल, अलसी भूनकर दूध में उबाल व पीस कर लेप।

(४) शूल दाह हर– • मुलेठी, जौ चूर्ण + तैल, घी का सुखोष्ण लेप।
• दशमूल सिद्ध सुखोष्ण जल/दूध से परिषेक।

विम्लापन– स्थिर, मन्द वेदना वाले शोफ में।
अभ्यंग, स्वेदन कर वेणु नाड़ी/अंगुष्ठ से मर्दन।

- अर्कपत्र, मसूर कल्क लेप।
- मूंग, जौ, गेहूँ, दूध में पकाकर घी में पीसकर लेप।

उपनाह– अविदग्ध शोफ शान्त तथा विदग्ध का पाक।

- शिग्रु, शणफल (सन), चित्रक, सेम, सरसों, तिल, अलसी, सत्तू, बेर, गृहधूम को अम्लपिष्ट कर सुखोष्ण + स्नेह, लवण → उत्कारिका – लेप कर एरण्ड पत्र से ढक कर बांध दे।

दारण– यवक्षार।

पीड़न प्रलेप–
- स्नेह रहित, सूख जाने दे, शोफ मुख खुला रखे।
- पूयगर्भा, उत्सङ्ग, मर्मग।
- मटर, जौ, गेहूँ, मूंग, उड़द, हरेणु।
- पिच्छिल द्रव्यों की त्वक् मूल।

शोधन– विवर्ण, पिच्छिल, पूतिगंधी, क्लेद, रूजावान व्रण में।

- प्रक्षालन– कषाय रस, आरग्वधादि गण – चमेली, कनेर, त्रिफला, खदिर, दारूहल्दी, कोलपत्र, गुग्गुलु।
- लेप– पटोली, तिल, मुलेठी, निशोथ, दन्ती; हल्दी, दारूहल्दी, निम्बपत्र + लवण।

→ अजगंधा, अजशृंगी, इन्द्रायण, कलिहारी, हल्दी, करंज, चित्रक, पाठा, पटोल, विडंग, सम्भालु बीज, त्रिकटु, यवक्षार, पंच लवण फिटकरी, दन्ती, कुंभ, कासीस, हरताल, मनःशिला, निर्मली– घृत, तैल, रसक्रिया, चूर्ण, वर्ति।

रसक्रिया– शोधन द्रव्यों का क्वाथ → छाने → अग्नि पाक
+
प्रक्षेप– मनःशिला, फिटकरी, कासीस
↓
कड़छी पर चिपटने पर + मातुलुंग रस, मधु। उतार ले।

→ मेद दुष्ट गंभीर व्रणों में शोधन द्रव्य चूर्ण।
→ मांस, संधि, मर्म आश्रित गम्भीर, सूक्ष्ममुख–शोधन वर्ति।
→ वातज, स्राव, अतिरूक् – धूपन – श्रीवेष्टक, सर्जरस, साल, देवदारू, शिंशपा (शीशम), खदिर, असन, कैडर्य सार + जौ, मोम, भोजपत्र, घी, अलसी।

उत्सादन– शुष्काल्पमांसे गम्भीरे व्रण उत्सादनं हितम् ।।४५।।

- घृत अभ्यंग। मांसाद का मांस खाना।

अवसादन– 'उत्सन्न मृदुमांसानां'।

- सैंधव, कासीस, सुमन (चमेली) मुकुल, गुग्गुलु, चित्रक, अग्निमंथ, दन्ती, शिरीष, करञ्जफल, भोज की गांठ, कुक्कुटाण्डत्वक्, कपोत पुरीष, मनःशिला, हरताल चूर्ण + मधु।

सरूज, कठिन, रूक्ष, स्तब्ध, शुष्क, व्रण – मार्दवजनन–

- वातघ्न सिद्ध घृत पान; वातघ्न सिद्ध तैल स्वेद।

अतिमृदु मांस व्रण – दारूणी करण–
- जटामांसी धूपन।
- त्रिफला, लोध्र, आम, सर्ज, जम्बू, प्रियंगु, अशोक त्वक् चूर्ण।

क्षारकर्म– उत्सन्न मांस, कठिन, कण्डू, चिर, व्रण में शोधनार्थ।

अग्निकर्म– मूत्रस्रावी अश्मरी व्रण, छिन्न सन्धि, उपरि चि० से ठीक न होने वाले।

उत्तम शोधक– मुलेठी, तिल कल्क, निम्ब पत्र कल्क + मधु।

रोपण– मुलेठी, तिल, मधु, निम्बपत्र + घी – लेप।

व्रण	**सप्तकर्मार्थ द्रव्य**	**लेप**
वातज व्रण–	दशमूल, वातघ्न गण	अम्ल पिष्ट + स्नेह, कोष्ण।
पित्तज व्रण–	न्यग्रोधादि, पद्मकादि, पित्तघ्न वर्ग	क्षीर पिष्ट + घी, तनु।
कफज व्रण–	आरग्वधादि गण, कफघ्न वर्ग	गोमूत्र पिष्ट, रूक्ष/तैल, घन।

रोपण औषध सिद्ध घृत (सक्षीर)– R, P, विष, आगंतुज, गंभीर, उष्ण व्रण में।

सिद्ध तैल– कफ वातज व्रण।

रोपण रसक्रिया + निशाद्वय– गतिशील स्थान के व्रण

रोपण चूर्ण – सम, दृढ़, त्वक्स्थित में।

रोपण वर्ति – गंभीर, निरूज, शुद्ध।

→ दूर्वारस/दारूहल्दी त्वक सिद्ध तैल/घृत – रोपण।

→ पटोलादि घृत – श्रेष्ठ रोपण। (श्लो० ६४) – पटोलपत्र, निम्बपत्र, लोध्र, मुस्ता, प्रियंगु, लघु, एला, धाय, राल, खदिर, अगरू, चंदन, कम्पिल्लक, विडंग, इन्द्र जौ, त्रिफला, बला, कल्क सिद्ध घृत/तैल।

→ **व्रण को त्वचा पकड़ाना–** अर्जुन, गूलर, पीपल, जामुन, कट्फल, लोध्र त्वक् चूर्ण – अवचूर्णन।

सवर्णीकरण– पद्मक, पद्मकेशर, दारूहल्दी, मूर्वा, तिल, उत्पल, मेदा, मजीठ, मुलेठी लेप।

(i) **शुक्लीकरण–** • लाक्षा, मनःशिला, मजीठ, हरताल, हल्दी, दारूहल्दी+घी, मधु।
• रोहिणी फल (गम्भारी) को अजाक्षीर में ७ रात्रि रखकर, दूध से पीसकर लेप।

(ii) **कृष्णीकरण–** लोह रज, कासीस, त्रिफला पुष्प लेप।

रोम संजनन– हस्ति दंत (अन्तर्धूम) भस्म + तैल, रसाञ्जन – लेप।

→ **पथ्य–** जीर्ण शालि ओदन, घृत, उष्ण जल, जांगल मांस रस।

पञ्चकर्म– (देह क्लिन्नत्वहर)–

- वमन – कफज, उत्सन्न दुष्ट मांस; काला रक्त।
- विरेचन – पित्तदुष्ट, चिर।
- वस्ति – रूक्ष, वेदना, अधोकाय स्थित व्रण।
- तीक्ष्ण नावन – ऊर्ध्व जत्रुगत, कण्डू, शोथ युक्त व्रण।
  स्नेहन नावन – ,, वाताधिक्य।
- रक्तमोक्षण – जलोका से विषयुक्त व्रण में विशेषतः।

→ मुख के अंदर व्रण में कवल कराये।

३१. सद्योव्रण प्रतिषेध

सद्योव्रण अनन्त रूप होते हुये भी निम्न ३ भेदों में समाहित हो जाते हैं–

सद्योव्रण – ३ भेद

छिन्न– ५	विद्ध– ८	पिच्चित– २
१. घृष्ट – त्वक्छेद २. अवकृत्तम – थोड़ा मांसक्षत ३. विच्छिन्न – अवगाढ़, विशेषतः विशाल, आयत। ४. बिलम्बित – अस्थि, स्नायु आदि किञ्चित् शेष। ५. पातित – अङ्ग छेद सम्पूर्ण (कट जाना)।	१. अनुविद्ध–मांस में घुसा शल्य २. उत्तुण्डित–दूसरे पार्श्व में त्वचा को ऊपर उठा दे। ३. अतिविद्ध– दूसरी ओर थोड़ा बाहर निकल आये। ४. निर्विद्ध–सम्पूर्ण बाहर निकल आये। कोष्ठ में पृथु (चौड़े) मुख वाले शस्त्रों से– ५. अनुभिन्न ≡ १ ६. भिन्नोतुण्डित = २ ७. अतिभिन्न = ३ ८. निर्भिन्न = ४	प्रहार/पीडन से अस्थि युक्त गात्र, रक्त व मज्जा में प्लुत हो, पृथु (चपटा) बन जाना। १. सव्रण– उपरि लक्षण। २. अव्रण– अस्थि-भंग में वर्णन।

त्रिविध सद्योव्रण त्वक् आदि के क्षणन करने से क्षत कहे जाते हैं ॥२॥

सामान्य सद्यः (१ सप्ताह तक) चि०–

१. तीव्र वेदना– मुलेठी सिद्ध घृत/बला तैल – सुखोष्ण सिंचन।
२. क्षत ऊष्मा निग्रह– कषाय, शीत, मधुर, स्निग्ध लेप।
३. आयत व्रण में संधानार्थ – मधु, घृत लेप।
४. संरम्भ – शोधन (वमन, विरेचन), रक्तमोक्षण, पथ्य।
५. घृष्ट, पिच्चित – उपरोक्त चि०।
अल्प रक्तस्राव → शीघ्र पाक।
६. अतिरक्तस्राव → रक्तक्षय → वातकोप → अतिरूजा।
स्नेहन, स्वेदन, वस्ति, स्नेह परिषेक, लेप, उपनाह।
७. व्रण दुष्ट होना– आरग्वधादि, सुरसादि– प्रक्षालन, अभ्यंग, लेप।
वातज – त्रिवृत, तिल, एरण्ड पत्र कल्क + सैंधव
पित्तज – कुम्भ, मुलेठी, हल्दी, तिल कल्क
कफज – तिल, तेजबल, दन्ती, सर्जक्षार, चित्रक कल्क।

विशिष्ट चि०–

• घृष्ट व्रण	रूक् निग्रह, शोधन चूर्ण।
• अवकृत	रूक् निग्रह, कल्क।
• विच्छिन्न, बिलम्बित	सीवन, बंधन।
• फटा नेत्र	असाध्य
• बाहर लटका नेत्र	सिराओं के अनुसार सम्यक बिठाये, कमल पत्र से दबाये। सेचन, नस्य तर्पण– मुलेठी, जीवक, ऋषभक, कमल, विदारी कन्द पक्व अजा घृत।
• गल पीडन → नेत्र बाहर	छींक, प्राणायाम, वमन, उपरोक्त चि०।
• कर्ण स्थानच्युत	सीवन, तैल पूरण।
• छिन्न कृकाटिका (Trachea कटना)	→ वात निकलना; शीघ्र सीवन, अजा घी परिषेक, उत्तान लिटाये रखें।
• शाखा में तिर्यक घात	सीवन, वेल्लित पट्टी/चमड़े से गोफण बंध।
• मुष्क लटकना (Scrotal Inj)	पैर व नेत्र शीत जल से प्रक्षालन, वृषण अन्तः प्रविष्ट, तुन्नसीवनी; कटि में पट्टी लपेटकर गोफण बंध। स्नेहन, स्वेदन निषेध → पूय। रोपण तैल– कालानुसारी, अगरू, एला, जातीफल,

	चंदन, पर्पट, मन:शिला, दारूहल्दी, अमृता, तुत्थ सिद्ध तैल।
छिन्न नि:शेष शाखा	(Amputation), तैल दग्ध, कोश बंध।
शिर में घुसा शल्य	निकाल कर तुरन्त केश वर्ति डाल दे, जिससे मस्तुलुंग स्राव न हो, रोपण के साथ-साथ केश कम करता जाये।
अन्य अंग में घुसा शल्य	निकाल कर स्नेह वर्ति रखे।
• दूर, अवगाढ़, सूक्ष्म मुखी, रक्तस्रावी व्रण।	सूक्ष्म नेत्र (Syringe & Needle) से चक्र तैल से तर्पण।
• मूढ़ प्रहार/विषम स्थान से गिरना	वातरक्त वत तर्पण (स्नेह), मर्दन, अभ्यंग, परिषेक
• डण्डे की मार, मथित, (दब जाना), मर्महत	तैल पूर्ण द्रोणि में रखकर, मांसरस आहार।

भिन्न कोष्ठ → रक्त पूर्णता। कोष्ठ बिना भिन्न हुये भी (पीडन आदि से) सूक्ष्म स्रोतों से रक्त पूर्णता हो जाती है।

आमाशयस्थ रक्त – रक्तवमन, आध्मान, शूल। चि०– वमन।

पक्वाशयस्थ रक्त – नाभि के नीचे शीतलता, अधोस्रोतों से स्रवण। चि०– स्नेह रहित उष्ण, शोधन – विरेचन, निरूह।

भेद– २

(i) क्लिष्टान्त्र – (Valvulus of Int.) – जीवन संशय।

(ii) छिन्नान्त्र – (Perforation of Int.) – असाध्य → मृत्यु।

असाध्य– हाथ, पैर, मुख, उच्छवास – शीत; आंखे लाल, पाण्डु वदन, आनाह।

साध्य– अनुपद्रव (मूर्च्छा आदि न हो), मल-मूत्र, वात स्वाभाविक।

निष्क्रान्त आंत्र चि०–

(१) आंत्र स्वच्छ कर दूध से प्रक्षालन कर घृत लगाकर अंदर प्रविष्ट करे।

(२) व्रण के सूक्ष्म होने या बहुत आंत्र होने पर जठर का पाटन (Incise) कर प्रविष्ट करे।

(३) जल द्वारा/अंगुली से गले में गुदगुदी करे → हर्षण → आंते ठीक स्थान पर बैठ जाती है। तुरन्त दबाये (पीडन)।

अस्थान आंत्र– जीवन संशय।

(४) व्रण सीवन। बंधन।

[छिन्नान्त्र में आंत्र छिद्र सीवन कर प्रविष्ट करे– अन्य आचार्य]

(५) चित्रा (एरण्ड) तैल युक्त दूध पान → मल मृदु, वात अधः प्रवृत्त।

- **व्रण रोपक–** अश्वकर्ण, अर्जुन, बेर, सल्लकी, धव, धातकी, मेषशृंगी, क्षीरी वृक्ष, बला जटा कल्क सिद्ध तैल।

→ १ वर्ष तक पथ्य।

- **उपद्रव–** उदर व्रण से मेद वर्ति आना।
  चि०– मूल सूत्र से बांधकर अग्नितप्त शस्त्र से काटे। कषाय चूर्ण छिड़के।
- गुञ्जाद्विकञ्जादि तैल अभ्यंग।
- **वेदना दाह चि०–**
  - सीवनोपरांत मधु (युक्त द्रव्य) लगाकर बांधे।
  - मुलेठी सिद्ध घृत पान।
  - शर्करा, चित्रा, लाक्षा, गोक्षुर सिद्ध दुग्ध पान।
  - → तालीस, पद्मक, जटामांसी, हरेणु, अगरू, लाल चंदन, हल्दी, दारूहल्दी, पद्मबीज, खस, मुलेठी, पक्व तैल– श्रेष्ठ सद्यः व्रण रोपक।

३२. भङ्ग प्रतिषेध

भङ्ग अधिष्ठान–२ (i) सन्धि [Joint Dislocation]
(ii) असन्धि [Bone fracture #]

सन्धिमुक्त–

सा० लक्षण– "प्रसारणाकुञ्चन विर्वतनाक्षेपणाशक्तिरूग्ररूजता स्पर्शासहिष्णुत्व' ।।४।।
फैलाने, सिकोड़ने, घुमाने, फेंकने में असमर्थ, तीव्ररूजा, Tender.

भेद– ६

१. उत्पिष्ट– संधि स्वस्थान में, दोनों ओर शोफ व वेदना (विशेषतः रात्रि में) ।
२. विश्लिष्ट– अल्पशोफ, सतत वेदना, विकृत संधि।
३. अवक्षिप्त– सन्धि विश्लेष (पृथक्), तीव्र रूक्।
४. अतिक्षिप्त– सन्धि व अस्थि दोनों अतिक्रान्त, वेदना।
५. तिर्यक्क्षिप्त– एक अस्थि पार्श्व में जाना, अतिवेदना
६. विवर्तित– संधि पार्श्व गमन, विषम अंग, वेदना।

असन्धि भग्न–

सा० लक्षण– श्वयथु बाहुल्य (Inflammation), स्पन्दन, विवर्तन (Rotation), स्पर्शासहिष्णुता, पीड्यमानेशब्दः (दबाने पर Crepts), स्रस्ताङ्ग (अंग शिथिल), अतिवेदना, किसी अवस्था में आराम न मिलना।

भेद– १२

	भग्न	लक्षण
१.	कर्कटक	दोनों भाग पृथक्, भग्न के मध्य में कर्कटाकार ग्रन्थिवत उन्नत। Separation of# ends.
२.	वक्र	अल्प भग्न, अस्थि पृथक नहीं होती Green Stick#
३.	स्फुटित	शूक पूर्ण वत आध्मान, अनेक दारण Fissured#
४.	वेल्लित	[सुश्रुत– काण्ड; Spiral#], दो भाग, हिलना (कंप) ।
५.	अस्थिछ–ल्लिका	अस्थि पार्श्व टूटकर बाहर आ जाना (Periosteal avulsion) ।
६.	अश्वकर्ण	अश्वकर्ण वत उठी Oblique#
७.	पिच्चित	पृथु, अति शोफ Compressed#
८.	दारित	सूक्ष्म,अनेक टुकड़े,. दर्द [सु०– पाटित, Comminuted #of Flat bones]
९.	चूर्णित	स्पर्श से ही शब्द। Comminuted#
१०.	अतिपातित	अस्थि अवयव अस्थि मध्य अनुप्रविष्ट [Complete Compound#]
११.	शेषित	दूसरा पार्श्व अवशिष्ट [सु०– छिन्न; Incomplete #]
१२.	मज्जानुगत	क्षत भग्न में अस्थि उन्नमन करते समय मज्जा में घुस जाना। Impacted#

- पुन: भग्न भेद– २ – (i) सव्रण (ii) अव्रण।

''तरूणास्थीनिभुज्यन्ते भज्यन्ते नळकानि तु ।
कपालानिविभिद्यन्ते स्फुटन्त्यन्यानिभूयसा ।।६३।।''

प्राय: तरूणास्थि (Cartilage) मुड़ती, नलकास्थि (Long bones) टूटती, कपालास्थि (Flat bones) फटती तथा अन्य चटकती है।

साध्यासाध्यता– सुखसाध्य–शीतऋतु; स्थिर धातु, मांसल, अल्पदोष व्यक्ति।

कृच्छसाध्य– (८-१२) दारित, चूर्णित, अतिपातित, शेषित, मज्जानुगत।

- बाल, वृद्ध, वातात्मक, कुष्ठी, कृश; उपद्रव (विसर्प, शोथ, दाह)।

असाध्य–
- कटि कपाल (Pelvic bone #) भिन्न या सन्धि मुक्त (Dislocation)।
- उत्पिष्ट जघन।
- विवर्तित कूर्पर (Rotated Elbow)
- चूर्णित ललाट [Comminuted # of Fore head]

- संश्लिष्ट कपाल (शिर की संधियां पृथक हो व विकृत हो जायें)।
- शंख, पृष्ठ, स्तनान्तर भग्न (मध्य का)।
- दुर्जात अस्थि सन्धि (Congenital Defect in bone/joint)।

सन्धि स्थिर होने (जुड़ने) में काल–

वय	काल
पूर्व (१६ वर्ष तक)	१ माह
मध्य (१६-५०)	२ माह
अन्त (५० ----)	३ माह

सामान्य चि०– नीचे दबी को उठाये, उन्नत को नीचे करे (दबाये), दूर गई अस्थि को खींचकर यथा स्थान करे; अस्थि के नीचे गई अस्थि को खींच, दबा, ऊपर कर यथास्थान करे; फिर त्वचा को संकुचित करके घृताभ्यक्त पट्टी से सम्यक् (न ढीला, न कसा) बांधकर, कुशा (Splint) लगाकर, सम बन्धन करे।

कुशा– कदम्ब, गूलर, पीपल, अर्जुन, ढाक, बांस, सर्ज।

शिथिल बन्ध– सन्धि स्थिर न होना।

गाढ बन्ध – रूजा, दाह, पाक, शोथ।

बंध मोक्षण– ग्रीष्म–३, शीत– ७, साधारण काल– ५वें दिन।

बंधनोपरांत परिषेक– न्यग्रोध शीत कषाय।

- वेदना होने पर – बृहत्पंचमूल पक्व क्षीर।
  – चक्र तैल सुखोष्ण।

पथ्य– प्रथम बार ब्याई गाय का दूध, मधुर स्कन्ध से सिद्ध कर + लाक्षा चूर्ण, घृत – प्रात: पान। शालि।

सव्रण भग्न–

कषाय द्रव्य चूर्ण + मधु, घी लगाकर बांधे, सीवन योग्य में सीवन कर दे।

कषाय द्रव्य– प्रियंगु, लोध्र, कायफल, मंजीठ, धातकी उपद्रवों की स्वचिकित्सा।

विशेष चि०–

• उत्पिष्ट नखसंधि	आरा शस्त्र रक्त के साथ-साथ ले जाकर, इससे मंथन कर, रक्त स्रावण कर, शालिपिष्ट लेप।
• अंगुलि भग्न/ विमुक्त संधि	सम्यक् स्थिर, तनु पट्ट से आवेष्टित कर घृत सेक।
• निर्गत ऊर्वस्थि	दूर चक्रवत घुमाकर बिठाये।
• कटि भग्न	ऊर्ध्व व अधो भागों का विपरीत Traction.

• अंससंधि विसंग	मूसल (या अपनी एड़ी) से कक्षा (Axilla) को ऊपर उत्क्षिप्त (उठा) कर अस्थि को कोटर में स्थित कर स्वस्तिक (Fig. of 8) बंधन।
• च्युत् कूर्पर, मणिबंध, जानु, गुल्फ संधि	संधि को अंगुठे से मर्दन, हटी संधि दबाये, प्रसारण व आकुञ्चन (फैलाकर मोड़ना) कर यथा स्थान कर, स्नेहन व सेक करे।
• हथेली भग्न	दोनों हथेलियों को एक समान रखकर (परस्पर) बांध दे; चक्र तैल परिषेक। ठीक होने पर पहले शुष्क गोमय पिण्ड(कण्डा) उठवाये।
• बाहुभङ्ग	(Humerous dislocation), उरू वत।
• ग्रीवा-विवृत/ अधोप्रविष्ट	ग्रीवा का पिछला भाग व हनु पकड़कर उठाये (Cervical traction); कुशाबांध कर, उत्तान लिटाये।
• हनुसंधिविसंग	समान कर, स्वेद → यथावत स्थित कर पञ्चाङ्गी बंध। मधुर वातघ्न सिद्ध नस्य।
• हिले दांत	दबाकर, शीत जल परिषेक, अन्त:लेप– संधानीय; बहि:लेप– निर्वापण (न्यग्रोधादि गण)। नस्य, गण्डूष– बला अतिबला क्वाथ + पद्मकादि गण कल्क → घृत पाक। ३ माह तक, द्रव आहार।
• नासा	शलाका से नासा को ऋजु कर, प्रत्येक छिद्र में द्विमुखी नाड़ी प्रविष्ट कर पट्टी संवेष्टित कर घृत सेक।
• भग्न कर्ण	घृताभ्यक्त, सम्यक् कर बांध दे, सद्य: क्षत चि०।
• कटि, जंघा, उरू भग्न	कवाटशयन। तख्त पर लिटाकर ५ कीलों से स्थिर करे– २-२ जंघा, उरू, पार्श्व के दोनों ओर, १-तल।
• श्रोणि, पृष्ठवंश, वक्ष, अक्षकास्थि विमोक्ष/भग्न – उपरोक्त कवाट शयन।	
• चिर विमुक्त संधि– स्नेहन, स्वेदन → मृदु, स्वस्थान पर लाये।	

→ भग्न के विषम/ऊपर/नीचे जुड़ जाने पर पुन: तोड़कर भग्न चि०।

→ सव्रण भग्न को पाक से बचाये; मांस, सिरा, स्नायु पाक → सन्धि नहीं जुड़ती।

• ग्लानि न करे → सन्धि विश्लेष।

अपथ्य–

लवणं कटुकं क्षारमम्लं मैथुनमातपम्।
व्यायामं च न सेवेत भग्नो रूक्षं च भेषजम्।।६१।।

लवण, कटु, क्षार, अम्ल, मैथुन, धूप, व्यायाम, अस्निग्ध औषधि।

स्नेह प्रयोग – पान, अनुवासन, नस्य, अभ्यंग।
– गंध तैल (श्लो० ६५); गुग्गुलु तैल, बला तैल।

सुसाधित भग्न लक्षण– अनुद्धणमनाविद्धं स्वस्थानेपर्यवस्थितम्।
अवेदनं च चेष्टायां भग्नं विद्यात् सुसाधितम् ॥६४॥

ऊंचा, नीचा, फंसा न हो, अपने स्थान में स्थित, चेष्टा (अंग चलाने) में वेदना न हो। वह ठीक जुड़ा है।

३३. भगन्दर प्रतिषेध

निदान– कठिन, उत्कट आसन, अर्श निदान आदि।

स्वरूप– प्राय: (Except K-P) पिटका से प्रारंभ होकर, गुदा के २/१ अंगुल क्षेत्र में रक्त मांसाश्रित व्रण-अन्त:/बाह्य। सदास्रावी I. वात II. मूत्र शकृत III. शुक्र। भग वस्ति गुद दारण।

भेद-८ – V, P, K, द्वन्दज-३, S, आगन्तुज (शल्यज)।

'अपक्वं पिटकामाहु: पाक प्राप्तं भगन्दरम्।।४।।

यह रोग अपक्व अवस्था में पिटका तथा पक जाने पर भगंदर कहा जाता है।

भगंदर कारक पिटका लक्षण– गूढ़ मूल, राग, शोफ, वेदना, रूढ़ कोपिनी; रोहण होकर (पिटका सूख जाना, व्रण भर जाना) पुन: प्रकुपित हो (उभर) जाना। ये लक्षण न होने पर पिटिका भगंदर कर नहीं होती।

	दोष	पिटका	भगन्दर
१.	वात	श्याव अरूण, तोद, भेद, स्फुरण, रूक्	**शतपोनक–** सूक्ष्ममुखी छिद्रों से चलनी वत भरना; स्राव– सफेन, जलवत।
२.	पित्त	उष्ट्र ग्रीवावत उठी, राग, तनु, ऊष्मा, ज्वर, धूमायन।	उष्ट्रग्रीव
३.	कफ	पाण्डु, स्थिर, स्निग्ध, महा-मूल, कण्डू।	**परिस्रावी–** बहुपिच्छापरिस्रावी। स्राव– बहुत, पिच्छिल।
४.	वात-पित्त	श्याव/ताम्र, दाह, ओष, रूक्।	**परिक्षेपी–** गुदा के चारों ओर परिख (परिधि) वत मण्डलाकार नाड़ी।
५.	वात-कफ	पाण्डु-श्याव, कृच्छपाकी	**ऋजु–** गुदा का सीधा अवदीरण (फटना)।

६.	कफ पित्त	(पिटका वस्था नहीं होती; अर्श मूल के शीघ्र पाक से)	**अर्श भगन्दर–** अर्श → K.P↑→ अर्श मूल में शोफ, कण्डू, दाह → पकना → भिन्न → अर्शमूल क्लेद → स्रावी नाड़ी।
७.	सन्नि-पात	पाद के अंगुष्ठ सम, वेदनाएं, ज्वर, वमन, तृट, दाह।	**शम्बूकावर्त–** नाड़ी का शम्बूक (घोंघा) वत आवर्त; दारूण दर्द।
८.	आगंतुज (क्षतज)	(पिटका नहीं होती)	**उन्मार्गी–** मांसाहारी के अस्थि का टुकड़ा खाने से → गुद क्षत → पूय, उन्मार्गी तिर्यक नाड़ी; कृमि उत्पन्न।

साध्यासाध्य–
- कृच्छसाध्य– प्रथम ६ ।
- असाध्य– अन्तिम २; प्रवाहिणी वली प्राप्त, सेवनी आश्रित सर्व भगंदर।

सामान्य चिकित्सा–

पिटिका (अपक्व) – अपतर्पण (व्रण प्रतिषेधोक्त) – पाक परिहारार्थ।

भगंदर (पिटिका → पाक) –
- I. स्नेहन, II. शोधन – अर्कादि क्वाथ III. स्वेदन।
- भोजन देकर अर्शोक्त स्थिति में लिटाकर अर्शवत यन्त्र से (Proctoscope), Post, Ant, wall का बर्हि/अन्तर्मुखी भगंदर देखे।
- बर्हिमुखी को एषणी (Probe) डालकर सम्पूर्ण आशय के साथ काटे।
- अन्तर्मुखी में प्रवाहण के साथ-साथ अर्शोयन्त्र घुसेड़कर ढूंढकर (एषण) शस्त्र से काटे (पाटन) ।

  दोनों को अग्नि/क्षार दग्ध करे (उष्ट्रग्रीव में केवल क्षार) ।

  कालानुसार निर्वापण, शोधन, रोपण चि०।

विशेष चि० –
- **शतपोनक–** एक नाड़ी चीर कर रोपण हो जाने पर अगली चीरे। अन्यथा – विवृत व्रण → गुद स्रोत विदारण – वात, मल आना।

गुद विदारण चि० –
- मुलेठी सिद्ध सुखोष्ण तैल परिषेक/बला तैल – वातहर।
- स्निग्ध पिण्ड स्वेद, नाड़ी स्वेद, अवगाहन (Hot tub) ।

पाचन– • वचा, हिंगु, कुष्ठ, त्रिकटु, पञ्चलवण, अजवायन– घी से पिये।

- **परिक्षेपी–** क्षार सूत्र से २/३ बार में अवदारण।
  शीघ्र विदारण– व्रण असाध्य/याप्य।
- **अर्शोभगंदर–** I. अर्श क्षेदन II. भगंदर गति (नाड़ी) चि०।
- **उन्मार्गी–** शल्य निकाले; कृमिघ्न आलेप व औषधि; शतपोनकोक्त स्वेद, पाचन आदि।
- **बहुछिद्र होने पर–** छिद्रानुसार निम्न ४ छेदन –
  1. गोतीर्थक – पार्श्वागतेन शस्त्रेण;
  2. सर्वतोभद्र – सर्वतः ;
  3. अर्द्धलांगल – एक पार्श्वच्छेद;
  4. लाङ्गलक – दोनों पार्श्वों में छेदन।

→ सभी मार्गों का पूर्णतः अग्नि दाह करे।

→ बीच-२ में कोष्ठ शुद्धि।

→ वातज भगंदर– आर्द्रक रस/कल्क सिद्ध घृत पान।

- **नाड़ी व्रण हर–** निकुम्भ, कुम्भ, मजीठ कल्क।
- **मांस वर्धक–** मजीठ, सैंधव, मधु, नागदन्ती, त्रिवृत, तिल, रसौत, रजनीद्वय, तेजबल, निम्ब पत्र।
  [तेजोह्वा – ज्योतिष्मती – इन्दु; तेजबल]
- **शोधन–** तिल, कुम्भ, त्रिफला, दन्ती, तुत्थ, सैंधव, मधु, पिप्पली, रोचना, कुष्ठ।
- **विष्यन्दन तैल–** शोधन, रोपण। (सुश्रुत में भी वर्णित) ।
  स्नुही, लसूड़ा, त्रिवृत, पाठा, मलयू, कनेर, ज्योतिष्मती, कलिहारी, सर्जिक्षार, अर्क, वच, चित्रक पक्व तैल।
- सैंधव, अर्क, त्रिवृत, पाठा, मजीठ, करंज, चित्रक, मातुलुंग पत्र सिद्ध तैल – शोधन, रोपण।

खाने हेतु औषधि–

- विडंग, त्रिफला, पिप्पली, मरिच + तैल, मधु – कृमि, कुष्ठ, भगंदर, प्रमेह, क्षत, नाड़ी व्रण रोपण।
- अमृता – १ भाग इन्द्रयव–४ भाग आंवला–७ भाग } मधु से पतला
  एला – २ भाग विभीतक–५ भाग गुग्गुलु–८ भाग } कर खाये।
  विडंग – ३ भाग हरड़–६ भाग
  गुण– पिटका, स्थौल्य, भगंदर हर।

- गुग्गुलु–५ पल
  पिप्पली, त्रिफला– १-१ पल
  दालचीनी, एला– १/२-१/२ कर्ष } मधु से। – भगंदर, गुल्म, नाड़ीव्रण,कुष्ठ हर।
- उपरोक्त चूर्ण + सोंठ चूर्ण – दशमूल क्वाथ भावना – वातजित।

असेव्य– सवारी, वेगरोध, मद्य, अजीर्ण, असात्म्य आहार, साहसिक कार्य, मैथुन – कम से कम १ वर्ष तक।

३४. ग्रन्थ्यर्बुद श्लीपदापची नाड़ी विज्ञानीय

ग्रन्थि–

कफप्रधानाः कुर्वन्ति मेदोमांसास्रगामलाः ।
वृत्तोन्नतं यं श्वयथुं सग्रन्थिर्ग्रथनात् स्मृतः ।।२।।

- ग्रथन करने (ग्रथित) से ग्रन्थि है।

मेद, मांस, रक्त $\xrightarrow{\text{कफोल्वण दोष}}$ ग्रथन → वृत्त, उन्नत शोथ, ग्रन्थि।

भेद-९ – V, P, K, R, मेद, (साध्य) मांस, अस्थि, सिरा, व्रणजन्य। (असाध्य)

१. **वातज–** चल, घटना, बढ़ना, मृदु, फटने पर अच्छ रक्त स्रुत।
२. **पित्तज–** पीताभ, दाह, पाक, भिन्न → उष्ण रक्त स्रुत।
३. **कफज–** त्वकवर्ण, नीरूज, घन, शीत, कण्डू, पक्व → घन पूय स्रवण [Cyst]।
४. **रक्तज–** दुष्ट रक्त → ग्रन्थि + जन्तु (Bacteria) → सिरा, मांस सुप्त; पैत्तिक लक्षण।
५. **मांस ग्रन्थि–** मांसाहार → मांस दुष्ट → स्निग्ध, महान्त (विस्तृत Margins), कठिन, सिरानद्ध; कफ लक्षण।
६. **मेद ग्रन्थि (LIPOMA)–**
   प्रवृद्ध मेद $\xrightarrow{\text{वात}}$ मांस, त्वक्गत → स्निग्ध, मृदु, चल ग्रन्थि।
   कफज लक्षण, देह बढ़ने, क्षय से वृद्धि/क्षय; भिन्न → घन मेद स्राव– **ताम्र**, **कृष्ण**, श्वेत।
७. **अस्थि ग्रन्थि** (Bone tumour)– भङ्ग (Fracture), अभिघात से → अस्थि उठी/दबी → ग्रथित।
८. **सिराग्रन्थि–** थके पैर (उष्ण) सहसा जल अवगाहन → V+R → सिरा जाल संपीडन, संकोच, वक्रीकरण, विशोष (शुष्क) → वेदना, स्फुरणहीन ग्रन्थि।
९. **व्रण ग्रन्थि–** व्रणित में चोट/अपथ्य → वात कोप → दूषित रक्त शुष्क → ग्रन्थि। दाह, कण्डू।

असाध्यता– मर्म, कण्ठ, उदर स्थित स्थूल, खर, चल ग्रन्थियां।

अर्बुद

- महत्तुग्रन्थितोर्बुदम्।।१४।। ग्रन्थि से बड़ा ≡ महान ग्रन्थि – अर्बुद।
- प्रायो मेदः कफाढ्यत्वात् स्थिरत्वाच्च न पच्यते ।।१५।।
  प्रायः मेद, कफ आधिक्य होने से स्थिर रहता है पकता नहीं।

भेद-६ – V. P. K. R., मांस, मेद

लक्षण– ग्रन्थिवत। असाध्य– मांस व रक्तजन्य। शेष साध्य।

शोणितार्बुद– (Malignant)

दोष → सिरास्थित रक्त का संकोच, पीडन, पाचन → फूलकर रक्त मांस पिण्ड → मांसांकुरों से पूर्ण हो वृद्धि → सतत दुष्ट रक्त स्राव।

श्लीपद (Filaria)

कफोल्वण दोष → वंक्षण, उरू आदि अधः भाग में मांस व रक्त में आश्रित → कुछ काल बाद पाद में शनैः-२ घन शोफ – श्लीपद।

→ यह आनूप देश में अधिक होता है।

→ अन्य आचार्यों के अनुसार यह पाद वत, हाथ, नासा, ओष्ठ, कर्ण में भी होता है।

भेद– ३

१. वातज– त्वक् फटना, कृष्ण, **रूज**, खर, रूक्ष।

२. पित्तज– पीत, **दाह ज्वरान्वित**।

३. कफज– गुरू, स्निग्ध, **अरूक्**, बृहत्, मांसांकुर (Elephantiasis) ।

असाध्य– १ वर्ष पुराना, महत्, स्रावी।

अपची (Lymphadenitis)

दोष → मेदाश्रित → कण्ठ, मन्या, अक्षक (Axilla), वंक्षण (Groin) में त्वक्वर्ण, कठिन, स्निग्ध, अवगाढ़ (Deep source), बहुत सी गण्ड (गांठें); आकृति– बैंगन/आंवला जैसी।

(1) चिर पाक → अल्प रूज, स्राव
(2) अपाक → कण्डू
} कुछ शांत हो जाती हैं तथा कुछ नयी निकलती है। यह दूर्वा वत लम्बे समय तक चलती है।

कण्ठ में होने पर इसे गण्डमाला कहते हैं।

असाध्य– गण्डमाला/अपची + ज्वर, वमन, पार्श्वशूल, कास, पीनस [Leukaemia] ।

नाड़ी व्रण

उपेक्षित पूय → मांसादि में अनुप्रविष्ट हो नाली सी बनाते हुये दूर तक पहुँच जाती है।

"गतिः सा दूरगयनान्नाडीवसस्रुतेः ।।२७।।"

दूर तक जाने से 'गति' तथा नाली/नाड़ी वत स्रवण करने से 'नाड़ी' कहते हैं। (अन्य आचार्य– १ अनृजु– नाड़ी; अनेक अनृजु – गति)

भेद– ५

१. वात– सूक्ष्म मुख, दर्द; स्राव– विवर्ण, फेनिल, रात्रि में अधिक
२. पित्त– ज्वर; स्राव– पीत, उष्ण, पूति पूय – दिन में अधिक
३. कफज– कण्डू; स्राव– घन, पिच्छिल, – रात्रि में अधिक।
४. सन्निपातज– असाध्य; सर्वलक्षण।
५. शल्यज– अन्तशल्य; सदैव रूज; स्राव– तनु, उष्ण, रक्त + पूय।

३५. ग्रन्थ्यादि प्रतिषेध

ग्रन्थि–

सा० चिकित्सा– पूर्वरूपावस्था से ही–

१. स्नेहन– बृहती द्वय, पिप्पली, चित्रक कल्क सिद्ध पुराण घृत।
२. वमन, विरेचन संसर्जन।
३. ऊर्ध्वजत्रुगत ग्रन्थि में– लाक्षा, हरिद्राद्वय, विडंग, सोंठ, करंज से शिरोविरेक; धूम, कवल, गण्डूष।
४. लेप– कृष्णनिशोथ, देवदारू, मजीठ, कटुतुम्बी, पुनर्नवा, सरसों।
५. उपनाह– शोफ, रूक्, स्तंभहर। यवसत्तू, मुलेठी, कूठ, सौंफ, देवदारू + घृत।
६. स्वेदन– पलाश पत्र, अग्निमंथ त्वक् कल्क से। } बार-२ ।
७. विमर्दन– अंगुष्ठ/वेणु पर्व से। }

विशेष चि०–

१. **वातज–** • अमृता, निम्बबीज, भार्ङ्गी, अगरू –क्षीरपिष्ट कर सुखोष्ण लेप।
• स्नेहन, स्वेदन, सिरावेध

पक्व– (i) विदारण कर पूय निकाले :
(ii) प्रक्षालन– अर्कादि गण क्वाथ
(iii) लेप– चित्रक, सैंधव + तिल कल्क
(iv) रोपण– रास्ना, सरल, उशीर, विडंग, मुलेठी कल्क, सक्षीर– सिद्ध तैल।

२.३. **पित्तज, रक्तज–** • जलौका। प्रदेह, परिषेक– न्यग्रोधादि गण।

- विरेचन– द्राक्षा, इक्षु रस, हरड़।
- पकने पर पाटन।

४. **कफज–**
- संशोधन, स्वेदन, विम्लापन।
- लेप– भिलावा, सैंधव, अजगंधा, सर्षप कल्क।
- विदारण कर वहाँ स्थित रक्त को संपूर्ण अग्नि दग्ध करे।
- निर्वापण; यवक्षार, मधु आदि लेपों से शोधन कर रोपण।

५. मांस ग्रन्थि– कफ चि० से याप्य।
६. मेद ग्रन्थि– पाटन कर अग्नि दग्ध करे।
७. सिरा ग्रन्थि– नूतन की चि०।
- सहचर (झिण्टी) तैल पान
- वातघ्न उपनाह, वस्ति; सिरा व्यध।

अर्बुद– क्षार, शस्त्र, अग्नि से सम्पूर्ण नाश कर शोधन व रोपण करे।

वातार्बुद–

(I) उपनाह– एरण्ड, चिरौंजी, नारियल मज्जा, ककड़ी, खीरा बीज से उत्कारिका बनाकर।

(II) नाड़ी स्वेद– बहुत बार।

(III) शृंग द्वारा रक्तमोक्षण।

मेदोर्बुद– स्वेदन, भेदन, मेद शोधन, सीवन; करंज तैल लगाये।

पित्तार्बुद– मुलेठी/द्राक्षा सिद्ध घृत पान।

श्लीपद–

वातज–
- स्नेहन, स्वेदन, उपनाह; सिरावेध– गुल्फ के २ अंगुल ऊपर।
- एरण्ड तैल– गोमूत्र से – १ माह।
- पुराण (शालि) धान्य– सोंठ पक्व दूध से।
- वस्ति, अग्नि दग्ध।

पित्तज– मृदु उपनाह; गुल्फ के नीचे सिरामोक्ष।
पित्तार्बुदोक्त स्नेह विरेचन पान।

कफज– पाद अंगुष्ठ में सिरा व्यध।
कफघ्न कषाय + मधु – बार-२ ।
बलानुसार हरीतकी वर्द्धमान प्रयोग।

- विडंग, अर्क, मरिच, चित्रक, सोंठ, देवदारू, एलवालुक, पंच लवण सिद्ध तैल पान।

- लेप- • सोंठ, गुडुची, विडंग, कुटकी, देवदारू – गोमूत्र पिष्ट।
  - • उरू स्तम्भ द्रव्य- गोमूत्र पिष्ट।

पथ्य- जौ शीलन (अभ्यास)।

गण्डमाला-

(1) **उभयानुलोमन** (वमन, विरेचन)- • त्रिवृत, दन्ती, द्रवन्ती, जीमूतक, कोशातकी फल पक्व घृत।
- शार्ङ्गेष्टा मूल को तक्र से पीसकर पिलाये। सिरावेध।

(2) शेष दोष हेतु- रसाञ्जन – गोमूत्र/तण्डुलोदकेन।

(3) नस्य- मधूक सार/शिग्रुफल/नीम, कनेर सिद्ध तैल।

(4) वैरेचनिक धूम

(5) अपक्व पर लेप- रास्ना, सैंधव, सोंठ।

→ तण्डुलीयक (चौलाई)/+निर्गुण्डी रस सिद्ध तैल- अभ्यंग, पान, नस्य – गण्डमाला, नाड़ी व्रण, कुष्ठ, वात रोगहर।

→ जो मर्मस्थान में न हों उन्हें अपक्वावस्था में ही निकालकर अग्नि/क्षार दग्ध करे।
प्रक्षालन- सर्षप, वृक्षादनी क्वाथ।
लेप- तिलनालक्षार पिष्ट तिल कल्क।

→ श्लीपदोक्त तैल
→ सर्प, अजगर वसा, तैल – एक साथ पकाकर } लेप- अपचीहर।

अग्निकर्म- अपची वाले पार्श्व के दूसरे पार्श्व के जंघा के पृष्ठ भाग (Dorsal aspect) के मध्य में इन्द्र बस्ति मर्म के ऊपर/नीचे शस्त्र से आंख के बराबर व्रण करे। यहाँ स्थित मत्स्य अण्ड जाल निभ मेद का अपनयन कर अग्नि से दाह करे।

- दोनों ओर अपची होने पर दोनों जंघाओं (Leg) में दाह।

पथ्य- जौ, मूंग।

नाड़ी- (A) I. उपनाह II. एषण III. शस्त्र अवदारण IV. शोधन, वर्ति, रोपण।

- शोधन, वर्ति हेतु- • V – अपामार्ग फल, तिल, सैंधव।
  - • P – मंजीठ, हरिद्राद्वय, निशोथ, त्रिफला।
  - • K – नीम, फिटकरी, सैंधव, करंज, अपामार्गफल।
- शल्यज नाड़ी- पाटन कर शल्य निर्हरण; मधु घी तिल कल्क रखकर बांधे।
  – बिल्व, कैथ, कुम्भी (जलकुम्भी), खर्जूर, के कच्चे फलों का क्वाथ + प्रियंगु, मुस्ता, एरण्ड, तण्डुल (शकुन), लोध्र, मोचरस, धाय पुष्प कल्क से सिद्ध तैल- शल्यजगति प्रसाधक।

- क्षारसूत्र– जो नाड़ी शस्त्र के योग्य न हो उसे भेदिनी एषिणी (एक छिद्र वाला Probe) में क्षार सूत्र डालकर, उससे अंदर क्षार सूत्र पहुँचा कर, बाहर सूत्र में गांठ लगा दे। नाड़ी का भेदन न हो जाने तक सूत्र बदलता रहे।

'सूक्ष्मानेकगतिषु भगन्दरेषु मूलेषु च छिद्रितेषु ग्रन्थ्यर्बुदेष्विति ।।३४।।'

सूक्ष्म मुखी अनेक नाड़ी व्रण, भगन्दर, ग्रन्थि, अर्बुद के छिद्र व मूल में प्रयोग र्निव्यापद है।

गतिरोपण– धतूरा, मदनफल, कोदौ, – बीज
कटुतुम्बी, शिरीष, इन्द्रायण – फल
अंकोठ – पुष्प } चूर्ण।

लाक्षा जल से प्रक्षालन कर, इस चूर्ण + तैल लेप।

→ भिलावा, अर्क, मरिच, सैंधव, विडंग, हल्दी, दारूहल्दी, चित्रक कल्क से भृंगराज रस में सिद्ध किया तैल।

– नाड़ी, अपची (कफ-वात), व्रण नाशक।

३६. क्षुद्र रोग विज्ञानीय

कुल क्षुद्र रोग– ३६ (सु० – ४४)

१.	अजगल्लिका	K+V, स्निग्ध, सवर्ण, ग्रथित, नीरूज, मुद्ग जैसी आभा वाली पिटका, प्राय: बालकों में।
२.	यव प्रख्या	(K+V), -यववत, मांसाश्रित, घन। अवक्त्रा (मुख रहित) अलजी।
३.	अलजी	(K+V),–do– अवक्त्रा (मुख रहित)।
४.	कच्छपी	(K+V), ५/६ कच्छप वत उन्नत वृत्त ग्रन्थियां, पूययुक्त, घन, [कच्छा में – सु०]
५.	पनसिका	[K+V], कान के ऊपर/चारों ओर, कठिन, शालूकाभ पिटका, तीव्र रूक।
६.	पाषाण गर्दभ	K+V, हनु संधि से उत्पन्न स्थिर शोफ, अल्प रूज (Mumps)।
७.	मुख दूषिका	(K+V) [सुश्रुत– K-V-R] Acne vulgaris. युवा चेहरे पर शाल्मली कण्टकाकार, सरूज, घन, पिटिकाएं, मेदोगर्भा (अंदर मेद भरा)।
८.	पद्म कण्टक	K+V, पद्मवत कंटक, नीरूज, श्वेत से शरीर पूर्ण।
९.	विवृता	P, → वृत्त पिटका (Boil) – पक्व गूलर जैसी आभा, महादाह, ज्वर, विवृतानना (फैला मुख)।

१०.	मसूरिका	(Small pox), गात्र पर तथा मुख के अंदर दाह, ज्वर, रूजा युक्त, मसूर का आकार तथा वर्ण जैसी घन पिटकाएं। [भरद्वाज-८ – V, P, K, द्वन्दज (३), S, R; वृद्ध काश्यप-६ – V, P, K, S, R, आगंतुज; भोज-८ – मसूरिका, सर्षपिका, अजका, कोद्रव, कंगु, विस्फोट, अपाकी, विसर्पी]
११.	विस्फोट	मसूरिका से अधिक कष्ट कर स्फोट, महारूजा। [सु०– P-R].
१२.	विद्धा	V+P, पद्म कर्णिका कार पिटका, अन्यों से घिरी।
१३.	गर्दभी	V+P
१४.	मण्डला	V+P, विपुल उत्सन्न, सराग, पिटका पूर्ण।
१५.	कक्ष्या	V+P, कक्षा के निकट, सूक्ष्मलाजोपम घन पिटकाएं।
१६.	गन्धनामा	V+P, कक्ष्या जैसी एक, बड़ी पिटका।
१७.	राजिका	स्वेद वाले अंग में (Groin & Axilla) सरूज, घन, पिटकाएं। • राई-वर्ण, संस्थान (आकृति), प्रमाण (मात्रा/सम) ।
१८.	जालगर्दभ	पित्तोल्वण त्रिदोष, ज्वर के साथ, मन्द विसर्पणशील शोफ, –पाकी, तनु, ताम्र (Erysipelas) ।
१९.	अग्निरोहिणी	पित्तोल्वण त्रिदोष, कक्षा भाग में (यज्ञोपवीत रेखा) स्फोट, ज्वर, दाह, मांस दारण। P-5, V-7, K-15 वें दिन मारक।
२०.	इरिगल्लिका	त्रिदोषज, जत्रु के ऊर्ध्व भाग में वृत्त पिटका। [सु०–शिर में]।
२१.	विदारी	(S), कक्षा व वंक्षण में विदारी कन्द जैसी कठिन पिटका।
२२.	शर्करार्बुद (Sebaceous Cyst)	मेद, वात, कफ → स्नायु, मांस, सिरा में आश्रित → ग्रन्थि। भिन्न → स्राव – वसा, घी, मधु जैसी आभा; V↑ → मांस शुष्क, ग्रथित → शर्करा; स्राव– नाना वर्ण, क्लिन्न, दुर्गंधित रक्त।
२३.	वल्मीक	S, हथेली, तलुए की सन्धि, ऊर्ध्व जत्रु में वल्मीक वत (शोफ) सूक्ष्म मुख, बहुत; रूक, दाह, कण्डू, क्लेदाधिक्य।
२४.	कदर	कंकड़/कण्टक → पाद क्षत → कीलवत उठी गांठ
२५.	रूद्धगुद	वेग धारण → अपान कोप → गुदसंश्रित – बाह्य व अन्तःमार्ग संकोच → कठिनाई से मल निकलना।
२६.	चिप्प	पर्याय– अक्षत, उपनख। (Infection of term. pulp of nail). P+V → नख मांस पाक, रूक्, ज्वर
२७.	कुनख	अभिघात → नख कृष्ण, रूक्ष, खर।

२८.	अलस	दुष्ट कीचड़ स्पर्श → अंगुलियों के मध्य स्थान में कण्डू, क्लेद।
२९.	तिलकालक	त्वचा पर तिल जैसे काले (चकत्ते), अवेदन।
३०.	मशक	उन्नततिल कालक।
३१.	चर्मकील	मशक से अधिक उन्नत; श्वेत/कृष्ण।
३२.	जतुमणि	इसी प्रकार, सरूज, लोहित।
३३.	लाञ्छन	सहज (Congenital), कृष्ण/श्वेत मण्डल।
३४.	व्यंग	शोक, क्रोधादि → वात, पित्त कोप → मुख पर तनु श्यामल मण्डल।
	• नीलिका	मुख के अतिरिक्त अन्य स्थान का व्यंग।
		व्यंग– V – कठिन खर श्याव; P – किनारे ताम्र/नील; K – श्वेत, कण्डू; R – किनारे लाल/ताम्र, ओष।
३५.	प्रसुप्ति	वात से उदीरित श्लेष्मा → त्वक् में जाकर शुष्क → पाण्डु त्वक्, क्रमशः संज्ञा नष्ट (सुप्ति), कण्डू। क्लेद नहीं होता।
३६.	उत्कोठ	असम्यक् वमन। क्षुत् निग्रह → उदीर्ण P.K → मण्डल। राग, बहुत, कण्डू।
	• कोठ	उत्कोठ + ज्वर।

३७. क्षुद्र रोग प्रतिषेध

- **<u>अपक्व</u> अजगल्लिका–** जलौका; यवक्षार सीप फिटकरी का लेप।
- **यवप्रख्या, अलजी, कच्छपी, पनसिका, पाषाण गर्दभ–** स्वेद; देवदारू, कूठ, मनःशिला, हरताल – लेप।

पक्व [अजगल्लिका→पाषाण गर्दभ] – व्रण वत चि०।

- **मुखदूषिका–**

लेप– लोध्र, अरहर/वट पत्र, नारियल/सैंधव, वच, लोध्र, सर्षप। वमन, ललाट में सिरा व्यध।

- **पद्मकण्टक–** वमन– निम्बाम्बु।
  निम्बोदक सिद्ध घृत + मधु पान।
  निम्ब, अमलतास कषाय – उद्वर्तन।
- **विवृता → जालगर्दभा, इरिगल्लिका–** पित्त विसर्प वत
  (राजिका – मूर्वा क्षीर पिष्ट कर लेप; जाल गर्दभ – आंवला विशेषतः)

- **अग्निरोहिणी– प्रत्याख्येय,** पित्त विसर्प वत चि०
  पक जाने पर मधुर वर्ग सिद्ध घृत से रोपण।
- **विदारी–** जलौका; लेप– बिल्व मूल, पुनर्नवा, पलाश आदि कल्क। स्नेहन, स्वेदन, विम्लापन; पकने पर शस्त्र से विदारण कर, नीम तिल, पटोल कल्क से बांधे।
  व्रण प्रक्षालन– क्षीरिवृक्ष, कदर (सफेद खैर), खदिर कषाय।
  रोपण– मधुर कषाय संस्कृत तैल।
- **शर्करार्बुद–** मेदोर्बुद वत।
- **वल्मीक– असाध्यता–** हाथ पैर में मर्म पर, प्रवृद्ध, बहुछिद्र, सशोफ।
  संशोधन, रक्तमोक्षण; लेप– सक्तु, तिल, सैंधव, गुडुची, अमलतास, काली निशोथ, दन्ती, कुलत्थी मूल।
  पकने पर– शस्त्र से सर्व नाड़ी (गतियां) व दुष्ट मांस काटकर, अग्नि/क्षार दहन।
  रोपण तैल– भिलावा, मन:शिला, हरताल, एला, तगर, अगरू, चंदन, नीम।
- **कदर–** शस्त्र से काटकर, स्नेह दग्ध।
- **रूद्धगुद–** निरूद्ध मणि वत चि० ।
- **चिप्प–** रक्तमोक्षण, संशोधन, उष्णाम्बु परिषेक, शस्त्र से आवश्यकतानुसार काटे।
  शोधन– रसांजन, रोचना, मन:शिला, तेजोह्वा– अम्लपिष्ट।
  रोपण– काला चंदन, अगरू, हल्दी, रसाञ्जन सिद्ध तैल/मधुर कषाय सिद्ध तैल।
- **कुनख–** चिप्पवत।
- **अलस–**
  - अम्ल कांजी से परिषेक कर, नीम, तिल, पटोल, कासीस, रोचना कल्क लेप।
  - कटेरी रस सिद्ध सरसों तैल लगाये।
  - रोचना, कासीस, मन:शिला चूर्ण प्रतिसारण।
- **तिलकालक, मशक–** सूर्यकान्त की अग्नि (सूर्य रश्मि)/क्षार दहन।
- **चर्मकील, जतुमणि–** शस्त्र से काटकर उपरोक्त दाह।
- **लाञ्छन, व्यंग, नीलिका–** निकट की सिरा का वेध।
  लेप–
  - क्षीरीवृक्ष त्वक् कल्क – क्षीर पिष्ट।
  - बला, अतिबला, मुलेठी, हल्दी।
  - इमली मूल।
- **व्यंग–** विशेषत: – रक्तमोक्षण कर अर्जुन की स्वयं से पृथक् त्वक् से लेप/मंजीठ + मधु/दाडिम की आर्द्र त्वक् + अजाक्षीर लेप।

1. **वातज–** देवदारू, दुरालभा, बृहती, मजीठ, मूर्वा, अपामार्ग, बला, जौ, बेर, कुलत्थी, बिल्व, नील कमल, शतावरी, दर्भमूल क्वाथ + कर्कटशृंगी, विडंग कल्क सिद्ध घृत – भोजन पूर्व पान, सायं नस्य व अभ्यंग।

   लेप– • न्यग्रोध (वट), देवदारू, हरड़, पूतिकरञ्ज, मदन फल चूर्ण + घी।
   • बेर मज्जा, कोदौ, लाजा चूर्ण + घृत।

2. **पित्तज–**

   I. स्नेहन– बला, मुलेठी, पिप्पली, क्षीरकाकोली, आत्मगुप्ता फली, मकोय, वंशलोचन कल्क से दूध के साथ सिद्ध घृत। – पान, नस्य, अभ्यंग।

   II. वमन, विरेचन – इक्षुरस से।

   III. रक्तावसेचन

   IV. लेप– • मुलेठी, सारिवा, बला, चंदन, लोध्र, नीलाकमल + घी
   • मुलेठी, केला की मूल, प्रवाल, स्वर्णगैरिक, कमल + घी।

   पथ्य– शीत, मधुर आहार, प्रवात, दिवाशयन, सौमनस्य (प्रसन्न)।

3. **कफज–** घृत– दशमूल, देवदारू, हरड़, गोक्षुर, आंवला क्वाथ + मुस्ता, कूठ, हल्दी, देवदारू कल्क सिद्ध घृत।

   लेप– मनःशिला, तुत्थ, रसाञ्जन – मधु व घृत से।
   → मृदुक्षार १० मात्रा काल तक प्रलेप।

4. **रक्तज–** (I) स्नेहन– क्षीर सर्पि (II) सिरा विस्रावण, (III) पित्तज वत संशोधन
   (IV) लेप– • चन्दन, मुलेठी, कल्क + घी।
   • सर्जरस, नीलोत्पल, शंख, वेतस, कदलीमूल, मूर्वा, मधूक कल्क + घी।

- **प्रसुप्ति–** वातकुष्ठवत चि०; अग्नि दाह।
- **उत्कोठ–** (Urticaria)– पित्तकफघ्न चि०; यवक्षार + सैंधव + तैल– अभ्यंग
- **कोठ–** कुष्ठ चि०।

३८. गुह्यरोग विज्ञानीय

पुरुष रोग– २३

निदान– दोष दुष्ट, मलिन, संकीर्ण (Constrict vag. canal), मलिन, अणु (सूक्ष्म मुखी), रजस्वला, नवप्रसूता, अन्ययोनि। मैथुनोपरांत/वैसे भी दूषित जल प्रक्षालन/अप्रक्षालन; लेप, पीडन; वेगनिग्रह, घर्षण (दीर्घ खर बालों से)।

१.	उपदंश-५ –	(रक्तज– याप्य; सन्निपातज– असाध्य)
	वातज	मेढ्रशोफ, नाना वेदनाएं, स्तम्भ, त्वक् फटना।
	पित्तज	पक्वोदुम्बर संकाश श्वयथु, ज्वर।
	कफज	कठिन, स्निग्ध, कण्डू मान, शीत, गुरू (शोफ)।
	रक्तज	कृष्ण स्फोट, रक्तस्राव, ज्वर।
	सन्निपातज	सर्वलिङ्ग, मेढ्र व मुष्क शोफ, तीव्र रूक्, आशुपाक, फटना, कृमि उत्पन्न। → मृत्यु।
२.	मांसकील (अर्श)	कुपित दोष → मेढ्र के रक्त, मांस में आश्रित → मेढ्र के अंदर/बाहर मांसकील – कण्डू, पिच्छिल, रक्तस्रावी। • ऐसी ही मांसकील – स्त्री योनि – छत्राकार ≡ अर्श (पुरूषत्व/आर्तव नाशक)।
३.	सर्षपिका	K+R, अंदर/बाहर घन पिटकाएं – सर्षप प्रमाण, आकृति।
४.	अवमन्थ	K+R, बहुत सी दीर्घ पिटकाएं जो मध्य से फटती हैं; वेदना, रोमहर्ष।
५.	कुम्भिका	R+P, जामुन गुठली निभ, शीघ्र उठी पिटका।
६.	अलजी	प्रमेह में कही जैसी।
७.	उत्तमा	R+P, माष मुद्गाभ (उड़द/मूंग)।
८.	पुष्करिका	पुष्कर (कमल) कर्णिका वत, पिटका, अन्यों से घिरी।
९.	संव्यूढ़	हाथों से इन्द्रिय रगड़ना → पिटका
१०.	मृदित	V↑ → मेढ्र सदा मृदित (Erect).
११.	अष्ठीलिका	V, विषम, कठिन पिटका
१२.	निवृत्त (Paraphy-mosis)	इन्द्रिय मर्दन आदि– V↑ – चर्म (Prepuce) निवर्तन (उलटना) दर्द V+K – कण्डू, कठिनता। पिण्डित, कुथित (एकत्रित व दबा सा) चर्म मणि (glans) के नीचे प्रलम्बित हो जाना, दाह → पाक।
१३.	अवपाटिका	चर्म (Prepuce) स्फुटन (फटना)।
१४.	निरूद्धमणि (Phymosis)	V → चर्म मणि से चिपककर उसे रूद्ध कर देता है। मूत्र त्याग– मन्द धार, वेदना।
१५.	ग्रथित	K → लिंग के अंदर शूक वत कण्टक।
१६.	स्पर्शहानि	दुष्ट शूक लेप → R↑ → स्पर्शनाश।
१७.	शतपोनक	V+R, पूरा लिंग अणुमुखी छिद्रों से पूर्ण।

१८.	त्वक् पाक	P+R, त्वक् पाक, ज्वर दाह।
१९.	मांस पाक	S, सर्व वेदनाएं, मांस शातन।
२०.	असृगार्बुद	राग युक्त कृष्ण स्फोट, उग्र वेदना।
२१.	मांसार्बुद	S.
२२.	मांस विद्रधि	
२३.	तिलकालक	S, मांस → कृष्ण → पक्व → चारों ओर से सड़ना।
असाध्य–४ – मांस पाक, मांसार्बुद, मांस विद्रधि, तिलकालक।		

स्त्री रोग– २०

निदान– दुष्ट भोजन, विषम स्थित अंग से शयन, भृश मैथुन, दुष्ट आर्तव, अपद्रव्य, बीज दोष, दैव वश।

१.	वातिकी	V	योनि– रूक् तोद आयाम (खिंचाव), सुप्तता, चींटी रेंगने जैसा, स्तम्भ, कर्कश। आर्तव– फेनयुक्त लाल-काला, तनु, अल्प, रूक्ष। भ्रंश (Prolapse); क्रम से वंक्षण, पार्श्व आदि में अपने-२ वात रोग।
२.	अतिचरणा	V	अति मैथुन → शोफ + उपरोक्त लक्षण।
३.	प्राक्चरणा	V	अतिबाला के मैथुन → V↑ → पृष्ठ, जंघा, उरू, वंक्षण शूल, योनिदूषण।
४.	उदावृत्ता	V	वेग उदावर्तन → V↑ → फेनिल रज कृच्छपूर्वक रूक्-रूक् कर आना।
५.	जातघ्नी	V	V → आर्तव दुष्ट, रूक्ष → गर्भ बनते ही नष्ट।
६.	अन्तर्मुखी	V	अति मात्रा में भोजन कर विषम स्थिति में मैथुन → अन्न पीड़ित वात → योनिमार्गाश्रित → अस्थि मांस के साथ गर्भाशय व गर्भाशय मुख वक्र; तीव्ररूज।
७.	सूचिमुखी	V	वातल आहार → V↑ → योनि द्वार अणु।
८.	शुष्का	V	वेगरोध → दुष्टवात → मलमूत्रावरोध → योनि शोष, वेदना।
९.	वामिनी	V	६ठे/७वें दिन शुक्र का योनि से वमन, दर्द +/– ।
१०.	षण्ड	V	वात उपतप्त योनि में गर्भ धारण → बीज दोष → पुत्री (षण्ड), नृ (नर) द्वेषी, अस्तनी। असाध्य।

११.	महायोनि	V	V → योनि मुख व गर्भाशय विष्टम्भ, विवृत (always dilated) → स्रस्त (Pralapse-Uterine), – योनि में उत्सन्न मांस (Cervix) दिखना, महारूज।
१२.	**पैत्तिकी**	P.R.	P↑ → योनि दाह पाक पूतिगन्ध ज्वर। आर्तव– अति उष्ण, अतिमात्रा, कुणप, नील पीत कृष्ण।
१३.	**रक्तयोनि**	(S)	अति रक्त स्रावी। असृग्दर– (i) वातोल्वण (ii) पित्तोल्वण (iii) कफोल्वण।
१४.	**श्लैष्मिकी**	K	K↑ → योनि वेदनारहित, शीत, कण्डू, पाण्डु, पिच्छिल, और ऐसा ही स्राव। श्वेत प्रदर।
१५.	लोहित क्षया	V.P.	V+P → रज क्षीण, दाह, कृशता, विवर्णता (Anaemia) ।
१६.	परिप्लुता	VP	पित्त प्रकृति स्त्री के मैथुन समय छींक, उद्गार वेग धारण से वात कोप, (V+P) → योनि दूषण। शून (शोथ), स्पर्श असह्य, अर्ति। स्राव– नील पीत; वस्ति कुक्षि गौरव; अतिसार, अरोचक; श्रोणि वंक्षण रूक्; ज्वर।
१७.	उपप्लुता	V+K	श्वेत पिच्छिलस्राव।
१८.	विप्लुता		योनि न धोने से → जन्तु उत्पन्न → कण्डू, मैथुन अतिप्रिय।
१९.	कर्णिनी	VKR	असमय प्रवाहण → V + K.R → कर्णिका → रजमार्ग अवरूद्ध।
२०.	सान्नि-पातिकी	S	त्रिदोष → योनि व गर्भाशय आश्रित → स्वउपद्रव।

३९. गुह्यरोग प्रतिषेध

पुरुष रोग– (i) दोषानुसार संशोधन

(ii) शोधन, रोपण– कषाय रस – लेप, घृत, तैल, रस क्रिया, चूर्ण।

- **उपदंश–**
  - मेढ्र मध्ये सिराव्यध – पाकपरिहारार्थ।
  - वमन तथा विशेषत: विरेचन/अयोग्य में आस्थापन
  - दोषानुसार लेप, सेक।
  - पकने पर शस्त्र प्रयोग; घी, मधु, शर्करा, तिल लेप।

प्रक्षालन क्वाथ व तैल (रोपण)–

- जामुन, आम, चमेली आदि के अंकुर + बेर, बिल्व, ढाक, क्षीरिवृक्ष त्वक्, त्रिफला – ४ गुणे जल में क्वाथ।
- क्वाथ + विडंग, मुलेठी, सर्वगंध आदि कल्क → तैल पाक।

लेप– मधु, शिलाजीत, रसौत।

- दोषानुसार–

  वातज– कूठ, मुलेठी, देवदारू, अगरू, सरल काष्ठ, रास्ना, श्वेत कमल + घी – उष्ण लेप। जलवेतस, एरण्ड बीज, गेहूँ, जौ + घी।

  पित्तज– • घृत, मधु + जल – परिषेक।
  • गैरिक, अञ्जन, मजीठ, मुलेठी, खस, पद्मक, चंदन, उत्पल + घृत → शीतलेप।

  कफज– हल्दी, अतीस, मुस्ता, सरल, देवदारू, सपत्र पाठा/मेंहदी।
  → R, S. में असाध्य कहकर चि०।

- **अर्श–** संशोधन, शस्त्र, क्षार/अग्नि, उपदंशोक्त लेप।
- **सर्षपिका–** लेखन, कषाय चूर्ण/सिद्ध तैल।
- **अवमन्थ–** जलोका; पककर फटने पर– धव, तिन्दुक, सल्लकी, लाल चन्दन, राल सिद्ध तैल से रोपण।
- **कुम्भीक–** अवमंथवत। लोध्र, तिन्दुक, त्रिफला पक्व तैल।
- **अलजी–** रक्त स्रवण; कषाय चूर्ण/तैल।
- **उत्तमा–** छेदन; कषाय चूर्ण + मधु लेप।
- **पुष्करिका, संव्यूढा, स्पर्शहानि, त्वक् पाक–** पित्त विसर्पवत।
- **मृदित (Erect penis)–** उष्ण बला तैल परिषेक [Priaprism]
  उपनाह– सुखोष्ण मधुर द्रव्य कल्क + घृत।
- **अष्ठीलिका–** जोंक, कफज ग्रन्थि वत काट कर निकाले।
- **निवृत्त (Paraphymosis)–** I. घृताभ्यंग II. स्वेदन
  III. साल्वण उपनाह (३/५ रात्रि)
  IV. स्वेद देकर, घृत लगाकर धीरे-धीरे मणि को दबाते हुये चर्म को सम लाये। दबाकर पुन: उपनाह बांधे।

  पथ्य– स्निग्ध उष्ण अन्नपान।
- **अवपाटिका–** उपरिविधि।

- **निरूद्धमणि (Phymosis)**– (1) स्वर्ण/लाक्षा की द्विमुखी नाड़ी स्निग्धकर प्रविष्ट करे। ३-३ दिन के अंतर से नाड़ी को मोटाई बढ़ाये।
  (2) सेवनी बचाकर शस्त्र से दारण (Prepuce काटकर हटा दे) कर सद्य: क्षत वत उपचार।
- **ग्रथित**– नाड़ी स्वेद; स्निग्ध व उष्ण उपनाह।
- **शतपोनक**– लेखन; कषाय चूर्ण + मधु – लेप; विदार्यादि सिद्ध तैल।
- **शर्करार्बुद**– रक्तविद्रधि चि०।

स्त्री रोग चि० –

न हि वातादृते योनिर्वनितानां प्रदुष्यति ।
अतोजित्वातमन्यस्य कुर्याद्दोषस्यभेषजम् ।।५३।।

वात के बिना वनिता में योनि दोष नहीं होते अत: प्रथम वात को शांत कर फिर अन्य दोषों की चि० करे। महायोनि में विशेषत: वात चि०।

→ स्नेहन, स्वेदन, पञ्चकर्म (वमन, विरेचन, आस्थापन, अनुवासन, नस्य), शेष कर्म (उत्तर वस्ति, अभ्यंग, परिषेक, प्रलेप, पिचु धारण) ।

- उत्तर वस्ति– K – कटुरस + गोमूत्र; P – मुलेठी + क्षीर; V – अम्ल रस + तैल।
  कल्क– V– उष्ण तैल अभ्यंग कर मांसी; P– पञ्चवल्क (क्षीरीवृक्ष); K– श्यामादि गण कल्क योनि में धारण।
- **वातिकी**–
  - योनि में सैंधव + तैल लगाकर पिण्ड/नाड़ी स्वेद।
  - सुखोष्ण जल से स्नान/परिषेक।

  घृतपान– शतावरी, त्रिफला, अमृता, काश्मरी, द्राक्षा, कासमर्द, फालसा, हरिद्राद्वय, झिण्टी, स्योनाक, पुनर्नवा – प्रत्येक १ कर्ष से घी – १ प्रस्थ सिद्ध करे।

योनि वेदना, कर्कश, स्तम्भ, स्रंस, स्पर्श हानि–

- वासा, रास्ना, गोक्षुर पक्व दूध पान।
- योनि परिषेक– दन्ती, त्रिफला, गुडुची क्वाथ– सुखोष्ण।
- पिचु धारण– कूठ, तगर, देवदारू, वार्ताकिनी, सैंधव सिद्ध तैल।
- अनुवासन, उत्तरवस्ति– सुकुमारक/बला/शिरीष तैल।

अतिचरणा → महायोनि → वातघ्न उपचार।

उदावृता, महायोनि, स्रंस (Prolapse)– क्षीर स्वेद।

- दशमूल, त्रिवृता क्वाथ, कल्क सिद्ध तैल– पान, अनुवासन, उत्तर वस्ति।
  स्रंस– स्थान से हटी योनि– शल्यरूप।

- स्नेहन (घी), स्वेदन (दूध) कर हाथ से सीधा करे, तंग योनि फैलाये, बाहर निकली योनि को अन्त: प्रविष्ट करे, विवृत (Everted) को परिवर्तन (सही) करे। मधुरौषध सिद्ध घी भरकर बाँध दे।

वामिनी, उपप्लुता– स्वेद; स्नेह पिचु– सल्लकी, जिंगणी, जंबू, धव, त्वक्, पंचवल्कल त्वक् कषाय सिद्ध तैल।

जातघ्नी, रक्तयोनि, रक्तक्षया–

- कुटज, काश्मरी क्वाथ सिद्ध घृत से उत्तर बस्ति।
- रक्तक्षया में जीवनीय गण सिद्ध दूध पिये।

वात + पित्त हेतु घृत–

बला निर्यूह–२ द्रोण; विदारी, शालपर्णी, पिप्पली, शतावरी, काकनासा, श्रावणी शर्करा, जीवनीय गण कल्क; दूध- ४ आढक; घी, तैल – १ आढक → सिद्ध करे।

पित्तज रोग– सर्व पित्तघ्न शीत उपचार।

शतावरी घृत– (श्लो-५५)–

शतावरी मूल–४ तुला → स्वरस + दूध (सम) + घी – १ आढक + जीवनीय गण, शतावरी, द्राक्षा, फालसा, चिरौंजी, – १ कर्ष – कल्क + मुलेठी – १/२ पल $\xrightarrow{\Delta}$ घृतपाक → ठंडा + मधु, पिप्पली– ८-८ पल, शर्करा– १० पल।

सेवन मात्रा– १ कर्ष/तोला।

गुण– योनिदोष, शुक्रदोष; वृष्य, पुत्रदाता; क्षत, क्षय, रक्तपित्त, कास, श्वास, कामला, वातरक्त, विसर्प, हृदरोग, शिरो रोग, गुद रोग, अपस्मार, अर्दित, आयाम, मद, उन्माद हर।

रक्त योनि– रक्त के वर्ण से दोष जाने।

(i) **वातोल्वण असृग्दर–**
- राजादन, कपित्थ पत्र कल्क घृत भ्रष्ट कर खाये।
- शर्करा, मधु, मुलेठी, सोंठ + दधि।

(ii) **पित्तोतर असृग्दर–** रक्तपित्त चि०।
- कमल, विदारी, शालूक, भिस, काला चंदन, मुस्ता + दूध, शर्करा, मधु।
- चौलाई मूल– मधु से; रसौत– तण्डुलाम्बु से; लाक्षा– अजा क्षीरेण।
- वासा घृत, महातिक्त घृत।

(iii) **कफज असृग्दर–** मुलेठी, त्रिफला, लोध्र, मुस्ता, सौराष्ट्री (फिटकरी), मधु, नीम, गिलोय – मद्य से।

पुष्यानुग चूर्ण– (श्लो- ६१)– महर्षि आत्रेय द्वारा उपदिष्ट–

पाठा, जामुन व आम की गुठली, शिलाजीत, रसाञ्जन, सिंम्बल गोंद, मजीठ, कुटज त्वक्, केशर, बिल्व, अतीस, लोध्र, मुस्ता, गेरू, सोंठ, महुआ, इन्द्र जौ, लाल चन्दन, कट्फल, श्योनाक, सारिवा, धातकी, मुलेठी, अर्जुन → पुष्य नक्षत्र में चूर्ण करे।

सेवन– चूर्ण + मधु – तण्डुलाम्बुना।

गुण– अर्श, अतिसार, मल में रक्त, बालकों में कृमि, योनि रोग, रजो दोष, ऋतुस्राव– श्यावश्वेत अरूणासितम् ।

- रक्तयोनि (पर्याय– प्रदर, असृग्दर) में गर्भस्राव चि० करे।
- **कफदुष्ट योनि–**
  - संशोधन वर्ति–
    - – उड़द चूर्ण + सैंधव – अर्क दुग्ध भावित
    - – पिप्पली, उड़द, मरिच, सौंफ, कूठ, सैंधव
    - } तर्जनी वत मोटी वर्ति – रखकर उष्णाम्बु सेक।

प्रक्षालन–
- अर्क, निम्ब, आम, बिल्व, धव, जामुन, करञ्ज, अर्जुन, सहजन, ढाक, (गूलर, बरगद, चमेली) – जो प्राप्त हो, के कषाय से।
- शुक्त + मधु से।
- त्रिफला क्वाथ + तक्र – गोमूत्र/शुक्त से।

धातक्यादि तैल – (श्लो० ६९) – पिचु, वस्ति, अभ्यंग। शोथ, उठी, दबी, पिच्छल स्राव, विप्लुता, उपप्लुता, सस्फोट, शूल शान्त।

पथ्य– जौ, अभयारिष्ट, शीधु, तैल। पिप्पली, लौहभस्म, हरड़– मधु से।

पाण्डुर असृग्दर/श्वेत प्रदर–

- रोहीतक जटा कल्क पान।
- आंवला चूर्ण/रस – मधु/+मिश्री से।

प्रक्षालन– लोध्र, वट, त्वक् क्वाथ – स्राव हर।

धारण–
- इसी में भीगा पिचु धारण करे।
- प्लक्ष त्वक् चूर्ण/कल्क + मधु
- लोध्र, प्रियंगु, मुलेठी– मधु मिलाकर → वर्ति – स्नेह लगाकर रखे।

धूपन– सरल, गुग्गुलु, जौ + घी; – स्रावहर।

परिषेक– आरग्वधादि गण कषाय।

पिच्छिलता– कासीस, त्रिफला, फिटकरी, आम, जामुन गुठली – चूर्ण + मधु – लेप।

- ढाक, धातकी, जामुन, मजीठ, मोचरस, राल चूर्ण – दुर्गंध, पैच्छिल्य, क्लेद हर।

दुर्गंध– सर्वगन्ध द्रव्य कषाय सिद्ध तैल/कल्क/चूर्ण।

शुक्र शोधन– पंचकर्म; शुक्र वर्ण से दोष जानकर उसकी चि०।

फलघृत– (श्लो० ८१)

मंजीठ, कूठ, तगर, त्रिफला, शर्करा, वच, हल्दी, दारूहल्दी, मुलेठी, मेदा; अजवायन, कुटकी, विदारी कन्द, हींग, काकोली, असगंध, शतावरी १-१ अक्ष; घी– १ प्रस्थ; दूध– ४ प्रस्थ → पाक।

– जिनकी संतानें मर जाती हों उन्हें ऋतुकाल व गर्भावस्था में पिलाये; शुक्र व योनि दोष हर। देह वर्द्धन।

४०. विष प्रतिषेध

इतिहास–

- पुराकाल में देव-दानव द्वारा समुद्र मंथन → **विष** – (प्राकृत)
  - ब्रह्मा ↗ • स्थावर में स्थापित • उपयोग विशेष से अमृत
  - विष्णु ↘ • जांगम (सर्प आदि) • भू भार हरणार्थ।
- विषण्णास्तस्मात्तद्विष संज्ञा – उदास करने से विष।
- उत्पत्ति– जल से सत्व समुद्भूव, तेजोमय। विषयोनि – जल।

भेद– (i) प्राकृत (अकृत्रिम) (ii) कृत्रिम (गर) (iii) दूषीविष (अल्प गुण)

(i) स्थावर (मौलि) (ii) जांगम } → अकृत्रिम।

स्थावर विष– पर्याय– 'मौल' – पत्र आदि सभी अंग मूलाश्रयी होने से।

आश्रय– १० –

मूल पत्र पुष्प फल त्वक् सार निर्यास क्षीर धातु कन्द।

मूल	कनेर, गुञ्जा आदि	ऐंठन, प्रलाप, मोह।
पत्र	अर्क .....।	जृम्भा, ऐंठन, श्वास।
पुष्प	रेणुक ....।	वमन, आध्मान, मोह।
फल	रेणुका (निर्गुण्डी), मदनक, तुवरक ....।	दाह, अण्डकोश शोथ।
त्वक, सार, निर्यास	नाराचक आदि।	लाला, मुख में दुर्गन्ध, शिर: शूल, परूषता।
क्षीर	दन्ती, स्नुही, अर्क ....।	जिह्वा गौरव, अतिसार।
धातु	हरताल फेनाश्म ....।	तालु दाह, मूर्च्छा, हृद पीड़ा।
कन्द	वत्सनाभ, हालाहल, करवीर, लांगलक, रोहिष	– शीघ्र मारक।

स्थावर के सामान्य लक्षण– ज्वर, हिक्का, दन्त हर्ष, अरूचि, हनुस्तम्भ, गलग्रह फेन वमन, श्वास, मूर्च्छा। मूल .....→ धातु – कालांतर प्राणहर।

जाङ्गम विष– सर्प, कीट आदि में आश्रित।

आश्रय–१६– दृष्टि, नि:श्वास, स्पर्श, दंष्ट्रा, मुख, नख, अस्थि, मूत्र, पुरीष, शुक्र आर्तव, लाला, शूक, पित्त, रक्त, शव।

जांगम के सा० लक्षण– निद्रा, तन्द्रा, क्लम, दाह, रोमांच, शोष, पाक, अतिसार।

विष (स्थावर, जङ्गम) गुण– १०

- तीक्ष्ण, उष्ण – पित्त रक्त कोपक
- विशद – बिना चिपके वेग प्रसार
- सूक्ष्म, व्यवायि – दोष, धातु, मल, अवयवों में प्रविष्ट
- विकाषि – मर्मच्छेद → बुद्धि व्यामोह
- रूक्ष – वात कोपक।
- आशुकारी – शीघ्र व्याप्य
- लघु – दुर्निहरण
- अव्यक्त रस – श्लेष्म प्रकोपक, सर्व अन्न रसों का अनुवर्तन।

→ विष अपाकी होने से जीर्ण (पचना) नहीं होता है; मंत्र/औषध से उपशमन हो जाता है तथा प्रत्यय (अनुकूल कारण) मिलने पर फिर कुपित होता है।

गर विष– कृत्रिम– विविध औषध योग, देर/बहुत काल बाद मारक।

लक्षण– शोफ पाण्डु उदर उन्माद अर्श आदि। (विवरण आगे)।

→ वात पित्तोत्तर विष शीघ्र मारक होता है।

विषक्रिया विधि (Mode of action of Poison on Body)–

→ I. रक्त दूषण → दोष (३) दूषण → आशय दूषण → हृदयस्थ → स्रोत रूद्ध
↓
मृत्यु

I. रक्त दूषण – कोठ, मण्डल, स्वेद, रोम हर्ष, शीतेच्छा।

II. दोष दूषण –
- सर्व शरीर व्याप्त विष दुष्ट रक्त के अधीन होकर दोष दुष्ट।
- विष में जिस दोष का आधिक्य होता है वही दोष प्रथम ग्रहीत/दुष्ट होता है। → तज्जन्य लक्षण व वैसी ही (उसी दोष की) चि०।

III. आशय दूषण– जिस आशय से संबंधित विष होता है, उसी में स्थित हो जाता है

वाताशयास्थित – वातज व कफज रोग;
पित्ताशय ,, – पित्तज व कफज रोग;
कफाशय ,, – – do – ।

शिर:स्थ विष– शिर में कोठ, शोथ, तालुशोष, जबड़ा बंद, इन्द्रियों की अर्थों में अप्रवृत्ति।

Post Martum–
- पिया विष हृदय में मिलता है।
- (सर्प) दंश/विषैले शस्त्र से हत – मांस दुष्ट, सर्वत: पिण्डित।

विष वेग– आचार्य पुनर्वसु-८; अन्य-७ ।

धान्वन्तरीय के अनुसार शरीर की ७ कलाओं के १-१ कर विष अतिक्रमण से ७ वेग होते हैं। १ कला से दूसरी तक वात ले जाती है, बीच में लगने वाला समय 'वेगान्तर' है।

वेग	पुनर्वसु	नग्नजित	विदेह पति	आलम्बायन	धन्वन्तरि
I	रस दुष्ट – वमन, प्रसेक	रक्त	मूर्च्छा	रक्त	
II	रक्त दुष्ट – वेपथु, चिमचिम	शोथ	हृद पीड़ा	मांस	
III	मांस दुष्ट– कोठ, मंडल, शोफ	चिमचिमायन	शिरोरूक्	वसा	
IV	दोष (वातादि) दुष्ट– स्व उपद्रव	ज्वर, मूर्च्छा	अपतंत्रक	स्नायु	• कोष्ठग।
V	दर्शनभ्रान्ति	पाण्डु, जिह्वा मुखशोष।	हिक्का	अस्थि	(शेष आ-लम्बायन का
VI	हिक्का उद्भव	हृद व्यथा	मर्मच्छेद	मज्जा	समर्थन)
VII	स्कन्ध भङ्ग	मृत्यु	मूर्च्छा,मृत्यु	शुक्र	
VIII	मृत्यु				

दूषीविष–

जीर्ण, विषघ्न औषधि से हत, दावाग्नि, वात आतप से शोष, स्वभाव से ही संपूर्ण गुणों से युक्त न हो – ऐसा विष।

ऐसा अल्प वीर्य विष, कफावृत हो, बहुत वर्षों तक अनुबंधी रूप में देह में बना रहता है।

लक्षण– अतिसार, दुष्ट रक्तज रोग, तृट्, अरोचक, मूर्च्छा, वमन, भर्राया स्वर, मोह, दूष्योदर लक्षण।

आमाशयस्थ– K.V रोग, पित्ताशय– V-P रोग; धातुगत– तद् विकार!

प्राग्वाताजीर्ण शीताभ्र दिवा स्वप्नाहिता शनैः।
दुष्टं दूषयते धातूनतो दूषीविषं स्मृतम् ।।३९।।

पूर्वी हवा, अजीर्ण, शीत, मेघ, दिवाशयन, अपथ्य → धातु दूषण करने से दूषीविष।

स्थावर विष की वेगानुसार चि०–

वेग	लक्षण	चि०
I	जिह्वा-श्याव, स्तंभ, मूर्च्छा, वमन	वमन, शीताम्बु सेच; घी-मधु युक्त अगद पान।
II	आमाशयस्थ → हृदवेदना; कंप, स्वेद, दाह, कण्ठ वेदना।	वमन, विरेचन; घी-मधु युक्त अगद पान।
III	आमाशय में अतिशूल, तालुशोष, नेत्र– हरित, शून, दुर्बल।	अगद पान, नस्य, अञ्जन।
IV	पक्वाशयस्थ → तोद, हिध्मा, कास, आन्त्रकूजन; शिरोगौरव	स्नेह मिले अगद से भोजन
V	छोटी संधियों तथा पक्वाशय में वेदना; सर्वदोष प्रकोप, कफ प्रसेक, विवर्ण	अगद पान– मुलेठी क्वाथ + मधु से
VI	संज्ञानाश, अतिअतिसार	अतिसार चि०
VII	स्कन्ध, पृष्ठ, कटि भङ्ग → मृत्यु	अवपीडक घृत/नस्य; मूर्ध्नि पर काकपद (γ) शस्त्र से बनाकर रक्त युक्त मांस रखे → **विष संक्रमण–** देह का विष मांस पिण्ड में जाना।

- वमन, विरेचन देकर वेगान्तराल में निम्न यवागू दे–
  महुआ, मुलेठी, कमलकेसर, चन्दन से बनी यवागू।

योग– संजीवन अगद (ब्रह्माजी से निर्मित); यापना अगद, सूर्योदय अगद, मृतसञ्जीवनी अगद;

- प्रियंगु, तगर, लाक्षा, मजीठ, मुलेठी, मधु, हल्दी – कौटिल्य सम्मत।
- शिरीष फल, काकण्ड (बड़ी कौंच), सुरसाग्र, पुनर्नवा, कठगूलर।

दशांग अगद– मांसी, दालचीनी, तमालपत्र, तुलसी, मन:शिला, चंदन, नागकेशर, हल्दी, व्याघ्रनख, सोंठ। विष, विषशस्त्र विद्ध।

शिव अगद– श्लो-६७ (शिव जी द्वारा उपदिष्ट) – गजपिप्पली, कासीस, यवक्षार, मुलेठी, अपामार्ग, रक्ता (इन्दु-गुंजा; मंजीठ), तगर, वच, दन्ती + घी।

- गूलर त्वक्, जामुन गुठली, मुलेठी, कमल, गेरू, चंदन, खस, नेत्रबाला, नागकेसर, पद्मक। – पैतिक विष हर, विसर्प, ज्वर, दाह हर।
- शिरीष, गूलर, पाकड़, बरगद, पीपल वल्कल चूर्ण + घी – पैतिक विष हर, विसर्प, रक्त विष।

- लसूड़ा, अर्क पुष्प, तण्डुलीयक (चौलाई), अपामार्ग, सुरसा मंजरी, मकोय – पीना।
- दधि, घी, मधु, नमक पीना – मूल विष हर।
- हल्दी, सैंधव, मधु + घी पीना – मूल विष, विष शस्त्र विद्ध।

  गन्ध हस्ती अगद, बालसूर्य अगद;

अजित अगद– विडंग, पाठा, त्रिफला, अजवायन, हींग, चित्रक, तगर, पंचलवण, त्रिकटु। स्थावर, जांगम विषहर।

माहेश्वर योग– अजगंधा, गृहधूम, गुग्गुलु – गोमूत्र पिष्ट।

नस्य– बीजपूर, आर्य बृहती (बड़ी कटेरी) फल, ज्योतिष्मती।

– कर्ण अक्षि नासा कण्ठ जिह्वा रोग हर।

विष प्रतिषेधी मणि– श्वेत पुष्कर, जीवन्ती पुष्प (सम) – सुवर्ण के साथ पीसकर, धारण करे – **चाणक्य प्रिय।**

विषदिग्धेन विद्ध–

विषैले शस्त्र से बिंधने पर लक्षण– मुहुर्मुहुः मूर्च्छा, विवर्ण, विषण्ण (दुःखी), बड़ी संधियों में वेदना, ज्वर, वमन, श्वास, कास। व्रण के किनारे– रक्त पीत; मध्य में श्याव, रूक्, शोथ, सद्यः पाक → मांस काला → क्लिन्न → शीर्य (सड़ना/गिरना), पिच्छिल स्राव।

चि०– हृदय की रक्षा (मोती/कमल पत्र रखकर) करते हुये मर्म विद्ध न होने पर, शल्य को निकाल कर तप्तलौह से दग्ध।

- लेप– शिरीष मूल, अतीस, व्याघ्री (कटेरी) मूल।
- मांस में पूति होने पर पित्त विसर्पवत चि०।

गर– कृत्रिम विष– नाना प्राणि अंग मल, विरूद्धौषधभस्म, अल्प वीर्य वाले विषों का योग।

लक्षण– पाण्डु, मन्दाग्नि, कृश, कास, श्वास, ज्वर; उदर, यकृत, प्लीहा वृद्धि; → ओज क्षय।

शोथ, आध्मान, हाथ पैर शुष्क, क्षय। मिथ्या दर्शन।

स्वप्न– बिल्ली, वानर, हिंसक पशु; शुष्क वृक्ष, जलाशय।

चि०– वमन, शुद्ध हृदयी में स्वर्ण सेवन

- स्वर्ण माक्षिक, स्वर्ण चूर्ण (भस्म) – मधु से – सर्व विषहर।
- वासा, नीम, पटोल क्वाथ + हरड़ कल्क सिद्ध घृत – गर निर्हरण।
- हल्दी/रास्ना/चमेली सिद्ध घृत।
- अजेय, घृत, अमृत घृत।

अग्नि हत– मूर्वा, गुडुची, तगर, पिप्पली, पटोली, चव्य, चित्रक, वच, मुस्ता, विडंग चूर्ण – तक्र/उष्णाम्बु से।

श्वासकास– • मकोय शाक – घी व त्रिफला रस से बना।
• भार्ङ्गी, सोंठ क्वाथ → शीत + मधु से।

त्वक् उपहत– रेणुका, चन्दन, प्रियंगु, खस का लेप।

कृशता– मजीठ, अपामार्ग, नीम, हल्दी, पीपल, चंदन से प्रघर्षण।

पथ्य– दूध, घी।

• हरताल भक्षण	हृददाह, उरग्रह, आनाह, अम्ल वमन। मल-पीला-हरा; मण्डलि सर्प वत लक्षण।	संशोधन;प्रियंगु, लोध्र,तालीस, तगर, कूठ, मुलेठी, गुग्गुलु, देवदारू चूर्ण– मधु, घी।
धतूरा	पीत दर्शन, कंप, लाला, मद, मूर्च्छा, वमन, स्मृतिभ्रंस, भ्रम	वमन– मधुर द्रव्यों से। • मिश्री मिला दुग्ध पान।
कोदौ योग } मदन फल }	– do –, उन्माद, दृष्टि नाश	} वमन कूष्माण्ड (पेठा) + गुड़।

दूषी विष चि० – स्वेदन, वमन, विरेचन, अगद पान।

विरेचन– • हरड़, सैंधव, पिप्पली, मरिच – वृद्धकाश्यपोक्त।
• व्योषादि कल्प।

दूषीविषारि अगद– पिप्पली, कर्तृण, जटामांसी, लोध्र, एला, सुवर्चिका, केवड़ी मोथा, तगर, कूठ, मुलेठी, चंदन, गेरू पान।

विष संकट–

विष प्रकृति कालान्नदोषदूष्यादि सङ्गमे ।
विषसङ्कटमुद्दिष्टं शतस्यैकोत्रजीवति ।।११२।।

विष + प्रकृति; काल, अन्न, दोष (P), दूष्य (R) ।

विष प्रकोपक/वर्द्धक भाव–

- भूख, प्यास, गरमी, क्रोध, अजीर्ण, अतिसार, पित्त, वात वृद्धि।
- तिल पुष्प, मदनफल, भू वाष्प सूंघना; घनगर्जना।
- हाथी व चूहे की आवाज; विष संकट (संयोग); प्रवात, कमल गन्ध, कामवृद्धि। वर्षा में सम योनि (जल) होने से विष वृद्धि तथा शरद में अगस्त्य के प्रभाव से मन्द वीर्य।

→ प्रकृति, सात्म्य, ऋतु, स्थान, वेग, बलाबल की विवेचना कर चि० करे।

→ घृत प्रयोग– सभी विषों की सभी अवस्थाओं में, विशेषत: वाताधिक्य में घृत प्रयोग करे।

→ आशय स्थित विष में आश्रय व आश्रयी दोनों की अविरोधी चि०–

कृच्छ्र साध्यता

- कफ स्थानस्थित– वमन; उष्ण, रूक्ष, तीक्ष्ण, लेप; कषाय, कटु, तिक्त आहार; क्षारागद, स्वेदन, सिरामोक्षण।
- पित्त स्थान स्थित– शीत परिषेक, प्रदेह; घृतपान; कषाय, मधुर, तिक्त आहार।
- वाताशय स्थित– अगद + मदनफल + क्षीर – आस्थापन
  बला/बावची/पाटला कल्क + घृतमण्ड व तैल (सम) → पाक–अनुवासन।
  आहार– मधुर, स्निग्ध, अम्ल, लवण + घृत।

मंत्र चिकित्सा का महत्व– न तु सर्व मनुष्याणां सन्ति भेषजसम्पदः।
अज्ञातरोगसद्भावे योग्यता चाति दुर्ल्लभा ॥
प्रकुप्यति विषं भूयः केवलैश्चौषधैर्जितम् ॥१११॥

- सभी मनुष्यों में चिकित्सा संपद् (योग्य ४ अंग) नहीं होता;
- रोग (मुख्य हेतु/विष प्रकार) अज्ञात होने पर निश्चित प्रभाव नहीं होता;
- केवल औषधों से शान्त विष फिर भी प्रकुपित हो सकता है; परन्तु सत्य ब्रह्म तपोमय मन्त्रों से तेजोमय विष शीघ्र शांत हो जाता है।

४१. सर्पविष विज्ञानीय

सर्प भेद

|२

दिव्य	भौम		
	मुख्य ३ भेद	लिंग/अवस्था भेद	जाति भेद
वासुकि, तक्षक आदि; जगत धारण; नमस्कारणीय।	१. दर्वीकर	१. पुरूष	१. ब्राह्मण
	२. मण्डली	२. स्त्री	२. क्षत्रिय
	३. राजिमान	३. नपुंसक	३. वैश्य
	• व्यन्तर (उपरोक्त का संकर)	• कुमार	४. शूद्र
		• कुमारी	
	• गौधेर/चतुष्पात– (गोधा+सर्प संयोग)	• गर्भिणी	
		• प्रसूता	

→ निर्विष सर्प– १६ – अजगर, प्लव, उद्वाही आदि।

→ प्रायः पन्नगी ज्येष्ठ में ऋतुमती, आषाढ़ में संयोग, कार्तिक में २४० अण्डे देती है।
कर्केतन मणि वर्ण अण्डे – नर भुजङ्ग;
लम्बी लाल रेखा वाले अण्डे – सर्पिणी;
शिरीष पुष्प सदृश – नपुंसक।

→ जन्म के ७वें दिन ४ दाढ़ें आती है, १४वें दिन इनमें विष आता है।

पीत, ② बूंद विष मात्रा	श्याव वर्ण ④ दंष्ट्रा, ऊर्ध्वदक्षिण
अधो वाम कृष्ण– ① बूंद १ बिन्दु = १ मुद्ग	रक्तवर्ण, ③ बूंद

- दंष्ट्रा– सविष – ४
  निर्विष – ४४
  कुल ४८
- सर्प आयु– १२० वर्ष
  (गोनस– ५०० वर्ष)

	सर्प	दोष कोप	विषरस, वीर्य	प्रवृद्ध विष वय/ऋतु	पहचान
१.	दर्वीकर	V↑	रूक्ष, कटु	तरूण, वर्षा	फण पर चिन्ह, शीघ्रगामी
२.	मण्डली	P↑	अम्ल, उष्ण	मध्य, शीत	फण रहित, विविध मण्डल, मंदगामी
३.	राजिमान	K↑	मधुर, शीत	वृद्ध, ग्रीष्म	रेखाएं– विचित्र वर्ण, तिरछी, ऊर्ध्व।
•	व्यन्तर	S↑		ऋतु संधि	पापशील होने से रास्ता रोकते हैं।
•	गौधेर		दर्वीवत		

लिंग	पहचान	प्रबल
पुरुष	ऊर्ध्व दृष्टि, व्यक्त फण, बड़ा शरीर, उच्च स्वर	दिन में काटना
स्त्री	पुं विपरीत लक्षण	रात्रि/सर्वसमय
नपुंसक	आयत, चपल, मंदवेग, श्वेताभ, तिर्यक शिर	संध्या

जाति	सर्प/दंश गंध	पहचान	विचरण	काटना	दोष कोप	आहार
ब्राह्मण	बिल्व पुष्प, खस चंदन, गुग्गुलु।	क्रोधी, पवित्र फन पर जनेऊ	पूर्वाह्न	सामने से	S	वात
क्षत्रिय	चमेली, चम्पा, नागकेशर, तेजपत्र	क्रोधी, लाल नेत्र, शंख, चक्र।	मध्याह्न	दायें से	V	मूषिक
वैश्य	कूठ, बकरी व भेड़ का दूध, घी।	पारावताभ, बिन्दु/ मण्डल लालवर्णा।	अपराह्न	वामपार्श्व	P	मेढक
शूद्र	मद्य, रक्त	गेहूँ, भैंस वर्ण, बिन्दु, रेखा, रूक्ष	सूर्यास्त के बाद	पीछे से	K	सर्व-भक्षण

सर्पदंश हेतु– ६ – आहार, पादस्पर्श से डरकर, अतिविष से क्रुद्ध, पापवृत्ति, वैर, यम आदि के आदेश से। उत्तरोतर विषाधिक्य।

दंश भेद– ५

१. तुण्डाहत – केवल लार से गीला, दंष्ट्रा चिन्ह न हो। } निर्विष
२. व्यालीढ़ – १/२ दंष्ट्रा निशान, पर रक्त न आये (कम गहरा)। } निर्विष
३. व्यालुप्त – २ दांतों का चिन्ह, थोड़ा रक्त।
४. दष्टक – ३ निशान, मांसच्छेद, लगातार रक्त स्राव।
५. दंष्ट्रानिपीडित – ४ दंष्ट्रा का निशान, लगातार रक्त स्राव। – असाध्य।

सर्पाङ्गभिहत– सर्प स्पर्श → भय → V↑ → कदाचित् शोफ।

शंका विष– दुर्ग/अंधकार में कुछ चुभ जाना → विष शंका → ज्वर, मूर्छा, वमन, दाह, ग्लानि, मोह, अतिसार।

दंश
- सविष– विष + रक्त → जल पर तैल बिन्दु वत प्रसार → वपु दूषण।
  - दंश में शोथ, वेदना, दाह, कण्डू, ग्रथित।
- निर्विष– उपरि विपरीत।

सर्प	**लक्षण–** दंश स्थल, सर्वदेह।
दर्वीकर	कूर्म पृष्ठवत उन्नत, रूक्ष, सूक्ष्मदंष्टापद। गात्र श्यावता। ज्वर-जाड़ा लगकर; सन्धि पीड़ा, अनिद्रा, मन्यास्तम्भ, सिरा फूलना। पृष्ठकटि, वाग्ग्रह; शिरोगौरव, कास-श्वास, हनुग्रह, कोष्ठ में शूल व ऐंठन; मलावरोध, अस्पष्ट स्वर, निश्चेष्ट (मृतवत), विसंज्ञ, फेन व लाला, हिध्मा, कण्ठे घुरूघुर, शुष्क उद्गार, अन्य वात रोग।
मण्डली	ऊष्मा, शोष, पीत-लोहित– दंश। – पृथु, विसर्प, क्लेद, कोथ, दाह। गात्र पीतता, दाह, मूर्च्छा, ज्वर; मख-तिक्त; शीतेच्छा, धूमोद्गार, मद। विष का शीघ्र प्रसार। पित्तज रोग।
राजीमान	स्निग्ध, पिच्छिल, शोफ। रक्त-घन, शीत, पाण्डु। शिरोव्यथा, वमन, आलस्य, मुख माधुरय, कण्ठे घुरूघुर; नेत्र कण्डू; शीत-ज्वर, श्वास कृच्छ, **निद्रा**, कास, गात्र श्वेतता, गौरव, नाक, आंख, मुख से स्राव, रोमहर्ष, तमक श्वास। कफज रोग।
पुंसर्प	ऊपर देखना, दक्षिण पाद प्रक्षेप।
स्त्री सर्प	– विपरीत –, अतिसार, ज्वर, स्वरहीन।
नपुंसक	तिर्यक् देखना, बहुत बोलना
वृद्ध	मंद व देर से वेदना

सर्प	लक्षण– दंश स्थल्, सर्वदेह।
बालक	तीक्ष्ण व शीघ्र वेदना
कुमार	दक्षिण नेत्र रोगी
कुमारी	वाम नेत्र रोगी
गर्भिणी	जिह्वा व आंखे– कृष्ण; ओष्ठ शून; मुख श्वेत। गुरू उदर, शिरोरोग।
प्रसूता	सूचीवत शूल, सरक्त मूत्र ।

सर्प दंशों में वेगानुसार लक्षण–

सर्प	वेग I	II	III	IV	V	VI	VII
दर्वीकर	रक्त-श्याव, गात्र-श्याव	ग्रन्थि	शिरोगौरव दंश क्लेद	ष्ठीवन, वमन,संधि विश्लेष	पर्वभेद, दाह, हिध्मा	हृत्पीड़ा, मूर्छा, अतिसार	शुक्रगत-स्कंध पृष्ठ कटि भंग; निष्चेष्ट।
मण्डलि	पीताभ रक्त व देह।	श्वयथु	दंश क्लेद, स्वेद, तृट	ज्वर, दाह	सर्वगात्र दाह	,,	,,
राजिमान	पाण्डु रक्त व देंह।	गौरव	दंश क्लेद, नासा, मुख स्राव।	शिरोगुरू, मन्यास्तंभ	वाक्रूद्ध शीतज्वर	,,	,,

→ ५वें वेग तक चिकित्सा करे।

सर्प की अल्पविषता– जल में डूबे, रतिक्षीण, नकुल से हारे; धूप, भूख,आदि, तुरंत केंचुल विमुक्त; कुशा में निवास, विद्या (मंत्र) अध्युषित स्थान के।

आशीविष– अचिकित्स्य, सद्य: मृत्यु/विकलांग।

- मंदिर, चतुष्पथ, श्मशान, क्षीरीवृक्ष, नीम, गिरिगह्वर; चक्र, वज्र, गदा, कुन्त, त्रिशूल चिन्ह, जटाधारी, लाल आंख, मुख के।

अन्य असाध्य–
- पञ्चमी, पूर्णिमासी, अमावस्या, अष्टमी, नवमी।
- सन्ध्या, मध्य रात्रि, मध्याह्न।
- भरणी, कृतिका, मघा, आश्लेषा, विशाखा, पूर्वाषाढ़ा, नैर्ऋत।
- मर्म स्थान दंश।

असाध्य लक्षण–
- जिह्वा स्तब्ध, थोड़ी-२ देर पर मूर्च्छा, शीत उच्छ्वास।
- हिध्मा, श्वास, वमन, कास, हृदशूल एक साथ होना।

मरणासन्न– • वेपथु, तीव्र वेदना, ग्रीवा भंग, रक्ताक्षि, मूर्च्छा, गलग्रह, वमन।
• दंश स्थल पक्व जम्बू वत, उठा, रक्त स्राव नहीं। मेढ्र प्रहर्ष।

४२. सर्प विष प्रतिषेध

दंश स्थान पर विष १०० मात्रा तक रहता है फिर रक्त दुष्ट कर धातुओं का आक्रमण (धात्वान्तर गमन) करता है। इसी अवधि में दंश कर्तन आदि कर ले।

(१) अरिष्टा बंधन– (i) सिद्ध मंत्रों से।
(ii) क्षौम आदि सुतली/रबर से ४ अंगुल ऊपर।

न अधिक कसा; → (पूति, शोफ)
न ढीला; → (विष प्रसार) } सिराओं में विष स्तम्भित (रूकना)।

• मर्म/संधि में जहाँ बंधन संभव न हो, वहाँ दंश स्थान को सभी ओर से दबाकर विष निकाले। मर्म → मृत्यु; संधि → विकलांग।
• तप्त हेम, लौह आदि से दग्ध करे (निषेध– मण्डली दंश)।

(२) अरिष्टा के नीचे शस्त्र से प्रच्छान्न कर आचूषण

(३) दंश व सारे अंग पर मुहुर्मुहु: अगद लेप
चंदन, खस युक्त शीताम्बु से परिषेक

(४) विष फैलने पर सिरामोक्षण– (i) रक्त अप्रवृत्ति – सिराव्यधोक्त उपाय।
(ii) अति प्रवृत्ति – रक्तपरीक्षण–

a. दुष्ट रक्त – अग्नि में चटचट।
b. शुद्ध रक्त – पूर्वोक्त। – स्तम्भन → प्राण रक्षा।

• विषवेग → रक्त अति प्रवृत्ति → मूर्च्छा, आयाम, हृद द्रव (Palpitation $\bar{C}$ H.R.↑) शीत उपचार रोमहर्ष होने तक।
• सिरा स्पष्ट न होने पर श्रृंग/जलौका।

(५) शेष विष का (लीन) शीत लेप, परिषेक से स्तम्भन।

(६) हृद रक्षण–
तीक्ष्ण → हृद कर्षण। चि०–
• घृत/घृत + मधु/घी + अगद।
• पंचगव्य/दधि + गेरू + जलपान।
• कचनार, अर्क, शिरीष, (नीली अपराजिता) कटभी पत्र खिलाये।
• शिशु को छाग रक्त; गर्भिणी – दूध + शीत मधुर अगद पान।

(७) श्लेष्मा संचय हटाना– • शीत उपचार, हृद रक्षण आदि → कफ संचय।
गौरव, जी मचलाना; चि०– विषघ्न वमन।

→ भुजङ्ग दोष, प्रकृति, स्थान, वेग के भेदानुसार चि० करे ॥२०॥

- I. तीक्ष्ण नस्य व अंजन, II. घृतपान, III. वमन, IV. विरेचन।

दर्वीकर दंश– (कृष्ण सर्प)–

- सिन्दुवार मूल को इसी के स्वरस से पीसकर + मधु – पान।
- नस्य– कूठ + मधु
- दंश स्थान पर तीक्ष्ण मूल विष लेप।

फणयुक्त व राजिमान दंश– चौलाई, गम्भारी, अपामार्ग, अपराजिता, मातुलुंग, श्वेत वच, लसूड़ा – पान, नस्य, अञ्जन।

राजिमान दंश– अतीस, कूठ, गृह धूम, हरेणु त्रिकटु, तगर – मधु से।

- काण्डचित्रा दंश– त्रिफला चूर्ण + पुराण घृत पिलाये। जीर्ण होने पर विरेचन दे। फिर जौ आहार तक्र से दे।

मण्डली दंश–

- गन्धनाकुली, मृद्वीका, श्वेत वच, सल्लकी – १:१ } चूर्ण + मधु।
तुलसी पत्र, कैथ, बिल्व, अनार – १/२ : १/२ }
- हिमवान अगद– मधु से – पान, लेप। श्लो० २७।
- काश्मरी, वटशुंग, जीवक, ऋषभक, सिता (श्वेत वच), मंजीठ, मुलेठी – क्वाथ पान।

गोनस दंश– (श्लो- २९)

अष्टांग अगद– बांस त्वक् व बीज, कुटकी, पाढल बीज, सोंठ, शिरीष बीज, अतीस मूल, गवेधुक (अन्न), वच – गोमूत्र पिष्ट।

व्यन्तर दंश– करवीर (कनेर) पुष्प, मूल
अर्क – पुष्प, मूल } कांजी पिष्ट।
लांगलिका (कलिहारी), पिप्पली, पाठा, मरिच
– सर्वकार्यों (पान, लेप, नस्य आदि) में प्रयोग।

सामान्य योग–

- श्वेत मरिच को शिरीष पुष्प रस से ७ दिन भावना दे – पान, नस्य, अंजंन।
- तगर, कुष्ठ, घी, मधु (१:१:२:२) – पान।
- गृहधूम, निशा द्वय, चौलाई मूल + मधु, घी।

विषगति चि०–

१. रस गत – कपित्थ रस

२. रक्त गत – लसूड़ा मूल, त्वक्; बेर, गूलर का अग्रभाग (of stem), कटभी – कपित्थ रस से।

३. मांसगत – खदिर काष्ठ, नीम, कुटज मूल – मधु से।
→ उपरोक्त सभी – बला, अतिबला, मुलेठी, मदनफल, तगर – जल से।

४. शिरोगत– नस्य– बन्धुजीव (दुपहरिया)/भार्गी/कृष्ण तुलसी।
चेतनाकर–
- पिप्पली, हींग, बिच्छू बूटी, मैनसिल, शिरीष बीज, अपामार्ग, बीज, लवण।
- पिप्पली, क्षवक, अतिविषा, मरिच कल्क/चूर्ण।

५. अक्षिगत–
- गो पित्त के योगों से अञ्जन।
- भोज वैतरण (धन्वन्तरि शिष्य) उपदिष्ट अञ्जन (श्लो- ३९)।
- गारूड़ अंजन– बालक, गुञ्जाफल, खस – जल पिष्ट।
- चूर्णाञ्जन– मरिच, समुद्रफेन, पिप्पली, सौवीराञ्जन, सैंधव चूर्ण।

६. कण्ठगत– कपित्थ गुदा – मिश्री + मधु

७. आमाशयगत– तगर चूर्ण (२ पल) – मिश्री व मधु से।

८. पक्वाशय गत– मञ्जिष्ठा, रजनी द्वय, पिप्पली (सम) – गोपित्त पिष्ट कर पान।

शिरःस्थ विष– (i) अधोभाग दंश – शिर में काकपद बनाकर कौआ/मुर्गा/
(ii) ऊर्ध्व भाग दंश – पाद में बकरी का मांस रखे।

I. तीक्ष्ण नस्य व अञ्जन → (रूक्षता → नेत्र हानि)

II. घृतपान

III. वमन – शेष दोष उपशमन।
- कफ प्रकृति मनुष्य, राजिमान दंश, ऊर्ध्व नाभि दंश, कफाशयस्थ विष।

→ धामार्गव, कुटज, सर्षप, मदन फल, मधु, सैंधव – कोष्णाम्बु

IV. विरेचन– पित्त प्रकृति, मण्डली दंश, पित्ताशयस्य विष, अधोनाभि दंश।
P – नीलनी फल + दन्ती – दूध/मस्तु से।
K + P – मदनफल, त्रिकटु, निशोथ, विडंग, हरड़, सैंधव – गोमूत्र।
V↑ – नीलनी फल + लवण – प्रचुर घी से।

→ विरेचन लेटे-२ ही कराये, बार-२ उठने से वात दूषण।

अगद–

- **वज्र चूर्ण–** दालचीनी, मनःशिला, हल्दी-२, तगर, रस (शुद्ध पारद), व्याघ्रनख, तमालपत्र, केसर, चंदन– चूर्ण – चौलाई के पानी से।
  गुण– सर्व विष हर।
- तार्क्ष्य अगद, ऋषभ अगद।

→ लोध्र, शिरीष पुष्प, मजीठ, हींग, रेणुका, मरिच, मनःशिला, वच, मुलेठी, कमल, निर्गुण्डी, अर्कमूल, करञ्जबीज, ज्योतिष्मती, तगर, कूठ, श्वेत वच, गिरिकर्णिका

(अपराजिता) चूर्ण को घृतक्वार, मधु व गो पित्त से पीसे। – सर्प, चूहा, बिल्ली, श्रृगाल विषहर।

→ विषनाश के बाद कफ प्रकोप – आरग्वधादि क्वाथ – मधु से।

→ **सर्पाङ्गभिहत, शङ्काविष–** मंत्रित जल प्रोक्षण, सांत्वना, हर्षण।

- मिश्री, त्रिजातक, द्राक्षा, विदारी, मुलेठी, मधु से।

मंत्र प्रयोग– रोगी मुख पूर्व व वैद्य मुख उत्तर को।

विषघ्न मणि धारण– कर्कतेन (माणिक्य), पन्ना, हीरा, वैदूर्य, लहसुनिया; कुचला, सर्पमणि आदि।

४३. कीट विष प्रतिषेध

	कीट वर्ग–४	संख्या	यथा	दोष कोपक	दंश लक्षण
१.	वातिक	१८	उच्चिटिङ्ग आदि।	V	तोद
२.	पैत्तिक/आग्नेय	२४	बर्र, वृश्चिक, मकर, भ्रमर	P	अल्पस्राव, दाह, राग विसर्पवत, खर्जूराभ।
३.	कफज/सौम्य	१३	किटिभ	K	मंद रूज,पक्व गूलरवत।
४.	सन्निपातिक/ संकीर्ण	१२	शाम्बूक आदि → प्राणहर	S	स्राव अधिक, सर्वलिंग

दंश– कर्णिका, शोफ, ज्वर, कण्डू, अरूचि।

मूत्र स्पर्श– जल बिन्दुनिभ, स्पर्श दाह, कण्डू, रूजा, उष्ण।

→	**लक्षण**
गिरगिट	अर्द्धचंद्राकार, स्राव, अतिलोहित।
मेढक	१ दंष्ट्रा का निशान, पीत, कण्डू, रूक, तृट्, निद्रा, मूर्च्छा, हरा वमन।
मछली	रूक्, दाह,।
कनखजूरा	पीत, स्वेद, रूक्, राग, शोफ, भ्रम, अतसी पुष्प वर्ण पिटका।
छिपकली	स्वेद, तोद, शोथ, दाह, क्लेद; ग्रन्थि उत्पन्न, हृद्पीड़ा।
मच्छर	(i) साध्य– कण्डू, अल्प शोथ, रूक्। (ii) असाध्य– कीट दंश वत ल०।
मक्खी	श्वयथु, दाह, कण्डू। **स्थालिका–** कृष्णस्रावी उपद्रवीपिटका–असाध्य।
चींटी	रूक्, अग्नि वत दाह।

बिच्छू– ३ भेद

(i) मन्दविष– बहु पर्व, पीत, श्वेत, श्याव, रूक्ष, कर्बुर मेचक; उदर-लाल-पाण्डुर।

(ii) मध्यमविष– ३ पर्व, उदर- धूम्र वर्ण; कपिल, अरूण।

(iii) महाविष– a. सर्प कोथ सम्भूत; ताम्र, अनेक वर्ण, शोणिताभ।
b. (२/१ पर्व) उदर–रक्तासित (लाल काला)
c, साध्य/रात्रिक/उष्ट्र धूमक (ऊंट जैसा रंग होने पर) ।

वृश्चिक दंश–

b– जिह्वा शून, देह स्तब्ध, अति रूजा; स्रोतों से कृष्ण रक्त आना, इन्द्रियार्थ नष्ट, स्वेद, मूर्च्छा, मुख सूखना, मांस विशीर्ण → मृत्यु।

c– मेढ्रस्तम्भ, रोम हर्ष।

→ प्राय: सभी कीट-वात पित्ताधिक्य, चूहा- कफ, बिच्छू-वातोल्वण।

→ कीटों के विष वेग सर्पवत (१ कला से दूसरी में जाना) होते हैं।

दोषानुसार चि०–

वात	हृत्पीड़ा, ऊर्ध्व श्वास, सिरायाम, अस्थिपर्व रूक्, चक्कर	तैल, स्वेद/बृंहण।
पित्त	संज्ञानाश, उष्ण नि:श्वास, मुख-कटु, मांस फटना, रक्त पित्त	शीत सेक, लेप।
कफ	वमन, लाला, पीनस, जाड़ा लगना, मुख माधुर्य	लेखन, छेदन, स्वेद, वमन।

→ सभी कीटों में प्राय: उष्ण स्वेद, लेप आदि करे (निषेध– मूर्च्छा, दंश पाक) ।

→ उग्र कीट, वृश्चिक चि० सर्पवत।

चिकित्सा– (A) स्नेहन (B) संशोधन (C) लेप (D) अगद पान

- चौलाई व निशोथ सम भाग + घी – पान – कम्पहर।
- क्षीरी वृक्ष त्वक् लेप– शोफ, तोद, दाह, ज्वर हर।
- दशाङ्ग अगद– काश्यपोक्त – सर्वकीट विष हर।
  वच, हींग, सैंधव, विडंग, गजपिप्पली, पाठा, अतिविषा, त्रिकटु चूर्ण।

धूम – मोर, मुर्गे की पूंछ, तैल, सैंधव। कीट व बिच्छू विष हर।

मण्डूक विष – शिरीष बीज स्नुही क्षीर पिष्ट कर लेप।

मत्स्य विष – मधु, त्रिकटु, मदनफल लेप।

छिपकली – कपित्थ व अक्षिपीडक बीज, त्रिकटु, करंज, हल्दी द्वय-लेप।

मक्खी – तगर, सोंठ, नागकेशर, मरिच – मधु से; पान, लेप।

बर्र – सैंधव, काला नमक, मरिच, सोंठ + फणिज्झक (तुलसी) रस – लेप।

बिच्छू–

परिषेक– चक्र तैल/घी + सैंधव।

उपनाह– काला जीरा, सैंधव पीसकर घी में भूने।

दंश के चारों ओर स्वेद, प्रच्छात्र, प्रतिसारण – हल्दी, सैंधव, त्रिकटु, शिरीष पुष्प व फल।

लेप–
- सुरसा का अग्र + मातुलुङ्ग रस, गो मूत्र – सुखोष्ण लेप।
- अर्क क्षीर भावित पलाश बीज – शूलहर।
- पारावत शकृत, पथ्या, तगर, सोंठ + बीजपूर रस
- हींग + हरताल + मातुलुङ्ग रस → गोली – लेप, अञ्जन।
- सोंठ, कबूतर वीट, बिजौरा रस, हरताल, सैंधव।

पान–
- मधु + घृत/दूध + शर्करा/गुड़ोदक + चतुर्जातक।
- लशुन, मरिच, हींग, तुलसी, सोंठ – अर्क क्षीर पिष्ट → गोली।

→ सिरामोक्षण, वमन, अञ्जन, नस्य।

आहार– उष्ण, स्निग्ध, अम्ल, मधुर, वातहर।

→ **मूर्च्छा, प्रश्वास, प्रलाप तीव्र रूक्–**
- हरड़, हल्दी, पिप्पली, मजीठ, अतिविषा, मरिच, अलाबु वृन्त को बैंगन के रस से पीसकर लेप।
- लाभ न होने पर दंश पर स्थावर विष (वत्सनाभ) का लेप।

अगद– शिरीष बीज, पिप्पली चूर्ण – अर्कक्षीर से ३ बार भावना दे।
– कीट, सर्प, लूता, चूहा, बिच्छू, विष हर।

४४. लूता प्रतिषेध

उत्पत्ति–

१. विश्वामित्र के प्रति क्रुद्ध वशिष्ठ कें ललाट का स्वेद → तृण →
२. खाण्डव वन दहन → असुर शरीरों से स्फुलिंग →
३. भुक्त दुष्ट अन्न सम्मूर्च्छन → विष स्फोटोत्पत्ति

} लूता।

भेद–

(A) – ३– तीक्ष्ण, मध्य, अवर क्रमश ७, १०, १५ दिन में मारक।

(B) – ४	दंशपक्ष	विष प्रकृति	दोष कोप	संख्या	नाम
१. स्वेदज	शुक्ल	आग्नेय	P	७	कपिला, अग्निमुखी, पीता, पद्मा, मूत्रा, सिता, असिता।

(B) – ४	दंशपक्ष	विष प्रकृति	दोष कोप	संख्या	नाम
२. अण्डज	कृष्ण	सौम्य	K	७	पाण्डुरा, रक्तपादिका, भृङ्गा, पिङ्गा त्रिमण्डला, पूति, वीरा।
३. वायव्य	संधि		V	७	कुमुदा, अलविषा, रक्ता, चित्रा, सन्तानि,मेचका,कसना, उद्‌भिदा।
४. उपपादिका	सदा	मिश्र	S	७	काकणी, एणपदी, लाजा, वैदेही, जालिनी, माला, गुणा, सुवर्णा।

वायव्य व उपपादिका में गणना ८-८ की हो जाती है, परन्तु श्लोक में संख्या 'सप्त' लिखी है।

प्रथम-३ कृच्छसाध्य; चौथी- असाध्य। (अग्निमुखी, कुमुदा- असाध्य)।

विष संपर्क– ८ प्रकार

- श्वास, दंष्ट्रा, मल, मूत्र, शुक्र, लाला, नख, आर्तव।
- लूता दूषित वस्त्र का स्पर्श।

दंश के सामान्य लक्षण–

- (प्राय:) नाभि से ऊपर का भाग; आधे दिन तक लक्षण रहित।
- दंश– दद्रु मण्डल सन्निभ, श्वेत/कृष्ण/अरूण/पीत/श्याव; मृदु, उन्नत; मध्य में कृष्ण/श्याव; किनारों पर (सिरा) जाल से आवृत; विसर्पण शील, शोफ, बहुवेदना; ज्वर, आशुपाक, क्लेद, कोथ, फटने से जहाँ पर क्लेद का स्पर्श होता है, वहाँ पर भी व्रण करता है।
- विष– २१ वें दिन शान्त। (चिकित्सा करने पर, अन्यथा ७, १०, १५ वें दिन मृत्यु Herpes also included)

→ सभी लूताएं प्राय: त्रिदोष कोपक (प्रमुखत: P, K) होती हैं।

- पित्तात्मक दंश – दाह, तृट स्फोट, ज्वर।
- कफ दंश – कठिन, पाण्डु, कण्डू युक्त शोफ; अल्प रूक्।
- वात दंश – श्याव, परूष, पर्वभेद आदि वेदनाएं।
- प्राणान्तक दंश (उपपादिका) – पक्व जम्बू वर्ण दंश, रक्तस्रावी; मूर्च्छा, श्यावोष्ठ वक्त्रदन्तत्व।

चिकित्सा–

1. दंश का समूल उद्धरण– शस्त्र से।
2. दहन (तप्त जांबवौष्ठ से)।
   छेदन-दाह निषेध– I. पित्तोत्तर II. मर्म, संधि आश्रित/कर्कश/भिन्न रोम।
3. विषघ्न अगद + मधु, सैंधव – लेप।

- परिषेक– क्षीरीवृक्ष कषाय।

4. **रक्त निर्हरण–** सिरा/शृंग आदि; घृत, क्षीर परिषेक।
5. **लेप–**
   - सर्वत्र प्रयोग– पीपल, लसूड़ा, बहेड़ा।

   वात– कचनार, पलाश, रीठा, ब्राह्मी, गुडुची, सोंठ, सरसों, विडंग, अर्जुन।
   पित्त– उशीर, चन्दन, मजीठ, कमल (श्वेत/नील), गेरू, क्षीरीवृक्ष।
   कफ– हल्दी, मुस्ता, लाल चन्दन, रास्ना, शिरीष, अर्क, कनेर।
6. **वमन–** दोषाधिक्य में। नीम, मुलेठी, मदनफल, सैंधव, पिप्पली, पटोलपत्र आदि से।
7. **विरेचन–**
   - त्रिफला, निशोथ, त्रिकटु, सैंधव, दन्ती, सुपारी, द्राक्षा, विडंग– १/२-१/२ पल + घृत – १ प्रस्थ, ब्राह्मी स्वरस – १ प्रस्थ → घृत पाक।
   - लघु पञ्चमूल सिद्ध दूध।
8. **पेया–** पिप्पली, पिपरामूल, सोंठ, इन्द्र जौ, सैंधव, पाठा, अजवायन, मुलेठी, मुस्ता, सरसों, देवदारू, लघुपंचमूल, सरल + घृत। विषघ्न पेया।
9. **वस्ति–** प्रबल वात रोगों में – पृष्ठ, कटि, भंग आदि।
   एरण्ड, बिल्व, वासा, लघु पंचमूल → क्वाथ + गो दुग्ध, मुलेठी, हल्दी, विडंग, सौंफ, लोध्र, गेरू, पिप्पली, मदनफल, सैंधव मिलाकर → घृतमण्ड का पाक।
10. **नस्य–** शिरोगौरव, हनुग्रह।
    I. दूर्वा, वच, रसोन, व्योष (त्रिकटु), विडंग, रास्ना से।
    II. सर्पिमण्ड।
11. **अञ्जन–**
    - नेत्रोपरोध, अक्षि शोथ, कण्डू।
    - स्रोताञ्जन, रसाञ्जन, त्रिकटु, प्रवाल, रसोन।
    - तुलसी मंजरी, त्रिकटु, बिल्वमूल, देवदारू, हल्दी → अजा मूत्र पिष्टकर। लूता, कीट विष हर।
12. तगर, कूठ, नागबला, बला – पान, नस्य, अंजन, हेतु अगद।
13. दाह और शोफ शान्त हो जाने पर कर्णिका निकाल दे।

    कर्णिका पातन– (कर्णिका उत्पत्ति– लूता शुक्र/आर्तव बिन्दु से) हेतु लेप– कुसुम्भ पुष्प, गोदन्त, स्वर्णक्षीरी कपोत विट्, त्रिवृत, सैंधव, दन्ती का लेप।
14. व्रण रोपण– शिरीष, कटभी, लसूड़ा, क्षीरीवृक्ष, अर्जुन, त्वक चूर्ण/कल्क/परिषेक।
15. **त्वक् शुद्धि–** लाक्षा, रजनी द्वय, मजीठ, हरताल, मनःशिला + घी, मधु – लेपन।
    → स्नेहन कार्यों में घृत प्रयोग; तैल → विष वृद्धि।

४५. प्रत्येक लूता प्रतिषेध

लूता	लक्षण	पान, नस्य, अञ्जन, लेप, सेक
कपिला	स्थिर, ताम्र वर्ण पिटिका, रोमकूप-दाह	हल्दी, कुष्ठ, करंज, अर्जुन, अपामार्ग, लाल चंदन, आदि।
अग्निमुखी	अग्निदग्धवत स्फोट, स्वेद; मल में पित्त व रक्त का अतिसरण।	असाध्य; महुआ, मुलेठी, मधु, कुष्ठ, छुईमुई आदि शीत द्रव्य।
पीता	मल;मूत्र- पीत; ज्वर वमन।	कटभी (अपराजिता),अर्जुन, शिरीष, हींग, कुष्ठ।
पद्मा	पद्माभ (लाल कमल) स्फोट, फटकर/बिना फटे अन्य उत्पन्न।	चन्दन, मृणाल + मधु, घृत।
मूत्रविषा	पूति, कृष्णरक्त स्राव; श्वास, ज्वर मूर्च्छा, भ्रम।	मुलेठी, मधूक, चंदन, लाजवन्ती, पद्म।
श्वेता	श्वेत पिटका, कण्डू; विसर्प।	चंदन, रास्ना, एला, प्रियंगु।
कृष्णा	दंश कृष्ण, मल गंधि, क्लेद।	सर्पाक्षी, एला, रास्ना।
पाण्डुरा	शून, ज्वर, निद्रा, जृम्भा	इन्द्रायण मूल, गोरोचना, गोबर रस।
भृङ्गा	भ्रमराभ दंश पिटका, दाह, कोठ।	अंकोल, प्रियंगु, गोपित्त, कूठ।
रक्ता	पाण्डु पिटका, किनारे लाल श्वेत अतिसार, श्वास, दाह	लसूड़ा, अर्जुन, आम्रत्वक्, सिन्दूरवार मूल।
चित्रा	रक्तवर्ण कड़ी पिटका, फैलने वाली, पर्व भेद। भिन्न-पिटका कृष्ण, पीला स्राव → बड़ा व्रण।	कुष्ठ, शिरीष, (नड़सर) नल, रेणुका, बालक्षड़।

→ लूताओं के दंश स्थल नियत होते हैं यथा– मूत्रविषा कक्षा में, कपिला, नासा में; आदि; परन्तु बली होने पर अन्य स्थानों पर भी विष उदीर्ण हो जाता है।

असाध्य लक्षण– शीत लगकर ज्वर आना, अन्त: दाह त्वचा शीत, मूत्रकृच्छ, आध्मान, प्रलाप, अतिसार, श्वास, कास, हृदरोग; मत्स्यगंध आदि।

४६. मूषिकाळर्क प्रतिषेध

मूषिक– १८ (आखू) ।

लालन	हसिर	कषायदन्त	कपिल	शबल P	पलित उन्दुरू R
चपल	चिकिर	कुलक	असित	श्वेत K	छुच्छुन्दर
पुत्र	अजिन	कोकिल	अरूण V	कपोत S	रसाला

शुक्र/शुक्र लगे अंग का स्पर्श → रक्त दुष्ट, पाण्डु, ग्रन्थियां, शोथ, कोठ, मण्डल; भ्रम, अरूचि, शीतज्वर, अतिरूक्, साद, वेपथु, पर्वभेद, रोमहर्ष, दीर्घकालानुबन्धी मूर्च्छा; श्लेष्म अनुविद्ध (पिण्ड) वमन।

विष गुण- व्यवायि, कष्ट साध्य।

असाध्यत्व-
- वस्तिशून, ओठ विवर्ण, ग्रन्थि पूर्ण।
- छछुन्दर दष्ट में वैसी ही गंध आना।

अलर्क-

- चतुष्पद- कुत्ता, तथा अन्य दंष्ट्रा प्रहारी व्याल यथा- शृगाल, खच्चर, अश्व, भालू, चीता, व्याघ्र, भेड़िया (बिल्ली) आदि।

  कफोल्वण दोष → पशु के संज्ञावह स्रोत में आश्रित → संज्ञा नष्ट, धातुओं में अतिक्षोभ
- → लालास्राव, अन्ध, बधिर; सभी ओर दौड़ना; पुच्छ, हनु, स्कन्ध स्रस्त (नीचे लटका), शिरो रोग, मुख नत (नीचे झुकाए)।

लालावानान्धबधिरः सर्वतः सोभिधावति ।
स्रस्त पुच्छहनुस्कन्धः शिरो दुःखी नताननः ।।७।।

विषयुक्त पशु दंश का लक्षण-

- दंश सुप्त, कृष्ण रक्त क्षरण; हृद, शिर रोग, ज्वर, स्तम्भ, तृट्, मूर्च्छा।
- दंश- कण्डू, तोद, वैवर्ण्य, क्लेद, दाह, राग, पाक, दर्द, शोथ ग्रंथियां, विकुञ्चन (सिकुड़ना); दंशावदरण, स्फोट, कर्णिका; सर्वत्र मण्डल।

असाध्यत्व- दंशित पशुवत चेष्टा/शब्द; अचानक उसे दर्पण/जल में देखे; जलत्रास (Hydrophobia) ।

जलदर्शन संस्पर्श शब्देभ्यो यश्च सन्त्रसेत् ।
अदष्टमपि तं जह्याज्जलसन्त्रास रोगिणम् ।।१२।।

जलसन्त्रास- कारण- (i) पशु से दष्ट (ii) बिना दष्ट (other) जल-दर्शन, स्पर्श, शब्द से डरना।

चिकित्सा-

आंखु/मूषिक विष-

I. दहन- तप्त काण्ड/दर्पण (Lens) से; अन्यथा कर्णिका उत्पत्ति।

II. रक्तस्राव- प्रच्छान्न/सिरा व्यध।

   लेप- शिरीष, हल्दी, तगर, केसर, गुडुची।

   गृहधूम, मजीठ, हल्दी, सैंधव - कर्णिकापातनार्थ।

   प्रक्षालन- अम्ल, पानी से।

लेप– काली त्रिवृत, श्वेत कटभी, बिल्वमूल, गुडुची – विषघ्न।

III. वमन– • वच, मदनफल, जीमूतक, कुष्ठ को गोमूत्र पिष्ट कर दधि के साथ पिये।
• सेम, कदलीमूल, बन्धुजीव फल – उपरोक्त विधि से।

पेया– पिप्पली, गजपिप्पली, शालपर्णी, पृश्निपर्णी क्वाथ निर्मितविषजन्य शूल, हिक्का, वमन हर।

IV. विरेचन– • चौलाई मूल सिद्ध घृत।
• अर्कमूल/कैथ पञ्चाङ्ग (छाल, पत्र, पुष्प, फल, मूल) सिद्ध घृत

V. शिरोविरेचन– शिरीष सार व फल चूर्ण।
पेया– पिप्पली, पिप्पली मूल, सारिवा, त्रिकटु, बला, मजीठ, सोंठ से बनाकर → शीत + शर्करा, मधु। – नाभि शूल, विकर्तिका हर।

VI. **शेष विष शमन–** • शरपुङ्खा बीज चूर्ण – तक्र से पान
• पयस्या रस शर्करा व मुलेठी युक्त।

ज्वर हर– चिरायता, अमृता, मजीठ, अर्जुन, त्वक्, झिण्टी, ढाक, गम्भारी, पयस्या, तण्डूलीयक, बकायन, कैथ, अमलतास में से किसी एक का क्वाथ।

VII. **कर्णिका पातन–** (i) स्थिर, मन्द रूजा– शस्त्र से।
(ii) अन्यथा – लेप – अपामार्ग/स्नुही कल्क।

VIII. व्रण रोपण– क्षीरी प्रवाल (पत्र),मजीठ, बला, दारू हल्दी, कनेर– कल्क/सिद्ध घृत।

विषहर विशिष्ट चि०–

पुत्रक	पाण्डुता, चूहे जैसी गांठे	शिरीष बीज, कूठ – मधु से।
अजिन	कृष्ण अंग, मूर्च्छा, वमन, हृद्ग्रह	स्नुही क्षीर पिष्ट मजीठ – मधु से
कषायदंत	निद्रा, अतिकार्श्य	शिरीष-सार, त्वक्, बीज चूर्ण- मधु से।
कोकिला	उग्र ग्रन्थियां, ज्वर, दाह	नीलनी, पुनर्नवा क्वाथ सिद्ध घृत।
अस्नित	रक्त वमन (विशेषत: दुर्दिन में)	पलाश भस्मोदक + शिरीष फल, नेत्रबाला।
अरूण →	५, – V. P. K. S.R. रोग	श्वेतगुञ्जा, मकोय स्वरस सिद्ध घृत।
पलित	ग्रन्थि, कर्णिका	
छुच्छुन्दर	उग्र क्लम, ग्रीवास्तम्भ, विसूचिका	यवक्षार, ऋषभक्षार, बृहतीद्वय पान।
रसाल	ग्रीवास्तम्भ, दंश मण्डल में रूक्	महागद (सर्प चि०) + घृत, मधु।

मूषिक विष कोप– शेष रहने पर।

• अभ्रदर्शन • जिस दोष का विष है उसके प्रकोपक काल/कारण से।

चि०– दूषीविषवत।

अलर्क विष चि०–

I. उष्ण घृत दग्ध

II. अगद लेप–

- अपामार्ग रस।
- तिल, गुग्गुलु, दूर्वा, दाडिम, गुड़ – बार-बार, ;-कुत्तादंश में।
- मातुलुंग पत्र कल्क।

III. पुराण घृत पान।

IV. विरेचन– अर्कक्षीर युक्त।

→ धत्तूर फल, कठगूलर मूल + तण्डुलाम्बु पान।

- तिल कल्क, तैल, अर्क दूध, गुड़।
- लशुन मरिच, पिप्पली, त्रिफला– गोपित्त पिष्ट – पान, नस्य, अंजन, आलेप।
- **जलत्रास हर–** जलवेतस पत्र, त्वक, मूल कूटकर → क्वाथ– ठंडाकर पिलाये। क्वाथ सिद्ध घृत – पान, नस्य आदि।

तीक्ष्ण विषघ्न द्रव्य युक्त वमन विरेचन–
- हृद विदाह, लाला हर।
- दोष शेष नहीं रहता।

→ अष्टोत्तर शत (१०८) घट स्नान।

- चतुष्पाद/द्विपाद के नख/दंत क्षत → सूजन, पाक, ज्वर, स्राव– हल्दी द्वय, गैरिक, असन.....लेप।

४७. विषोपद्रव प्रतिषेध

विष उपद्रव– १६

ज्वर	हिक्का	मलावरोध	श्वयथु
कास	अतितृष्णा	आनाह	पूतिदंश
वमन	मूर्च्छा	वस्ति रूक	रक्तस्राव
श्वास	अतिसार	मूर्द्ध रूक	विषवात

	उपद्रव	चिकित्सा
१.	विष ज्वर	त्रिफला, अमलतास, व्याघ्री क्वाथ। बाल बिल्व, वच, मुस्ता, पुनर्नवा क्वाथ।
	श्वास, कास, ज्वर	पिप्पली, हींग, कपित्थ रस, सैंधव + मिश्री, मधु।
२.	विषज कास	द्राक्षा, सोंठ, पिप्पली/त्रिफला, मुस्ता– घी व मधु से।

	उपद्रव	चिकित्सा
३.	वमन	बिल्वमूल क्वाथ + मरिच चूर्ण/क्षीरि वृक्षांकुर + मधुसिता। जीर्णशालि से चंदन जल में ओदन पाक + मधु, दूध।
४.	श्वास	• द्राक्षा, कर्कट शृंगी, पिप्पली, मिश्री– मधु से। • गुड़, सोंठ, पिप्पली, हरड़, आंवला– मधु से।
५.	हिक्का	• शंख, स्वर्ण, गैरिक, कुटकी – मधु से। • त्रिकटु, उशीर, निशाद्वय – मधु से।
६.७.	तृट, मूर्च्छा	शीत लेप, परिषेक। शर्करा, दाडिम, लाजा सत्तू + मधु, जल। वट, वेतस, जम्बू, आम्र, खस युक्त शीत जल।
८.	अतिसार	• भूनिम्ब, मुस्ता, कटुका, त्रायमाण, इन्द्र जौ– (१-१) + चित्रक– (२) + कुटज त्वक्– (८) – चूर्ण – शीताम्बु से; अतिसार, उदावर्त, कास हर। • पाठा, सोंठ चूर्ण– दधि + मधु से।
९.	वस्ति रूक	फलवर्ति। अमलतास/निशोथ/कृष्णजीरा + हरड़– मधु,घृत।
११.	मलावरोध, आनाह	त्रिफला क्वाथ + त्रिवृत – सिद्ध घृत [अजाघृत] ।
१२.	शिरोरूक्	काकोली, क्षीरीवृक्ष त्वक्, द्राक्षा, मुलेठी, शर्करा युक्त ठंडा जल।
१३.	शोथ	• कोष्ठ शोधन कर– सोंठ, पिप्पली, कटुका, देवदारू/ पिप्पली/तुलसी मूल कल्क सिद्ध अजाक्षीर। • त्रिफला क्वाथ से ३ दिन भावित त्रिवृता + घी। • मधुर कषाय लेप– मधु, विडंग, त्रिफला,त्रिकटु आदि। • धूपन– शिरीष पुष्प, तगर, कूठ + घी।
१४.	पूति, सड़न, (कर्णिका)	मधुर स्निग्ध शीत आलेप। क्षीरीवृक्ष कषाय + क्षीर। वटशुंग, मुलेठी, तिल, सरसों, सैंधव, हरड़, निम्बपत्र +घी।
१५.	अतिरक्तस्राव	• पान– मरिच/चौलाई मूल/शर्करा + घृत। शमी कल्क। • लेप– दारूहल्दी/इन्द्रवारूणी।
१६.	विषवात (वातकोप)	हेतु– अतिरक्तस्राव, रूक्ष सेवन, विष स्वभाव।→ उन्माद, मनोभंश, अपस्मार। चि०– स्नेहन, वस्ति, नस्य, प्रधमन, अञ्जन। • नागदन्दी, हरड़, कूठ, पिप्पली, वासा, कट्फल, भिलावा, कुटकी, बिल्व, अतीस। उन्माद, अपस्मार– कार्पास मूल, मरिच, हल्दी-द्वय,पिप्पली, सर्जक्षार, कुष्ठ....... को जल में घोलकर पान।

शेष विष निवर्तन– महासुगन्धि अगद (श्लो-४०)।

- क्षारागद, सुगन्धाख्य अगद, } – दर्शन, श्रवण, स्पर्श से विषघ्न।

→ सभी विषों में शीत चि०। कीट विषों में उष्ण चि०।

पथ्य–
- पुराने, शालि, साठी चावल, मूंग, अरहर, पटोल, चौलाई (तण्डुलीयक), जीवन्ती, बैंगन, सुनिषण्णक (चौपतिया), अनार, आंवला, कैथ, सैंधव, मिश्री आदि अविदाही व्यञ्जन, कल्याणक आदि घृतों से संस्कृत कर।
- जल को उबालकर ठंडा करे + मधु/आंवला
- श्वेत छिलके वाले चौड़े जौ का सत्तू + घृत – तक्र से।

अपथ्य– तिल, मद्य, कुलत्थी, भूख, क्रोध, मैथुन, दिवाशयन, आयास (थकावट वाला कार्य)।

विषमुक्त लक्षण–

प्रशान्त दोषं प्रकृतिस्थ धातुमाहारकामं सममूत्रविटकम्।
प्रसन्नवर्णेन्द्रियचित्तचेष्टं वैद्योऽवगच्छेद विषं मनुष्यम्।।४६।।

४८. विषोपयोगी

प्रतिविष– प्राय: स्थावर विष – कफज व ऊर्ध्वगामी तथा जांगम विष– पित्त सम गुण व अधोगामी है। गुण विपरीतता से ये परस्पर एक दूसरे का शमन करते हैं।

प्रयोग–
- मंत्र सिद्ध सहायक से धरणी बंध करवाकर प्रतिविष प्रयोग करे।
- औषधि आदि सभी उपाय निष्फल हो जाने पर प्रयोग।
- विष का पंचम वेग बीत जाने पर (विष रक्त में स्थित न हो) ६ठे-७वें वेग में।

→ जांगम दंश में स्थावर मूल– स्निग्ध, घन, गुरू यथा वत्सनाभ का प्रयोग। निषेध– कालकूट।

→ स्थावर विष में सर्प दंश।/दंशित मांस (/गन्ना) खिलाये।

→ निर्विष अवस्था में प्रतिविष
निर्बल विष में अतिबल (मात्रा) विष } मारक/रोगकर।

मात्रा– स्थावर की हीन-४, मध्यम-६, उत्तम-८ यव।

कीट दंश में – २ यव
बिच्छू दंश में – तिल मात्र } स्थावर विष दे।

अविरोधि अगद–

प्रयोग–
- सविष/निर्विष में शंका होने पर।
- क्रिया काल में ही। बीत जाने पर रोग कर।

प्रतिविष उपयोग–

1. तीक्ष्ण विष उपयोग– • वत्सनाभ मूल + मधु, घृत युक्त दूध + सिन्दुवार (सम्भालु), तगर ≡ मृत संजीवन।
2. घृतपान– अर्जुन त्वक चूर्ण + मधु, घृत।

आखुविष– शिरीष पुष्प, तगर + विष (वत्सनाभ) पान।

निःसंज्ञबोधन– मनःशिला, अंजन, हरताल, एला, सिंदुवार, देवदारू, मजीठ, केसर, विष का प्रधमन (नासा में)।

अन्य रोगों में विष प्रयोग– I. स्नेहन II. संशोधन

III. विष प्रयोग– शीत, बसन्त, सूर्योदय काले।

गर्मी में दे सकते हैं पर वर्षा में मेघ होने पर निषिद्ध।

निषेध– पित्त रोग, नपुंसक, गर्भिणी, बाल, वृद्ध, रूक्ष, मर्म।

अपथ्य– रूक्ष आहार (→ दृष्टि विभ्रम, कर्णशूल, वातज रोग), अजीर्ण (→ मृत्यु), दिवाशयन, कटु, अम्ल, तैल, लवण, धूप, अग्नि।

उपयोग– अलं गोमूत्र संयुक्तमातपे शोषयेत् त्र्यहम्।
विषं बृंहण मेतद्धि विषस्यादौ प्रशस्यते ॥२२॥

हरताल + गो मूत्र → धूप शुष्क – ३ दिन।

विष का बृंहण करने से इसे विष सेवन के पूर्व प्रयोग किया जाता है।

व्याधि	विष सेवन विधि
ज्वर–V	V – मस्तु; P – दूध; K – गोमूत्र से; S – त्रिफलाम्बु से हरताल (उपरि विधि से शोधित दे)।
जीर्ण ज्वर	विष + लोध्र, चन्दन, वच, शर्करा, घृत, मधु, दूध।
रक्तपित्त	विष + मुलेठी, रास्ना, खस, कमलकन्द – तण्डुलाम्बुना।
व्रणपाक	विष + रसाञ्जन, भार्गी, बिच्छू बूटी, मासपर्णी लेप।
श्वास, हिक्का	विष + मिश्री, क्षीरी प्रवाल, मधु।
वमन	विष + मधु, खस, मुलेठी, यवक्षार, हल्दी, कुष्ठ छाल।
मूत्रकृच्छ	विष + हरड़ चित्रक, दन्ती, द्राक्षा, हल्दी, अतीस
मूत्रज उदावर्त }	विष + शिलाजतु।
अश्मरी }	विष + यवक्षार, सैंधव, पाषाण भेद – गोमूत्र से।
शूलहर	विष + पिप्पली मूल, गोमूत्र।
वातज अंडवृद्धि	विष + एरण्ड तैल, त्रिफला, चित्रक, गोमूत्र + घी।

व्याधि	विष सेवन विधि
गुल्म, प्लीहोदर	विष + त्रिफला, सर्जक्षार।
	विष + मरिच, सौंफ, दूध।
	विष + सौंफ, विडंग – दूध से।
कुष्ठ	विष + कठगूलर मूल क्वाथ से।
विचर्चिका, दद्रु, शतारू, किटिभ	विष + अमलतास पत्र, छाल मूल – तक्र पिष्ट + भिलावा, चित्रक, अमलतास – गोमूत्र पिष्ट } लेप।
श्वित्र	विष + कनेर, अर्कमूल, बावची, चित्रक, गजपिप्पली, भिलावा– अजामूत्र पिष्ट – लेप।
मूढगर्भ	विष + काकोली, कलिहारी, दन्ती, पाषाण भेद लेप → मोचन।
बन्ध्या	विष + बिजौरा स्वरस, वच, ब्राह्मी रस, घृत।
नष्टशुक्र	विष + वच, कौंच, द्राक्षा – दूध से।
तिमिर	आंवला रस से कई बार भावित विष + शंख – अञ्जन।
काच	विष + पिप्पली, गज पिप्पली, हल्दी, दारूहल्दी → अंजन।
शुक्रार्म	गोमूत्र भावित विष व पिप्पली → अंजन। (विष अंजन के बाद बार-बार शीताम्बु परिषेक)
रात्र्यन्ध	विष, मधूक सार, मधुक, दूध व जल से पका घृत– सन्तर्पण।
पूतिनासा	विष + सोंठ, हरड़, पाठा, द्रवन्ती।
पलित, अरूंषिका	विष + सर्षप तैल नस्य।
कर्णशूल	विष + सर्जक्षार, सैंधव, शुक्त – कर्ण पूरण।
वाणीस्खलन	(तुतलाना) – देवदारू, विष, घृत, गो मूत्र, कटेरी पान – काश्यप।
•	विष ≡ वत्सनाभ – सामान्य ग्रहण।

४९. रसायन विधि

रसायन– लाभोपायो हि शस्तानांरसादीनां रसायनम् ।।२।।

प्रशस्त रस आदि धातुओं का प्राप्ति हेतु।

सेवन लाभ–

दीर्घमायुः स्मृतिं मेधामारोग्यं तरूणं वयः ।
प्रभा वर्ण स्वरौदार्यं देहेन्द्रिय बलोदयम् ।।
वाक्सिद्धिं वृषतांकान्तिमवाप्नोति रसायनात् ।
लाभो............... रसायनम् ।।२।।

अशक्तता/ओजक्षय की सम्प्राप्ति–

ग्राम्य आहार, नवधान्य, पिष्टी, विरूढ़ (अंकुरित धान्य), दिवाशयन, विषम व्यायाम, स्त्री सेवन, क्रोध, लोभ, भय, शोक, पाप, अनियमित आहार, निर्हार (मल मूत्र त्याग) → दोष कोप → रस अशुद्ध → रक्त विदग्ध → मांस शिथिल → मेद विष्यन्दन → सन्धियां पृथक, अस्थि मज्जाहीन → शुक्र, ओज, बल, वीर्य, की पूर्ति नहीं होती →
- हर्षक्षय, शैथिल्य, तन्द्रा, आलस्य, निरूत्साह, असमर्थ; स्मृति नष्ट → आयुहानि।

चि०– (i) स्नेहन (ii) संशोधन (iii) रसायन प्रयोग।

रसायन सेवन– द्विविध
- (A) कुटी प्रावेशिक (Indoor)– वीर्य, प्रभाव, प्रयोग, परिहार वश श्रेष्ठ।
- (B) वातातपिक (Outdoor)

सेवन काल– शरद/वसन्त का शुक्ल पक्ष।

(A) **कुटी–** नगर के पूर्व/उत्तर, उन्नत स्थल पर, जहाँ जल आदि की व्यवस्था हो; त्रिगर्भा, द्वार-पूर्व/उत्तर; शमी, बिल्व, क्षीरीवृक्ष पास में हों। छोटी खिड़कियां, एक देश से ही बाहरी वात का प्रवेश हो।

प्रवेश– प्रशस्त दिन में देव, गुरू, गो, ब्राह्मण, ब्रह्मा, दक्ष, अश्विनौ को नमन कर।
- शोधन– (i) काय – वमन, विरेचन।
  (ii) मन – सत्यव्रत धर्म परायण।

(१) कोष्ठ संस्कार–

1. स्नेहन, स्वेदन
2. विरेचन– हरड़, आंवला, सैंधव, सोंठ, वच, हल्दी, पिप्पली, मरिच, गुड़ – उष्णाम्बु से पान।
   - संसर्जन
   - ३/५/७ दिन यव आहार + घृत – पुराण मल शोधन।

(२) रसायन सेवन– दोषादि सभी भावों का विचार कर यौगिक।

१. **हरीतकी रसायन–** पर्याय– **हरीतकी** – सर्वरोग हरणात्;
पथ्या – पथ्यत्वात् सर्वधातूनां;
शिवा – शिवतया – कल्याणकारी;
विजया – इसकी सहायता से सर्वरोगों पर विजय।

अभया– सभी रोगों से अभय; नित्य सेवन से आयु स्थिर।

ग्रहण– हिमालयोत्पन्न, काल से रस, वीर्य युक्त, नव, वृत्त, घन, स्निग्ध, गुरू (जल में डूब जाना)।

बालक– हरड़ – मक्खन से;

वातरोग– घी, लवण से; P – गुड़, शर्करा; K – पिप्पली, मधु से दे।

→ हरड़ की २/३ टुकड़े कर गुठली निकाल कर ४ गुने दूध में पाक → मृदु होने पर उतार कर ठंडा करे, घी व मधु मिलाकर रख ले। ३ रात बाद नित्य सेवन करे। मात्रा– जितने से भूख न रूके। पच जाने पर साठी/शालि – दूध से। गुण – धातु पुष्टि।

२. **ब्राह्म रसायन–** (श्लो० २१) – ब्रह्माजी द्वारा निर्मित; वैखानस, बाल खिल्य सेवित।

हरड़ – १०००
आंवला – ३०००
पांच पंचमूल – ११.५ किग्रा०
(सू० १२/५७-६२)

} + जल (१० गुणा) →(Δ) १/१० शेष– गुठली निकालकर हरड़ आंवला पुनः उसी क्वाथ में डाले + दालचीनी, एला, मुस्ता, हल्दी, पिप्पली, अगरू, चंदन, ब्राह्मी, नागकेसर शंखपुष्पी, वच, केवड़ीमोथा मुलेठी, विडंग– प्रत्येक–184 gm

मिश्री – 50.6 kg
घी – 8.832 kg
तिल तेल – 5.9 kg
} +

Δ ↓ लेहवत घन →(शीत) + मधु– 14.7 kg → घृताभ्यक्त पात्र में रख ले।

३. त्रिफला के कोई २ या तीनों फल लेकर, पलाश त्वक् लपेट कर, मिट्टी का लेप करे। उपले की अग्नि में स्वित्र करे। गुठली निकालकर + दधि, घृत, मधु, तैल, तिलकल्क, शर्करा।

४. त्रिफला + मुलेठी, वंशलोचन, पिप्पली, सैंधव, स्वर्ण, लोह, ताम्र, रजत, वचा, मधु, घी, सिता (कोई एक/सभी)।

५. • प्रात – १ हरड़; भोजन पूर्व – २ बहेड़ा; भोजनोपरांत – ४ आंवला – घृत व मधु से – १ वर्ष तक।

६. **च्यवनप्राश–** (श्लो० २९) – च्यवन सेवित। कुटी विधि से सेवन।

दशमूल, बला, मुस्ता, जीवक, ऋषभक, कमल (उत्पल), मुद्गपर्णी, माषपर्णी, पिप्पली, कर्कटश्रृंगी, मेदा, भूम्यामलकी, एला, जीवन्ती, अगरू, द्राक्षा, पुष्कर

मूल, चन्दन, कपूर, पुनर्नवा, काकोली, क्षीरकाकोली, काकनासा, गुडुची, हरड़, विदारी कन्द, वासा मूल –

प्रत्येक – 46 gm + जल– 11.78 kg

• आंवले निकाल कर गुठली पृथक् करे ← १/४ शेष ← ५०० आंवला (पोटली में बंधे) Δ

• क्वाथ छाने — + शर्करा– 2.3 kg

→ आंवलों को घी + तैल (मिश्र– 552 gm) में भूने ± → Δ लेह ↓ शीत

मधु– 276 gm, वंशलोचन– 184 gm, पिप्पली– 92 gm, चतुर्जात (दालचीनी, एला, तेजपात, नागकेसर)– 46 gm. + ↓ च्यवनप्राश

गुण– अङ्गवर्द्धन; कास, श्वास, शोष, हृद रोग, वातरक्त, मूत्र, शुक्र दोष, क्षत क्षीण, ज्वर हर। मेधा वृद्धि, वातानुलोमन।

७. स्वर्ण, आंवला, मधु – गायत्री मंत्राभिमंत्रित कर दूध से पिये।

८. स्वर्ण, बिल्व, वच, घृत – मेध्य, पुष्टि।

९. शतावरी घृत + स्वर्ण + मधु।

१०. स्वर्ण + शंखपुष्पी – दीर्घायु।

११. स्वर्ण + कमलकेसर – लक्ष्मी वृद्धि।

१२. स्वर्ण + वच – मेधा।

१३. स्वर्ण + विदारी – काम/वृष्य।

१४. मण्डूक पर्णी स्वरस – अग्नि बलानुसार

१५. मुलेठी चूर्ण – दूध से

१६. समूल पुष्प गुडुची स्वरस

१७. शंखपुष्पी कल्क – मेध्य

१८. बालछड़, कटुरोहिणी, विदारी, मुलेठी, चन्दन, शारिवा, वच, त्रिफला, त्रिकटु,
निशा द्वय, परवल, सैंधव कल्क –
शंखपुष्पी स्वरस (घी से ३ गुना) –
दूध (घी के सम) –
} १ द्रोण घृत सिद्ध करे।

गुण– जड़ भी वाक्, श्रुतधारी, प्रतिभावान, निरोगी।

१९. **पद्मारविन्द घृत–** (श्लो-४४) कमल पंचाङ्ग सिद्ध घृत (दूध व स्वर्ण युक्त) [मृणाल– नाल; बिस– मूल; पत्र; बीज; केसर] – बल, पौरूष, प्रतिभा कर।

२०. **चतुष्कुवलय घृत–** नीलोत्पल के नाल, कंद, पत्र, केसर सिद्ध घृत।
गुण– मेधा वर्धक।

२१. **नागबला रसायन–** (श्लो० ४७) – माघ, फाल्गुन में, पुराने पत्ते गिर चुकने व नये न आने पर; पुष्य नक्षत्र में चन्द्रमा योग होने पर, समूल उखाड़े।

मूल त्वक् चूर्ण– 11.5 gm – 46 gm – दूध से पिये/मधु, घृत से ले।
आहार– दूध/शालि, साठी + दूध।

→ इसी प्रकार बला, चन्दन, खदिर, कदर, शाक (सागौन), शीशम, तुलसी, पुनर्नवा, वय:स्थापन कषाय (१०), विदारी, गोक्षुर, अश्वगन्धा, शतावरी, वाराहीकन्द प्रयोग।

- **स्वरस–**
  - **फल, वीरूद औषध–** यन्त्र निष्पीडन/कल्क बनाकर निचोड़ ले।
  - **सार वृक्ष** (असन, देवदारू आदि) से स्वरस– कुष्ठ चिकित्सोक्त खदिर सार वत गीले वृक्ष से ले।
    शुष्क वृक्ष में लकड़ी के २/३ अंगुल के टुकड़े करके ४ गुणे जल में भिगो दे, ३ दिन धूप में रखा रहने दे। फिर इन्हें निकालकर अन्य टुकड़े डाले। इस प्रकार ९ दिन में ३ बार प्रक्षेप कर → स्वरस।
  - **परिशुष्क द्रव्य–** चूर्ण कर समभाग जल में २४ घण्टे भीगने दे, फिर मसलकर → स्वरस।

२२. तुवरक– वर्षा में पक्व फलों से मज्जा लेकर सुखाले – तैल प्रयोग।
तैल – १ दिन के अंतर से १ माह तक सेवन – कुष्ठहर।

२३. भल्लातक वर्धमान रसायन – ४८ दिन में १००० का प्रयोग। सेवन से पूर्व घृत गण्डूष आदि कर ले।

- भल्लातक का रस– पिष्ट स्वेदन विधि से (श्लो० ६१)।
  रस, घी, मधु (१:२:८)।
- भल्लातक तैल– कुष्ठ हर (श्लो० ६६)।
- **भल्लातक सर्पि–** (श्लो० ६५)– स्वयं पुष्ट व पककर गिरे भिलावे ईंट चूर्ण से रगड़कर, धोकर, सुखा ले।
  भल्लातक (१) + जल (८) $\xrightarrow[\Delta]{}$ १/४ शेष → छान + दूध (८) $\xrightarrow[\Delta]{}$ १/४ शेष
  \+
  शर्करा + पाक ← घृत (८)
  ↓
  धान्य राशि में ७ दिन के लिये रख दे।

भिलावा सेवन– आंवला/दधिसर/गुड़/दूध/घृत/जौ सत्तू। मधु आदि से।
गुण– कफज रोग, बिबन्ध हर, अग्नि दीपक।
अपथ्य– कुलत्थी, दधि, शुक्त, तैल, अभ्यंग, अग्नि सेवन (धूप)।

२४. **पिप्पली–**

- ५/८/१७ पिप्पली + मधु, घृत × १ वर्ष। [V-5, P-8, K-17]
- पलाश क्षारोदक भावित पिप्पली को घृत भृष्ट कर मधु से – ३ प्रातः, ३ भोजन पूर्व, ३ भोजनोपरांत खाये।
- **वर्धमान–** १००० पिप्पली, १९ दिन में। दूध से।

(उत्तम बल – क्षीर पिष्ट, मध्यबल – शृत, अल्प बल – शीत कल्पना)।

१० →	२० →....	१०० →	९० →...	१०
I.	II.	X	XI	XIX
⟵ 500	⟶	⟵ 500	⟶	

आहार– साठी– दूध व घी से।

गुण– कास, श्वास, गलग्रंह, यक्ष्मा, मेह, ग्रहणी, अर्श, पाण्डु, विषम ज्वर, शोफ, वमन, हिक्का, प्लीहा, वातरक्त हर।

२५. **विडंग–** (i) विडंग व मुलेठी (सम) चूर्ण – शीताम्बु से।
पथ्य– लवण रहित मूंग यूष + घृत युक्त ओदन।
गुण– कृमि, अर्श, कुष्ठ, प्रमेह, मेद दोष हर।
(ii) विडंग चूर्ण– भिलावा क्वाथ + मधु से।
(iii) विडंग चूर्ण + आंवला रस, मधु।
(iv) विडंग चूर्ण– गुडुची क्वाथ से।
सेवन काल – १ माह।

२६. **सोमराजी (श्वेत अवल्गुजा/बावची)–**

(A) फलों को धूप शुष्क कर चूर्ण + सम गुड़ मिलाये → घृत लगे घट में ७ दिन धान्य राशि में रख दे।

- सूर्य निकलने से पूर्व उष्ण जल से ले (मात्रा १ कर्ष = 11.5 gm)।
- उष्ण जल से स्नान कर शालि/साठी + क्षीर, शर्करा ले।
- प्रातः की धूप (लाल प्रकाश) ले; धूप से बचे।

सेवन काल– २१ दिन/१ माह।

(B) बावची फल गो मूत्र में ७ रात्रि रखकर, छिलका उतार कर छाया शुष्क कर चूर्ण करे।

- त्रिफला, करेला, वासा, ब्राह्मी, गुडुची, भृंगराज रस से अलग-२, ३-३ दिन – भावना।
- खदिर, असन, अमलतास, नीम क्वाथ से क्रमशः भावना।

चूर्ण सेवन– आंवला रस/कृष्ण तिल/खदिर क्वाथ।

गुण– कुष्ठ, श्वित्र हर। कुष्ठी पान, स्नान आदि में खदिर कषाय बरते।

- अश्मरी (कठिन, शर्करा)– बावची चूर्ण + गोक्षुर, कटेरी, बड़ी कटेरी, ईक्षुरस, एरण्ड क्वाथ से।
- गुल्म– बावची उष्णोदक पिष्ट व घृत भृष्ट कर पान; जीर्ण होने पर लघु पंचमूल सिद्ध पेया।
- अर्शभगंदर– बावची + श्योनाक, कुटज क्वाथ।
- उदर रोग– बावची – गोमूत्र से।
- जलोदर– बावची – त्रिवृता क्वाथ से।
- लूता, कीट, आखु, सर्प दष्ट– बावची + उष्ण जल से।
- **वर्ध्म (Hernia)**– बावची + गोमूत्र से।
- **वन्ध्या–** पुष्पोदय काल में ७ दिन तक बावची चूर्ण + घी खाकर गरम जल पिये। पथ्य– अश्वगंधा पक्व दूध से।
- बावची + स्निग्ध, उष्ण, मधुर – वातज रोग हर।
  बावची + तिक्त, मधुर, कषाय – पित्त रोगहर।
  बावची + त्रिफला रस, मधु – कफ रोगहर।

२७. **वच–** २ भेद

I. श्वेत/हेमवती – वच कल्क पिण्ड (आंवला सम) दूध से पिये।

II. कृष्ण – क्वाथ – २ पल पिये।

- चूर्ण – मधु व घी से, अग्नि बलानुसार।

सेवन– ७ दिन – मेधावी, ४९ दिन – श्रुतधर।

पथ्य– जीर्ण होने पर घी युक्त ओदन दूध से ले।

२८. **रसोन (लहसुन)–** अमृत कण समुत्थं योरसोनं रसोनं
विधि युतमितिखादेच्छीतकाले सदैव ॥१३४॥

अमृत बिन्दु से उत्पन्न, एक रस (लवण) न्यून, रसायनार्थ शीत में सेवन।

उत्पत्ति– समुद्र मंथन में उत्पन्न अमृत को रांहु राक्षस के चोरी से पीते ही उसका शिर काट देने से जो अमृत बिन्दु दैत्य सिर से गिरे, उनसे रसोन उत्पन्न हुआ।

गुण– तीक्ष्ण, उष्ण, अग्नि बल वर्धक, वात कफ रोगहर, शुक्रआर्तव शोधक। शुद्ध वात रोग; वात के सभी आवरण (पित्त व रक्त के अतिरिक्त) नाश में श्रेष्ठ।

सेवन काल– उत्तम – १ माह, हीन – १५ दिन; (अन्य – ६ माह – निर्मदकों (शुद्ध मद्य) के साथ)।

शीत, हेमन्त, शिशिर – रसायनार्थ;

बसन्त– कफ प्रबल होने पर;

वर्षा– वात प्रबल होने पर (ग्रीष्म में भी शीत की व्यवस्था कर ले)।

संग्रह– ठंडे देश या शक देश में उत्पन्न का बसंत में संग्रह।

सेवन–
- स्नेहन, संशोधन, शीत व मधुर द्रव्यों से आशय संस्कार।
- शाम को रसोन का छिलका उतार कर निमर्दक/अवन्तिसोम/फलाम्बु (नींबू रस)/तुषोदक/तक्र में रात भर के लिये डाल दे।
- प्रात: रसोन कल्क/वस्त्र से निचोड़ा स्वरस + १/३ भाग निर्मदक (आदि) मिलाकर/+घृत/तैल/दूध (व्याधि, दोषानुसार)। (स्नेह मिलने से लशुन प्रयोग श्रेष्ठ)।

पान– I. गण्डूष भर – कण्ठ नाड़ी शोधनार्थ; –
वेदना– निरंतर स्वेद; वमन मूर्च्छा – ठंडे छींटे, पानी डाले;
विदाह– शीत लेप, कर्पूर माला धारण।
II. शेष रस पान– ओज स्थिर हो जाने पर।

मात्रा–
- अन्य द्रव्य संयुक्त – १ कुडव
  अकेला रसोन – १/२ कुडव (उत्तम)
  कल्क– १ पल – भोजन के साथ/पूर्व।
- लशुन स्वेदोत्थ क्लम – सुन्दर स्त्रियां चंदन लेप व आर्द्र वस्त्रों से युक्त हों प्रगाढ़ आलिंगन। (/cooler)
- दो बार में पीने में हेतु– तीक्ष्णता से मृदु ओजी में सहसा प्रयोग– दाह, अतिसार, बेचैनी, चित्तनाश।

पथ्य– जीर्ण होने पर जीर्ण शालि ओदन + यूष/दूध/जांगल रस।
- लशुन सेवन में एक ही मद्य का प्रयोग करे, प्यास लगने पर उसी में पानी मिलाकर पिये। (मद्य/ ≡ अम्ल)।

अन्य प्रयोग–
- लशुन कल्क + घृत मिलाकर रख दे १० दिन बाद सेवन।
- सद्य: पिष्ट लशुन – घी/रसोन रस/तक्र/उष्ण जल से।
- रसोन कल्क + सम अजा घृत – ६ माह बाद सेवन – मनोविकार हर।
- ,, + ,, तैल – १ वर्ष तक जौ राशि में रखे – वात रोगहर।
- रसोन कल्क + दशमूल क्वाथ (१:४) – १ वर्ष बाद सेवन – **वात** कफज रोग।

अर्दिक–
- लशुन कल्क + नवनीत (सम)
- लशुन + उपदंश – (चटनी) – धनिया, भुना जीरा, मूंग, सौवर्चल, लशुन अंकुर-पत्र + रस – (दोषानुसार मधुर, अम्ल, तिक्त)।

कार्श्य– लशुन + अश्वगंधा चूर्ण।

स्वर भंग– मुलेठी; गुल्म– तैल; कुष्ठ– खदिर; कृमि– विडंग; अर्श– कुटज त्वक्; प्रमेह, कास, श्वास, बिलम्बिका– त्रिफला} + लशुन।

लशुनासव– (श्लो० १२४) नारद द्वारा वात भग्न उद्धव के लिये निर्मित। लशुन स्वरस, तिल तैल, साफ किण्व, चावल पिष्टी, मेढ़ शृंगी क्वाथ (छना), (१६:१:४:२:८) इन सभी को स्नेह पात्र में रखकर – १५ दिन बाद सुरा बन जाने पर वात रोगी पिये।

→ लशुन प्रयोग के अंत में मृदुविरेचन दे – पित्त कोप भय निवारण।

अपथ्य– आम जल, इक्षुविकार, मत्स्य, दधि, (दूध); यात्रा, वात, धूप, भाष्य, चिन्ता, दिवाशयन, रात्रिजागरण, स्त्री सेवन।

निषेध– पाण्डु, उदर रोग, उर; क्षत, शोफ, तृट्, पानात्यय, छर्दि, विषज व्रण, पित्तज रोग, अक्षि रोग, तिमिर, क्षाम शरीर।

२९. **पलाण्डु–** रसोन के बाद पलाण्डु ही वात रोगों के लिये उत्तम है। प्याज में शकाधिपति का जीवन मूर्तिरूप स्थित है ॥१३५॥

यस्योपयोगेन शकाङ्गनानां लावण्य सारादिविनिर्मितानाम् ।
कपोलकान्त्या विजितः शशाङ्को रसातलं गच्छति निर्विदेव ।।१३६।।

इसके उपयोग से शक स्त्रियों में लावण्य, सार से निर्मित कपोलों की कान्ति से विजित हो चन्द्रमा प्रतिदिन रसातल में चला जाता है।

गुण– स्निग्ध व गौर अंग, कान्ति; अग्निदीप्ति, पुष्टि, दीर्घायु, चक्षुष्य, सन्तर्पण, स्थैर्य, ओज, रक्त, शुक्र, मन:तेज वृद्धि।

- वात रोग, प्रमेह हर।

सेवन– (i) पलाण्डु के रस व कल्क का प्रयोग बिजौरा रस, मधु, आदि से। रसोनवत सेवन।

(ii) अतिबाल (छोटा, नयी कली वाला), मरकत मणिवत नीली नाल + जौ मूंग, उड़द, गेहूँ + नमक, सुगंध–नानाव्यञ्जन–खर्जूर, अनार, मिश्री, द्राक्षा के अनुपान से।

३०. **कुक्कुटी–** कुक्कुटाण्ड निभ कन्द, अल्प कटु, पिच्छल; वात रोग हर। कुटी में रहकर १० दिन घृत भृष्ट कन्द खाकर धारोष्ण दूध पिये।

३१. **कंचुकी–** (श्लो० १५१) – मूली जैसा दूध युक्त कंद, ७/८ पत्र, श्वेत; काण्ड-लाल; मेघ गर्जन से कोपल फूटना।

३२. **सोमामृत घृत–** कंचुकी का योग।

३३. **गुग्गुलु–** दानवों से हारे देवताओं हेतु बल वृद्धि के लिये विष्णु द्वारा निर्मित। पर्याय– रजनीचर।

गुण– योगवाही, सर्वऋतुओं में सेवनीय, सभी के लिये शिव।

- जरा हर; अग्नि मेधा, स्मृति, पटुता वृद्धि।

मात्रा– उत्तम– १ तुला (कुल मात्रा) } इससे अधिक नहीं।
एक समय में – १ पल } ब्रह्मचर्य के साथ।

[Max. 46 gm O.D. x 100 days – Total intake 4600 gm]

उत्तम– महिषाक्ष, पुष्पराग स्फटिक; पद्मराग (माणिक्य), कटास्वर्ण, इन्द्रनीलमणि वत कान्ति। शल्यविहीन (कंकड़, तिनके)। जलाने पर स्निग्ध पिच्छिल द्रव बहना।

उपयोग–

वातकफज रोग– बृहत्पंचमूल क्वाथ/लघु/उष्ण जल/मस्तु से।

आंत्रवृद्धि, अंत:गुल्म, बाधिर्य, स्वरभेद, श्वास– वरणादि क्वाथ से।

बृंहण; वात पित्त रक्त रोग– अश्वगंधा/जीवनीय गण क्वाथ से।

वात पित्तघ्न– कमल, द्राक्षा, रक्त चन्दन क्वाथ से।

कफ, वात, मेदज रोग– त्रिकटु, चित्रक, मुस्ता, विडंग, त्रिफला (१×९) + गुग्गुलु (९)।

कफ पित्तज रोग, प्रमेह, श्वित्र, भगंदर, विसर्प, **शुक्र**, आर्तव दोष– पटोल/नीम/ त्रिफला/गुडुची/खदिर/हल्दी/दारूहल्दी/विजयसार क्वाथ से। × १ माह।

वात रक्त– शिलाजीत + गुग्गुलु **(सम)** – दूध **से**। आहार – दूध, घी।

स्मृति वृद्धि– ब्राह्मी/मण्डूकपर्णी/शंखपुष्पी से।

सर्वरोगहर– पिप्पली, चित्रक, इन्द्र जौ, विडंग (सम), त्रिफला (६), + गुग्गुलु (सभी के समान) – मधु से।

निषेध/अतिसेवन जन्य– तिमिर, क्लीव, कार्श्य, मोह, रूक्षता।

३४. **शिलाजतु–** सर्वदोष प्रशमनं सर्वरोगविनाशम् ॥१८०॥

- समुद्र में अमृत मन्थन से श्रमित मन्दराचल का स्वेद– ब्रह्मा → शिलाजतु रूप में पर्वतों में सुरक्षित।
- ग्रीष्म में सूर्य तप्त गिरि जो जतु (लाक्षा) तुल्य वमित करते हैं वह हेम आदि ६ धातुओं का रस शिलाजीत है।
- पर्वत में जिस धातु का प्राधान्य होता है उसी अनुरूप शिलाजीत।

श्रेष्ठ– हिमालयोत्थ, लौह शिलाजतु।

गुण– सर्वं च तिक्त कटुकं नात्युष्णं कटुपाकत: ।
छेदनं च विशेषेण लोहं तत्र प्रशस्यते ॥८१॥

सामान्यत: सभी तिक्त, कटु, अतिउष्ण नहीं, विपाक– कटु, छेद्य होते हैं।

उत्तम शिलाजतु–

गोमूत्रगन्धि कृष्णं गुल्गुल्वाभं विशर्करं मृत्स्नम् ।
(पत्थर मिट्टी रहित)

स्निग्धमनम्लकषायं मृदुगुरू च शिलाजतु श्रेष्ठम् ।।१८१।।
(अम्ल न हो)

शोधन– लौह पात्र में स्वच्छ जल से प्रक्षालन कर शुष्क करे।

भावना– रोग दोष, प्रकृति अनुसार भावना द्रव्यों के क्वाथ से।

- (शिलाजतु के बराबर) भावना द्रव्य लेकर ८ गुणे जल में क्वाथ कर १/८ शेष कर छाने + शिलाजतु → समरस, घुलना

शुष्क ↓ (धूप/अग्नि)

स्व-स्वक्वाथ + शुष्क
से इसी प्रकार ७ बार भावना।

भावना (क्वाथ) द्रव्य–

वात – रास्ना, दशमूल, बला, पुनर्नवा, एरण्ड, सोंठ, मुलेठी।
पित्त – द्राक्षा, शतावरी, पटोल, त्रायमाण, गुडुची, जीवनीयगण।
कफ – विडंग, वच, त्रिफला, करंज, मुस्ता, बृहत्पंचमूल, पंचकोल।
V+P – लघु पंचमूल, सोंठ, द्राक्षा, काश्मरी, अश्वगंधा, गुडुची, बला।
V+K – मुस्ता, कूठ, वच, त्रिफला, देवदारू, पंचकोल, हल्दी, देवदारू.... ।
P+K – पाठा, पटोल, नीम, कुटज, त्रायमाण, गुडुची, त्रिफला, मुस्ता...... ।
S – मिश्र।

उपयोग विधि– I. स्नेहन, संशोधन

II. शिलाजीत + तिक्त घृत (सू० १८/२३) – ३ दिन
शिलाजीत + त्रिफला क्वाथ – ३ दिन
शिलाजीत + पटोल क्वाथ – ३ दिन
शिलाजीत + मुलेठी क्वाथ – ३ दिन
} १२ दिन ↓ देह संस्कार

III. काल अनुसार (प्रकृति, रोग अनुसार भावित) शिलाजतु सेवन।

योग– ३ – (i) हीन (ii) मध्यम (iii) उत्तम

मान– ३ – (i) १ कर्ष – 11.5 gm
(ii) १/२ पल – 23 gm
(iii) १ पल – 46. gm

समय– ३ – १, ३, व ७ सप्ताह।

[इस विधान में अधिकतम कुल मात्रा 46 gm x 49 days = 2254 gms है – यह सामान्य प्रयोगार्थ है।]

- जरा विहीन जीवनार्थ – १०० पल = 4600 gm
- अंतहीन आयु – १००० पल = 46 kg

} कुल सेवित मात्रा। (देवस्थल हिमालय में उत्पन्न शैलेय)।

पान– उष्णाम्बु/पत्थर के झरने का जल।

अपथ्य– धूप, व्यायाम, प्रवात; गुरू, विदाही भोजन सेवन काल से दूने समय के लिये त्याग। कुलत्थी, मकोय, कपोत – हमेशा के लिये त्याग।

रोगानुसार अनुपान–

- ज्वर– मुस्ता, पर्पटादिक्वाथ
- रक्तपित्त – मुलेठी क्वाथ
- कृश – दूध
- मेदोवृद्धि – मधु + जल
- उन्माद, अपस्मार – दूध
- पाण्डु, उदर, शोफ – भैंस मूत्र से।
- यक्ष्मा – शिलाजित, त्रिकटु, मधु खाये, जीर्ण होने पर दूध-भात।
- मधुमेह– सार (असनादि गण) से भावित कर शिलाजीत को सार क्वाथ से खाये (मात्रा – १ तुला = 4.6 kg)

शिवागुटिका– (श्लो०१९३) – यह चरक व सुश्रुत सं० में नहीं है।

- वाग्भट के पुत्र तीसट ने चिकित्सा कलिका में भी वाग्भट का यह शिलाजीत योग लिखा है।

प्रयोग–
- सामान्य– १ गुटिका नित्य दूध से × ७ दिन।
- १ वर्ष तक प्रयोग – २०० वर्ष आयु।
- २ वर्ष तक प्रयोग – ४०० वर्ष आयु।

गुण– वृष्य, सर्वरोगहर।

३५. **ताप्य (स्वर्णमाक्षिक)–**

प्राप्ति– तापी, (भारत), किरात, चीन, यवन देश।

मुख्य गुण– वृद्धावस्था न आना। (उसके विकार न होना)।

- त्वक् रोग, सर्व विष, गर – ताप्य + घृत/मधु/मधु, घृत/जल/तैल/उदश्वित (दधि + १/२ जल – मथे, मक्खन न निकाले)।
- पाण्डु– बहेड़ा, द्राक्षा, मण्डूर, मुस्ता, आंवला, त्रिकटु, शिलाजीत (सम) + ताप्य (सबके बराबर) –. मधु से।
- पाण्डु + शोथ – सोंठ, मण्डूर, बेर, पिप्पली, कृष्ण तिल (१-१) + माक्षिक (२) – मधु से।

- **राजयक्ष्मा–** लोह, माक्षिक, शिलाजतु, त्रिकटु, मधु (सम) – दूध से।
- **इंद्रियार्थ बिबोधन–** (श्रवण आदि) – लोह, माक्षिक, आंवला चूर्ण, घी, मधु, कमल केशर + मिश्री (सम)।
- **वृद्धावस्था–** माक्षिक व त्रिफला को मिलाकर भून ले। मधु व घी से।

३६. **वृद्धदारक–** पर्याय– महिष वल्लरी, वेल्लरिका, विधारा। यह पृथ्वी की परम औषध है, इसके सेवन में वात, धूप, स्त्री आदि कुछ भी वर्ज्य नहीं है।

पहचान– काण्ड– त्रिकोण, बहुप्रतान, पीतफल, रक्त पुष्प; पत्र– सदुग्ध, मृदु रोमवान, ताम्बूलवत; घन कंदमूल वाली लता।

ग्रहण– मूल को बसन्त में लेकर धूप शुष्क करे → चूर्ण – १ तुला घी मिलाकर घृताभ्यक्त पात्र में रखकर १५ दिन धान्यराशि में रख दे।

सेवन– चूर्ण को दूध से लेकर पचने पर दूध घी युक्त भोजन।

गुण– वृद्ध, भग्न, पंगु, ह्रस्व, कृश– सभी विपरीत। (May increase height)

- १ तुला सेवन से – ६०० वर्ष आयु। (≅ 4.6 kg)
- अश्वगंधा/गोक्षुर/शतावरी चूर्ण + विधारा चूर्ण – दूध/घी से।
  कुल मात्रा – (1380 + 1380 gm) – १०० वर्ष आयु।
- विधारा चूर्ण– घी से × ७ दिन – स्पष्ट वाक्।
- शतावरी स्वरस से ७ दिन भावना देकर विधारा चूर्ण – घी से – १ माह – बुद्धि, १०० वर्ष।
- आंवला स्वरस भावित विधारा चूर्ण– मधु व घी/दूध से – १ माह
- विधारा मूल स्वरस – दूध से
- विधारा मूल कल्क सिद्ध घृत।
- **श्लीपद–**
  - विधारा मूल गोमूत्र पिष्टकर।
  - त्रिकटु, त्रिफला, चित्रक, मुस्ता (३:३:१:१) + विधारा चूर्ण (८) – मधु व घी से।
  - विधारा फल रस (11.5 gm) + मधु व घृत (11.5 gm) पीकर गाय/भैंस का दूध पिये।
    – ५ दिन – कास हर; १ माह– महाकुष्ठ नष्ट
    ७ दिन – त्वक् रोग; २ माह– ५०० वर्ष आयु
  - १००० वर्ष आयु का योग – श्लो० (२१७)।

३७. **कुष्ठ–** ७०० वर्ष आयु।

कूठ चूर्ण, मधु, घृत (प्रत्येक 4600 gm) मिलाकर धान्य राशि में १०० दिन रखकर सेवन करे।

(B) **सौर्यमारूतिक/वातातपिक विधि–**

- सुख सेवनीय
- वातातप सहनीय
- उपद्रव रहित।
- हरड़, पिप्पली, बहेड़ा, आंवला चूर्ण + लोहभस्म – घी, मधु से।
- खदिर व असन क्वाथ भावित त्रिफला – घृत, मधु से।
- गोक्षुर, आंवला, गुडुची चूर्ण – घी, मधु से।
- विडंग कल्क – आंवला स्वरस व मधु से।
- पुनर्नवा (23/46 gm) – दूध से पीसकर ६/२ माह तक।
- शतावरी कल्क व कषाय सिद्ध घृत + मिश्री
- अश्वगंधा चूर्ण – दूध/घृत/तैल/उष्ण जल से – ६ माह – कृश बालक पुष्ट।
- कृष्ण तिल 46 gm नित्य शीत जल से – शरीर पुष्ट, दांत दृढ़।
- शिलाजतु, मधु, विडंग, धृत, लोह, अभया, पारद, ताप्य। धातु पुष्टि।
- नारसिंह घृत – (श्लो० २४७) ।

→ अष्टांग संग्रह में ऐसे दिव्य रसायनों का वर्णन नहीं है जो सामान्य मनुष्य के लिये संभव न हो (यथा द्रोणि रसायन, सोम सेवन – च०सं०) । विस्मयकारी दिव्य रसायन तपस्वियों, योगियों द्वारा ही प्रयुक्त हो सकते हैं सामान्य मनुष्य में अल्प त्रुटि भी देह नाश कर सकती है।

→ युगस्वभावाद्यदिचौषधीनां क्रिया सुशक्तिः परिकल्प्यतेल्पा ।
आयुर्बलादिष्वपि सा तथेति यत्नान्निषेव्याणि रसायनानि ॥२५३॥

– यदि युग स्वभाव वश औषधियों की शक्ति घटती है तो कालवश आयु, बल आदि भी तो कम होता है। अतः युक्तिपूर्वक विश्वांस के साथ देश, काल, सात्म्य का विचार कर; आयु, प्रज्ञा, तेज वर्धक वीर्यशाली औषधि का सेवन करे। "न चौषधीनामपिसर्वथैव प्रभावहानिः परिकल्पनीया ॥२५४॥" बुद्धिमान यह न सोचे कि औषधियां सर्वथा प्रभावहीन हो गई हैं क्योंकि यह तो प्रत्यक्ष है कि मदन फल – वमन, त्रिवृत-विरेचन करता है।

→ अम्ल, लवण, क्षार, कटु, उष्ण, तीक्ष्ण द्रव्यों का सेवन अग्नि दीपनार्थ किया जाता है। दीप्ताग्नि में अल्प योग भी गुणशाली होते हैं; परन्तु इनका अतिसेवन/अभ्यास शीघ्र जराकर है। अग्नि दीप्त हो जाते ही इन्हें बंद कर दे।

आचार रसायन– (श्लो० २६१) – सत्यवादी, अक्रोधी, अध्यात्मशील, सद्वृत्तरत।

रसायन सम्पद्–

रसायनों की सम्पद् से पूर्ण एवं निर्मल बने मल दोष धातु वाले पुरूषों का शरीर सदा स्थिर रहता है। जैसे कि सत्पुरूष अधिष्ठित कुल स्थिर रहता है ॥२५७॥

५०. बाजीकरण विधि

उपयोग– विषयी पुरूष सतत बाजीकरण ले।

तुष्टिः पुष्टिरपत्यं च गुणवत्तत्र संश्रितम् ।
अपत्यसन्तान करं यत्सद्यः सम्प्रहर्षणम् ।।२।।

तुष्टि, पुष्टि, गुणी सन्तान इसी में संश्रित है। इससे पुष्ट शुक्राणुओं से सन्तान परम्परा तथा सद्यः सम्प्रहर्षण प्राप्त होता है।

परिभाषा–

बाजीवातिबलो येन यात्यप्रतिहतोऽङ्गना ।
भवत्यतिप्रियः स्त्रीणां येनयेनोपचीयते ।
तद्वाजीकरणं तद्धि देहस्यौजस्करं परम् ।।३।।

घोड़े समान बल प्राप्त कर जिससे, स्त्रियों को (काम में) परास्त कर, उनका अतिप्रिय बनता है। जिससे उपचय (Anabolism) के द्वारा शरीर पुष्ट होता है, वह देह व ओज को बढ़ाने में श्रेष्ठ बाजीकरण है।

(बल, वेग– घोड़ा; आवृत्ति – कुलिङ्ग; शुक्रमात्रा– हाथी; रास-गधा; आचरण– वृष)

स्त्री महत्व– स्त्री गुणों से युक्त स्त्री (हर्ष प्रीतिकर शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध का संघात (एक साथ) प्रतिष्ठित; रति में प्रगल्भ अन्यथा लज्जाशील; व्यवहार चेष्टादि में निर्विकार, परन्तु श्रृंगार चेष्टाओं में विकार मूर्ति; पतिचित्त अनुकूल ≡ वृष्यतम) इस जीवलोक का सार है। साध्वी स्त्रियों से गुणी पुत्र होते हैं। गोत्र वृद्धिकर हेतु। गृह को सम्पूर्णता देने वाली।

→ नित्य बाजीकरण सेवी युवा (उदग्रवय) प्रत्येक ऋतु में नित्य मैथुन कर सकता है।

शुक्रक्षय हेतु– चिन्ता, जरा, व्याधि, पञ्चकर्म कर्शनात्, अति स्त्री सेवन, उपवास।

स्त्री समागम अशक्त हेतु– शुक्रक्षय, भय, शोक, स्त्री में अविश्वास, असेवन/अतिसेवन, स्थौल्य, मलसंचय, श्रम; स्त्री का अकौशल, दोषदर्शन; अभिचार जन्य मेढ़्र रोग; क्रोध, अर्धम कीर्तन।

[स्थूल में कफ व मेद से मार्ग निरूद्ध → अल्पव्यवायता – सुश्रुत]

प्रयोग विधि– I. स्नेहन, संशोधन, निरूह, अनुवासन।
II. दूध, घृत, शर्करा, मधु के योग (आहार)।
III. बाजीकरण योग।

I. **तस्मात् पुरा शोधनमेव कार्यं बलानुरूपं न च वृष्य योगाः ।**
सिध्यन्ति देहे कलुषे प्रयुक्ताः क्लिष्टे यथा वाससि राग योगाः ।।८७।।

सर्वप्रथम बल के अनुरूप शोधन करे। जिस प्रकार मलिन वस्त्र पर रंग नहीं चढ़ता वैसै ही मलिन देह में वृष्य (व रसायन) सफल नहीं होते।

II. संशोधन से स्रोत शुद्ध व देह निर्मल होने पर वृष्य आहार, काल में, व मात्रा में खाने से- वृषता, बृंहण, देह बल प्रद॥८६॥

III. बाजीकरण योग-

- क्षीर विदारी, गोक्षुर, शर्करा, मधु, नया घी, गृष्टि (प्रथम बार ब्याई गाय का दुग्ध आदि पुंसवन/वृष्य हैं।

[इन योगों को निम्न वर्गों में रख सकते हैं-

१. शुक्रमात्रा वृद्धि
२. शुक्राणु संजनन/संख्या वृद्धि
३. शुक्राणु बल वृद्धि
४. शुक्र दोष (पैच्छिल्य आदि) शोधन
५. स्तम्भन (अधिक समय में स्खलन)
६. प्रहर्ष → ध्वज दृढता (Hardness of erect penis), वेग
७. आवृत्ति
८. सामान्य वृष्य - सर्वगुण।]

	वृष्य योग	[वर्ग]
•	पयस्या (विदारी कन्द) सिद्ध दूध + घृत, मधु।	१.२
•	दधि सर, घी, एला, वंशलोचन, मरिच + प्रचुर शर्करा से साठी ओदन।	१.२
•	जीवक क्षीर काकोली, शालपर्णी, हंसपदी, मुस्ता, कचूर, इक्षु गण्डिका, मुलेठी, कमलनाल (प्रत्येक १:१), घृत (६४), दूध (६४०) → घृत पाक। गुण- वन्ध्यानां पुत्रजननं शुक्लवर्द्धनशोधनम् ॥३७॥	१,२,४
•	कौंच फल, उड़द, खर्जूर, शतावरी, सिंघाड़ा, द्राक्षा (१:१), दूध, जल (८:८) - पाक → १/८ शेष, छाने + शर्करा; वंशलोचन, घी (१:१) - मधु से	२, ३
•	• गन्ना/उड़द/अर्जुन के पत्रों से पुष्ट गृष्टि- • दूध + शर्करा, मधु, घृत।	३, ८
	• शुक्रल/जीवनीय/बृंहणीय/बल्य/वयःस्थापक गण सिद्ध दूध + आटा, घृत, मधु, शर्करा। गुण- अक्षय शुक्र।	१, ८

	वृष्य योग	[वर्ग]
•	• अग्नि तप्त स्वर्ण पत्र निर्वापित क्षीर + शर्करा, घृत, मधु– पुंसवन।	२, ८
•	मेदा, अश्वगंधा, ऋद्धि, शतावरी, विदारी, मुलेठी, जीवन्ती, जीवक (१-१ तोला) – इनसे बाष्कयण गो दुग्ध पकाये + शर्करा, मधु, घृत	१
•	• इसी से माष व कौंच फल पक्व खीर खाये।	१, ६
•	कौंच, तालमखाना बीज चूर्ण + शर्करा – धारोष्ण दूध से।	५-६
•	तालमखाना, ऋषभ, कौंच फल } तलुए व पाद पर लेपकर,	५
•	पुनर्नवा मूल, मृद्वीका, कौंच फल } भूमि स्पर्श न करे।	
•	उड़द, कौंच बीज – प्रत्येक – 2944 gm + मेदा, अश्वगंधा, ऋद्धि, शतावरी, क्षीर विदारी, मुलेठी, जीवक, जीवन्ती– प्रत्येक– 92 gm + जल– 47.1 Kg $\xrightarrow[\Delta]{}$ १/४ शेष + विदारी रस– 736 gm, इक्षु रस– 736 gm, दूध– 1472 gm + घृत (नया)– 736 gm. → घृतपाक + शर्करा, मधु शर्करा (प्रत्येक– 184 gm), पिप्पली– 46 gm । मात्रा– १ पल भोजन पूर्व	१,५.६
•	मुलेठी चूर्ण 11.5 gm – घी व मधु से लेकर, दूध पिये।	६
•	स्निग्ध मधुर फल (द्राक्षा), कौंच फल, शालि, माष, तिल, घी, मूंग, गेहूँ (प्रत्येक १८४ ग्राम) → चूर्ण का दूध में गूंथकर, पूड़ी घी में बनाये।	६
•	धान्यमाष (उड़द) रस + दूध, मधु, इक्षु रस, घी + मेदा, महामेदा जीवक, जीवन्ती क्वाथ।	६, ७
•	कौंच मूल चूर्ण, दूध से पतलाकर; घृत भृष्ट कर – शर्करा, मधु से।	६-७
•	कौंच, क्षीर काकोली, विदारी, जीवक, जीवन्ती, भुने कृष्णतिल → चूर्ण + शर्करा, मधु, घृत। मात्रा – २ पल (92 gm) ।	६, ७
•	आंवला रस भावित उड़द/विदारी चूर्ण– मधु, घृत से। अनुपान– दूध।	७
•	विदारी रस भावित विदारी चूर्ण– मधु, घृत से। अनुपान– दूध।	७
•	पिप्पली, आंवला के रस से भावित पिप्पली, आंवला चूर्ण– शर्करा, मधु से। अनुपान– दूध। वृद्ध को वृष्य करता है।	६

	वृष्य योग	[वर्ग]
•	माष यूष + साठी + प्रचुर घृत खाकर दूध पिये।	५→८
•	कर्कट श्रृंगी कल्क दूध से। पथ्य– शर्करा, घृत, दुग्ध, शालि।	८
•	४ भिलावा + 1.5 Kg दूध– पकाकर पिये। अतिवृद्ध → वृष।	८
•	दूध (१) + गोक्षुर व विदारी रस (४) + उड़द, साठी → खीर + घृत।	८
•	उड़द, कौंच, गेहूँ, शालि, साठी → चूर्ण + शर्करा, विदारी, तालमखाना चूर्ण + दूध, घी → पूड़ी खाकर दूध पिये।	८
•	जल – 2944 gm, कौंच मूल– 230 gm } $\xrightarrow{\Delta}$ १/४ शेष → छाने + { • कौंच मूल, गेहूँ, उड़द, तालमखाना पिप्पली, चिरौंजी – प्रत्येक 184 gm • मधु – 184 ग्राम; घी – 368 gm शर्करा – 1150 gm } लड्डू सेवन – नित्य १ लड्डू।	८, ७

यत्किञ्चिन्मधुरं स्निग्धं वृंहण बलवर्द्धनम् ।
मनसो हर्षणं यच्च तत्सर्वं वृषमुच्यते ।।७२।।

जो भी द्रव्य मधुर, स्निग्ध, बृंहण, बल वर्धन, व मन हर्षकर हो वह सभी वृष्य हैं।

→ संकल्प प्रवण (सभी वृष्यों में श्रेष्ठ) हो, नित्य घी, दूध का आहार ले।

→ जीवनीय घृत प्रयोग। सिद्ध वस्ति कल्प में व पुत्रकामीय शारीर में कही वस्तियों का प्रयोग करे।

→ इन विविध द्रव्यों से शरीर भावित कर स्वयं (आत्म) से वेग उत्पन्न होने पर, स्त्री के गुणों से प्रहर्षित (विशेष हर्षण– कामकला दक्ष स्त्री के गुण) हो प्रमदा (प्रिया) का सेवन करे।

स्त्री गुण– स्त्री महत्वोक्त।

गुण वृद्धि हेतु– (i) रूचि, (ii) अदृष्ट } सम प्रकृति पुरुष मिलने से गुण वृद्धि।

अन्य वृष्य/कामवर्द्धक भाव–

- कान्तानुवृत्ति परमा सा स्त्री वृष्यतमा मता ॥७६॥
- वृष्यतम – पतिचित्त अनुकूल स्त्री।

- सुगंध, शय्या, ताम्बूल (श्वेत कर्पूर, सुपारी, कत्था आदि युक्त), शुभ्रतर चन्द्र (चांदनी– Once in a blue moon), बिजली की कड़क के साथ मेघ गर्जन; आम्र मंजरी, कोयल कूक; सीत्कार, स्त्री कूजन (संभोग समये); नूपुर झंकार, चित्र चेष्टाएं।
- एक बंध से मन खिन्न (भर) हो जाने पर अन्य मुद्राओं का प्रयोग।
- सत्व, सात्म्य, देश, काल को विचार कर ६४ कलाओं की चेष्टाएं [वात्स्यायन कामसूत्र]।

प्रयोज्य योग–

अष्टांग संग्रह में ऐसे योगों का उल्लेख किया गया है जो आगम से प्रमाणित हैं। इसमें यदि कुछ अकरणीय दिखता है यथा– गधी दूध, स्थूल वनिता आलिंगन, सुअर विष्टा; कृष्ण सर्प को काटना; गर्भ, मस्तुलंग खाना आदि तो उसका प्रयोजन (i) विषय को स्पष्ट करना (ii) तन्त्र को न्यून दोष से बचाना है। यह मार्ग दयाभावी (आत्रेय आदि) महर्षियों द्वारा प्रतिपादित (विभिन्न, अण्डों, मांस आदि का प्रयोग) है, क्योंकि तन्त्र की तन्त्रता तभी है जब उसमें विषयों की अनपेक्षिता रहे।

'कर्त्तव्यमेवकर्त्तव्यं प्राणाबाधेपिनेतरत् ।।८८।।

करणीय ही करे, अकरणीय (योग आदि का प्रयोग) प्राण संकट होने पर भी न करे।

तन्त्र युक्तियां– ३६ (वाग्भट व चरक) [सुश्रुत, कौटिल्य – ३२]।

हेतु– ३ – (i) स्वर्ण जड़ित रत्न वत **शास्त्र की शोभा बढ़ाना।**

(ii) सरोवर में सुप्त कमल को जैसे सूर्य रश्मियां सरस करती हैं तथा जिस प्रकार दीपक घर को प्रकाशित करता है, वैसे ही **शास्त्र को स्पष्ट करना।**

(iii) चिकित्सा शास्त्र के दुर्ग।

उद्देश्य–
- वाक्य के अर्थ की योजना।
- असद्वादि द्वारा प्रयुक्त (विपरीत अर्थी) वाक्य प्रतिषेधक।
- लीन (छिपा) अर्थ/व्यत्यास (परस्पर विरूद्ध दिखना)/लेशोक्ति (अल्पमात्र कहा) अर्थ को प्रकट करना।

निर्माण/उत्पत्ति– वाक्यन्याथोदधे: सारं गृहीत्वैवं व्यवस्थिता: ।।९९।।

- वाक्य न्याय समुद्र सार से ग्रहण कर।

१. अधिकरण	५. प्रदेश	९. प्रयोजन	१३. अर्थापत्ति
२. योग	६. उद्देश	१०. उपदेश	१४. निर्णय
३. हेत्वर्थ	७. निर्देश	११. अपदेश	१५. प्रसंग
४. पदार्थ	८. वाक्य शेष	१२. अतिदेश	१६. एकान्त

१७. अनेकान्त	२२. अनुमत	२७. स्वसंज्ञा	३२. र्नियोग
१८. अपवर्ग	२३. व्याख्यान	२८. ऊह्य	३३. विकल्पन
१९. विपर्यय	२४. संशय	२९. समुच्चय	३४. प्रत्युत्सार
२०. पूर्वपक्ष	२५. अतीतापेक्षा	३०. निदर्शन	३५. उद्धार
२१. विधान	२६. अनागतापेक्षा	३१. निर्वचन	३६. सम्भव

[सुश्रुत ने प्रयोजन, प्रत्युसार, उद्धार, संभव का नामोल्लेख नहीं किया है। विवरण हेतु कृपया संक्षिप्त सुश्रुत संहिता उ० ६५ देखें]

आयुर्वेद– पितामहेन लोकस्य स्मृत्वा तदिदमव्ययम् ।
अकालमृत्यु रक्षार्थमलौहं वर्म निर्मितम् ।।१०१।।

अकाल मृत्यु रक्षार्थ पितामह (ब्रह्मा) द्वारा निर्मित नष्ट न होने वाला, बिना लौह का कवच।

चिकित्सा– सदा दौषौषधादीनि वीक्ष्य द्वादश तत्वतः ।
कुर्याच्चिकत्सितं प्राशो न योगैरेव केवलैः ।।१०६।।

सदैव १२ तत्वों (दोष, दूष्य, बल, काल, अग्नि, प्रकृति, वय, सत्व, सात्म्य, आहार, अवस्था, औषध) का विचार कर चि० करे, केवल योगों का ही प्रयोग न करे।

प्राणाचार्य– शीलवान् मतिमान युक्तो द्विजातिर्वेद पारगः ।
प्राणिभिः पितृवत्पूज्यः प्राणाचार्यः सहिस्मृतः ।।११६।।

लक्षण– शीलवान, बुद्धिमान, द्विजाति, आयुर्वेद पारंगत। की पिता वत पूजा करे।

द्विज–

विद्या समाप्त होने पर वैद्य के रूप में पुनः जन्म होने से। ब्राह्म/आर्ष सत्व युक्त ।।११७।।

वैद्य कर्तव्य–

ज्ञान व धर्म से प्रयत्न पूर्वक रोगी की स्वपुत्र वत बाधाओं से रक्षा करे ।।११९।।

वैद्य आचार– सर्वत्र मैत्री करूणातुरेषु निरामदेहेषु नृषु प्रमोदः ।
मनस्युपेक्षा प्रकृतिं व्रजत्सु वैद्यस्य सद्वृत्तमलं तनोति ।।१२५।।

i. सभी प्राणियों में मैत्री भाव;
ii. रोगियों में करूणा;
iii. निरोगी पुरूषों में प्रसन्नता;
iv. मरणासन्न पुरुषों के प्रति मन में उपेक्षा।

[४ ब्रह्म विहार– मैत्री, करूणा, मुदिता, उपेक्षा– बौद्ध दर्शन]

परिचय व कार्य–

- पितामह ब्रह्मा के मुख से १ लाख श्लोंको में उद्गीर्ण इस आयुर्वेद वाङ्मय का; अग्निवेश आदि के विभिन्न शास्त्रों से ग्रहण कर, सिन्धु देश में जन्में वैद्य वाग्भट्ट के प्रपौत्र व सिंहगुप्त के पुत्र वाग्भट्ट ने अष्टांग विभाग/मुनि (आत्रेय आदि) वचन अनुवाद किया है। पूर्व में कही सङ्क्षिप्त, संशयित, विस्तृत, विप्रकीर्ण अर्थ राशि को एक दृष्टि से (सुव्यवस्थित, सुस्पष्ट) कहा है।

  आचार्य वाग्भट्ट ने गुरु 'अवलोकित' से बुद्धि व गुरुवत पिताजी (सिंहगुप्त) से प्रतिभा प्राप्त की ॥१३३॥
- अपार आयुर्वेद समुद्र के पार कौन जा सकता है। विश्व की व्याधियों व औषधि ज्ञान का संग्रह यहाँ है ॥१३५॥

ग्रन्थ में प्रयुक्त कुछ मान–

1 कर्ष १ अक्ष = 1 तोला ≅ 11.5 gm

1 प्रस्थ = 64 तोला

4 प्रस्थ ≅ 2.980 kg

1 पल/बिल्व = 4 तोला = 1/100 तुला = 16 प्रस्थ ≅ 46 gm

1 तुला = 100 पल = 400 तोला ≅ 4.670 kg

1 कुडव = 16 तोला = 4 पल ≅ 184 gm

1 पात्र/आढक = 256 तोला ≅ 2944 gm

1 कलश/अर्म/द्रोण = 1024 तोला ≅ 11.776 kg = 16 प्रस्थ

1 शूर्प = 2 द्रोण ≅ 23.890 kg

1 वाह = 4096 तोला

1 नल्वण = 1024 तोला

1 कंस = 512 तोला

1 शाण ≅ चवन्नीभर।